पाठ्यक्रम और लोकतंत्रात्मक शिक्षा

D.El.Ed (SHIKSHA SNATAK) 202

द्वितीय सेमिस्टर

शिक्षा विभाग

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

पाठ्यचर्या विकास
Curriculum Development

इकाई सं०	इकाई का नाम	पृष्ठ सं०
1	पाठ्यचर्या ,संकल्पना : अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र एवं विशेषताएंपाठ्यचर्या का अधिगमकर्ता के साथ , सम्बन्ध Curriculum : Concept, Meaning, Nature, Scope and Objectives of curriculum, Curriculum and its relation with learners personality	1-14
2	पाठ्यचर्या के प्रकार Types of Curriculum	15- 29
3	पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया एवं सिद्धांत - Curriculum Development-the Process and Principles	30-50
4	पाठ्यचर्या विकास के निर्धारक Determinants of Curriculum Development	51-63
5	पाठ्यचर्या संरचना के दार्शनिक आधार Philosophical Bases of Curriculum Construction	64-89
6	पाठ्यचर्या संरचना के मनोवैज्ञानिक आधार Psychological Bases of Curriculum Construction	-
7	पाठ्यचर्या संरचना के समाजशास्त्रीय आधार Sociological Bases of Curriculum Construction	90-102
08	पाठ्यचर्या प्रारुप, पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धांत एवं पाठ्यचर्या के संदर्भ में पाठ्यचर्या को संगठित करने की विधियाँ Meaning of Curriculum Design, Components and Sources of Curriculum Design, Principles of Curriculum Construction, Methods of Organization of Syllabus in Formulating Curriculum Operations	103-118
09	पाठ्यचर्या प्रारुप : इसके प्रकार Curriculum Design: Its Categories	119-134
10	पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न प्रतिमान Different Models and Principles of Curriculum Construction	135-148
11	पाठ्यचर्या मूल्यांकन Curriculum Evaluation	149-167
12	पाठ्यक्रम मूल्यांकन के मॉडल, पाठ्यक्रम मूल्यांकन में प्रवृत्तियां Models of Curriculum Evaluation	168-175
13	पाठ्यचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र Scope of Curriculum Research	176-186
14	भारत में पाठ्यचर्या संबंधी शोध Curriculum Research in India	187-198
15	पाठ्यचर्या विकास से सम्बंधित विभिन्न आयोगसमितियों के सुझाव/ Suggestions/Recommendation Related to Curriculum Development According to Different Education Commissions	199-218

इकाई 1- पाठ्यचर्या: संकल्पना,अर्थ,प्रकृति,क्षेत्र एवं विशेषताएं, पाठ्यचर्या का अधिगमकर्ता के साथ सम्बन्ध

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 पाठ्यचर्या: संकल्पना, अर्थ, प्रकृति
1.4 पाठ्यचर्या: क्षेत्र एवं विशेषताएं
1.5 पाठ्यचर्या का अधिगमकर्ता के साथ सम्बन्ध
1.6 सारांश
1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.8 संदर्भ-ग्रन्थ
1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

हम सभी जानते हैं कि बचपन से आज तक हमने जो भी शिक्षा प्राप्त की है इस शिक्षा प्राप्ति की प्रक्रिया के दौरान हम सभी ने कई तरह की संपन्न होने वाली प्रक्रियाएं विद्यालयों में देखी हैं, जैसे- स्कूलों में सुबह की प्रार्थनाएं, फिर निश्चित समय सारणी के अनुसार सभी कक्षाओं का संचालन, प्रायोगिक क्रिया-कलाप, वर्ष में कई बार परीक्षाओं का आयोजन एवं साथ ही वर्ष भर विद्यालय में कई प्रकार की अन्य गतिविधियों `का आयोजन होना जैसे- खेलकूद प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पुस्तक मेला, विज्ञान प्रदर्शनी, स्काउट्स गाइड,एन०सी०सी०, राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन आदि। आज हम सभी मिलकर इस विषय को समझेंगे की विद्यालयों में संपन्न होने वाले इन सभी इस प्रकार के क्रिलापों के क्या शैक्षिक निहितार्थ हैं ? विद्यालय में आयोजित होने वाले ये सभी कार्यक्रम किसी न किसी निश्चित उद्देश्य को लेकर ही आयोजित किये जाते हैं. इस इकाई में हम इनके स्वरूप, महत्व एवं उद्देश्यों की चर्चा करेंगे।

पाठ्यचर्या एक ऐसी धुरी के रूप में है जिसके चारो ओर कक्षा के विविध कार्य तथा विद्यालय के समस्त क्रियाकलाप विकसित किये जाते हैं। आप अपने बचपन के दिनों में स्कूलों में किये जाने वाले विविध कार्यकलापों के बारे में सोचिये और यह सोचने का प्रयास कीजिये कि हम ऐसा क्यों

करते थे। इन कार्यकलापों के विविध प्रकारों के बारे में भी सोचिये कि वह एक दूसरे से किस प्रकार सम्बंधित थे। आपको याद होगा कि आपके विद्यालय में भाषा विज्ञान, गणित तथा सामाजिक विज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापक अपने विद्यार्थियों के साथ अन्य कौन-कौन सी क्रियाएं कराते थे। इस प्रकार यह इकाई आपके यह समझने में सहायक होगी कि कक्षा में अध्यापक जो भी करता है वह क्यों करता है तथा शिक्षा को यह अधिक उद्देश्यपूर्ण तथा जीवन के लिए उपयोगी कैसे बनाता है। इसके साथ ही पाठ्यचर्या की संकल्पना को भली भांति समझ लेने से शिक्षा के मनोवांछित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने में भी सहायता मिलेगी।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप -

1. पाठ्यचर्या की परिभाषा तथा उसकी संकल्पना समझ सकेंगे।
2. पाठ्यचर्या की विविध परिभाषाएं बता सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या एवं पाठयचर्या में अंतर बता सकेंगे।
4. पाठ्यचर्या के क्षेत्र एवं विशेषताओं को बता सकेंगे।
5. पाठ्यचर्या के महत्व को समझ सकेंगे ।
6. पाठ्यचर्या की प्रक्रिया तथा इसके विविध सोपानों की व्याख्या कर सकेंगे।
7. पाठ्यचर्या अध्यापक और विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण है यह समझ सकेंगे।

1.3 पाठ्यचर्या: संकल्पना, अर्थ, प्रकृति

पाठ्यचर्या: संकल्पना

पाठ्यचर्या विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था का केंद्र बिंदु है। विद्यालय में उपलब्ध सभी संसाधन जैसे- विद्यालय भवन, विद्यालय के अन्य उपकरण, पुस्तकालय की पुस्तकें तथा अन्य शिक्षण सामग्री का एक मात्र उद्देश्य पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन में सहयोग देना है । कक्षा की समस्त क्रियाएं, पठ्यसहगामी क्रियाकलाप तथा मूल्यांकन की समस्त प्रक्रिया विद्यालयी पाठ्यचर्या के परिणामस्वरुप ही नियोजित की जाती हैं । प्रत्येक सभ्य समाज अपनी युवा पीढ़ी के समाजीकरण हेतु एक निश्चित शैक्षिक कार्यक्रम का नियोजन करता है । इसका क्रियान्वयन विद्यालय के माध्यम से किया जाता है इस प्रक्रिया में किन बातों का समावेश हो तथा इन्हें शैक्षिक व्यवहार और क्रियाओं के रूप में कैसे परिवर्तित किया जाये, इस सम्बन्ध में काफी मतभेद हैं बहुत पहले अरस्तू ने कहा था कि- "जो स्थितियां है......मानव समाज इनके शिक्षण के प्रति न तो एकमत है और न शिक्षण के लिए अपनाये जाने वाले साधनों के प्रति ही।" वर्तमान समय में भी यह मतभेद विद्यमान हैं कि पाठ्यचर्या

में क्या समाहित किया जाये तथा इसे कैसे संगठित तथा क्रमबद्ध करके पढ़ाया जाये। इस मतभेद के कारण ही पाठ्यचर्या की संकल्पना तथा इसके विकास के प्रति हमारे द्रष्टिकोण में एकरूपता नहीं आ सकी है।

पाठ्यचर्या शिक्षा का आधार है। पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है। यह एक ऐसा साधन है जो छात्र तथा अध्यापक को जोड़ता है। अध्यापक पाठ्यचर्या के माध्यम से छात्रों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास के लिए प्रयास करता है। पाठ्यचर्या द्वारा छात्र को जीवन जीने की शिक्षा प्राप्त होती है। इससे अध्यापकों को दिशा-निर्देश प्राप्त होते हैं। छात्रों के लिए लक्ष्य निर्धारित होने से उनमे एकाग्रता आती है। वे नियमित रहकर कार्य करते हैं। पाठ्यचर्या एक प्रकार से अध्यापक के पश्चात् छात्रों के लिए दूसरा पथ प्रदर्शक है। पाठ्यचर्या में किसी भी कक्षा के निहित विषयों के साथ-साथ स्कूल के समस्त कार्यक्रम आते हैं। पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में सबसे लोकप्रिय परिभाषा कनिंघम की मानी जाती है। कनिंघम के अनुसार– "पाठ्यचर्या अध्यापक रुपी कलाकार (artist) के हाथ में वह साधन (tool) है जिसके माध्यम से वह अपने पदार्थ रुपी शिष्य (material) को अपने कलागृह रुपी स्कूल (studio) में अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार विकसित अथवा रूप (mould) प्रदान करता है।" इसमें संदेह नहीं कि कलाकार को अपने पदार्थ को अपने आदर्शों के अनुरूप ढालने की बहुत स्वतंत्रता है, क्यों कि कलाकार का पदार्थ निर्जीव है, परन्तु स्कूल में अध्यापक का पदार्थ अर्थात् छात्र सजीव है। पुराने समय में जब आवश्यकताएँ सीमित थीं, साधन सीमित थे, तब अध्यापकों को अपने पदार्थ यानि कि छात्रों को नया रूप देने में पूरी स्वतंत्रता थी, परन्तु अब बदलती हुई परिस्थितियों में अध्यापक की यह भूमिका भी बदल गयी है। फिर भी निश्चय ही अध्यापक के हाथ में पाठ्यचर्या बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है।

पाठ्यचर्या: अर्थ

पाठ्यचर्या शैक्षिक व्यवस्था का अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण अंग है। पाठ्यचर्या की अवधारणा के सन्दर्भ में प्रायः विद्वानों में एकमत राय नहीं है। पाठ्यचर्या को लोग पाठयचर्या (syllabus) या विषय वस्तु (course of study) या जैसे नामों से भी संबोधित करते हैं। पाठ्यचर्या के लिए प्रचलित ये शब्द अलग-अलग अर्थ और सन्दर्भों को प्रकट करते हैं। अतः पाठ्यचर्या को शाब्दिक, संकुचित और व्यापक तीनों अर्थों में समझने की जरुरत है। तब इसके सही स्वरूप को हम समझ सकते हैं।

पाठ्यचर्या शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– पाठ्य एवं चर्या। पाठ्य का अर्थ है- पढ़ने योग्य अथवा पढ़ाने योग्य और चर्या का अर्थ है – नियम पूर्वक अनुसरण। इस प्रकार पाठ्यचर्या का अर्थ हुआ पढ़ने योग्य (सीखने योग्य) अथवा पढ़ाने योग्य (सिखाने योग्य)। विषय वस्तु और क्रियाओं का नियम पूर्वक अनुसरण। पाठ्यचर्या के लिए अंग्रेजी में करीकुलम (Curriculum)शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह शब्द लैटिन भाषा के क्यूरेरे (Currere) से बना है जिसका अर्थ है- रनवे (Runway) या रेस कोर्स (Race Course) अर्थात् दौड़ का रास्ता या दौड़ का क्षेत्र अर्थात् किसी

पाठ्यचर्या निर्माण

निश्चित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मार्ग पर दौड़ना या ऐसे भी कह सकते हैं कि -Curriculum means a course to be run for reaching a certain goal. इस प्रकार शाब्दिक अर्थ में पाठ्यचर्या छात्रों के लिए दौड़ का रास्ता या दौड़ के मैदान के समान है जिस पर चलते हुए छात्र अपने वांछित शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करता है। राबर्ट यूलिच (Robert Ulich) ने लिखा है कि- "शिक्षा के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए जिन अध्ययन परिस्थितियों में क्रमिक रुपरेखा बनायी जाती है उसे पाठ्यचर्या कहते हैं। पाठ्यचर्या में शिक्षण के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों पक्ष शामिल होते हैं।"

संकुचित अर्थ में पाठ्यचर्या के लिए एक अन्य शब्द सिलेबस (syllabus) या पाठयचर्या शब्द भीप्रयोग किया जाता है, जिसका अर्थ कोर्स ऑफ स्टडी या कोर्स ऑफ टीचिंग भी है। इसे पाठ्य विवरण या पाठ्य सामग्री या अंतर्वस्तु आदि भी कहते हैं। पाठयचर्या दो शब्दों से मिलकर बना है। पाठ्य + क्रम अर्थात् किसी विषय या अध्ययन की वह विषयवस्तु जो क्रम से व्यवस्थित हो पाठयचर्या कहलाता है। पहले पाठ्यचर्या के लिए पाठयचर्या शब्द का प्रयोग किया जाता था, लेकिन अब इसके संकुचित मान्यता पर आधारित होने के कारण अब पाठ्यचर्या शब्द का प्रयोग किया जाता है। पाठयचर्या में केवल ज्ञानात्मक पक्ष से सम्बंधित तथ्य ही क्रमबद्ध होते हैं। पाठ्यचर्या तथा पाठयचर्या में सामान्य लोग भेद नहीं करते और उन्हे पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग करते हैं परन्तु इनमे पूर्ण और अंश का भेद है। पाठ्यचर्या तथा पाठयचर्या में प्रमुख अंतर इस प्रकार हैं –

1. पाठ्यचर्या जहाँ व्यापक संकल्पना है, वहीं पाठयचर्या सीमित संकल्पना है।
2. पाठ्यचर्या में नियोजित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्यालय और विद्यालय से बाहर, जो कुछ भी संपादित से किया जाता है, वह सब समाहित होता है, जबकि पाठयचर्या केवल विद्यालय की सीमा में कक्षा के भीतर विकसित किये जाने वाले विभिन्न विषयों के ज्ञान की रूपरेखा मात्र होता है।
3. पाठ्यचर्या शब्द का प्रयोग कक्षा विशेष के सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है; जैसे- कक्षा 8 के लिए हिंदी का पाठ्यचर्या; परन्तु पाठयचर्या शब्द का प्रयोग कक्षा विशेष के किसी विषय विशेष तक सीमित होता है; जैसे- कक्षा 8 के लिए हिंदी का पाठयचर्या ।
4. पाठ्यचर्या संपूर्ण विद्यालयी जीवन की चर्या है जबकि पाठयचर्या पठनीय वस्तु का केवल एक क्रम मात्र होता है।
5. पाठ्यचर्या अपने आप में सम्पूर्ण है, जबकि पाठयचर्या पाठ्यचर्या का एक अंग मात्र है।
6. पाठ्यचर्या से सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास संभव है, जबकि पाठयचर्या से व्यक्तित्व के किसी एक पक्ष या किसी एक अंग का ही विकास संभव है।

दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि किसी स्तर की पाठ्यचर्या का वह भाग जिसमें उस स्तर के लिए सैद्धांतिक विषयों के ज्ञान की सीमा निश्चित की जाती है, पाठयचर्या होता है। स्पष्ट है कि पाठ्यचर्या और पाठयचर्या में पूर्ण और अंश का भेद होता है।

व्यापक अर्थ में पाठ्यचर्या (Curriculum) से आशय बालक के बहुआयामी विकास करने तथा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षक द्वारा अपनायी गयी वे तमाम परिस्थितियां होती हैं जिनसे बालक ज्ञान, अनुभव, क्रिया का अर्जन तथा आदत एवं व्यवहार में परिमार्जन करता है। इस प्रकार पाठ्यचर्या में शिक्षक द्वारा पढ़ाये जाने वाले विषय वस्तु या पाठयचर्या की क्रियाएं, प्रयोगशाला के कार्य, सामुदायिक कार्य, लेखन, वाचन, पुस्तकालय आदि सभी के क्रिया-कलाप शामिल होते हैं। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार-" पाठ्यचर्या में विषय सामग्री का विस्तृत वर्णन (पाठयचर्या) और कुछ हद तक अध्ययन विधियों (Methodology) को भी शामिल किया जाता है जो कक्षा में सामग्री को ठीक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त की जाती हैं" ।अतः स्पष्ट है कि पाठ्यचर्या अपने व्यापक अर्थ में विद्यालय में तथा विद्यालय के बाहर अपनायी जाने वाली उन सभी सैद्धांतिक, व्यवहारिक, क्रियात्मक पहलुओं का संगठन है जो विद्यार्थियों का बहुपक्षीय विकास के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं।व्यापक अर्थ में पाठ्यचर्या शब्द का प्रयोग अनेक रूपों में किया गया है। सामान्य रूप से इसका आशय इस प्रकार से समझा जा सकता है-

- विद्यालय में अध्ययन के लिए निर्दिष्ट पाठ्यचर्या तथा अन्य सम्बंधित सामग्री।
- विद्यार्थियों को पढ़ाये जाने वाली समस्त विषय सामग्री।
- किसी विद्यालय में किसी निश्चित विषय का पाठयचर्या ।
- विद्यालय में विद्यार्थियों को दिए जाने वाले नियोजित अधिगम अनुभवों का सम्मिलित रूप।

पाठ्यचर्या के व्यापक अर्थ को प्रकट करते हुए माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-1953 ई०) में लिखा है कि– "पाठ्यचर्या का अर्थ केवल उन सैद्धांतिक विषयों से नहीं है जो विद्यालय में परंपरागत रूप से पढ़ाये जाते हैं अपितु इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी निहित है जिसमें बालक विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला तथा खेल के मैदान एवं शिक्षक और शिक्षार्थियों के अनगिनत संपर्कों से प्राप्त करता है, इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यचर्या बन जाता है, जो छात्रों के सभी पक्षों को प्रमाणित कर सकता है तथा विकास में सहायता दे सकता है।"

पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में कतिपय विद्वानों ने इसे निम्न प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास किया है –

क्रो और क्रो के अनुसार– "पाठ्यचर्या में विद्यार्थियों के विद्यालय या उसके बाहर के वे सभी अनुभव शामिल हैं जो अध्ययन कार्यक्रम में रखे जाते हैं जिसका आयोजन बालकों के मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक स्तर पर विकास में सहायता करते हैं।"

पाठ्यचर्या निर्माण

के० जी० सैयेदेन के अनुसार- "पाठ्यचर्या वह सहायक सामग्री है जिसके द्वारा बच्चा अपने आप को उस वातावरण के अनुकूल ढालता है, जिसमें वह अपना दैनिक कार्य-व्यवहार करता है तथा जिसमें उसके भविष्य की योजनायें और क्रियाशीलता निहित हैं।"

डंकन ग्रिजेल के अनुसार– "विद्यालयी पाठ्यचर्या समाज की परम्पराओं, पर्यावरण एवं आदर्शों का प्रतिरूप है।" (The school curriculum is the reflection of the traditional environment and ideas of the society)

बैंट तथा कोन्बेर्ग के अनुसार– "पाठ्यचर्याके अंतर्गत छात्रों के लिए प्रस्तुत की गयी विद्यालयीय वातावरण की वह समस्त सामग्री आती है जिसमें सारी पाठ्य-वस्तु, पठन क्रियाएं एवं विषय सम्मिलित हैं।"

कैसवेल के अनुसार- "बालकों एवं उनके माता-पिता तथा अध्यापकों के जीवन में आने वाली समस्त क्रियाओं को पाठ्यचर्या कहा जाता है। बालकों के कार्य करने के समय जो कुछ भी कार्य होता है उस सबसे पाठ्यचर्या का निर्माण होता है। वस्तुतः पाठ्यचर्या को गतियुक्त (dynamic) वातावरण कहा गया है।"

रडयार्ड तथा हेनरी के अनुसार- "विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या के अंतर्गत समस्त विद्यालय का वातावरण आता है, जिसमें विद्यालय में प्राप्त सभी प्रकार के संपर्क, पठन क्रियाएँ एवं विषय सम्मिलित हैं।"

ब्रुवेकर के अनुसार– "पाठ्यचर्या एक ऐसा क्रम है जो किसी व्यक्ति को स्थान पर पहुँचने के लिए तय करना पड़ता है।"

ड्यूवी के अनुसार- "पाठ्यचर्या केवल अध्ययन की योजना या विषय सूची ही नहीं बल्कि कार्य और अनुभव की संपूर्ण श्रंखला है। पाठ्यचर्या समाज में कलात्मक ढंग से परस्पर रहने के लिए बच्चों के प्रशिक्षण का शिक्षकों के पास एक साधन है, सारांशतः पाठ्यचर्या सुनिश्चित जीवन का दर्पण है जो विद्यालय में प्रस्तुत किया जाता है।"

फ्रोबेल के अनुसार– "पाठ्यचर्या को मानव जाति के समस्त ज्ञान और अनुभव का सार समझना चाहिये।"

इस प्रकार पाठ्यचर्या का सम्बन्ध सीखने वाले एवं सिखाने वाले से होता है। यह सीखने और सिखाने वाले को जोड़ने वाली एक अनियार्य कड़ी है।

पाठ्यचर्या: प्रकृति,

फ्रांसिस जे० ब्राउन ने अपनी पुस्तक "शैक्षिक समाज विज्ञान" में लिखा है कि– "पाठ्यचर्या उन समग्र परिस्थितियों का समूह है जिसकी सहायता से शिक्षक तथा विद्यालय उन सभी बालकों तथा नवयुवकों के व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं जो विद्यालय से होकर गुजरते हैं।" इससे यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यचर्या विद्यालय की व्यवस्था का मूल आधार होती है । शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था पाठ्यचर्या पर केन्द्रित होती है। पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है । शिक्षक और शिक्षार्थी पाठ्यचर्या को केंद्र में रख कर विचारों के आदान-प्रदान द्वारा किसी चीज को सीखते हैं तथा व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं। पाठ्यचर्या से ही छात्र जीवन जीने की कला।(Art of living) सीखते हैं। पाठ्यचर्या की प्रकृति को निम्नलिखित तथ्यों से हम इस प्रकार से समझ सकते हैं-

- पाठ्यचर्या सदैव पूर्ण नियोजित होती है इसमें निहित क्रियाओं को आवश्यकतानुसार एकाएक विकसित नहीं किया जा सकता है।
- पाठ्यचर्या के चार मुख्य आधार होते हैं –सामाजिक शक्तियां, स्वीकृत सिद्धांतों द्वारा प्राप्त मानव विकास का ज्ञान, अधिगम का स्वरुप, तथा ज्ञान और संज्ञान का स्वरूप। इस प्रकार पाठ्यचर्या किसी विशिष्ट समाज के एक विशिष्ट आयु वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिए निर्मित होती है। किसी विशिष्ट व्यवसाय हेतु कक्षा आठ की बालिकाओं के लिए विकसित पाठ्यचर्या इसी कक्षा के लड़कों के लिए पूरी तरह निरर्थक भी हो सकती है।
- पाठ्यचर्या के लक्ष्य या प्रयोजन उससे सम्बंधित शैक्षिक उद्देश्यों से निर्दिष्ट होते हैं। ये उद्देश्य ही साध्य हैं तथा स्वीकृत पाठ्यचर्या इन्हें प्राप्त करने का साधन है । पाठ्यचर्या अध्यापक के अनुदेशों को नियोजित करने में सहायक होती है। अधिगम अनुभवों की गुणवत्ता तथा सार्थकता ही पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के प्रभाव का निर्धारण करती है।
- अध्यापक अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए एक ही प्रकार के अधिगम अनुभवों का नियोजन करता है फिर भी अपने अधिगम अनुभवों तथा अपनी सहभागिता के स्तर एवं गुणवत्ता के कारण छात्रों में भिन्नता दिखाई देती है उनमें व्यक्तिगत भेद तथा सामाजिक प्रष्ठभूमि की विभिन्नता एक प्रकार के परिणाम के लिए उत्तरदायी है यही कारण है कि एक ही कक्षा के प्रत्येक छात्र की वास्तविक पाठ्यचर्या उसी कक्षा के अन्य छात्रों की पाठ्यचर्या कि अपेछा भिन्न होती है।
- प्रत्येक अधिगमकर्ता की अपनी वास्तविक पाठ्यचर्या के अस्तित्व के परिणामस्वरुप निर्दिष्ट पाठ्यचर्या तथा क्रियान्वित पाठ्यचर्या के बीच पाए जाने वाले अंतर के कारण अध्यापक की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती हैं उसे कक्षा में न केवल लचीली व्यवस्था प्रदान करनी होती है वरन अधिगम के सार्थक विकल्प भी खोजने पड़ते हैं। किसी दी गयी पाठ्यचर्या के

उद्देश्य, आधार तथा मापदंड की दृष्टी से अध्यापक में उपयुक्त व्यावसायिक निर्णय लेने कि क्षमता निहित होनी चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

1. पाठ्यचर्या विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था का केंद्र बिंदु है। (सत्य/असत्य)
2. ------------ ने कहा था कि- "जो स्थितियां है......मानव समाज इनके शिक्षण के प्रति न तो एकमत है और न शिक्षण के लिए अपनाये जाने वाले साधनों के प्रति ही।"
3. ------------ने लिखा है कि- "शिक्षा के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए जिन अध्ययन परिस्थितियों में क्रमिक रुपरेखा बनायी जाती है उसे पाठ्यचर्या कहते हैं। पाठ्यचर्या में शिक्षण के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों पक्ष शामिल होते हैं।"
4. ------------ जहाँ व्यापक संकल्पना है, वहीं ------------ सीमित संकल्पना है।
5. ------------ के अनुसार-" पाठ्यचर्या में विषय सामग्री का विस्तृत वर्णन (पाठयचर्या) और कुछ हद तक अध्ययन विधियों (Methodology) को भी शामिल किया जाता है जो कक्षा में सामग्री को ठीक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त की जाती हैं"
6. किसके के अनुसार– "पाठ्यचर्या में विद्यार्थियों के विद्यालय या उसके बाहर के वे सभी अनुभव शामिल हैं जो अध्ययन कार्यक्रम में रखे जाते हैं जिसका आयोजन बालकों के मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक स्तर पर विकास में सहायता करते हैं।"
7. "शैक्षिक समाज विज्ञान" नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं ?

1.4 पाठ्यचर्या: क्षेत्र एवं विशेषताएं

पाठ्यचर्या: क्षेत्र

हर समाज राज्य अथवा राष्ट्र की अपनी मान्यताएं, विश्वास, आदर्श, मूल्य और आवश्यकताएं होती हैं, इनकी पूर्ति के लिए वह शिक्षा का विधान करता है और शिक्षा के उद्देश्य निश्चित करता है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जिन विषयों का ज्ञान एवं क्रियाओं का प्रशिक्षण आवश्यक समझा जाता है उन्हें पाठ्यचर्या में स्थान दिया जाता है।इस प्रकार पाठ्यचर्या शिक्षक और छात्रों के सामने स्पष्ट एवं निश्चित लक्ष्य रखती है और उनकी प्राप्ति के लिए उनके कार्य निश्चित करती है। नियोजित शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या की बहुत आवश्यकता होती है। यह सर्वविदित है कि जो आवश्यक है वह उपयोगी

होगा और साथ ही उसका एक निश्चित महत्व होगा। यही बात पाठ्यचर्या पर भी लागू होती है। पाठ्यचर्या के क्षेत्र को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है-

1. पाठ्यचर्या के माध्यम से शिक्षा की प्रक्रिया सुचारू रूप से चलती है। शिक्षा के किस स्तर (पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च) पर किन पाठ्य विषयों को पढ़ाना है, किन क्रियाओं को सिखाना है और किन अनुभवों को देना है ये सभी बातें पाठ्यचर्या में स्पष्ट रूप से दी जाती हैं। इस प्रकार से विद्यालयी जीवन के कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा पाठ्यचर्या में मिलती है।
2. पाठ्यचर्या के उपलब्ध हो जाने से आवश्यक एवं वांछित पाठ्य सामग्री को पुस्तक की रचना के समय ध्यान में रखा जाता है। इससे उपयुक्त एवं स्तरानुकूल पुस्तकों का निर्माण हो पता है जिनसे बालक के विकास में सहायता मिलती है।
3. पाठ्यचर्या छात्र एवं अध्यापक दोनों को सही दिशा बोध कराती है इससे समय और शक्ति का अपव्यय नहीं होता है। दोनों निश्चित लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं और समय पर वहां पहुँच जाते हैं। इस प्रकार पाठ्यचर्या द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति संभव हो पाती है।
4. एक निश्चित स्तर के लिए एक निश्चित पाठ्यचर्या होने से पूरे प्रदेश अथवा देश में शैक्षिक स्तर की समानता और एकरूपता बनी रहती है जब किसी नए विषय की पढ़ाई किसी शिक्षा संस्था में प्रारंभ हो जाती है अथवा कोई नयी योजना लागू की जाती है तब सबसे पहले पाठ्यचर्या को ही निर्धारित करना पड़ता है।
5. पाठ्यचर्या से मूल्यांकन सरल और संभव होता है। बिना पाठ्यचर्या के मूल्यांकन करना संभव नहीं होता है। अतः मूल्यांकन के लिए पाठ्यचर्या एक निश्चित आधार प्रदान करती है।
6. पाठ्यचर्या से उद्देश्यों की प्राप्ति संभव होती है।
7. पाठ्यचर्या से समय और शक्ति का सदुपयोग होता है।

पाठ्यचर्या के मुख्य रूप से निम्न भेद दिखाई पड़ते हैं -

1. विषय केन्द्रित पाठ्यचर्या
2. बाल केन्द्रित पाठ्यचर्या
3. मिश्रित पाठ्यचर्या
4. आधारभूत पाठ्यचर्या
5. क्रिया केन्द्रित पाठ्यचर्या
6. अनुभव केन्द्रित पाठ्यचर्या
7. समाकलित केन्द्रित पाठ्यचर्या
8. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या

9. कोर पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या: विशेषताएं

हर व्यक्ति की अपनी कुछ आवश्यकताएं होती हैं व्यक्ति की भांति समाज और देश की भी अपनी-अपनी आवश्यकताएं होती हैं। आवश्यकता के परिक्षेत्र में शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित किये जाते हैं इन उद्देश्यों की प्राप्ति विषयों के ज्ञान और क्रियाओं के माध्यम से होती है इन विषयों और क्रियाओं को पाठ्यचर्या में स्थान दिया जाता है। पाठ्यचर्या से पता लगता है कि क्या पढ़ना और क्या पढ़ाना है ? किन क्रियाओं में भाग लेना है ? इसलिए छात्र और अध्यापक दोनों के लिए पाठ्यचर्या की आवश्यकता होती है। छात्र के व्यक्तित्व विकास के लिए शिक्षा एक साधन है। व्यक्तित्व विकास के उद्देश्य से पाठ्यचर्या में अनेक बौद्धिक विषयों को सम्मिलित किया जाता है अनेक क्रियाओं और खेल-कूदों का आयोजन होता है अनेक कौशलों को सिखाया जाता है पुस्तकालय, वाचनालय, प्रयोगशाला आदि की समुचित व्यवस्था की जाती है। इस प्रकार बालक की सुप्त शक्तियों को जगाने और उनके विकास के निमित्त पाठ्यचर्या आवश्यक प्रतीत होती है।

जब बालक विभिन्न विषयों को पढ़ता है, विभिन्न क्रियाओं में भाग लेता है, विभिन्न तरह के अनुभव प्राप्त करता है तब इन सबके द्वारा उसे अपने समाज की, अपने देश की परम्परा और संस्कृति से परिचय होता है। संस्कृति की रक्षा के साथ-साथ बालक अपनी सृजनात्मक शक्तियों द्वारा उस संस्कृति में आवश्यक परिवर्तन, परिवर्द्धन एवं परिष्कार करता है। समाजीकरण की इस प्रक्रिया में प्रभावी ढंग से भाग लेने के लिए पाठ्यचर्या की बहुत आवश्यकता होती है। पाठ्यचर्या विद्यालयीय कार्यक्रम की एक निश्चित योजना प्रस्तुत करती है। विभिन्न स्तरों के विद्यालयों में बालकों के मानसिक स्तारानुकूल किन क्रियाओं को सिखाया जायेगा और किन विषयों को पढ़ाया जायेगा यह पाठ्यचर्या द्वारा ही निश्चित हो पाता है। पाठ्यचर्या कि सहायता से पुस्तकें निर्धारित कि जाती हैं। पाठ्यचर्या के आधार पर मूल्यांकन कार्य सरल हो जाता है। पाठ्यचर्या विशेष कर प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर समाजोपयोगी उत्पादन कार्य एवं कार्यानुभव पर बल देकर शिक्षा को जीवन से जोड़ती है। इन सब कारणों से पाठ्यचर्या आवश्यक है। पाठ्यचर्या की विशेषताओं या महत्व को इस प्रकार से समझा जा सकता है।

1. **शिक्षक के लिए महत्व** - पाठ्यचर्या से शिक्षक को अपने शिक्षणके स्वरुप का निर्धारित करने, शिक्षण का संचालन करने तथा छात्रों की उपलब्धियों को जानने का अवसर प्राप्त होता है। पाठ्यचर्या से शिक्षक अपनी शिक्षण विधि का चयन करने में समर्थ होता है और छात्रों का उचित प्रकार से मार्गदर्शन करने में समर्थ होता है।

2. **शिक्षार्थियों के लिए महत्व** – शिक्षार्थी को इससे अपने शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने में मदद मिलती है। छात्रों को पाठ्यचर्या से पूर्व तैयारी का अवसर मिलता है तथा वे यह जानने में समर्थ होते हैं कि अमुख विषयों में कितना तथ्य पढ़ना है? अर्थात् पाठ्यचर्या के आधार पर शिक्षार्थी अपनी अध्ययन योजना बनाते हैं तथा उस पर चलकर सफलता की प्राप्ति करते हैं।

3. **समाज के लिए महत्व-** पाठ्यचर्या से समाज को भी लाभ पहुँचता है। समाज पाठ्यचर्या द्वारा नवीन मंतव्यों को जानता है तथा उसके अनुरूप अपनी जीवन शैली एवं मान्यताओं को समय के साथ बदलता जाता है। पाठ्यचर्या से ही समाज में पारस्परिक मान्यताओं के स्थान पर परिवर्तित मान्यताओं का दिग्दर्शन होता है। कारण यह है कि विद्यालयी जीवन में पाठ्यचर्या में निहित नवीन मान्यताओं एवं तथ्यों को सीखने के बाद जब बालक विद्यालयी जीवन से निकलकर सामाजिक जीवन में पदार्पण करता है तो वह समाज को कुछ नवीनता युक्त मंतव्य देता है जब इसका व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार हो जाता है तो वह नवीन आयाम, तथ्य, विचार, मान्यता, मूल्य के साथ मिलकर उस आदर्श समाज का अभिन्न अंग बन जाता है। इस प्रकार पाठ्यचर्या समाज के लिए भी उपयोगी है।

4. **सांस्कृतिक उन्नयन हेतु महत्व-** समाज एवं संस्कृति के उन्नायक तत्वों को पाठ्यचर्या में स्थान दिया जाता है। यह तत्व शिक्षा एवं समाज दोनों के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। पाठ्यचर्या के सांस्कृतिक मूल्यों की सीख प्राप्त करके विद्यार्थी अपनी संस्कृति एवं सभ्यता की विशिष्टता, उसकी मौलिकता, करणीय एवं अकरणीय कर्तव्यों, जीवनदर्शों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। कालान्तर में ऐसे बालक ही विद्यालय से निकलकर अपनी सृजनात्मक प्रतिभा द्वारा सांस्कृतिक विरासत की रक्षा तथा उसके उन्नयन हेतु समर्पित होकर कार्य करते हैं।

5. **अवबोध के विकास हेतु महत्व-** विद्यालय में बालक विविध विषयों का जब अध्ययन करता है एवं विविध पाठ्य सहगामी क्रियाओं में हिस्सा लेता है तथा अध्ययन के द्वारा पाठ्यचर्या से तरह-तरह के अनुभव अर्जित करता है तो इससे उसकी अंतर्दृष्टि (बोध) प्रखर बनती है और उसमें अवबोध (समझदारी) का प्रकटन होता है।

1.5 पाठ्यचर्या का अधिगमकर्ता के साथ सम्बन्ध

पाठ्यचर्या छात्र और अध्यापक दोनों के लिए अति महत्तवपूर्ण अंग होती है। यह छात्र के व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक होती है। इससे छात्र समाजीकरण की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए तैयार

हो जाते हैं। पाठ्यचर्या यह निश्चित करने के लिए भी महत्तवपूर्ण है कि विभिन्न मानसिक स्तर के विद्यालयों में पढ़ने वाले बालकों के उनके मानसिक स्तर के अनुकूल कौन सी क्रियाएँ सिखाना है और कौन सी नहीं ? यह छात्रों को समुचित पुस्तकों के निर्धारण एवं चयन में सहायक होती है। इससे छात्रों को अपना मूल्यांकन कार्य करने में सरलता होती है। यह छात्रों को समाजोपयोगी उत्पादन कार्य और कार्यानुभव पर बल देकर शिक्षा को जीवन से जोड़ने के लिए प्रेरित करती है। इससे क्या पढ़ाना है? क्या सिखाना है? क्या कार्यानुभव देना है? यह शिक्षक ज्ञात कर सकते हैं। इससे छात्र और अध्यापक दोनों को सही दिशा बोध कराने से समय और शक्ति की बचत हो जाती है यह अधिगम हेतु सही समय का निर्धारण करने में उपयोगी होती है। इससे बालकों की मनोवैज्ञानिक आवश्कता की पूर्ति होती है। पाठ्यचर्या के निर्माण एवं क्रियान्वयन में अध्यापक का विशेष महत्व है। पाठ्यचर्या शिक्षा प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षा के उद्देश्य तभी पूरे होते हैं जबकि पाठ्यचर्या का निर्माण तथा क्रियान्वयन प्रभावपूर्ण ढंग से होता है और यह निर्माण तथा क्रियान्वयन प्रभावपूर्ण ढंग से तभी हो सकता है जबकि अध्यापक और छात्र सजग एवं जागरूक हों और उत्साह तथा लगन के साथ इस कार्य में भाग लें। आदर्श पाठ्यचर्या तो वह है जो प्रत्येक छात्र का सर्वांगीण विकास कर सके परन्तु ऐसे पाठयचर्या का निर्माण अभी तो कोरी कल्पना है। यह कार्य तभी संभव है जबकि प्रत्येक अध्यापक प्रत्येक छात्र के लिए अलग-अलग पाठयचर्या का निर्माण करे। वैसे विकसित देशों में इस प्रकार के प्रयास किये जा रहे हैं, जिनमे शिक्षा तथा पाठयचर्या बाल केन्द्रित हो। कहने का आशय यह है कि बालक की रुचियों, अभिरुचियों तथा शक्तियों के विकास के लिए अधिक से अधिक अवसर प्राप्त हों। हमे इस प्रकार की पाठ्यचर्या के निर्माण एवं क्रियान्वयन के प्रति सजग रहना होगा।

1.6 सारांश

पाठ्यचर्या के निर्माण एवं क्रियान्वयन में सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का अभूतपूर्व योगदान रहता है। पाठ्यचर्या एक ऐसी धुरी के रूप में है जिसके चारो ओर कक्षा के विविध कार्य तथा विद्यालय के समस्त क्रियाकलाप विकसित किये जाते हैं।पाठ्यचर्या विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था का केंद्र बिंदु है। विद्यालय में उपलब्ध सभी संसाधन जैसे- विद्यालय भवन, विद्यालय के अन्य उपकरण, पुस्तकालय की पुस्तकें तथा अन्य शिक्षण सामग्री का एक मात्र उद्देश्य पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन में सहयोग देना है। कक्षा की समस्त क्रियाएं, पठ्यसहगामी क्रियाकलाप तथा मूल्यांकन की समस्त प्रक्रिया विद्यालयी पाठ्यचर्या के परिणामस्वरुप ही नियोजित की जाती हैं। पाठ्यचर्याशिक्षा का आधार है। पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है। यह एक ऐसा साधन है जो छात्र तथा अध्यापक को जोड़ता है। अध्यापक पाठ्यचर्या के माध्यम से छात्रों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास के लिए प्रयास करता है। पाठ्यचर्या द्वारा छात्र को जीवन जीने की शिक्षा प्राप्त होती है। इससे अध्यापकों को दिशा-निर्देश प्राप्त होते हैं। छात्रों के लिए लक्ष्य निर्धारित होने से उनमे एकाग्रता आती है। वे

नियमित रहकर कार्य करते हैं। पाठ्यचर्या एक प्रकार से अध्यापक के पश्चात् छात्रों के लिए दूसरा पथ प्रदर्शक है। पाठ्यचर्या में किसी भी कक्षा के निहित विषयों के साथ-साथ स्कूल के समस्त कार्यक्रम आते हैं। पाठ्यचर्या में शिक्षण के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों पक्ष शामिल होते हैं। शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था पाठ्यचर्या पर केन्द्रित होती है। पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। शिक्षक और शिक्षार्थी पाठ्यचर्या को केंद्र में रख कर विचारों के आदान-प्रदान द्वारा किसी चीज को सीखते हैं तथा व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं। अंत में हम कह सकते हैं कि पाठ्यचर्या किसी भी विद्यालय की व्यवस्था का मूल आधार होती है।

1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. सत्य
2. अरस्तू
3. राबर्ट यूलिच
4. पाठ्यचर्या ,पाठयचर्या
5. यूनेस्को की रिपोर्ट
6. क्रो और क्रो
7. फ्रांसिस जे० ब्राउन

1.8 संदर्भ-ग्रन्थ

1. Crow, I.D, Alice Crow (1962), Introduction of Education, EurasiaPublishing House, New Delhi.
2. Spears, H (1953), Some Principles of Teaching,Prentice Hall, New *York.*
3. Saler and others (1956), Curriculum Planning for Better Teaching and learning,Rinehart, NewYork.
4. माथुर, एस०.एस० (1981), शिक्षण कला, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. मिश्र, आत्मानन्द(1985), शिक्षण कला, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
6. पाल एस० के० एवं अग्रवाल, के० एल० (1995), शिक्षा के सामान्य सिद्धांत,वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर।

1.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठ्यचर्या कि संकल्पना से आप क्या समझते हैं?

2. पाठ्यचर्या और पाठयचर्या में क्या अंतर है?
3. आपके अनुसार पाठ्यचर्या कि सबसे अच्छी परिभाषा किसकी है और क्यों?
4. विद्यालय के लिए पाठ्यचर्या का क्या महत्व है? यह विद्यालय को किस प्रकार अधिगम अनुभव आयोजित करने में सहायता प्रदान करती है ,चर्चा कीजिए।
5. पाठ्यचर्या का छात्रों के लिए क्या महत्व है? विस्तार से चर्चा कीजिए।

इकाई 2 पाठ्यचर्या के प्रकार

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 पाठयचर्या का अर्थ
2.4 पाठयचर्या के उद्देश्य
2.5 पाठयचर्या के प्रकार
2.6 सारांश
2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.8 सन्दर्भग्रन्थ
2.9 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

पाठयचर्या की प्राचीन अवधारणा में तथ्यों के ज्ञान की सीमा निश्चित करना सम्मिलित था। समाज की भौतिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा शास्त्री विद्यालयी विषयों में देश, काल, समय की आवश्यकता के अनुसार सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में शिक्षा के लक्ष्य निर्धारित करते हैं। शिक्षक शिक्षा शास्त्री द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पाठयचर्या के माध्यम से मूर्त रूप देता है। निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सुनियोजित व्यवस्था को पाठयचर्या कहा जा सकता है। पाठयचर्या लक्ष्यों को प्राप्त करने का एक साधन मात्र है। निश्चित पाठयचर्या के अभाव में लक्ष्यों की प्राप्ति असम्भव है।

किसी भी पाठयचर्या की वैज्ञानिकता एवं उसके उद्देश्यों को जानने के पश्चात हमें यह निर्णय करना होता है कि उसके उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कौन सी और कितनी विषय वस्तु पढ़ाई जानीचाहिए, साथ ही इस विषय वस्तु का चयन एवं संगठन किस प्रकार किया जाए जिससे हमारे लक्ष्य की प्राप्ति हो सके।

पाठयचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है। यह एक ऐसा साधन है जो छात्र तथा अध्यापक को जोड़ता है। अध्यापक पाठयचर्या के माध्यम से छात्रों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास के लिए प्रयास करता है। पाठयचर्या द्वारा छात्रों को "जीवन" कला में प्रशिक्षण के अवसर मिलते हैं अध्यापकों को दिशा निदर्शन प्राप्त होता है। छात्रों के लिए लक्ष्य निर्धारित होने से उनमें एकाग्रता आती है। वे नियमित रहकर कार्य करते

हैं। पाठयचर्या एक प्रकार से अध्यापक के पश्चात छात्रों के लिए दूसरा पथ-प्रदर्शक है। पाठयचर्या में पाठयचर्या विषयों के साथ-साथ स्कूल के सारे कार्यक्रम आते हैं।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

1. पाठयचर्या के अर्थ को समझ सकेंगे।
2. पाठयचर्या के उद्देश्यों को जान पाएगें।
3. पाठयचर्या के प्रकारों की व्याख्या कर पाएगें।

2.3 पाठयचर्या का अर्थ (Meaning Of Curriculum)

कुरीकुलम शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एक शब्द क्यूरे Currere से हुई है जिसका अर्थ है Race Course दौड़ का मैदान। इस प्रकार पाठयचर्या वह दौड़ का मैदान है, जिस पर विद्यार्थी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ता है।

पाठयचर्या की आधुनिक अवधारणा के अन्तर्गत हम कह सकते हैं कि किसी भी कक्षा शिक्षण के अन्तर्गत सैद्धान्तिक और क्रियात्मक दोनों प्रकार का ज्ञान एक निश्चित सीमा में छात्रों को दिया जाता है। उसे पाठयचर्या कहते हैं।

मुनरो के अनुसार-'' पाठयचर्या में वे समस्त अनुभव निहित है जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लिया जाता है"

"Curriculum embodies all the experiences which are utilized by the school to attain the aim of education." **Munroe**

माध्यमिक शिक्षा आयोग- '' पाठयचर्या का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है जो विद्यालय में परम्परागत ढंग से पढ़ाए जाते हैं, वरन् इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता निहित है जिसको छात्र विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, वक्रशाप, प्रयोगशाला और खेल के मैदान तथा शिक्षकों एवं शिष्यों के अगणित अनौपचारिक सम्पर्का से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठयचर्या हो जाता है। जो छात्रों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित कर सकता है। और उनके सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग द्वारा बताई गई परिभाषा से आपको स्पष्ट हो गया होगा कि पाठयचर्या का अर्थ मात्र कक्षा शिक्षण से नहीं है अपितु इसका सम्बन्ध सम्पूर्ण क्रियाकलापों से है।

2.4 पाठयचर्या के उद्देश्य Objectives

विद्यालय में विभन्न स्तरो के लिए पृथक पृथक पाठयचर्या का निर्माण किया जाता है। पाठयचर्या निर्धारण के समय कुछ विशेष उद्देश्यों को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है। पाठयचर्या बनाते समय छात्रों केजीवन से सम्बंधित विभिन्न बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाना अति आवश्यक है। एक अच्छे और आदर्श पाठयचर्या में कुछ उद्देश्यों का होना अति आवश्यक है। जैसे-

1. पाठयचर्या ऐसा हो जो कि छात्रों का बहुमुखी विकास कर सके।
2. पाठयचर्या का उद्देश्य छात्रों की रुचियों, क्षमताओं तथा योग्यताओं को जागृत करना हो।
3. पाठयचर्या छात्रों की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास कर सके।
4. पाठयचर्या का उद्देश्य छात्रों में सामाजिक गुणों का विकास करना हो।
5. पाठयचर्या ऐसा होना चाहिए जिससे छात्रों में कर्तव्य पालन की भावना का विकास हो सके।
6. पाठयचर्या का एक मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में प्रजातन्त्र की भावना का विकास करना हो। जिससे वह भविष्य में एक आदर्श नागरिक बन सके।
7. पाठयचर्या का उद्देश्य छात्रों की कल्पना शक्ति, चिन्तन, निर्णयन तथा तक्र शक्ति का विकास करना होना चाहिए।
8. पाठयचर्या ऐसा हो जिससे छात्र अपने जीवन के मूल्यों का निर्माण करना स्वयं सीख सकें।

अतः उपरोक्त के सन्दर्भ में कह सकते हैं कि पाठयचर्या का उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है।

अभ्यास प्रश्न

1. करीकुलम शब्द की उत्पत्ति ________ भाषा के शब्द________ से हुई है।
2. Currere शब्द का अर्थ है ________ ।
3. ________ के अनुसार - '' पाठयचर्या में वे समस्त अनुभव निहित है जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लिया जाता है "
4. पाठयचर्या का उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है।(असत्य/सत्य)
5. एक अच्छे और आदर्श पाठयचर्या के कोई दो उद्देश्य लिखिए

2.5 पाठयचर्या के प्रकार Types Of Curriculum

पाठयचर्या वह शिक्षा धुरी है जिसके द्वारा बालक को नियोजित तरीके से शिक्षक द्वारा अनुसरण किया जाता है। विद्यालय में शैक्षिक अनुभवों को चुनने एवं कार्यान्वित रूप में लाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से उन सीखने की क्रियाओं को शिक्षक द्वारा अनुसरण किया जाता है। पाठयचर्या

पाठ्यचर्या निर्माण

आयोजन वह संरचना एवं ढांचा है जिसको अपनाकर अनुभवों के आधार पर निर्मित किया जाता है। पाठयचर्या को निम्न प्रमुख प्रकारों के द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।-

1. कोर पाठयचर्या
2. समेकित पाठयचर्या
3. सैद्धान्तिक पाठयचर्या
4. क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या
5. पुनर्संरचनात्मक पाठयचर्या

कोर पाठयचर्या

कोर पाठयचर्या वह है जिसमें बालक को कुछ विषय अनिवार्य रूप से पढ़ने होते हैं। तो कुछ विषयों का विविध विषयों में से चुनाव करना पड़ता है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कोर पाठयचर्या को अधिक महत्व दिया है। पाठयचर्या इस बात पर बल देता है कि विद्यालय अधिक सामाजिक दायित्वों को ग्रहण करे और सामाजिक रूप से कुशल क्षमतावान कर्तव्यपरायण व्यक्तियों का निर्माण करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में वर्णित है कि हमारा भारतीय समाज अनेक वगाक्रं, सम्प्रदायों, जातियों, संस्कृतियों, सभ्यताओं, प्रथाओं, मान्यताओं,भौगोलिक स्थितियों तथा विविध भाषाओं में बटा हुआ है। इसलिए पाठयचर्या का सृजन स्थानीय भाषायी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। कुछ विषय अनिवार्य एवं कुछ क्षेत्रीयता या भाषायी विषयों ऐच्छिक रूप में होना चाहिए। जिससे हम अपने भारतीय समाज में कर्तव्यनिष्ठ एवं परिश्रमी व्यक्तियों का निर्माण कर सके। इसके द्वारा हमारे समाज में व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओं का अन्त हो सके। कोर पाठयचर्या व्यक्ति को सामाजिक जीवनयापन करने पर जोर देता है। कोर पाठयचर्या बालक के सामान्य विकास पर केन्द्रित है। इसलिए भारतीय समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कुछ विषयों को ध्यान में रखना जरूरी है। जैसे लोकतंत्र, भारतीय स्वतंत्रता का इतिहासत्र सभी वगाक्रं में समानता, स्थानीय भाषाओं का ज्ञान, सामाजिक समता, धर्म निरपेक्षता, पर्यावरण संरक्षण,जनसंख्या, मानवाधिकार, संस्कृति एवं सभ्यता, राष्ट्रीयता की भावना को ध्यान में रखकर अनिवार्य एवं ऐच्छिक विषय का चयन किया जाना चाहिए। क्योंकि कोर पाठयचर्या उपयोगिता की दृष्टि से पाठयचर्या का एक अहम हिस्सा बन चुका है। इसका प्रमुख कारण आधुनिक युग की सामाजिक अव्यवस्था है। हमें बालक को विद्यालय में सामाजिक दायित्वों को ग्रहण कराना है, जिससे वह कुशल व्यक्तियों का निर्माण करें। शिक्षण में एक मुख्य पाठयचर्या अथवा अध्ययन का कोर्स होता है। जिसकी भूमिका को केन्द्रीय माना जाता है तथा जिसे आमतौर पर एक स्कूल या स्कूल पद्धति के सभी छात्रों के लिए अनिवार्य रूप् से लागू किया जाता है। हालांकि हमेशा ऐसा नहीं होता है। उदाहरण के लिए कोई स्कूल संगीत संबंधी कक्षा को अनिवार्य कर सकता है। लेकिन छात्र यदि आकक्रस्टा, बैंड, कोरस जैसे किसी प्रदर्शन करने वाले समूह में भाग लेते हैं तो इससे बाहर रहने का चुनाव कर सकते हैं। प्रमुख कोर पाठयचर्या को अक्सर प्राथमिक तथा माध्यमिक सतर पर स्कूली

बोर्ड, शिक्षा विभाग या शिक्षा का कार्य देखने वाली अन्य प्रशासनिक संस्थाओं द्वारा स्थापित कर दिया जाता है।

प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में कोर पाठयचर्या

संयुक्त राज्य अमेरिका में कॉमन कोर स्टेट स्टैंडर्ड इनीशिएटिव एक सरकार पहल राज्यों को एक प्रमुख पाठयचर्या अपनाने और उसका विस्तार करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इस समन्वय का उद्देश्य राज्यों समान पाठ्यपुस्त्कों के अधिक उपयोग और न्यूनतम स्तर की शिक्षा प्राप्ति में और अधिक समानता को बढ़ावा देना है। 2009-2010 में राज्यों को इन मानकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहन के रूप् में संघ के रेस टू दी टॉप कार्यक्रम से धन मुहैया करवाने की संभावना का आश्वासन दिया गया।

उच्च शिक्षा में कोर पाठयचर्या - कई कॉलेज और विश्वविद्यालय प्रशासन एवं फैकल्टी कभी-कभी स्नातक स्तर पर कोर पाठयचर्या को अनिवार्य कर देते हैं। विशेष रूप् से लिबरल आर्ट्स में छात्रों द्वारा अध्ययन किए जा रहे प्रमुख विषयों की गहराई तथा अधिक विशेषज्ञता के कारण उच्च शिक्षा के एक सामान्य कोर पाठयचर्या में हाईस्कूल अथवा प्राथमिक स्कूल की अपेक्षा छात्रों के अध्ययन संबंधी कार्यों को काफी कम मात्रा में निर्धारित किया जाता है।

इसके अलावा जैसे -जैसे बीसवीं सदी में कई अमेरिकी स्कूलों के कोर पाठयचर्या में कमी आने लगी, कई छोटी संस्थायें ऐसे कोर पाठ्यकम अपनाने के लिए तैयार हो गई जिनमें छात्रों की लगभग पूरी स्नातक शिक्षा को समाहित किया जाता था। संयुक्त राज्य अमेरिका का सेंट जॉन कॉलेज इस दृष्टिकोण का एक उदाहरण है।

उद्देश्य

1. **कोर पाठयचर्या का परम उद्देश्य (Ultimate goal of Core Curriculum)** व्यक्तिगत गणना और नागरिक जीवन में शामिल होने के लिए तैयारी के रूप में, उदार कला शिक्षा के शास्त्रीय आदर्श में एक संबंधों के साथ अन्य आधुनिक क्षेत्रों के लिए प्रशिक्षण के आदर्श और अधिक बाल केन्द्रित हों। विषयों में कोर पाठयचर्या के प्राथमिक उद्देश्य के विषयों के लिए एक सामान्य परिचय नहीं होना चाहिए। लेकिन एक परिचय का प्रस्ताव विषयों की सहूलियत अंक-दुनिया में जो हमारे छात्रों को सेवा के लिए कहा जाता है। इतिहास में कोर पाठयचर्या का मुख्य उद्देश्य है अपने परिणाम विधियों और दृष्टिकोण जो छात्रों को ऐतिहासिक एजेंट के रूप में भाग लेने के लिए कहा जाता है।वर्तमान गठन की जांच उन विचारां, विषयों, संस्थाओं और प्रथाओं कि दोनों की पहचान और समाज की निवास के आकार का है।

यदि दर्शन में एक कोर पाठयचर्या देखें तो दार्शनिकों का मन लगे हुए मिश्रण में जा सकते हैं। एक सेमेस्टर के दर्शन में परिचयात्मक पाठयचर्या भाषाई संदर्भ, ट्रांस दुनिया पहचान के मॉडल समस्या, अवधारणात्मक चेतना की प्रारंभिक आधुनिक सिद्धान्तों के कारण सिद्धान्तों को उद्देश्य बनाया जा सकता है।

मुख्य पाठयचर्या के उद्देश्य के रूप में यह एक शिक्षा के व्यापक लक्ष्य तथा लोगों को प्रभावी ढंग से समकालीन समाज में रहने के लिए सक्षम होने के लक्ष्य से सम्बन्धित है। एक प्रमुख उद्देश्य हमारे छात्रों को अपने चुने हुए पेशे में जीवन जीने के लिए सक्षम होना चाहिए। यह उन्हें इतिहास, संरचना, विषयों, मद्दों और भीतर और व्यावहारिक जीवन के इन विभिन्न लोगों के बीच बातचीत की एक बुनियादी समक्ष के साथ प्रदान करना होना चाहिए। यह छात्रों में व्यापक प्रसार तथा प्रतिक्रिया करने के लिए तैयार करना सुनिश्चित करता है।

2. **पाठयचर्या का आसन्न उद्देश्य (Proximate Purpose of Core Curriculum)**
अच्छी तरह से डिजाइन एक कोर पाठयचर्या के लिए संरचनात्मक प्रयोजनों के अध्ययन का एक अनुशासनात्मक प्रसाद का एक संग्रह व्यावहारिक प्रासंगिकता की कसौटी द्वारा ही प्रभावी हो सकता है।

कोर पाठयचर्या के आसन्न प्रयोजनों के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. शैक्षणिक कार्य के प्रारंभिक दौर में आश्वस्त करना कि छात्रों को उनके बाद के अध्ययनों में प्रगति बनाने के लिए अच्छी तरह तैयार कर रहे है। इस अर्थ में मुख्य पाठयचर्या मूलभूत होगा।
2. एकीकृत मानदण्ड स्थापित करना कि विषयों से प्राप्त ज्ञान को विशेष रूप् से सम्बन्धित कर सकें। इस अर्थ में मुख्य पाठयचर्या प्रासंगिक होगा।
3. एक शैक्षणिक समुदाय है कि विभाग के प्रमुख या कार्यक्रम के दायरे से परे फैली शताक्र को बनाने के लिए इस अर्थ में मुख्य पाठयचर्या केन्द्रीय होगा।
4. यह कोर के अध्ययन के क्रम में अनुक्रमण प्रदान करते हैं। कि यह महत्वपूर्ण विषयों और कौशल विकास में छात्रों के स्तर के अनुसार बौद्धिक परिपक्वता के निर्माण पाठ्यक्रमों के साथ मुख्य पाठयचर्या सम्बद्ध हो जाएगा।

हम ज्ञान, कौशल और गुण के व्यापक क्षेत्रों में कोर पाठयचर्या की सामग्री विभाजित करते हैं। शैक्षणिक समुदाय बनाने के लिए और बड़े पैमाने पर पाठयचर्या को कोर पाठयचर्या की सम्पन्नता के लिए कोर पाठयचर्या में इन तत्वों की भूमिका पर मुख्य पाठयचर्या के प्रस्ताव में काम किया गया है। कोर पाठयचर्या की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं-

- इससे शिक्षण समस्या केन्द्रित होता है तथा छात्रों एवं समस्याओं को हल करने का अनुभव प्राप्त होता है।
- इसमें विषय वस्तु की पारम्परिक विभाग एवं खण्ड समाप्त कर दिए जाते हैं तथा कई विषयों को एक साथ मिलाकर पढ़ाया जाता है।
- यह पाठयचर्या सभी छात्रों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयास करता है।
- इसमें समय विभाग चक्र लचीला होता है। तथा कालांश बड़े होते हैं।
- इसमें छात्रों में शिक्षकों के सम्बन्ध अधिक घनिष्ठ होते हैं तथा अध्ययन अध्यापन के साथ-साथ परामर्श भी चलता है।
- यह पाठयचर्या मनोवैज्ञानिक एवं बाल केन्द्रित होता है।
- इसमें विभिन्न प्रकार के अधिगम अनुभव प्रयुक्त किए जाते हैं।
- इसके अंतर्गत व्यापक निदक्रशन कार्यक्रम की व्यवस्था रहती है।
- यह पाठयचर्या सबसे अधिक प्रचलित है।

समेकित पाठयचर्या Inclusive Curriculum

बीसवीं शताब्दी में मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनेक नये प्रयोग हुए तथा अधिगम के अनेक सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए इस प्रकार के वाद के अनुसार मस्तिष्क एक इकाई है। मस्तिष्क ज्ञान को छोटे-छोटे टुकड़ों में प्राप्त नहीं करता है। बल्कि उसे पूर्ण रूप में ग्रहण करता है। वही वस्तु या विचार मस्तिष्क में स्थिर होता है। जो पूर्ण अर्थ देता है।

इन मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अमेरिकी विद्यालयों में एकीकृत पाठयचर्या का विकास हुआ। एकीकृत पाठयचर्या एकीकरण के सिद्धान्त पर आधारित है जिसके अनुसार कोई विचार तथा क्रिया तभी प्रभावशाली एवं उपयोगी होती है। जब उसके विभिन्न भागों या पक्षों में एकता होती है। अतः एकीकृत पाठयचर्या से हमारा तात्पर्य उस पाठयचर्या से है जिसमें उसके विभिन्न विषय एक दूसरे से इस प्रकार सम्बन्धित होते हैं कि उनके बीच कोई अवरोध नहीं होता, बल्कि उनमें एकता होती है। इस प्रकार पाठ्यक्रमों के विभिन्न विषयों के ज्ञान को विभिन्न खण्डों में प्रस्तुत न करके सब विषय मिलकर ज्ञान को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य बालकों को ज्ञान की एकता से परिचित कराना है। यह उद्देश्य विषयों को अलग-अलग रूप में पढ़ाने से पूर्ण नहीं हो सकता अर्थात यह कार्य तभी सम्पन्न हो सकता है, जब विषयों को एक दूसरे से सम्बन्धित करके पढ़ाया जाये। इसके लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न विषयों को इस प्रकार परस्पर सम्बन्धित किया जाए कि उनके बीच किसी प्रकार क़ी दीवार न हो। यह दायित्व शिक्षक का ही है। वह पाठयचर्या के सभी विषयों को सम्बन्धित करे, पाठयचर्या की सामग्री का

जीवन से सम्बन्ध स्थापित करे ताकि प्रत्येक विषय-सामग्री में भी सह-सम्बन्ध स्थापित करे। इस प्रकार जो पाठयचर्या उक्त सभी प्रकार के सम्बन्धों से युक्त हो, उसे ही ''एकीकृत पाठयचर्या '' की संज्ञा दी जाएगी।

इस प्रकार का पाठयचर्या उन अनुभवों को देता है जिन्हें एकीकरण की प्रक्रिया के लिए सुविधाजनक समझा जाता है। तथा जिससे बालक उस पाठ्यवस्तु को सीखते है जो अनुभवों को समझने में एवं उनके पुनर्निमाण में सहायक होती है।

उद्देश्य इस पाठयचर्या के उद्देश्य इस प्रकार हैं-

- इस पाठयचर्या की सफलता के लिए शिक्षक को पर्याप्त एवं व्यापक अध्ययन की आवश्यकता होती है।
- इसमें बालकों को जीवनोपयोगी शिक्षा मिलती है।
- इसके माध्यम से छात्र विभिन्न विषयों का ज्ञान एक साथ प्राप्त करते हैं।
- इस पाठयचर्या में ज्ञान को समग्र रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- इस पाठयचर्या में शिक्षकों का उत्तरदायित्व एवं कार्यभार बढ़ जाता है।
- इस पाठयचर्या का उद्देश्य पाठयचर्या को अनुभव केन्द्रित बनाना होता है।
- इसमें छात्रों की रुचियों को महत्व दिया जाता है।
- इसमें छात्रों के पूर्व ज्ञान से नवीन ज्ञान को सम्बंधित करने में आसानी होती है।
- इस पाठयचर्या का उद्देश्य बालकों को ज्ञान की एकता से परिचित कराना है। यह उद्देश्य विषयों को अलग-अलग पढ़ाने से पूर्ण नहीं हो सकता अर्थात यह कार्य तभी सम्पन्न हो सकता है जबकि विषयों को एक दूसरे से सम्बन्धित करके पढ़ाया जाये।

सैद्धान्तिक पाठयचर्या (Theoretical Curriculum)

यह पाठयचर्या में एक निश्चित सवाल ''क्या एक पाठयचर्या है'' और ''कैसे पाठयचर्या में अस्तित्व आता है'' यह ज्ञान की प्रबोधक स्थानान्तरण के सिद्धान्त को एक परिचय के रूप में करने का कार्य करता है। यह शिक्षात्मक सिद्धान्त के Aforementioned केन्द्रीय समस्याओं की भावना बनाने की कोशिश करता है।

''एक पाठयचर्या क्या है'' पाठयचर्या और पाठयचर्या विकास के सामाजिक गतिविधि की धारणा में पहला सवाल है ''एक पाठयचर्या क्या है?'' इस सवाल पर सावधानी से विचार पूर्ण तक्र के लायक है, प्रबोधक सिद्धान्त।

इस शिक्षण प्रणाली में यह एक भाग की बात नहीं करता है। यह केवल शिक्षकों को शामिल नहीं करता और छात्रों की टेक्स्ट बुक्स और होमवर्क से बहुत आगे है। किसी भी सामाजिक संस्था की

तरह यह एक पूर्ण रूप में समाज के साथ अपने संबंधों के रख रखाव के लिए भाग लेने के लिए तद्नुसार यह एक हिस्सा उचित शिक्षण व्यवस्था के बीच संबंध की देखरेख में एक विशेषज्ञ की तरह कार्य करता है। यह सामाजिक जीवन के एक सामान्य आवश्यकता है। जो कोई भी संस्था प्राप्त कर सकती है।

सैद्धान्तिक पाठ्क्रम के गठन के सवाल पर तीन प्रकार के परिवर्तन आमतौर पर लागू किया जाना चाहिए। ठोस पाठयचर्या का एक मिश्रण के परिणामों, कारकों तथा इसके विपरीत पाठयचर्या विकास दोनों एक सिद्धान्त और एक सामाजिक आदर्शों के साथ एक निश्चित सीमा तक सामाजिक परिवर्तन के अधिकार को स्वीकार्य करते हैं।

इस संदर्भ में सैद्धान्तिक शिक्षा की ओर व्यक्तिगत समग्र बुद्धि का मतलब संज्ञानात्मक, रचनात्मक, सौन्दर्य, नैतिकता, एकीकरण और मानवीय लक्ष्यों और इंसान के व्यावसायिक आयाम जो लोगों के विकास की समकालीन बाधाओं को पार कर सकते हैं , इस पाठयचर्या के लिए केन्द्रीय है।

छात्रों को विकसित करने के लिए स्वतंत्र है। और स्वयं अपना निर्धारण करने में सक्रिय है। व्यक्तिगत समस्याओं, विकास का स्तर लक्ष्यों, अंतर का आधार पर पाठयचर्या अवधारणाओं का निर्धारण करने में उपयुक्त है।

उद्देश्य - इस पाठयचर्या के उद्देश्य निम्न लिखित हैं-

- यह पाठयचर्या शिक्षा के प्रति परम्परागत तथा सैद्धान्तिक दृष्टिकोण रखता है। इसमें आदर्श जीवन के सिद्धान्त एवं नैतिक जीवन के सैद्धान्तिक रूप् से सम्बन्धित करके उसके विकास पर बल दिया जाता है।
- प्राचीन काल के स्कूलों तथा भरतीय गुरुकुलों ने इस पाठयचर्या का सूत्रपात किया तथा इसके अंतर्गत भाषाओं, दर्शन, ज्योतिष, गणित, व्याकरण, अध्यात्मशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र आदि विषयों पर अधिक ध्यान दिगा।
- इस प्रकार के पाठयचर्या का आज भी प्रचलन है परन्तु दिन-प्रतिदिन इसकी उपयुक्तता पर प्रश्न चिन्ह लगता जा रहा है। अतः इसकी उपयुक्तता धीरे-धीरे कम होती जा रही है।
- इसके अन्तर्गत व्यक्ति, व्यक्ति के सम्बन्धों, सामूहिक सम्बंधों तथा अंतः सामूहिक सम्बंधों के विकास से सम्बंधित स्थितियों को सम्मिलित किया जाता है। जिससे सामाजिक सहभागिता के विकास को सैद्धान्तिक पाठयचर्या से जोड़ा जा सके।
- इसके अन्तर्गत स्वास्थ्य, बौद्धिक शक्ति, सौन्दर्यात्मक अभियक्ति, मूल्यांकन तथा नैतिक शक्तियों के विकास से सम्बंधित स्थितियों को स्थान दिया जाता है।
- इस पाठयचर्या के अंतर्गत स्वास्थ्य, नागरिकता, व्यावसाकि ज्ञान, गृहसदस्यता तथा अवकाशकालीन क्रियोओं को विशेष महत्व दिया जाता है।

- वातावरण से सम्बंधित कारणों एवं शक्तियों के प्रतिक्रिया क्षमता से सम्बंधित स्थितियां जैसे प्राकृतिक घटनाओं, प्रौद्योगिकी से प्राप्त साधनों, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्थितियों को स्थान दिया जाता है।
- यह पाठयचर्या बालकों की तात्कालिक आवश्यकताओं एवं हितों पर आधारित है। ये आवश्यकतायें एवं हित जीवन की स्थायी स्थितियों के क्षेत्र में निहित है।

क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या - Activity Based Curriculum

पाठयचर्या के विभिन्न प्रकारों में क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या भी विशेष महत्व रखता है।शैशवास्था में बालक क्रिया प्रधान कार्य करके शिक्षा प्राप्त करने में विशेष रुचि लेता है। अतः प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या का निर्माण किया जाता है। जिससे बालक में क्रियात्मकता, सृजनात्मकता का विकास किया जा सके। क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या क्रिया या कार्य को आधार बनाता है। इसके अंतर्गत कक्षा कार्य के लिए अन्तर्वस्तु का चयन शिक्षार्थियों की अभिरुचियों, आवश्यकताओं, समस्याओं तथा अनुभव के आधार पर किया जाता है।यह पाठयचर्या विषय आधारित पाठयचर्या की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप् विकास में आया है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका सूत्रपात प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री पेस्टालॉजी तथा रूसो ने किया है। परन्तु इसके वास्तविक प्रणेता प्रसिद्ध अमेरिकी शिक्षाविद् जॉन डीवी थे। डीवी ने जो शिक्षा योजना अपने प्रयोगत्मक विद्यालय में कार्यान्ति की उसे विषय या अंतर्वस्तु पर आधारित करने के स्थान पर उसमें बालकों की चार प्रमुख अभिवृत्तियों को अवसर प्रदान किए-

i. सामाजिक

ii. रचनात्मक

iii.गवेष्णात्मक एवं प्रयोगात्मक

iv.अभिव्यक्तिजन्य तथा कलात्मक

संयुक्त राज्य अमेरिका में इस दिशा में विशेष प्रयास हुए। इस दिशा में एच0जी0 केशबेल ने नेतृत्व प्रदान किया। इन्होंने हरबर्ट स्पेन्सर द्वारा प्रतिपादित पाँच जीवन क्षेत्रों (आत्मरक्षा जीवन सुरक्षा, वंश वृद्धि एवं शिशुपालन, सामाजिक एवं राजनैतिक अवकाश का उपयोग) से प्रेरणा लेकर इन जीवन क्षेत्रों का समन्वय इस पाठयचर्या से किया

इस प्रकार क्रिया प्रधान पाठयचर्या में बालकों के लिए ऐसे कार्यों का आयोजन किया जाता है। जिनका कुछ सामाजिक मूल्य हो तथा जो उनके सर्वांगीण विकास में सहायक हो। इन कार्यों का चुनाव शिक्षक और छात्रों के परस्पर सहयोग से किया जाता है। तथा इसमें छात्रों की रुचियों एवं आवश्यकताओं का विशेष ध्यान रखा जाता है। डीवी महोदय क्रियाशील पाठयचर्या के प्रमुख समर्थक हैं। उन्होंने बालकों को ऐसे कार्यों द्वारा शिक्षा देने का सुझाव दिया है, जिनके सीखने पर भविष्य में समाजोपयोगी कार्य करने के योग्य बन सके। डीवी महोदय के अनुसार ज्ञान, क्रिया का

परिणाम है न कि उसका मार्गदर्शक। उनके अनुसार क्रिया अथवा कार्य ही ज्ञान का स्रोत है। क्रिया, अनुभव से पूर्व होती है। अतः अनुभव, ज्ञान एवं अधिगम आदि सभी क्रिया के ही परिणाम हैं। इस प्रकार डीवी ज्ञान एवं अनुभव में कोई विशेष अंतर नहीं मानते हैं। उनका मानना है कि ज्ञान अनुभव से प्राप्त होता है। अनुभव क्रिया द्वारा उत्पन्न होता है। इसीलिए इस पाठयचर्या को अनुभव प्रधान पाठयचर्या के नाम से भी जाना जाता है। नन महोदय के अनुसार पाठयचर्या में समस्त मानवजाति के अनुभवों को सम्मिलित करना चाहिए। व्यक्तित्व के विकास के लिए तथा सफल जीवन के लिए वर्तमान अनुभवों के साथ-साथ पूर्व अनुभव भी बहुत अधिक उपयोगी होते हैं।

क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या की विशेषतायें निम्नलिखित हैं-

- क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या अनुभव प्रधान है।
- यह छात्रों को जीवन की व्यावहारिकता से अवगत कराने पर बल देता है।
- इसमें विद्यार्थी प्रमुख है और शिक्षण गौण रूप में विद्यमान होता है।
- इसमें छात्र मस्तिष्क प्रधान होता है।
- क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या करके सीखने पर बल देता है।
- क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या का उद्देश्य छात्र को व्यक्तिगत जीवन की आवश्यकता की व्यवस्था में समर्थ है।
- क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या विद्यार्थी केन्द्रित है।
- इस योजना के अंतर्गत विकसित अधिगम - अनुभवों की इकाईयाँ बालकों के लिए महत्वपूर्ण एवं सार्थक होती हैं।
- इसमें अन्तर्वस्तु का चयन वर्तमान उपयोगिता एवं महत्व को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।
- इसमें शिक्षा के अधिक व्यापक क्षेत्रों को समाहित करना सम्भव होता है, क्योंकि अधिगम-अनुभवों में पर्याप्त विविधता होती है।
- इसमें जीवन की नवीन स्थितियों में अधिगम के उपयोग की पर्याप्त सम्भावनाएँ रहती हैं।
- इस पाठयचर्या में अधिगम अनुभवों की विभिन्न इकाईयों का एकीकरण सुविधाजनक ढंग से किया जा सकता है।
- बालकों की आवश्यकताओं एवं रुचियों पर आधारित होने के कारण इस प्रकार के पाठयचर्या को वे पसंद करते हैं।
- मानव की प्रगति में क्रियाशीलता सर्वाधिक महत्व रखती है। इससे इस पाठयचर्या की उपयुक्तता स्वयंसिद्ध है।

पुनर्संरचनात्मक पाठयचर्या - (Reconstructivistic Curriculum)

विद्यालयों का पाठयचर्या पुस्तकीय ज्ञान पर अधिक बल देता है तथा इसमें व्यावहारिक क्रियाओं एवं अनुभवों को कम महत्व प्रदान किया जाता है। इसके साथ ही पाठ्यक्रम का निर्माण परीक्षा की दृष्टि से किया जाता है। चूँकि भारतीय विद्यालयी पाठयचर्या में कौशलों के विकास तथा उचित अभिरुचियों, अभिवृत्तियों एवं मूल्यों के प्रतिपादन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। अतः यह आधुनिक ज्ञान एवं आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सफल नहीं हो सका है। उनकी तुलना में हमारे देश में इस ओर बहुत ही कम ध्यान दिया गया। अतः भारतीय स्कूली पाठयचर्या को विकसित करने, उसे उन्नत करने तथा उसमें उपयुक्त सुधार करने की नितान्त आवश्यकता है।

पाठयचर्या पुनर्संरचना का प्रथम व्यापक प्रयास गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा के माध्यम से प्रारंभ तो हुआ परन्तु ब्रिटिश काल में कोई प्रभावशाली कार्य न हो सका। इसके अन्तर्गत हस्तकला को केन्द्र मानकर सम्पूर्ण शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया गया। हस्तकला के साथ साथ भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण को भी पाठयचर्या में स्थान दिया गया। अध्ययन के द्वारा विभिन्न विषयों में सह-सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया गया।

वर्तमान पाठयचर्या में निम्न कमियों को बताया गया है-

i. सार्थक अर्न्तवस्तुओं के अभाव के बा भी यह बोझिल है

ii. यह पूर्णतया सैद्धान्तिक तथा पुस्तकीय है।

iii. उसमें व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए व्यवहारिक एवं अन्य क्रियाओं का पर्याप्त समावेश नहीं किया गया है।

iv. इसमें व्यावहारिक विषयों एवं तकनीकि का समावेश नहीं किया गया है। जो देश को औद्योगिक एवं आर्थिक विकास हेतु बालकों को प्रशिक्षित करने के लिए नितान्त आवश्यक है।

v. इसमें किशोरों की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति तथा उनकी क्षमताओं का उपयोग नहीं हो पाता है।

vi. वर्तमान का पाठयचर्या बहुत संकुचित तथा बोझिल है एवं इसमें परीक्षाओं पर अधिक बल दिया जाता है।

अतः माध्यमिक शिक्षा आयोग ने स्वतंत्र लोकतांत्रिक भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रचलित पाठ्यक्र में व्यापक सुधार लाने हेतु कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये। जिनमें से कुछ प्रमुख सुझाव इस प्रकार हैं-

- माध्यमिक स्तर सामान्य पाठयचर्या
- व्यावहारिक तथा तकनीकि शिक्षा की आवश्यकता की पूर्ति हेतु बहुउद्देशीय विद्यालयों की स्थापना।
- शिक्षा की अवधि में परिवर्तन लाने की आवश्यकता।

पाठयचर्या निर्माण हेतु कुछ सिद्धान्तों के अनुपालन पर भी बल दिया गया है-

- विविभता एवं लचीलेपन का सिद्धान्त।
- अनुभवों की पूर्णता का सिद्धान्त।
- सामुदायिक जीवन से सम्बन्ध स्थापित करने का सिद्धान्त।
- विषय वार सम्बन्ध सिद्धान्त।
- सामान्य विषयों के सांमजस्य का सिद्धान्त।

उद्देश्य

माध्यमिक स्तर पर पाठयचर्या का उद्देश्य मानवीय ज्ञान एवं अभिरुचि के व्यापक क्षेत्र के बारे में बालकों को अति सामान्य ढंग से परिचित कराना होता है। यह स्तर विशिष्टता के लिए नहीं होता है, बल्कि इस स्तर पर ज्ञान के व्यापक एवं सार्थक क्षेत्रों से बालकों को सामान्य परिचित कराना चाहिए। इस दृष्टि से मिडिल स्तर के पाठयचर्या में व्यापकता का संक्षिप्त समावेश होना चाहिए। जिससे बालक मानवीय ज्ञान एवं सभ्यता के प्रमुख तत्वों की जानकारी प्राप्त कर सकें तथा बाद में अध्ययन हेतु ज्ञान के विशिष्ट क्षेत्र का चयन कर सके। जिसमें मुख्य उद्देश्य निम्नवत हैं-

- सामान्य विज्ञान का अध्ययन।
- भाषाओं का अध्ययन।
- समाजिक अध्ययन।
- कला एवं संगीत।
- हस्तकला।
- शारीरिक शिक्षा आदि

अभ्यास प्रश्न

5. पाठयचर्या के प्रमुख प्रकारों के नाम लिखिए।
6. ________ पाठयचर्या वह है जिसमें बालक को कुछ विषय अनिवार्य रूप से पढ़ने होते हैं।
7. कोर पाठयचर्या की कोई दो विशेषताएं लिखिए।
8. एकीकृत पाठयचर्या ________ के सिद्धान्त पर आधारित है
9. समेकित पाठयचर्या के कोई दो उद्देश्य लिखिए।
10. केन्द्रित पाठयचर्या की कोई तीन विशेषतायें लिखिए।

2.6 सारांश

पाठयचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है। यह एक ऐसा साधन है जो छात्र तथा अध्यापक को जोड़ता है। अध्यापक पाठयचर्या के माध्यम से छात्रों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास के लिए प्रयास करता है। कुरीकुलम शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एक शब्द क्यूररे Currere से हुई है जिसका अर्थ है Race Course दौड़ का मैदान। इस प्रकार पाठयचर्या वह दौड़ का मैदान है, जिस पर विद्यार्थी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ता है। पाठयचर्या की आधुनिक अवधारणा के अन्तर्गत हम कह सकते हैं कि किसी भी कक्षा शिक्षण के अन्तर्गत सैद्धान्तिक और क्रियात्मक दोनों प्रकार का ज्ञान एक निश्चित सीमा में छात्रों को दिया जाता है। उसे पाठयचर्या कहते हैं।

विद्यालय में विभन्न स्तरो के लिए पृथक पृथक पाठयचर्या का निर्माण किया जाता है। पाठयचर्या निर्धारण के समय कुछ विशेष उद्देश्यों को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है। पाठयचर्या बनाते समय छात्रों केजीवन से सम्बंधित विभिन्न बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाना अति आवश्यक है। पाठयचर्या वह शिक्षा धुरी है जिसके द्वारा बालक को नियोजित तरीके से शिक्षक द्वारा अनुसरण किया जाता है। विद्यालय में शैक्षिक अनुभवों को चुनने एवं कार्यान्वित रूप में लाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से उन सीखने की क्रियाओं को शिक्षक द्वारा अनुसरण किया जाता है। पाठयचर्या आयोजन वह संरचना एवं ढांचा है जिसको अपनाकर अनुभवों के आधार पर निर्मित किया जाता है। पाठयचर्या को निम्न प्रमुख प्रकार हैं -कोर पाठयचर्या , समेकित पाठयचर्या , सैद्धान्तिक पाठयचर्या , क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या , पुनर्संरचनात्मक पाठयचर्या। प्रत्येक पाठयचर्या के अपनी विशेषताऐं एवं उद्देश्य हैं।

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. लैटिन, क्यूररे (Currere)
2. दौड़ का मैदान(Race Course)
3. मुनरो
4. सत्य
5. एक अच्छे और आदर्श पाठयचर्या के कोई दो उद्देश्य हैं –
   i. पाठयचर्या ऐसा हो जो कि छात्रों का बहुमुखी विकास कर सके।
   ii. पाठयचर्या छात्रों की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास कर सके।
6. पाठयचर्या के प्रमुख प्रकारों के नाम हैं –
   i. कोर पाठयचर्या
   ii. समेकित पाठयचर्या

iii. सैद्धान्तिक पाठयचर्या
iv. क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या
v. पुनर्संरचनात्मक पाठयचर्या

7. कोर
8. कोर पाठयचर्या की कोई दो विशेषताएं हैं-
   i. इससे शिक्षण समस्या केन्द्रित होता है तथा छात्रों एवं समस्याओं को हल करने का अनुभव प्राप्त होता है।
   ii. यह पाठयचर्या सभी छात्रों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयास करता है।
9. एकीकरण
10. समेकित पाठयचर्या के उद्देश्य इस प्रकार हैं-
    i. इस पाठयचर्या की सफलता के लिए शिक्षक को पर्याप्त एवं व्यापक अध्ययन की आवश्यकता होती है।
    ii. इसमें बालकों को जीवनोपयोगी शिक्षा मिलती है।
11. केन्द्रित पाठयचर्या की कोई तीन विशेषतायें हैं -
    i. क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या अनुभव प्रधान है।
    ii. यह छात्रों को जीवन की व्यावहारिकता से अवगत कराने पर बल देता है।
    iii. क्रिया केन्द्रित पाठयचर्या विद्यार्थी केन्द्रित है।

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यादव, एस. (2010). *पाठयचर्या विकास*, आगरा: श्री विनोद पुस्तक मंदिर.
2. Agrawal, J.C. (1990). *Curriculum reforms in India.* New Delhi.
3. Bhatt, B.D. and Sharma, S.R. (1992). Principles of Curriculum Construction. New Delhi: Kanishka Publishing House.
4. Dewal, O.S. (2004). National Curriculum. *In Encyclopedia of Indian Education.* New Delhi: NCERT. माथुर, एस०.एस० (1981), शिक्षण कला, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. मिश्र, आत्मानन्द(1985), शिक्षण कला, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

2.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठयचर्या के प्रमुख प्रकारों का वर्णन कीजिए।
2. पाठयचर्या का क्या अर्थ है? पाठयचर्या के विभिन्न उद्देश्यों को लिखिए।

इकाई 3 पाठयचर्या विकास- प्रक्रिया एवं सिद्धांत

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 पाठयचर्या के उद्देश्य
3.4 पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया
3.5 पाठयचर्या का विकास
3.6 पाठयचर्या विकास के प्रमुख सोपान
3.7 पाठयचर्या निर्माण के आधारभूत सिद्धान्त
3.8 सारांश
3.9 शब्दावली
3.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.11 संदर्भ-ग्रन्थ
3.12 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

पाठयचर्या शिक्षा का एक अभिन्न अंग है, पाठयचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है। पाठयचर्या के द्वारा ही शिक्षक विभिन्न विषयों के पढ़ाने की तैयारी पूर्ण करता है । शिक्षक पाठयचर्या के माध्यम से छात्रों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक, राजनैतिक एवं सामाजिक विकास हेतु प्रयासरत रहता है। पाठयचर्या के बिना उसका शिक्षण कार्य उद्देश्य विहीन एवं तथ्यहीन हो जाता है तथा शिक्षक अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर पाता है। इसलिए शिक्षण कार्य में पाठयचर्या एक अभिन्न अंग के रूप में होता है। पाठयचर्या के द्वारा हमें कक्षा विशेष को कब क्या और कितना पढ़ाना है, यह निश्चित कर लेते हैं और छात्रों का भी एक लक्ष्य निर्धारित होता है। जिससे वह पठन पाठन में रुचि एवं एकाग्रता लाते हैं एवं आने वाले समय में जीवन कला में प्रशिक्षण के अवसर प्रदान होते हैं। पाठयचर्या का निर्धारण होने से हम अपने भावी राष्ट्र के विकास को गति प्रदान करते हैं। पाठयचर्या एक प्रकार से शिक्षक के बाद छात्रों का दूसरा पथ प्रदर्शक है। क्योंकि जब शिक्षक नहीं होता है तक छात्र उसी पाठयचर्या के आधार पर अपने ज्ञान को गति प्रदान करते हैं।

पाठयचर्या की प्राचीन अवधारण में तथ्यों के ज्ञान की सीमा निश्चित करना सम्मिलित था, जबकि पाठयचर्या की आधुनिक धारणा विस्तृत एवं व्यापक है। यहां पर छात्र कक्षा के अन्दर जो भी ग्रहण करता है वह तो सम्मिलित है ही एवं यह भी शामिल किया गया है जो छात्र कक्षा के बाहर अनेक कार्य जैसे पढ़ाना लिखाना, शिल्प खेल, पुस्तकालयों एवं अन्य अनुभवों से प्राप्त करते हैं। पाठयचर्या एक ऐसा साधन है जो छात्र एवं शिक्षक को जोड़ने का कार्य करता है। पाठयचर्या के द्वारा ही शिक्षक छात्र को नवीन ज्ञान की दिशा देने का काम करता है। पाठयचर्या में नवीन अनुभवों एवं पुराने अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए जिसके द्वारा छात्र वर्तमान स्थिति को समझने में सक्षम बन सकें। सही अर्थ में पाठगचर्या ऐसा हो जिसमें सभी शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके, जिससे हमारे राष्ट्र का सर्वांगीण विकास हो ।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

4. पाठयचर्या के उद्देश्यों को समझ सकेंगे।
5. पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया कि व्याख्या कर सकेंगे।
6. पाठयचर्या का विकास किस प्रकार होता है यह समझ सकेंगे।
7. पाठयचर्या विकास के प्रमुख सोपानों का वर्णन कर पाएगें।
8. पाठयचर्या निर्माण के आधारभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर पाएगें।

3.3 पाठयचर्या के उद्देश्य (Aims of Curriculum)

- बालक को लोकतंत्र के लिए तैयार करना।
- शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु बालक को तैयार करना।
- छात्रों में ईमानदारी, निष्ठा और उनकी व्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- आवश्यकता अनुसार पाठयचर्या का निर्माण करना।
- विद्यालयों के विषयों और विभिन्न क्रियाओं के बीच के अन्तर को समाप्त करना।
- ऐसे गुणों को बढ़ावा देना जिनसे मनुष्य में मानवता का विकास करना।
- बालकों को सांस्कृतिक, सभ्यता एवं मूल्यों के बारे में जानकारी प्रदान करना।
- ऐसे वातावरण का निर्माण करना जिसमें बालक नवीन ज्ञान प्राप्त कर सके।
- राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय भावना का विकास करना।

- बालक का सर्वांगीण विकास करना एवं बालक को जीवन उपयोगी बनाना।

3.4 पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया

पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया से पूर्व हमें अपने उद्देश्य देख लेने चाहिये कि हमारे लोकतांत्रिक देश में किस तरह की शिक्षा दी जाये जिससे हमारे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। पाठयचर्या बनाने के पूर्व हमें एक निश्चित प्रारूप तैयार कर लेना चाहिए। उस प्रारूप का स्वरूप हमारे बालक, शिक्षक, समाज, देश एवं राष्ट्रीय भावना को ध्यान में रख कर तैयार करना चाहिए। फलस्वरूप शिक्षाविदों एवं अनेक सामाजिक संगठनों से राय लेते हुए पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया शुरु की जानी चाहिए।

पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षाविदों, शिक्षा समितियों के माध्यम से विद्यालयों का भ्रमण एवं समाज के हर क्षेत्र वर्ग एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कार्य किया जाना चाहिए। शिक्षकों के लिए गोष्ठियां, कार्यशाला सेमीनारों का आयोजन किया जाता है। हमें चाहिए कि उन शिक्षकों से भी राय ली जानी चाहिए जो इस प्रकार की कार्यक्रम में भाग लेते रहते हैं। पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया में हमारे संस्कार, संस्कृति एवं भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है; इसके अभाव में हमारे पाठयचर्या की प्रक्रिया नगण्य हो जायेगी, अतः हमें चाहिए कि समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं राष्ट्रहित की भावना से पाठयचर्या की प्रक्रिया को आगे बढाना है। यह भी ध्यान रखा जाये कि पाठयचर्या किस तरह का है। यदि वह उच्चस्तरीय है तो राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीयता का ध्यान में रख कर प्रक्रिया का संचालन किया जाना चाहिए। हमारी प्रक्रिया गतिशील, लचीली एवं परिवर्तनशील हो। क्योंकि यदि पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया जटिल होगी तो उसमें समाज एवं बालक की आवश्यकता अनुसार समय पर बदलाव नहीं हो पाते हैं। जिससे समाज, छात्र, शिक्षक आदि सभी लोग प्रभावित होते हैं। जो हमारे प्रजातांत्रिक देश के हित में नहीं है।हमारी प्रक्रिया में सभी विषयों के शिक्षकों को स्थान या उनकी राय रखी जानी चाहिए। पाठयचर्या निर्माण प्रक्रिया के उपरान्त नमूने के तौर पर कुछ विद्यालयों में प्रशिक्षण स्वरूप देखा जाये, जिससे कि हम यह जान सकें कि पाठयचर्या की प्रक्रिया वर्तमान स्वरूप के अनुकूल है या नहीं अतः हमें चाहिए कि हम अपने राष्ट्र के सर्वांगीण विकास हेतु पाठयचर्या प्रक्रिया को संचालित करें। पाठयचर्या की प्रक्रिया बहुत ही जटिल है। पाठयचर्या को सरल एवं प्रगतिशील बनाना होगा, जिससे बालक में राष्ट्रीय भावना एवं समाज की आवश्यकता अनुसार बदलाव किया जा सके। जिससे हमारी शिक्षा, देश की संस्कृति एवं सभ्यता भी प्रभावित हो रही है। आज हमें देखने में आ रहा है कि हमारे देश के पाठयचर्या केवल ज्ञान का प्रसार करने तक ही सीमित है। जिन विषयों एवं तथ्यों का पाठयचर्या में चयन है वह वर्तमान में मानव जीवन के लिए सफल व उपयोगी नहीं दिख रहा है, इसलिए हमें चाहिए कि हम पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया को सरल एवं परिवर्तनशील बनाए , जिसके लिए हमें निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देना होगा-

- सर्वप्रथम ध्यान देना होगा कि पाठयचर्या का निर्माण किस कक्षा के लिए किया जा रहा है।
- जिस स्तर के बालकों के लिए पाठयचर्या का निर्माण किया जाना है, उनका पूर्व ज्ञान का स्तर क्या है?
- पाठयचर्या को ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक पक्षों में बांटकर निर्धारण किया जाना चाहिए।
- छात्रों की वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर मनोवैज्ञानिक स्तर पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- समाज, संस्कृति, सभ्यता, राष्टीयता एवं अंतर्राष्टीयता की भावना को ध्यान में रखकर पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया की जानी चाहिए।
- पाठयचर्या के निर्माण में विविध सिद्धान्तों एवं शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर कार्य किया जाना चाहिए।
- पाठयचर्या की प्रक्रिया में तथ्यों, प्रसंगों एवं विचारकों के मतों का वर्णन करना चाहिए।
- पाठयचर्या के निर्माण में वैधता, विश्वसनीयता, मानकीकरण का निर्धारण शैक्षिक उद्देश्यों के अनुरूप होना चाहिए।
- शिक्षक के लिए शिक्षण संकेत का निर्माण करना।
- बालक के सर्वांगीण विकास के लिए पाठयचर्या में पर्याप्त क्रियाओं को स्थान दिलाने के लिए मूल्यांकन पद्धति को अपनाना चाहिए।

अतः हमें पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया को सरल बनाना होगा जिससे समयानुसार एवं बालकों तथा समाज की आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सके, क्योंकि यदि समय पर बदलाव नहीं किया जाए तो निश्चित रूप से वह पाठयचर्या हमारे लोकतांत्रिक देश के हितों में नहीं होगा और हम उसी घिसे पिटे पाठयचर्या के अनुसार कार्य करते रहेंगे। हमें सर्वप्रथम पाठयचर्या की प्रक्रिया में बदलाव लाकर उन शैक्षिक उद्देश्यों, मूल्यों, लोकतांत्रिक सिद्धान्तों एवं राष्ट्रीय स्तर को ध्यान में रखकर काम करने की आवश्यकता है। हमें बालक के सर्वांगीण विकास हेतु पाठयचर्या निर्माण प्रक्रिया में सहयोगात्मक दृष्टि को ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए। साथ ही छात्र को सैद्धान्तिक रूप के साथ व्यावहारिक रूप में भी पाठयचर्या बताया जाना चाहिए। पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया सरल होनी चाहिए। पाठयचर्या निर्माण प्रक्रिया के उपरान्त ही पाठयचर्या अपने वास्तविक स्वरूप को धारण करती है।

3.5 पाठयचर्या का विकास

पाठयचर्या का सीधा सम्बन्ध शिक्षा के उद्देश्यों से होता है और पाठयचर्या का विभाग का भी उन शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाना है जो वर्तमान बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए जरूरी है। बदलते समय में नए पाठयचर्या की आवश्यकता महसूस की जा रही है। पाठयचर्या के विकास के बिना हम बालक के जीवन को सरलता और सहजता नहीं प्रदान कर सकते हैं। उद्देश्यों के अनुसार पाठयचर्या का विकास किया जाना चाहिए जिससे बालक के साथ साथ समाज को लाभ प्राप्त हो सके। स्वतंत्रता के पूर्व हमारे देश में शिक्षा के उद्देश्य सीमित थे परन्तु स्वतंत्रता के बाद देश में समाज को जागरूक करने हेतु शैक्षिक उद्देश्यों की स्थापना की गई जिसे हम पाठयचर्या के माध्यम से समाज एवं बालक तक पहुंचाने का काम कर रहे है। हमें ऐसे पाठयचर्या का विकास करना जिससे बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके जिसके द्वारा भविष्य में बालक एक विद्वान व्यक्तियों का निर्माण कर उनमें ज्ञान की सीमाओं का विस्तार कर सके उन शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति तभी की जा सकती जब बालक मानसिक, शारीरिक, चारित्रिक, संवेगात्मक आदि गुणों से परिपूर्ण होगा।

वर्तमान समय को देखते हुए नए पाठयचर्या की आवश्यकता महसूस की जा रही है। नए पाठयचर्या में सामाजिक जीवन को ध्यान में रखकर विकास किया जाना चाहिए इसके लिए हमें अपने पूर्व पाठयचर्या का गहन अध्ययन एवं मूल्यांकन करना होगा साथ लोकतांत्रिक देश की आवश्यकताओं, उपयोगिता, मानवीय मूल्यों आदि को आधार मानकर नवीन ज्ञान एवं अनुसंधान का सहारा लेते हुए पाठयचर्या का विकास करना होगा, जिससे देश के नौनिहालों के भविष्य को नवीन दिशा दी जा सकती है। पाठयचर्या का विकास इस उद्देश्य से किया जाना चाहिए कि बालक का विकास उसकी रुचि एवं परिवर्तनशील वातावरण के अनुकूल हो साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है कि पाठयचर्या संविधान में दर्शाए गए मूल्यों को आधार मानकर विकसित किया जाना चाहिए। सामाजिक एवं सांस्कतिक दृष्टि से उपयोगी तत्वों को पाठयचर्या में महत्त्व दिया जाना चाहिए।

पाठयचर्या विकास की प्रक्रिया अत्यंत जटिल है। इसमें प्रत्येक पग पर सावधानी अपेक्षित है। पाठयचर्या विकसित करते समय सर्वप्रथम निम्नलिखित पक्षों पर ध्यान देना आवश्यक होता है-

- पाठयचर्या का विकास किस कक्षा के लिए किया जा रहा हैं।
- जिस कक्षा के लिए पाठयचर्या विकसित किया जा रहा है। उसके छात्रों की पूर्व जानकारी का स्तर क्या है।
- छात्रों की वर्तमान आवश्यकता, रुचि किन क्षेत्रों से सम्बंधित है। इसमें छात्रों के मनोवैज्ञानिक पक्षों पर भी ध्यान दिया जाता है। जैसे व्यक्तिगत भिन्नता, रुचि, बाल-विकास की अवस्था, परिपक्वता, बुद्धि, सृजनात्मकता आदि।

- समाज की आकांक्षा तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य पर ध्यान दिया जाता है। दार्शनिक दृष्टिकोण पर विचार मंथन जाता है।
- पाठयचर्या का प्रकार किस कोटि का होगा। जैसे- क्रिया प्रधान, हस्त-शिल्प प्रधान, विषय प्रधान, व्यवसाय-प्रधान आदि।
- पाठयचर्या को ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक पक्षों में बांटना तथा उनका प्रतिशत निर्धारण करना। इससे संबधित शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण भी किया जाता है।
- पाठयचर्या के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं का चयन करना।
- पाठयचर्या हेतु विविध विषय के लिए तथ्यों, प्रसंगों, सिद्धान्तों, विचारकों के मतों का चयन करना।
- पाठयचर्या निर्माण के विविध सिद्धान्त का अनुपालन तथा तत्संबंधी तथ्यों का चयन करना।
- पाठयचर्या के विषयों में अन्तर्वस्तु के क्रम का निर्धारण करना, प्रायः यह सरल से जटिल की ओर होती है।

अभ्यास प्रश्न

1. पाठयचर्या के किन्हीं दो उद्देश्यों को लिखिए।
2. पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया को ________ एवं________ बनाना चाहिए।
3. बालक के सर्वांगीण विकास के लिए पाठयचर्या में पर्याप्त क्रियाओं को स्थान दिलाने के लिए ________को अपनाना चाहिए।
4. पाठयचर्या को ________, ________, ________ पक्षों में बांटकर निर्धारण किया जाना चाहिए।
5. ________में कहा गया है कि पाठयचर्या संविधान में दर्शाए गए मूल्यों को आधार मानकर विकसित किया जाना चाहिए।

3.6 पाठयचर्या विकास के प्रमुख सोपान

प्रसिद्ध विद्वान डी0के0 व्हीलर ने अपनी पुस्तक " Curriculam Process" में पाठयचर्या संरचना के प्रमुख पाँच पद या सोपानों का उल्लेख किया है जो इस प्रकार हैं-

1. शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण।

2. निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उपयुक्त अधिगम अनुभवों का चयन।
3. अधिगम अनुभवों को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त अन्तर्वस्तु का चयन।
4. अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया की दृष्टि से चयनित अधिगम अनुभवों एवं अन्तर्वस्तु का संगठन।
5. सम्पूर्ण प्रक्रिया का उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से मूल्यांकन।

1. शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण

शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण पाठयचर्या विकास का प्रथम सोपान है पाठयचर्या के उद्देश्यों के निर्धारण से शैक्षिक कार्यक्रमों को दिशा मिलती है। शैक्षिक क्रियाओं की प्रकृति का निर्धारण होता है।शैक्षिक कार्यक्रमों के नियोजन एवं व्यवस्थीकरण को निश्चित आधार मिलता है। शैक्षिक कार्यक्रमों को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करने में सहायता मिलती है अधिगम के विभिन्न पक्षों में विभेदीकरण सम्भव होता है। विकास एवं उपलब्धि के मापन को आधार मिलता है। शैक्षिक कार्यक्रमों की प्राथमिकताओं को सुनिश्चित करने में सहायता मिलती है। शैक्षिक निर्णयों के लिए उचित निर्देशन प्राप्त होता है।शैक्षिक कार्यक्रमों के विभिन्न पक्षों में सन्तुलन स्थापित करने में सुविधा होती है। अधिगमानुभवों एवं मूल्यांकन एवं स्तरीकरण करने में सहायता मिलती है। उपयुक्त अन्तर्वस्तु के चयन में सुविधा होती है।शैक्षिक विकास कार्यों को निर्देशन मिलता है। अधिगम को कार्यात्मक बनाने में सहायता मिलती है।उपयुक्त अधिगम परिस्थितियों को उत्पन्न करने में एवं शैक्षिक प्रक्रिया को सुपरिभाषित किया जा सकता है एवं वैध मूल्यांकन सम्भव होता है।उपयुक्त महत्व को देखते हुए पाठयचर्या का निर्माण करने से पूर्व सभी सम्बद्ध व्यक्तियों को उन लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के बारे में निश्चित जानकारी होनी चाहिए जिनकी प्राप्ति वे पाठयचर्या निर्माण द्वारा कराना चाहते है। शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण हेतु प्रमुख स्रोत समाज व्यक्ति एवं ज्ञान है।

बी0एस0 ब्लूम के अनुसार ''शैक्षिक उद्देश्यों की सहायता से केवल पाठयचर्या की ही रचना तथा अनुदेशन के लिए निर्देश नहीं दिया जाता बल्कि ये मूल्यांकन की प्रविधियों के विशिष्टीकरण में भी सहायक होते हैं।''

शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण हेतु विभिन्न उपागमों के अन्तर्गत प्रबुद्ध एवं रुचि सम्पन्न् व्यक्तियों का अभिमत संग्रह, आधारभूत क्षेत्रों का अध्ययन, व्यापक क्षेत्रों का विश्लेषण एवं समस्या आधारित उपागम आते हैं। बी0 एस0 ब्लूम महोदय ने शैक्षिक उद्देश्यों को तीन पक्षों में वर्गीकृत किया है। ज्ञानात्मक पक्ष (ज्ञान, अवबोध, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन) भावात्मक पक्ष (आग्रहण या प्राप्ति, अनुक्रिया, अनुमूल्यन, व्यवस्थापन, मूल्य का लक्षण वर्णन) क्रियात्मक पक्ष (अनुकरण, हस्तादि प्रयोग अथवा कार्य करना, सुतथ्यता, सन्धियोग, स्वाभावीकरण या नैसर्गिकरण)

बी0 के0 व्हीलर ने अपनी पुस्तक "Curriculam Process" में आधुनिकतम स्थिति और दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण के कुछ महत्वपूर्ण मानदण्ड प्रस्तावित किए हैं।

1. **मानवीय अधिकारों से तादात्म्य-** शिक्षा मानव उत्थान का सशक्त माध्यम है अतः मानव समाज को संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा पत्र की धारा 55 के अनुसार निम्नांकित बातों की अनिवार्य रूप से व्याख्या करनी चाहिए।

- उच्च जीवन स्तर, पूर्ण कार्य, आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति तथा विकास की स्थितियां।
- अन्तराष्ट्रीय आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य एवं अन्य सामाजिक समस्यायें तथा अन्तराष्ट्रीय सांस्कृतिक एवं शैक्षिक सहयोग।
- सभी के मानवीय अधिकारों तथा मौलिक स्वतंत्रता के प्रति जाति, धर्म,भाषा एवं लिंग भेद के बिना सार्वभौमिक समादर।

2. **लोकतांत्रिक दृष्टि से अनुकूलन-** शिक्षा के वैध उद्देश्य केवल प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों से ही प्राप्त किए जा सकते हैं क्योंकि प्रजातंत्र ही वह व्यवस्था है जिसमें सभी मूलभूत मानवीय आवश्यकताओं की सही ढंग से पूर्ति की जा सकती है। इस व्यस्था की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं-

- प्रत्येक व्यक्ति के महत्व एवं उसकी गरिमा का समादर किया जाता है।
- प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं का अधिकतम विकास करने तथा दूसरों के विकास में सहयोगी बनने के समान अवसर प्राप्त होते हैं।
- सामान्य जनता द्वारा स्वतंत्र रूप से व्यक्त की गई सहमति से सरकार का निर्माण होता है तथा सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी होती है।
- व्यक्तिगत भिन्नता का समादर किया जाता है तथा उन्हें प्रोत्साहित और विकसित बनाया जाता है।
- प्रत्येक व्यक्ति को अपने विवेके, बुद्धि अथवा अन्तर्रात्मा के अनुसार विचार करने, बोलने, लिखने-पढ़ने तथा पूजा - अर्चना की स्वतंत्रता होती है। तथा उससे उपेक्षा की जाती है कि वह दूसरों की इसी प्रकार की स्वतंत्रता में बाधक न बने बल्कि उसका पोषक बने।

3. **समाजिक सार्थकता-** बालकों में ऐसे सामाजिक मूल्य एवं निष्ठा विकसित करने में सहायता की जानी चाहिए जिनके माध्यम से वह विभिन्न प्रस्तावित समाधानों का सही मूल्यांकन कर सकें। इसके लिए उनमें वर्तमान को विश्लेषित करने तथा उससे समायोजन

स्थापित करने के साथ साथ भावी समाज के बारे में सोचने तथा उपयुक्त योजना बनाने की क्षमता विकसित की जानी चाहिए।

4. **वैयक्तिक आवश्यकतायें** - पाठयचर्या आयोजकों को वैयक्तिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण हेतु निम्नांकित बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
   - बालक की प्रकति, व्यक्तित्व, शारीरिक एवं बौद्धिक भेदों को समझते हुए व्यक्तिगत भेदों को स्वीकार किया जाए।
   - बालक को अपनी गति के अनुसार विकसित होने की स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिए।
   - बालक की सुरक्षा का सर्वप्रथम दायित्व परिवार का है किन्तु शिक्षालयों की भी इस हेतु अपनी भूमिका है। अतः शिक्षालयों को इस कार्य में परिवार एवं समाज को सहायता प्रदान करनी चाहिए।
   - बालक में इस भावना का विकास करना चाहिए कि वह जीवन के किसी न किसी क्षेत्र में अवश्य सफल हो सके।
   - प्रत्येक बालक अपने कार्य की पुष्टि एवं मान्यता चाहता है। शिक्षा द्वारा की गई पुष्टि तथा मान्यता सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। बालक प्रायः अपने वर्ग के सदस्य के रूप में कार्य करना चाहता है।
   - पाठयचर्या निर्माताओं को बालकों की दो प्रकार की आवश्यकताओं पर विशेष बल देना चाहिए-
   - स्व की आवश्यकतायें अर्थात वे आवश्यकतायें जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए अभिप्रेरित करती हैं।
   - वे आवश्यकताएं जो प्रौढ़ लोगों के अनुसार बालको के लिए आवश्यक हैं जैसे-: शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, जीवन के विभिन्न पक्षों के लिए तैयारी आदि।

5. **सन्तुलन**-सन्तुलन से तात्पर्य शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण करते समय पूर्व वर्णित चारों बिन्दुओं पर समुचित बल प्रदान करना है अर्थात किसी एक बिन्दु पर आवश्यकता से अधिक बल नहीं दिया जाना चाहिए।

2. अधिगम अनुभवों का चयन

पाठयचर्या विकास का द्वितीय सोपान अधिगम-अनुभवों का चयन है। शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अधिगम-अनुभवों का चयन से तात्पर्य है कि अधिगम अनुभवों का प्रस्तुतीकरण

अधिगम और उसके आयोजन से सम्बंधित प्रकिया है। विद्यालय में बालक शिक्षा ग्रहण करने के लिए आता है। वह अपने विद्यालयी जीवन में विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है। इन अनुभवों से उसके ज्ञान में वृद्धि, सोचने के ढंग में परिवर्तन, कार्यशैली में परिवर्तन होता है तथा उसकी संवेदनशीलता और अभिवृत्ति विकसित होती है। बालक के इस व्यवहार परिवर्तन में ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा कियात्मक पक्ष सम्मिलित होते हैं।

अधिगम अनुभवों के चयन के संबंध में दो सिद्धान्त विशेष रूप से उल्लेखनीय है-

एक ही अधिगम अनुभव से विभिन्न प्रकार के व्यवहार परिवर्तन किए जा सकते है। साथ ही भिन्न प्रकार के व्यवहार परिवर्तनों के लिए भिन्न प्रकार के अधिगम अनुभवों की आवश्यकता हो सकती है।

अधिकांश स्थितियों में भावात्मक पक्ष, ज्ञानात्मक पक्ष से नियंत्रित होता है अर्थात किसी विषय के सम्बंध में भावनाएं तभी संकिय हो सकती हैं जब उसे समझने के लिए आवश्यक ज्ञान तथा कौशल प्राप्त कर लिया गया हो। पाठयचर्या -आयोजकों को अधिगम अनुभवों के चयन के सम्बंध में निम्नलिखित निर्देशों का अनुसरण करना चाहिए।

1. प्रत्यक्ष तथा दूसरों के द्वारा प्राप्त अनुभवों के अवसरों में संतुलन स्थापित किया जाये।
2. दोनों प्रकार के अनुभवों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने के अवसर उपलब्ध कराये जायें।
3. विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार के अधिगम-अनुभवों के बारे में समुचित निर्णय लिया जाए।
4. ऐसे अधिगम-अनुभवों का चयन किया जाये जो उपयुक्त भावनाओं को विकसित कर सकें तथा भय की सम्भावनाओं को कम करें।
5. चूंकि अधिगम कई रूपों में होता है अतः ऐसे अधिगम-अनुभवों का चयन करना चाहिए जो एक साथ एक से अधिक क्षेत्रों अथवा उद्देश्यों के लिए उपयोगी हों।
6. अधिगम अनुभव उद्देश्यों से सीधे सम्बन्धित हो।
7. अधिगम अनुभव विद्यार्थियों के लिए सार्थक एवं संतोषप्रद हो।
8. अधिगम अनुभव बालकों की परिपक्वता के अनुसार हो।

अधिगम अनुभवों के चयन के निर्धारण हेतु प्रमुख दो प्रस्तावित मानदण्ड इस प्रकार है-

बर्टन द्वारा प्रस्तावित मानदण्ड के अनुसार अधिगम-अनुभवों को निम्नलिखित छः शर्तें पूरी करनी चाहिए-

- वह विद्यार्थियों की दृष्टि से उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयुक्त किये जाने के योग्य हो।
- शिक्षकों की दृष्टि में, वह वांछनीय सामाजिक उद्देश्यों की ओर ले जाने वाला हो।

- वह वर्ग के परिपक्वता स्तर के लिए उपयुक्त हो अर्थात वर्ग के लिए चुनौतीपूर्ण हो, प्राप्य हो, नवीन अधिगम की ओर ले जाने वाला हो।
- उसमें विद्यार्थियों के समुचित विकास के लिए, संतुलित विकास के लिए विभिन्न प्रकार की वैयक्तिक तथा वर्गगत कियाओं का समावेश हो।

उसका आयोजन विद्यालय तथा समाज में उपलब्ध साधन सुविधाओं के द्वारा किया जाना सम्भव हो।

उनमें व्यक्तिगत भिन्नताओं की दृष्टि से इतनी विविधता हो कि वर्ग के सभी सदस्यों को उपयुक्त प्रवृत्तियां सुलभ हो सकें।

व्हीलर द्वारा प्रस्तावित मानदण्ड अधिक व्यापक एवं वैज्ञानिक हैं। इसके सात बिन्दु हैं जो अधिगम के सिद्धान्तों के आधार पर निर्धारित किए गए हैं। ये बिन्दु इस प्रकार हैं-

- वैधता
- व्यापकता
- विविधता
- उपयुक्तता
- प्रतिमान
- जीवन से तादात्म्य
- विद्यार्थियों का सहभागीत्व

3. अन्तर्वस्तु का चयन

पाठयचर्या विकास का तृतीय सोपान अन्तर्वस्तु का चयन करना होता है। अन्तर्वस्तु चयन के अंतर्गत निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है-

- अन्तर्वस्तु के विभिन्न स्रोतों पर ज्ञान प्राप्त करना
- अन्तर्वस्तु चयन का आधार निश्चित करना
- अन्तर्वस्तु चयन की प्रमुख समस्याओं का ज्ञान एवं उनके समाधान का प्रयास।
- अन्तर्वस्तु चयन प्रकिया के मानदण्ड निर्धारित करना।
- अन्तर्वस्तु चयन प्रकिया के प्रमुख पदों का ज्ञान।

अन्तर्वस्तु के स्रोत के अंतर्गत पोषित मूल्य, आवश्यकताएं समाज का वर्तमान एवं सम्भावित भावी स्वरूप, शिक्षार्थी की प्रकृति, लोकतांत्रिक नागरिकता की भावी आवश्यकताओं के रूप में प्रौढ़ कियाएं, जनमत, मानवीय ज्ञान का बढ़ता हुआ भण्डार, विषय अथवा अनुशासन की प्रकृति एवं स्वरूप सम्मिलित है।

अन्तर्वस्तु चयन का मूल आधार शैक्षिक उद्देश्य होते हैं। अन्तर्वस्तु चयन के दो प्रमुख प्रस्तावित मानदण्ड हैं-

1. **स्टेनली निस्वत द्वारा प्रस्तावित मानदण्ड** - स्टेनली निस्वत ने दो वर्गों में 12 उद्देश्यों को निर्धारित किया है-

   अ. पर्यावरण समायोजन सम्बंध

   1. कौशल
   2. संस्कृति
   3. गृह सदस्यता
   4. व्यवसाय
   5. अवकाश
   6. सक्रिय नागरिकता

   ब. व्यक्तिगत विकास

   7. शारीरिक विकास
   8. सौन्दर्य बोधात्मक विकास
   9. सामाजिक विकास
   10. आध्यात्मिक विकास
   11. बौद्धिक विकास
   12. नैतिक विकास

2. **व्हीलर द्वारा प्रस्तावित मानदण्ड-** व्हीलर द्वारा प्रस्तावित मानदण्डों को दो भागों में विभक्त किया गया है-

अ. मुख्य मानदण्ड- इसके अंतर्गत दो बिन्दु है-

i. वैधता

ii. महत्व

ब. गौड़ मानदण्ड- इसके अंतर्गत चार बिन्दु हैं -

i. शिक्षार्थी की आवश्यकताएं एवं अभिरुचियां

ii. उपयोगिता

iii. अधिगम योग्यता

iv. सामाजिक तथ्यों के साथ संगति

अन्तर्वस्तु चयन प्रक्रिया के दो प्रमुख पद होते हैं-

प्रथम पद-

i. विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों का निश्चय।

ii. उन विषयों का निश्चय जिनमें से छात्र अपनी रुचि के अनुसार वैकल्पिक चयन कर सके।

द्वितीय पद -प्रत्येक विषय के शिक्षण के लिए समय की अवधि का निर्धारण।

4. अधिगम अनुभवों एवं अन्तर्वस्तु का संगठन

यह पाठयचर्या विकास का चतुर्थ सोपान है। हैरिक एवं हाइटलर के अनुसार अधिगम अनुभवों एवं अन्तर्वस्तु संग्रथन एवं संगठन ही पाठयचर्या प्रक्रिया की केन्द्रीयभूत समस्या है। जेम्स एम0ली0 के अनुसार पाठयचर्या की संरचना का निर्माण छः पृथक तत्वों के मिलने से होता है-आयोजन या प्रकल्प (Design), क्षेत्र (Scope), अनुक्रम (Sequence), सातत्य (Continuity), संतुलन अथवा विस्तार (Balance or Range), तथा एकीकरण (Integration)। सेलर एवं एलेक्जेन्डर ने पाठयचर्या आयोजन का प्रकल्प क अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है-

''पाठयचर्या प्रकल्प आयोजन वह ढांचा या संरचना है जिसका विद्यालय में शैक्षिक अनुभवों के चुनने, नियोजित करने तथा कार्यान्वित करने में प्रयोग किया जाता है। अतः प्रकल्प वह योजना है जिसका सीखने की क्रियाओं को प्रदान करने के लिए शिक्षक द्वारा अनुसरण किया जाता है।''

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रकल्प वह ढंग है जिसको अपनाकर सीखने के अनुभवों एवं चयनित अन्तर्वस्तु को संगठित तथा निर्मित किया जाता है।

पाठयचर्या संगठन सम्बंधी कुछ विद्वानों द्वारा प्रस्तुत क्रमिक चरण निम्नलिखित हैं-

1. प्रारम्भिक बाल्यावस्था के 2 या 3 वर्ष- बोध तथा आत्म विश्वास का अभ्यास।
2. इसके बाद 3 या 4 वर्ष - पठन, कथन, लेखन आदि आधारभूत कौशलों पर बल।
3. तत्पश्चात विषयों पर ध्यान दिये बिना महत्वपूर्ण विचारों तथा चिन्तन विधियों पर ध्यान।
4. अंत में विशिष्ट विषयों पर ध्यान।

स्पष्ट है कि ये चरण एक दूसरे से पृथक न रहकर परस्पर जुड़े रहेंगे तथा प्रत्येक छात्र एक ही समय में एक से अधिक स्तरों पर रहेगा। इससे यह भी लाभ रहेगा कि छात्र किसी चरण से वंचित नही रहेगा।

सेलर तथा एलेक्जेन्डर ने अपनी पुस्तक **"Curriculum Planning in Modern School"** में विद्यालयी विषयों के लिए अंतर्वस्तु का चयन एवं संगठन इस प्रकार प्रस्तावित किया है-

1. अनुशासन आधारित विद्यालयी विषय-गणित, विज्ञान, भाषा, कुछ सामाजिक विषय, संगीत एवं कला के सैद्धांतिक विषय।
2. ऐसे विद्यालयी विषय जिनकी अंतर्वस्तु अनुशासन आधारित नहीं है- व्यापारिक उद्योग, विदेशी भाषा, स्वास्थ्य, गृहकला, औद्योगिक कला व्यवसाय आदि।
3. क्रियात्मक कौशलों के विकास पर आधारित विद्यालयी विषय- पठन, भाषण, पत्रकारिता, शारीरिक विज्ञान, संगीत, कला; व्यापारिक क्षेत्र के अनेक अध्ययन औद्योगिक कला एवं व्यवसाय।

इसमें दूसरे क्रम का आधार सामाजिक जीवन तथा छात्रों की आवश्यकताएं, अभिरुचियां, समस्याएं, अनुभव तथा व्यावसायिक आवश्यकताएं हैं, जबकि तीसरे क्रम का आधार अपेक्षित कौशलों का विकास करना है।

उपर्युक्त बिन्दुओं से स्पष्ट है कि पाठयचर्या का निर्माण बालकों की आवश्यकताओं रुचियों, योग्यताओं, विशिष्टताओं एवं विभिन्नताओं को दृष्टि में रखते हुए किया जाना चाहिए जिससे उनके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास हो सके तथा भावी जीवन में वे सफल जीवन-यापन के योग्य बन सकें। इस दृष्टि से विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन ही पाठयचर्या है। माध्यमिक शिक्षा आयोग का यह कथन इसकी पुष्टि करता है

5. सम्पूर्ण प्रक्रिया का उद्देष्यों की प्राप्ति की दृष्टि से मूल्यांकन-

पाठयचर्या संरचना का अंतिम सोपान सम्पूर्ण प्रक्रिया का उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से मूल्यांकन करना है। पाठयचर्या के मूल्यांकन का तात्पर्य शैक्षिक प्रयासों के परिणामस्वरूप् उत्पन्न व्यवहारगत परिवर्तनों की प्रकृति, दिशा तथा सीमा के प्रमाण प्राप्त करना तथा उनको पाठयचर्या प्रक्रिया के पक्षों में सुधार लाने के लिए मार्ग-दर्शन के रूप में प्रयुक्त करना है।

विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अथवा वर्गगत व्यवहार परिवर्तन के साथ-साथ विद्यालय के उद्देश्यों तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त अधिगम-अनुभवों, अन्तर्वस्तु संगठन तथा शिक्षण विधियों के सम्बंध में निर्णय लेना भी मूल्यांकन के अंतर्गत आता है। अतः शिक्षा में मूल्यांकन के दो प्रमुख क्षेत्र निम्नवत् है-

1. छात्रों में व्यवहारगत परिवर्तन तथा इन व्यवहारों को प्रभावित करने के लिए उत्तरदायी कारक।
2. मूल्यांकन कार्यक्रम का छात्र अभिप्रेरणा तथा अधिगम पर प्रभाव।
3. पाठयचर्या प्रक्रिया के सभी पक्षों का मूल्यांकन।

मूल्यांकन कार्य में मापन एवं परीक्षण सम्मिलित होता है। मूल्यांकन कार्यक्रम में प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है-

1. क्रमबद्धता
2. वस्तुनिष्ठता
3. विश्वसनीयता
4. वैधता
5. व्यावहारिकता
6. व्यापकता
7. शिक्षार्थी की सहभागिता।

मूल्यांकन के महत्व को क्रानबैक ने निम्न प्रकार स्पष्ट किया है-

'' मूल्यांकन पाठयचर्या -निर्माण की परिशिष्ट न होकर अनिवार्य अंग हैं''
मूल्यांकन चयन में सहायक आवश्यक प्रदत्तों को उपलब्ध कराता है तथा यह व्यक्ति अथवा वर्ग की अधिगम तत्परता का बोध कराता है।
इस प्रकार पाठयचर्या की मूल्यांकन प्रक्रिया इसके विकास के सभी चरणों में सतत् रूप से चलती रहती है। तथा इससे भावी कदम के लिए दिशा निर्देश प्राप्त होता रहता है। पाठयचर्या -निर्माताओं को मूल्यांकन के इस महत्व को सदैव ध्यान में रखना चाहिए।

3.7 पाठयचर्या निर्माण के आधारभूत सिद्धान्त

1. **अतीत को जानने या सुरक्षित रखने का सिद्धान्त-** हमें अपने देश के विकास को ध्यान में रखते हुए यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम वर्तमान को देखे और अतीत को भूल जायें। अतीत वर्तमान के लिए महान पथ प्रदर्शक की भूमिका में रहता है । हमें प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माण में अतीत की सहायता लेनी चाहिए अन्यथा हम यह नहीं जान पायेंगे कि अतीत में हमने अपने देश के हित में क्या किया है और वर्तमान में क्या करना है। अतः स्पष्ट है कि हम अतीत को सुरक्षित रखते हुए उस पाठयचर्या का निर्माण करेंगे। जिसके द्वारा हम वर्तमान में छात्रों को उस संस्कृति से परिचित करायें जो हमारी पारम्परिक धरोहर है। साथ ही हम उन विषयों तथा कार्यक्रमों को चुनेंगे जो कि हमें वर्तमान समय में लाभ पहुंचायेंगे। हमें अतीत को इसलिए जानना है क्योंकि हमारा अतीत अत्यन्त गौरवशाली है और अन्य देशों को ज्ञान का मार्ग दिखाने का काम किया है। अतीत के अध्ययन से यह पता चलता है कि हमारे पूर्वजों के लिए क्या उपयोगी तथा लाभदायक था और वर्तमान समय में क्या लाभदयाक होगा। इस बात का ध्यान रखते हुए स्कूल का कर्तव्य है कि वह परम्पराओं, उनके ज्ञान तथा उनके व्यावहारिक मानदण्डों का संरक्षण करेऔर आने वाली पीढ़ी को सौंप दें, अन्यथा हमारे देश की सभ्यता समाप्त हो

जायेगी। इसलिए हमें चाहिए कि परम्पराओं , प्रथाओं एवं अतीत को जानते हुए वर्तमान पाठयचर्या के निर्माण में अतीत को जानने की परम आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पाठयचर्या निर्माण किया जाए।

2. **जीवन की उपयोगिता से सम्बन्धित होने का सिद्धान्त**- पाठयचर्या में उन विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए जो वर्तमान में बालकों के भावी जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके साथ ही उनका वास्तविक जीवन से सम्बन्ध हो, पाठयचर्या में वे सभी कार्यक्रम समाविष्ट होने चाहिए जो कि बालकों को इस योग्य बना दें कि वह बड़ा होने पर प्रभावपूर्ण ढंग से सामाजिक कार्यों में भाग ले सके और वर्तमान जीवन को सरलता से व्यतीत कर सके। ऐसे पुराने विषयों को नहीं पढ़ाया जाना चाहिए जिससे जीवन का कोई सम्बन्ध न हो। पाठयचर्या में ऐसी बातों को जोड़ा जाये जिसके द्वारा बालक अपनी उपयोगिता का समक्ष सके, पाठयचर्या में उन्हीं विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए जो बालकों के भावी जीवन में काम आ सके। अनुपयोगी विषयों को पाठयचर्या से अलग रखा जाना चाहिए। पाठयचर्या में मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, सामाजिकता को प्रथम स्थान पर रखा जाना चाहिए, जिससे बालकों को उपयोगिता के आधार पर पाठयचर्या दिया जा सके। पाठयचर्या बालक के भावी जीवन के लिए उपयोगी होना चाहिए।

3. **रचनात्मक एवं सृजनात्मक शक्तियों का सिद्धान्त**- पाठयचर्या में ऐसे सभी विषयों को जोड़ा जाना चाहिए जिसमें रचनात्मक एवं सृजनात्मक शक्तियों के विकास में अपना योगदान प्रदान कर सके। इसके लिए बालकों को समय-समय पर प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिए तथा उचित दिशा निर्देश दिया जाना उपयुक्त होगा। प्रत्येक बालक में किसी न किसी रूप में रचनात्मक कार्य करने की योग्यता अवश्य होती है। बालक की रुचियों तथा विशिष्ट योग्यताओं की खोज करके उनके अन्दर रचनात्मक एवं सृजनात्मक भावनाओं का विकास किया जा सके।

4. **क्रियाशीलता का सिद्धान्त**- पाठयचर्या का निर्माण क्रियाओं तथा अनुभवों को ध्यान में रखते हुए किया जाये बच्चे की दैनिक क्रियाओं की ओर अनुभूति करते हुए पाठयचर्या का निर्माण किया जाना चाहिए जिससे भविष्य में बालक सर्वांगीण विकास किया जा सके साथ ही पाठयचर्या में ऐसी क्रियाओं एवं अनुभवों की स्थान दिया जागा चाहिए जो लोकतांत्रिक दृष्टिकोण को अधिक से अधिक विकसित कर सकें।

5. **नैतिकता एवं उत्तम आदर्शों का सिद्धान्त**- बालक को शिष्ट एवं नैतिक जीवन व्यतीत करने हेतु पाठयचर्या में नैतिकता का विकास करना होगा जिसके द्वारा बालकों को बताना होगा कि इस लोकतांत्रिक देश में नैतिक मूल्य क्या है और इनकी उपयोगिता क्या है। क्योंकि पाठयचर्या में जब तक नैतिकता को स्थान नहीं होगा तब तक हम अपने लोकतांत्रिक उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकते हैं। पाठयचर्या के निर्माण के समय ध्यान रखना होगा कि बालक के अन्दर उत्तम आदर्शों का होना अति आवश्यक है। इसके लिए हमें चाहिए कि उन विषयों, क्रियाओं का समावेश करे जिससे बालकों को उत्तम आदर्श प्राप्त हो सके। पाठयचर्या में हमें समाज, देश एवं परोपकार की भावना का भी समावेश करना होगा।

6. **लचीलेपन का सिद्धान्त-** पाठयचर्या निर्माण के समय ध्यान देना होगा कि हमारा पाठयचर्या लचीला हो जिसमें बालक की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन किया जा सके और अनावश्यक बालक पर बोझ न लादा जाये। अन्यथा बालक निराशा की भावना से ग्रसित हो सकता है और व बालक की रुचियों आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनुपक्त साबित होता है। अतः वर्तमान को देखते हुए पाठयचर्या का लचीला होना अनिवार्य है। जिसमे आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सके।
7. **विकास एवं प्रगतिषीलता की प्रक्रिया का सिद्धान्त-** किसी भी पाठयचर्या का निर्माण सदैव के लिए नहीं होता है। हमें परिस्थिति के अनुसार पाठयचर्या में बदलाव की आवश्यकता होती है। जिससे हम अपने आने वाले भविष्य को तैयार कर सकें। और पाठयचर्या के माध्यम से शिक्षा को विकासोन्मुख बना सकें हमें चाहिए कि अपने राष्ट के विकास हेतु वर्तमान समय एवं परिस्थितियों का ध्यान में रखते हुए पाठयचर्या का निर्माण करना होगा जिसके द्वारा हम बालक का विकास शील प्रक्रिया से जोड़ सकें। किसी भी देश की प्रगति में पाठयचर्या का महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि यदि आप बालक को देश की प्रगति के बारे में नहीं बतायेंगे तो वह वर्तमान में देश की प्रगति में किए जा रहे प्रयासों में शामिल नहीं हो पायेगा। आज के बच्चे कल के आदर्श नागरिक हैं अतः उनको इस प्रकार शिक्षित किया जाना चाहिए कि उनमें प्रगतिशील विचारों की अवधारणा विकसित हो सके।
8. **अनुभवों की पूर्णता का सिद्धान्त-** पाठयचर्या का अर्थ केवल सैद्धान्तिक विषयों से नहीं होना चाहिए बल्कि पाठयचर्या में उन सभी अनुभवों को स्थान दिया जाना चाहिए जिनको बालक विद्यालय के बाहर अन्य जगहों पर प्राप्त करता है। जैसे खेल का मैदान, प्रयोगशाला, वर्कशाप आदि। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पाठयचर्या में बालक द्वारा विभिन्न क्रियाओं से प्राप्त अनुभव भी विशेष महत्व रखते हैं।
9. **खाली समय के सदुपयोग का सिद्धान्त-** पाठयचर्या निर्माण के समय ध्यान दिया जाना चाहिए कि बालक खाली समय का उपयोग किस प्रकार करे। पाठयचर्या में साहित्य, कला, खेलकूद, सामुदायिक कार्यों का समावेश होना चाहिए। हम कह सकते हैं कि पाठयचर्या इस प्रकार नियोजित किया जाये कि छात्रों के सर्वांगीण विकास सहायक सिद्ध हो।
10. **संस्कृति एवं सभ्यता का सिद्धान्त-** शिक्षा का एक उद्देश्य छात्रों को अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के संरक्षण के प्रति जागरूकता प्रदान करना भी है। पाठयचर्या में उन विषयों, वस्तुओं एवं क्रियाओं को अवश्य शामिल किया जाना चाहिए जिनके द्वारा बालकों को अपनी संस्कृति एवं सभ्यता का ज्ञान प्राप्त हो सके। पाठयचर्या के माध्यम से छात्रों को अपनी सांस्कतिक धरोहरों एवं सभ्यताओं के संरक्षण के लिए प्रेरित किया जा सके।
11. **प्रजातन्त्रात्मक भावना के विकास का सिद्धान्त-** हमारा देश एक प्रजातांत्रिक देश है हमें चाहिए कि पाठयचर्या के द्वारा प्रजातांत्रिक भावना को विकसित किया जाना चाहिए जिससे कि शिक्षा का मूल उद्देश्य की प्राप्ति हो सके। हमारा पाठयचर्या ऐसा होना चाहिए जो जनतंत्र की

भावना एवं आदर्श को पोषक हो हमें बालक के अन्दर लोकतांत्रिक भावना को जागृत करना है इसलिए पाठयचर्या जनतांत्रिक भावना का समावेश होना चाहिये।

12. **नवीनता की खोज का सिद्धान्त**- पाठयचर्या के निर्माण के समय हमें ध्यान देना चाहिये कि हम उस नवीन ज्ञान की प्राप्ति हेतु अग्रसर रहे जिसके द्वारा बालक का विकास हो सकता है। पाठयचर्या में चाहिए कि वर्तमान का ध्यान रखते हुए नवीन ज्ञान को भी स्थान दिया जाना चाहिए।
13. **सह-सम्बन्ध का सिद्धान्त**- पाठयचर्या में चाहिए कि एक विषय की शिक्षा दूसरे विषय की शिक्षा का आधार बन सके, विषयों के सम्बन्धित न होने पर पाठयचर्या की प्रभावशीलता समाप्त हो जाती है। बालक को सह-सम्बन्ध के आधार पर पाठयचर्या बताया जाना चाहिए।
14. **सर्वांगीण विकास का सिद्धान्त**- बालक को ऐसा पाठयचर्या देना चाहिए जिससे कि वह हर प्रकार का ज्ञान अर्जित कर सके जिससे वह अपना शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, संवेगात्मक तथा नैतिक विकास कर सके। यदि हमारा पाठयचर्या बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक होगा तभी हम उन शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति कर पायेंगे।
15. **सामुदायिक जीवन से सम्बन्ध का सिद्धान्त**- पाठयचर्या के निर्धारण के समय यह भी ध्यान रखा जाये कि बालक को सामुदायिक जीवन यापन करते समय कठिनाई का सामना न करना पड़े। उसके लिए हमें चाहिए स्थानीय आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रथाओं, संस्कारों, मान्यताओं, विश्वासों, मूल्य एवं मूलभूत समस्याओं को पाठयचर्या में स्थान दिया जाना चाहिए।
16. **सन्तुलन का सिद्धान्त**- पाठगचर्या के निर्माण में ध्यान देना चाहिए कि जीवन का हर पहलू एवं हर विषय में समान महत्व की प्राप्ति हो। ऐसा न हो कि किसी विषय या पहलू को अधिक महत्व दिया जाये, अतः बालक पाठयचर्या के द्वारा प्रत्येक क्षेत्र का समान ज्ञान प्राप्त कर सके।
17. **शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का सिद्धान्त**- पाठयचर्या में उन्ही क्रियाओं एवं विषयों को रखा जाना चाहिए जो शिक्षा के उद्देश्यों के अनुकूल हो हमें बालक को सामाजिक हितों के संरक्षण योग्य बनाना है । हमें पाठयचर्या के माध्यम में बालक को व्यवसाय परक एवं कार्यक्षमता में निपुण बनाना है। वर्तमान समय में हमें बालक के अन्दर शारीरिक, सामाजिक, सांस्कतिक एवं चारित्रिक विकास के बच्चे बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में सर्वांगीण विकास हो जिससे हमारे शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके।
18. **चेतना का सिद्धान्त**- पाठयचर्या इस प्रकार का जिसमें छात्र के अन्दर भविष्य में होने वाली घटनाओं के विषय में जानकारी दी जा सके ताकि समाज एवं देश के विकास में बालक सहयोग प्रदान कर सके और किसी प्रकार घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। बालक का भविष्योपयोगी जानकारी प्रदान की जाये।

अभ्यास प्रश्न

6. पाठयचर्या विकास के प्रमुख सोपानों को लखिए।
7. पुस्तक "Curricu lam Process" के लेखक हैं ________।
8. ________द्वारा प्रस्तावित मानदण्ड के अनुसार अधिगमअनुभवों को छः शर्तें पूरी करनी - चाहिए।
9. ________के अनुसार पाठयचर्या की संरचना का निर्माण छः पृथक तत्वों के मिलने से होता है।
10. "Curricu lum P lanning in Modern Schoo l" नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं।
11. पाठयचर्या निर्माण के किन्हीं दो आधारभूत सिद्धान्तों को लिखिए

3.8 सारांश

पाठयचर्या शिक्षा का आधार है। पाठयचर्या के बिना इस लोकतांत्रिक देश में शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो सकती, अतः हमें चाहिए कि उन शैक्षिक उद्देश्यों, मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखकर पाठयचर्या का निर्माण करना होगा साथ अनुसंधान के माध्यम से बालक की आवश्यकताओं एवं जीवन उपयोगी बनाना है। जिससे भविष्य में वह अच्छे समाज का नागरिक बन सके और अपनी व्यक्तित्व क्षमता एवं शक्ति के माध्यम से देश को प्रगतिशीलता में सहयोग प्रदान करे। बालक को मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक आदि क्रियाओं को ध्यान में ध्यान हुए सर्वांगीण विकास हेतु पाठयचर्या को नवीन पाठयचर्या के रूप में प्रस्तुत करना है। ऐसे पाठयचर्या का निर्माण करना है जिसमें बालक, शिक्षक एवं समाज तथा विषय वस्तु का ध्यान रखा जायें जिससे हमारे नैतिक मानवीय मूल्यों का ह्रास न हो। हमे सभ्यता, संस्कृति, राष्टीयता एवं अंतराष्टीयता की भावना को ध्यान में रखना होगा। बालक के अन्दर अच्छे गुणों के विकास हेतु पाठयचर्या निर्माण में पुस्तक के द्वारा एवं लेखकों, शिक्षाविदों, समाजसेवियों अन्य सभी से राय लेते एवं पूर्ण मूल्यांकन करते हुए, शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पाठयचर्या का विकास करना होगा।

3.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. पाठयचर्या के कोई दो उद्देश्य -
    - आवश्यकता अनुसार पाठयचर्या का निर्माण करना।
    - बालक का सर्वांगीण विकास करना एवं बालक को जीवन उपयोगी बनाना।
2. सरल , परिवर्तनशील
3. मूल्यांकन पद्धति
4. ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक
5. राष्टीय शिक्षा नीति 1986

6. पाठयचर्या विकास के प्रमुख सोपानों हैं -
   i. शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण।
   ii. निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उपयुक्त अधिगम अनुभवों का चयन।
   iii. अधिगम अनुभवों को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त अन्तर्वस्तु का चयन।
   iv. अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया की दृष्टि से चयनित अधिगम अनुभवों एवं अन्तर्वस्तु का संगठन।
   v. सम्पूर्ण प्रक्रिया का उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से मूल्यांकन।
7. डी0के0 व्हीलर
8. बर्टन
9. जेम्स एम0ली0
10. सेलर तथा एलेक्जेन्डर
11. पाठयचर्या निर्माण के कोई दो आधारभूत सिद्धान्त
   i. जीवन की उपयोगिता से सम्बन्धित होने का सिद्धान्त
   ii. लचीलेपन का सिद्धान्त

3.10 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाठक पी.डी.,त्यागी जी.एस.डी.,दसवां संस्करण, 1988, ''सफल शिक्षण कला'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. अग्रवाल जे.सी., जायसवाल विजय, 2008, 2013, ''शैक्षिक तकनीकि एवं प्रबंध'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
3. मालवीय डॉ., राजीव, 2011, '' शैक्षिक तकनीकि एवं प्रबन्ध'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. अग्रवाल जे.सी., 2011, ''शैक्षिक तकनीकि एवं प्रबन्ध'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
5. मिश्रा, डॉ. डी.सी., द्वितीय संस्करण, , ''शैक्षिक तकनीकि के सारभूत तत्व एवं प्रबंधन", साहित्य प्रकाशन, आगरा।
6. लाल, रमन बिहारी, 2009-2010, "भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्यायें", रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
7. सिंह डॉ., कर्ण, 2004, ''भारतीय शिक्षा का ऐतिहासिक विकास'', वेदान्त पब्लिकेशन्स, लखनऊ।
8. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, अगस्त 2008, ''पाठ्यचर्या एवं अनुदेशन।
9. http://www.ncdc.go.ug
10. http://www.undp.org
11. http://www.uwsp.edu

12. http://www.unom.ac.in
13. http://www.wikihow.com
14. http://www.tigweb.org
15. http://www.staff.mq.edu.au>teaching
16. http://www.flinders.edu.au
17. http://www.techno logy.com
18. http://www.cuip.uchicago.edu
19. http://www.oak.ucc.nau.edu
20. http://www.threeeducationcafe.wordpress.com

3.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पाठयचर्या विकास की सम्पूर्ण प्रक्रिया का उल्लेख कीजिए।
2. पाठयचर्या विकास के प्रमुख सिद्धान्त कौन -कौन से हैं? विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।
3. डी0 के0 व्हीलर द्वारा प्रतिपादित पाठयचर्या विकास के प्रमुख सोपानों की विवेचना कीजिए।
4. स्टैनली निस्वत द्वारा प्रस्तावित अन्तर्वस्तु चयन के प्रमुख मानदण्डों को लिखिए।
5. पाठयचर्या निर्माण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
6. एक अच्छे पाठयचर्या निर्माण के क्या उद्देश्य होंगे? लिखिए।

इकाई 4 : पाठयचर्या विकास के निर्धारक

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 पाठयचर्या विकास के निर्धारक
4.3.1 पाठयचर्या विकास के दार्शनिक आधार/निर्धारक
4.3.2 पाठयचर्या विकास के सामाजिक आधार/निर्धारक
4.3.3 पाठयचर्या विकास के मनोवैज्ञानिक आधार/निर्धारक
4.4 सारांश
4.5 शब्दावली
4.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.7 संदर्भ ग्रन्थ सूची
4.8 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है तथा शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु पाठयचर्या का निर्माण किया जाता है। पाठयचर्या वह समग्र परिस्थिति अथवा परिस्थितियों का समूह होता है जिसके माध्यम से शिक्षक तथा विद्यालय प्रशासक उन अनेक बालकों एवं तरुणों के व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं जो विद्यालय शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। पाठयचर्या में केवल ज्ञानात्मक पक्ष का ही समावेश नही किया जाता है अपितु कौशल एवं रुचियों, मनोवृतियों आदि व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों का समावेश होता है। अब आप के मन में यह प्रश्न होगा कि पाठयचर्या निर्माण के आधार क्या हैं? प्रमुख रूप से तीन शास्त्र पाठयचर्या के आधार निश्चित करते हैं। प्रथम आधार दर्शन शास्त्र द्वारा निर्धारित किया जाता है। शिक्षा के लक्ष्य, ज्ञान की प्रकृति, शिक्षा में मूल्यों का समावेश, इन सबका निर्धारण दर्शनशास्त्र द्वारा किया जाता है। शैक्षिक लक्ष्यों को व्यावहारिक शब्दावली में प्रस्तुत करने का कार्य मनोविज्ञान करता है। कितना और किस प्रकार का ज्ञान किस कक्षा स्तर, आयु स्तर के बालकों के लिए उपयुक्त है? व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर पाठयचर्या निर्माण करने में भी शिक्षा मनोविज्ञान मदद करता है। मनोविज्ञान का सबसे अधिक प्रभाव शिक्षण विधियों पर पड़ता है। शिक्षण विधियों को भी पाठयचर्या का अंग माना जाता है। इस प्रकार मनोविज्ञान पाठयचर्या निर्माण का दूसरा प्रमुख आधार माना जाता है। मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने के नाते उससे कुछ सामाजिक अपेक्षाएँ होतीं

हैं। सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन व विश्लेषण समाजशास्त्र द्वारा किया जाता है । शिक्षा के लक्ष्य सामाजिक परिस्थितियों द्वारा प्रभावित होते हैं और इस प्रकार समाजशास्त्र शिक्षा के लक्ष्यों का निर्धारण करने में सहायक होता है। इस प्रकार पाठयचर्या विकास के प्रमुख निर्धारक दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र हैं जिनके द्वारा ही सार्थक एवं प्रभावशाली पाठयचर्या निर्मित किया जाता है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के पश्चात आप –

1. पाठ्यचर्या विकास के लिए विषय की प्रकृति का वर्णन कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी संबंधी उन कारकों को स्पष्ट कर सकेंगे जो पाठ्यचर्या विकास को प्रभावित करते हैं।
3. पाठ्यचर्या विकास को प्रभावित करने वाले दार्शनिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों(निर्धारकों) को स्पष्ट कर सकेंगे।
4. पाठ्यचर्या योजना तथा पाठ्यचर्या विकास पर विभिन्न कारकों के सापेक्ष प्रभाव की चर्चा कर सकेंगे।

4.3 पाठयचर्या विकास के निर्धारक

अब आप उन कारकों के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे जो पाठयचर्या विकास के प्रमुख आधार हैं अर्थात जो पाठयचर्या विकास के प्रमुख निर्धारक हैं। पाठयचर्या विकास के प्रमुख आधारों- दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र की चर्चा निम्नलिखित है-

4.3.1 पाठयचर्या विकास के दार्शनिक आधार

शिक्षा क्यों दें ? किसको दें ? कैसे दें ? कब दें ? तथा शिक्षा कैसी हो? आदि आधारभूत प्रश्नों पर आप विचार कीजिये? पाठयचर्या निर्माताओं को इन आधारभूत प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक होता है। पाठयचर्या के क्रियान्वयन के फलस्वरूप प्राप्त परिवर्तित व्यवहार की वांछनीयता अथवा उचित – अनुचित के निर्धारण में भी दर्शन की शाखा मूल्यमीमांसा दिशा प्रदान करती है। दर्शनशास्त्र मूलतः जीवन की आधारभूत समस्याओं के उत्तर प्राप्त करने और मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए किए जाने वाले अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है।

पाठयचर्या का मेरुदंड ही दर्शन है। क्या पढ़ाया जाय? क्या न पढ़ाया जाय? इस प्रश्न का उत्तर व्यक्ति और समाज अपनी दार्शनिक मान्यता के आधार पर देता है। प्रत्येक दार्शनिक विचारधारा का

पाठयचर्या पर अवश्य प्रभाव पड़ता है। **रस्क** महोदय ने कहा है कि "दर्शन पर पाठयचर्या का संगठन जितना आधारित है उतना शिक्षा का कोई अन्य पक्ष नहीं।

देश और काल के अंतराल से अभी तक जिन विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का अभ्युदय हुआ है, उनमें से प्रमुख विचारधाराएँ निनलिखित हैं-

1. आदर्शवाद (Idealism)
2. प्रकृतिवाद (Naturalism)
3. प्रयोजनवाद (Pragmatism)
4. यथार्थवाद (Realism)
5. अस्तित्ववाद (Existentialism)

आदर्शवाद और पाठयचर्या (Idealism and Curriculum)

आदर्शवाद भौतिक जगत की तुलना में आध्यात्मिक जगत को अधिक महत्तव देता हैं तथा वस्तु की अपेक्षा विचार को अधिक महत्वपूर्ण मानता हैं। इसलिये शिक्षा के उद्देशय- आत्मानुभूति अथवा व्यक्तित्व का उन्नयन करना है। इसलिये आदर्शवादी पाठयचर्या की रचना आदर्शों, विचारों एवं शाशवत मूल्यों के आधार पर होती हैं और पाठयचर्या में प्रमुख विषयों- धर्मशास्त्र, अध्यात्मशास्त्र, भाषा, साहित्य, समाजशास्त्र, इतिहास, भूगोल, कला एवं संगीत आदि को शामिल करने पर बल देता है तथा शारीरिक शिक्षा, विज्ञान, गणित आदि को गौण विषय मानता है।

प्रकृतिवाद और पाठयचर्या (Naturalism and Curriculum)

प्रकृतिवाद के अनुसार प्रकृति ही सब कुछ है, ईश्वर के अस्तित्व की मान्यता नहीं है तथा इस विचारधारा ने पदार्थ, भौतिक जगत एवं प्रकृतिक नियमों को सर्वाधिक महत्त्व दिया। प्रकृतिवादी मनुष्य की मूल प्रवृतियों का शोधन एवं मार्गांतिकरण कर जीवन संघर्ष के लिए तैयार करना, वातावरण से अनुकूलन को शिक्षा का मूल उद्देश्य मानते हैं। प्रकृतिवादी पाठयचर्या की रचना बालक की प्रकृति एवं रुचियों, योग्यताओं के आधार पर की जाती हैं। इस पाठयचर्या में वैज्ञानिक विषयों को प्रमुख तथा मानवीय विषयों को गौण स्थान दिया जाता है। प्रकृतिवादियों के अनुसार मुख्य विषय- खेलकूद, शरीर विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं गणित आदि। इन्होने भाषा, साहित्य, सामाजिक विज्ञान, कला, संगीत आदि विषयों को कम महत्व देने की वकालत की।

प्रयोजनवाद और पाठयचर्या (Pragmatism and Curriculum)

प्रयोजनवादी दार्शनिक ईश्वर एवं आध्यात्मिक तत्व के स्थान पर व्यक्ति में विश्वास करते हैं तथा मानव की शक्ति के महत्व को स्वीकार करता है। इनके अनुसार मूल्य पूर्व निर्धारित नहीं होते हैं

बल्कि निर्माण की अवस्था में हैं। इन्होने मानवीय एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को अधिक महत्व दिया। प्रयोजनवादियों के अनुसार शिक्षा के कोई पूर्व निर्धारित उद्देश्य नहीं होते बल्कि उद्देश्य व्यक्तियों के होते हैं तथा देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं।शिक्षा का कार्य ऐसे गतिशील एवं लचीले मस्तिष्क का निर्माण करना है जो अज्ञात भविष्य में नवीन मूल्यों की रचना कर सके। प्रयोजनवादी पाठयचर्या उपयोगिता, रुचि, अनुभव तथा एकीकरण के सिद्धान्त पर आधारित होता है। पाठयचर्या के प्रमुख विषय स्वास्थ्य विज्ञान, शारीरिक विज्ञान, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, गणित, गृह विज्ञान तथा कृषि शिक्षा आदि हैं।

यथार्थवाद तथा पाठयचर्या (Realism and Curriculum)

यथार्थवादी दर्शन पूर्णत वैज्ञानिक दृष्टिकोण आधारित है। यह स्थूल जगत को महत्व देता है तथा कारण- परिणाम के वैज्ञानिक नियम को सर्वव्यापी एवं सर्वमान्य मानता है तथा व्यक्ति एवं समाज दोनों में विश्वास करता है। यथार्थवादी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य सुखी एवं वास्तविक जीवन की तैयारी हेतु ज्ञानेन्द्रियों का विकास एवं प्रशिक्षण करना है तथा बालक को प्रकृति एवं सामाजिक वातावरण से परिचित कराकर उसे व्यावसायिक कुशलता प्रदान करना है। यथार्थवादी पाठयचर्या उपयोगिता तथा आवश्यकता के सिद्धान्त पर आधारित होता है। पाठयचर्या में दैनिक जीवन मे उपयोगी विषयों को सम्मिलित किया जाता है। प्राकृतिक विज्ञान, भौतिकी, रसायन, स्वास्थ्य रक्षा, व्यायाम, भ्रमण, गणित, नक्षत्र विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि विषयों को शामिल किया गया है।

अस्तित्ववाद और पाठयचर्या (Existentialism and Curriculum)

अस्तित्ववाद विचारधारा पाठयचर्या की प्रस्तावना में आस्था नहीं रखते है। इस विचारधारा के पाठयचर्या का चयन छात्र स्वयं अपनी आवश्यकता, योग्यता एवं जीवन की परिस्थितियों के अनुकूल करता है। इस विचारधारा के अंतर्गत वैज्ञानिक विषयों की अपेक्षा मानवीय अध्ययनों पर विशेष बल दिया गया है। इस अध्ययनों के माध्यम से दुख, चिंता, मृत्यु, घृणा आदि का ज्ञान प्राप्त करना। इसके अंतर्गत कला, संगीत, साहित्य, धर्म, नैतिक सिद्धान्त व्यक्तिक चयन, चिंतन, स्व-उतरदायित्व विषयों को शामिल किया जाता है।

भारतीय दर्शन एवं पाठयचर्या (Indian Philosophy and Curriculum)

भारतीय दर्शनिक विचारधारा के अनुसार ज्ञान हमारी आत्मा मे निहित रहता है तथा शिक्षा द्वारा इसे प्रकाश मे लाया जाता है। यह मानव को विवेकयुक्त प्राणी मानता है। चार पुरुषार्थों के रूप में चार भारतीय मूल्य है- अर्थ, कम, धर्म और मोक्ष। जीवन के विभिन्न पक्षों की जड़ धर्म ही है अतः जो धर्म का लक्ष्य है वही शिक्षा का भी लक्ष्य है। भारतीय दार्शनिक पाठयचर्या में यही धर्मशास्त्र, अध्यात्मशस्त्र, नीतिशास्त्र, प्राचीन भाषाएँ, गणित, तर्कशास्त्र आदि विषयों को पढ़ाने का समर्थन करतें हैं।

पाठ्यचर्या निर्माण

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रत्येक दार्शनिक विचारधारा अपने दार्शनिक सिद्धांतों एवं मूल्यों के आधार पर विषयों को पढ़ाये जाने का समर्थन करती है तथा किसी समाज में पाठयचर्या विषयों का निर्धारण उस समाज , काल, परिस्थिति मे प्रचलित एवं मान्य दार्शनिक विचारधारा के आधार पर होता है। इस प्रकार आप जान गए होंगे कि किस प्रकार दर्शनशास्त्र पाठयचर्या निर्माण हेतु एक निर्धारक के रूप मे कार्य करता है।

4.3.2 पाठयचर्या विकास के सामाजिक आधार

शिक्षा में सामाजिक प्रवृति का तात्पर्य शिक्षा द्वारा बालकों में सामाजिक गुणों के विकास करने के प्रयास करने की प्रक्रिया से है जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का कल्याण हो सके। उन्नीसवी शताब्दी में महान दार्शनिक रूसो के व्यक्तित्ववाद के प्रतिक्रिया के फलस्वरूप समाजिकतावादी प्रवृति का जन्म हुआ, जिसने व्यक्ति को बदलते हुए समाज में रहने के लिए तैयार करने की आवश्यकता पर बल दिया। इसी समय फ्रांसीसी विद्वान अगस्त काम्टे ने एक नवीन सामान्य सामाजिक विज्ञान 'समाजशास्त्र' को जन्म देकर शिक्षा मे समाजशास्त्रीय प्रवृति को पूर्ण बना देने की सुद्धढ आधारशिला रख दी। समाजशास्त्र की ही शाखा शैक्षिक समाजशास्त्र को समाज के सभी आदर्शों, नियमों, समस्याओं, साधनों एवं तथा उनके व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करके समाज की उन्नति के लिए शिक्षा के उद्देश्यों, पाठयचर्या , शिक्षणविधि, पाठ्यपुस्तकें, अनुशासन, विद्यालय तथा शिक्षक आदि का स्वरूप निर्धारित करता है। शिक्षा में समाज की क्या भूमिका है तथा पाठयचर्या निर्माण इससे कैसे प्रभावित होता है इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित है-

1. समाजशास्त्रीय प्रवृति (Sociological Tendency)
2. सामाजिक स्थिति (Social Condition)
3. सामाजिक दबाव वर्ग (Social Pressure Group)
4. परिवार (Family)
5. धार्मिक संगठन (Religious Organisations)
6. शिक्षक एवं शिक्षार्थी (Teacher and Students)
7. समाज की प्रकृति (Nature of the Society)
8. समाज की बदलती आवश्यकतायेँ (Changing Needs of the Society)

समाजशास्त्रीय प्रवृति और पाठयचर्या (Sociological Tendency and Curriculum)

शिक्षा में समाजशास्त्रीय प्रवृति पाठयचर्या निर्माण में साहित्यिक विषयों की अपेक्षा सामाजिक विषयों पर अधिक बल दिया जाता है। इसके अनुसार प्रकृति विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान का विशेष स्थान होता है। इसलिए पाठयचर्या का विस्तार सामाजिक एवं व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।

सामाजिक स्थिति और पाठयचर्या (Social Condition and Curriculum)

समाज के आवश्यकतों के अनुरूप ही शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण करना चाहिए तथा पाठयचर्या का उद्देश्य भी एक तरह से व्यक्ति को समुचित समायोजन में सहायता प्रदान करने की होती है। अतः वर्तमान पाठयंचर्या में सामाजिक स्थिति की ध्यान में रखते हुए जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, प्रदूषण की समस्या, सुरक्षा-शिक्षा, परिवहन शिक्षा, काम-शिक्षा, जाति-उन्मूलन, परिवार कल्याण, विवाह एवं तलाक की समस्या, राष्ट्रिय एवं अंतर्राष्ट्रीय एकता की शिक्षा आदि विषयों का समावेश किया जा रहा है।

सामाजिक दबाव वर्ग और पाठयचर्या (Social Pressure Group and Curriculum)

शिक्षा में सामाजिक प्रवृति के कारण पाठयचर्या को विभिन्न स्तरों पर कई तरह के सामाजिक दबावों का सामना करना पड़ता है। एक तरफ जहां कुछ वर्ग परिवर्तन लाने के उद्देश्यों से कार्य करते हैं वहीं अनेक दबाव समूह उन्हें रोकने के उद्देश्य से भी क्रियाशील रहते हैं। वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के विद्यालय, शिक्षा परिषदें, विश्वविद्यालय, परीक्षा कार्यक्रम एवं संसोधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

परिवार और पाठयचर्या (Family and Curriculum)

बालक की अनौपचारिक शिक्षा का प्रारम्भ परिवार से ही होता है। वर्तमान समय में परिवारों के परंपरागत कार्यों एवं दायित्वों का स्थानांतरण विद्यालयों को हो गया है तथा इसका महत्वपूर्ण कारक आज के युग की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था भी है।

धार्मिक संगठन और पाठयचर्या (Religious Organisation and Curriculum)

प्राचीन काल से ही शिक्षा के क्षेत्र में परिवार के बाद दूसरा स्थान धार्मिक संगठनो का रहा है। किन्तु वैज्ञानिक एवं औद्योगिक क्रांति के बाद शिक्षा के क्षेत्र में धार्मिक संगठनो की भूमिका कुछ कम हुई है। अब भी पाठयचर्या के सामाजिक आधारों मे धर्म का महत्वपूर्ण स्थान बना हुआ है।

शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठयचर्या (Teacher, Student and Curriculum)

पाठयचर्या के उद्देश्यों, उसकी अंतर्वस्तु, अधिगमानुभावों का चयन, मूल्यांकन प्रक्रिया आदि के संबंध में निर्णय लेते समय छात्र जनसंख्या को भी ध्यान देने आवश्यक होता है जिसके लिए पाठयचर्या का आयोजन किया जा रहा है। साथ ही साथ शिक्षकों के आचार-विचार, आस्थाएँ, मान्यताएँ, सामाजिक पृष्ठभूमि एवं शैक्षिक योग्यताएँ आदि पाठयचर्या को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं।

समाज की प्रकृति और पाठयचर्या (Nature of the Society and Curriculum)

कोई भी समाज न तो पूर्ण रूप से परंपरा प्रेमी होता है और न ही पूर्ण रूप से परिवर्तन प्रेमी होता है। इसप्रकार समाज की प्रकृति के अनुरूप पाठयचर्या को अपने आपको समायोजित करते रहना पड़ता है। यह एक सतत प्रक्रिया है।

समाज की बदलती आवश्यकताएँ और पाठयचर्या (Changing needs of the Society and Curriculum)

आधुनिक समाज में परिवर्तन गति बहुत अधिक तीव्र होने के कारण अनेक नवीन प्रवृतियों का उदय हो रहा हो रहा है जिसके कारण पाठयचर्या नियोजकों को कठिनाई का सामना करना पद रहा है। किसी भी आधुनिक समाज में मुख्यतः सामाजिक, राजनैतिक, तकनीकी, आर्थिक एवं परिस्थितीय परिवर्तन से संबन्धित विषयों को पातयचर्या में समावेशित किया जा रहा है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रत्येक सामाजिक विचारधारा अपने सामाजिक सिद्धांतों एवं आवश्यकताओं के आधार पर विषयों को पढ़ाये जाने पर बल देती है तथा किसी समाज में पाठयचर्या विषयों का निर्धारण उस समाज , काल, परिस्थिति मे प्रचलित एवं आवश्यक समाजशास्त्रीय विचारधारा के आधार पर होता है। इस प्रकार आप जान गए होंगे कि किस प्रकार समाजशास्त्र विषय पाठयचर्या निर्माण हेतु एक निर्धारक के रूप मे कार्य करता है।

4.3.3 पाठयचर्या विकास के मनोवैज्ञानिक आधार

शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रवृति ने शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण पद्धति, पाठयचर्या , शिक्षा के संगठन, अनुशासन की अवधारणा, शिक्षक की भूमिका आदि सभी क्षेत्रों को नया आयाम प्रदान किया है। मनोविज्ञान के विकास ने पाठयचर्या रचना को कई प्रकार से प्रभावित किया है। पाठयचर्या की पृष्ठभूमि में मनोवैज्ञानिक दृष्टि सर्वत्र व्याप्त रहती है फिर भी इसके पाठयचर्या निर्माण के मुख्य निर्धारक निम्नलिखित है-

1. परिपक्वता एवं विकास (Maturity and Development)
2. व्यक्तिगत भिन्नता (Individual Differences)
3. अभिरुचि (Interest)
4. अभिप्रेरणा (Motivation)
5. अधिगम प्रक्रिया एवं अधिगम का स्थानांतरण (learning Process and Transfer of learning)

परिपक्वता, विकास तथा पाठयचर्या (Maturity, Development and Curriculum)

मनुष्य की आयु में वृद्धि के साथ समुचित ढंग से होने वाले शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों को मनोविज्ञान में परिपक्वता की संज्ञा दी जाती है। बालक का शारीरिक विकास शिक्षाक्रम को निश्चित

रूप से प्रभावित करता है अतः अधिगम स्थितियों का चयन बालक के विकास की दृष्टि से ही किया जाना चाहिए। इसीलिए पेस्टोलोजी ने पाठयचर्या निर्माण में विकास के सिद्धांत को प्रमुखता प्रदान की है।

व्यक्तिगत भिन्नता एवं पाठयचर्या (Individual Differences and Curriculum)

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो किन्हीं भी दो व्यक्तियों के बीच तो अंतर होता ही है, साथ ही व्यक्ति के अंदर विभिन्न प्रकार की क्षमताओं के विभिन्न स्तर भी होते है। वर्तमान समय मे विभिन्न आयु वर्ग के बालकों की आवश्यकताएँ भिन्न-2 होती है तथा इन बालकों के लिए अलग-2 पाठ्यक्रमों का ढंग उपयोग मे लाया जा रहा है किन्तु एक ही आयु वर्ग में व्यक्तिगत भिन्नता के कारण उनके पाठ्यक्रमों में विविधता की भी आवश्यकता हैं।

अभिरुचि एवं पाठयचर्या (Interest and Curriculum)

अभिरुचि का तात्पर्य किसी वस्तु या विषय के प्रति लगाव का होना है। बालकों में जन्मजात अभिरुचियों की संख्या बहुत कम होती है तथा काव्यात्मक, कलात्मक एवं संगीत संबंधी अभिरुचियों को छोड़ कर अधिकतर अभिरुचियाँ बालक वातावरण से अर्जित करते है। इसके लिए पाठयचर्या निर्माताओं को विविध अधिगम-अनुभवों के साथ-2 उचित अभिप्रेरकों, निर्देशन तथा पुनर्बलन की व्यवस्था की ओर भी ध्यान देना चाहिए। इसलिए पाठयचर्या निर्माण में रुचि के सिद्धांत का अपना विशेष महत्व है।

अभिप्रेरणा एवं पाठयचर्या (Motivation and Curriculum)

अभिप्रेरणा से प्राणी की अनुक्रिया की शक्ति में वृद्धि होती है। अभिप्रेरणा द्वारा किसी क्रिया को सीखने के लिए उत्साह उत्पन्न किया जा सकता है अतः एक कुशल शिक्षक विद्यालय मे अभिप्रेरणा का सकारात्मक उपयोग करके बालकों को नवीन तथ्यों के विषय में रुचि उत्पन्न कर सकता है तथा पाठयचर्या निर्माणकर्ता को इस बात का ध्यान रखना चाहिए की निश्चित तथ्यों के पश्चात अभिप्रेरणा की व्यवस्था की गयी हो।

अधिगम प्रक्रिया एवं पाठयचर्या (learning Process and Curriculum)

पाठयचर्या -नियोजकों के लिए अधिगम-प्रक्रिया के सैद्धांतिक पक्ष की अपेक्षा इसका व्यवहारिक एवं शैक्षिक पक्ष अधिक महत्वपूर्ण है, मनोविज्ञान के विकास के साथ ही साथ अडिगम- मनोविज्ञान भी बहुत विकसित हो चुका है। अधिगम का क्षेत्र –सिद्धांत उद्दीपन एवं अनुक्रिया के बीच होने वाली प्रक्रियाओं की संकल्पना पर आधारित है। अतः पाठयचर्या नियोजकों एवं शिक्षकों कों S –R संबंध स्थापित करते समय उनकी मध्यवर्ती क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं के प्रति भी सजग रहने की आवश्यकता होती है।

पाठ्यचर्या निर्माण

अधिगम स्थानांतरण एवं पाठयचर्या (learning Transfer and Curriculum)

अधिगम या प्रशिक्षण के स्थानांतरण से तात्पर्य एक परिस्थिति या क्षेत्र में अर्जित ज्ञान, प्रशिक्षण और आदतों का दूसरी परिस्थिति या क्षेत्र में उपयोग किया जाना है। अधिगम के स्थानांतरण को ध्यान में रखते हुए पाठयचर्या नियोजकों को पाठयचर्या का निर्धारण छात्रों के आवश्यकता के अनुकूल होना चाहिए। पाठयचर्या के माध्यम से भावी जीवन के आवश्यकताओं का भी परिचय कराया जाना चाहिए।

पाठयचर्या नियोजकों के लिए उपयोगी अधिगम संबंधी सामान्य तथ्य

विभिन्न मनोवैज्ञानिक प्रयोगों के आधार पर अधिगम संबंधी जिन तथ्यों की पुष्टि हो चुकी है, उनमें से प्रमुख इसप्रकार है-

- अधिगम जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है तथा ये शिक्षार्थी की परिपक्वता से संबन्धित होती है।
- अधिगम बालक की शारीरिक, मानसिक, एवं संवेगात्मक विकास की दशाओं से प्रभावित होती है।
- अधिगम में शिक्षार्थी की सक्रिय सहभागिता आवश्यक होती है तथा अधिगम तभी प्रभावी होगा जब शिक्षार्थी का लक्ष्य स्पष्ट होगा।
- प्रभावशाली अधिगम के लिए अभिप्रेरणा का होना आवश्यक है तथा अधिगम के लिए मुक्त वातावरण सहायक होता है।
- अधिगम-तत्परता शिक्षार्थी के पूर्व अनुभव, अभिरुचियों एवं अभिवृतियों पर निर्भर करती हैं।
- तत्काल पुनर्बलन अधिगम की गति को बढ़ाता है, जबकि पुनर्बलन का आभाव अधिगम में बाधक होता है।
- प्रस्तुत अधिगम-अनुभवों का क्षेत्र जितना आधिक व्यापक होता है, सामान्यीकरण एवं विभेदीकरण उतना ही अधिक अच्छा होता है।
- एक ही परिस्थिति के प्रति बालकों की प्रतिक्रिया भिन्न-2 हो सकती है, क्योंकि अधिगम व्यक्तिक मूल्यों, लक्ष्यों एवं विचारों पर आधारित होता है।

पाठयचर्या -नियोजकों के लिए अधिगम संबंधी कुछ सुझाव

अधिगम संबंधी समान्य तथ्यों की जानकारी के साथ-साथ पाठयचर्या -नियोजकों को मनोवैज्ञानिक प्रवृति संबंधी कुछ महत्वपूर्ण बातों पर भी ध्यान रखना आवश्यक है, जो इसप्रकार है-

- पाठयचर्या का संबंध बालक प्रकृति एवं जीवन की वास्तविकता से होना चाहिए।

- विद्यालयों में प्रदान किया जाने वाला अनुभव बालकों की स्वाभाविक क्रियाओं एवं अभिरुचियों पर आधारित होना चाहिए।
- अधिगम-प्रक्रिया में "क्रिया द्वारा सीखना" अर्थात करके सीखने को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए।
- यथासंभव पाठयचर्या के लिए विषय-सामाग्री का चयन वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से ही करना चाहिए।
- पाठयचर्या में बालकों को अभिप्रेरित करने के अधिक-से-अधिक अवसर सुलभ होने चाहिए जिससे वे विभिन्न क्रियाओं, चर्चाओं एवं रचनात्मक कार्यों में सक्रिय भाग ले सकें तथा उन्हें विभिन्न प्रकार के कौशलों एवं ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता का अनुभव भी हो सके।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रत्येक मनोवैज्ञानिक विचारधारा अपने मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों एवं आवश्यकताओं के आधार पर विषयों को पढ़ाये जाने पर बल देती है तथा मनोविज्ञान ने शिक्षा के हर पक्ष को प्रभावित किया है। मनोविज्ञान के विकास के परिणामस्वरूप अनेक देशों में बालकों की आवश्यकताओं के आधार पर पाठयचर्या निर्माण का प्रयास किया जा रहा है इस प्रकार आप जान गए होंगे कि किस प्रकार मनोविज्ञान विषय पाठयचर्या निर्माण हेतु एक निर्धारक के रूप मे कार्य करता है।

अभ्यास प्रश्न

1. पाठयचर्या विकास के दार्शनिक आधार से क्या तात्पर्य है?
2. पाठयचर्या विकास का दार्शनिक आधार किन-2 दर्शनिकों ने से प्रभावित है?
3. पाठयचर्या विकास के सामाजिक आधार के अंतर्गत पाठयचर्या को परंपरागत ढंग से प्रभावित करने वाले दबाव वर्गो के नाम बताइये?
4. समाज की बदलती आवश्यकताओं के आधार पर वर्तमान पाठयचर्या कैसा होना चाहिए?
5. मनोविज्ञान पाठयचर्या विकास को किस प्रकार प्रभावित करता है?
6. पाठयचर्या विकास मे मनोवैज्ञानिक आधार की कोई दो उपयोगिता बताइये?

4.4 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने देखा किस प्रकार पाठयचर्या विकास में विभिन्न निर्धारकों की क्या- क्या भूमिका रही है इस विषय में विस्तार से चर्चा हो चुकी है। इस इकाई में सर्वप्रथम पाठयचर्या विकास के दार्शनिक आधार के विषय में चर्चा हुई आपने देखा कि किस प्रकार महान दार्शनिकों ने

पाठयचर्या विकास में अपने-अपने मतों को प्रस्तुत किया है तथा समय-2 पर दर्शन के अंतर्गत आने वाले आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद, यथार्थवाद तथा अस्तित्ववाद ने पाठयचर्या विकास में बालकों कि आवश्यकताओं को अलग-2 बताया है साथ ही साथ पाठयचर्या के आधारभूत सिद्धांतों को भी भिन्न-2 बताया है। दार्शनिक आधार पर चर्चा करने के पश्चात अपने पाठयचर्या विकास के सामाजिक आधार के विषय में जाना कि किस प्रकार हमारा समाज, परिवार, धार्मिक संगठन, हमारी बदलती आवश्यकताएँ तथा शिक्षक एवं शिक्षार्थी पाठयचर्या विकास को किस प्रकार प्रभावित करते है। तत्पश्चात पाठयचर्या विकास के मनोवैज्ञानिक आधार कि चर्चा के अंतर्गत अपने देखा कि किसप्रकार मनोविज्ञान तथा मनोविज्ञान के अंतर्गत होने वाले शोध पाठयचर्या विकास को प्रभावित करता है। मनोविज्ञान कहता है पाठयचर्या शिक्षार्थी केन्द्रित होना चाहिए तथा पाठयचर्या शिक्षार्थी कि अभिक्षमता, अभिरुचि, तथा योग्यता को ध्यान में रख कर बनाना चाहिए। मनोविज्ञान यह भी बताता है कि एक शिक्षक के अंदर क्या-2 गुण होने चाहिए तथा शिक्षक के शिक्षण प्रणाली के विषय में भी बताता है।

उपरोक्त सूचनाओं के आधार पर आप समझ गए होंगे कि किस प्रकार दर्शन, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान पाठयचर्या विकास में क्या भूमिका निभाते है तथा इन विषयों का पाठयचर्या निर्माण में क्या महत्ता है।

4.5 शब्दावली

1. **निर्धारक-** ऐसे कारक या तत्व जो पाठयचर्या निर्माण के आधार होते हैं निर्धारक कहलाते हैं।
2. आदर्शवाद-ऐसी दार्शनिक विचारधारा जो वस्तु की अपेक्षा विचार को अधिक महत्व देती हैं।
3. **प्रकृतिवाद-** ऐसी दार्शनिक विचारधारा जो ईश्वर के अस्तित्त्व को स्वीकार नहीं करती तथा प्रकृति एवं प्रकृतिक नियमों को सबकुछ मानती है।
4. **प्रयोजनवाद-** ऐसी दार्शनिक विचारधारा जो व्यक्ति मे विश्वास करती है और यह मानती है आध्यात्मिक नियम देश, काल, परिस्थिति के अनुसार परिवर्तनशील है तथा मूल्य पूर्वनिर्धारित बल की निर्माण की अवस्था में हैं।
5. **यथार्थवाद-** एक ऐसी दार्शनिक विचारधारा जो पूर्णत: वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है तथा कारण परिमाण के वैज्ञानिक नियम को सर्वव्यापी एवं सर्वमान्य मानती है तथा व्यक्ति और समाज मे विश्वास करती है।
6. **अस्तित्ववाद-** एक ऐसी दार्शनिक विचारधारा जो प्रत्येक व्यक्ति को अदभूत, अनोखा एवं अनुभूति करने में सक्षम मानती है तथा चयन की स्वतन्त्रता पर ज़ोर देती है।

4.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. पाठयचर्या विकास के दार्शनिक आधार से तात्पर्य पाठयचर्या निर्माण मे दार्शनिक दृष्टिकोण का समावेश करने से है क्यूंकि पाठयचर्या का मेरुदंड दर्शन को माना जाता है।
2. पाठयचर्या के दार्शनिक आधार रूसो, अरस्तू, प्लेटो आदि महान दर्शनिकों से प्रभावित है।
3. पाठयचर्या विकास के सामाजिक आधार के अंतर्गत परिवार, परम्पराएँ, धार्मिक संगठन, शिक्षक, शिक्षार्थी, समाज की प्रकृति, विभिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक संगठन आदि दबाव वर्ग प्रभावित करते है।
4. समाज की बदलती आवश्यकताओं के आधार पर देखा जाय तो वर्तमान पाठयचर्या बहुमुखी, लचीला, सामाजिक भावना उत्पन्न करने वाला, स्वास्थ के प्रति सजग करने वाला, व्यवसायिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाला, राष्ट्रभाषा की शिक्षा पर बल देने वाला होना चाहिए।
5. मनोविज्ञान पातयचर्या विकास को अपने नए शोधों एवं तकनीकियों द्वारा प्रभावित करता है शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रवृति ने शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण पद्धति, पाठयचर्या , शिक्षा के संगठन, अनुशासन की अवधारणा, शिक्षक की भूमिका आदि आयामों को नयी दिशा प्रदान किया है।
6. पाठयचर्या विकास का मनोवैज्ञानिक आधार, मानव विकास के विभिन्न पक्षों की खोज एवं उनके अध्ययन मे लगातार लगे हुए मनोविज्ञान की उपयोगिता को स्पष्ट करता है जिसके फलस्वरूप अनेक देशों में बालकों की आवश्यकताओं के आधार पर पाठयचर्या निर्माण का प्रयास किया जा रहा है।

4.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

6. यादव, एस. (2010). *पाठयचर्या विकास*, आगरा: श्री विनोद पुस्तक मंदिर.
7. Agrawal, J.C. (1990). *Curriculum reforms in India.* New Delhi.
8. Bhatt, B.D. and Sharma, S.R. (1992). Principles of Curriculum Construction. New Delhi: Kanishka Publishing House.
9. Dewal, O.S. (2004). National Curriculum. *In Encyclopedia of Indian Education.* New Delhi: NCERT.
10. Government of India (1966). *Report of the education commission 1964-66.* New Delhi: Government of India.
11. Government of India (1966). *National Policy on Education - 1986.* New Delhi: Government of India.
12. IGNOU (1997). *Curriculum and instruction (Block 1 & 2).* New Delhi: IGNOU.

13. Mohanty, J. (1981). *Indian education in emerging society.* New Delhi.
14. NCERT (1985). *National curriculum for primary and secondary education.* New Delhi: NCERT.
15. Teba, Hilda (1962). *Curriculum development, theory and practice.* New York: Harcourt.

4.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. शिक्षा के दार्शनिक आधार से क्या समझते हैं? विस्तार से वर्णन कीजिए तथा पाठयचर्या निर्माण में इसकी क्या भूमिका है ? समझाइए।
2. शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार से क्या समझते हैं? विस्तार से वर्णन कीजिए तथा पाठयचर्या निर्माण में इसकी क्या भूमिका है ? समझाइए।
3. शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार से क्या समझते हैं? विस्तार से वर्णन कीजिए तथा पाठयचर्या निर्माण में इसकी क्या भूमिका है ? समझाइए।
4. पाठयचर्या विकास से आप क्या समझते हैं? पाठयचर्या विकास के समस्त निर्धारकों के सापेक्ष प्रभाव की विवेचना कीजिए?

इकाई-5 पाठ्यचर्या संरचना के दार्शनिक आधार

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 पाठ्यचर्या निर्माण के आधार के रूप में दर्शन

 5.3.1 प्रगतिवाद

 5.3.2 पदार्थवाद

 5.3.3 पुनर्संरचनावाद

5.4 पाठ्यचर्या एवं मूल्यों के बीच सम्बन्ध

 5.4.1 मूल्य

 5.4.2 मूल्यों के स्रोत

 5.4.3 मूल्यों के प्रकार

 5.4.4 पाठ्यचर्या एवं मूल्य

5.5 सारांश

5.6 शब्दावली

5.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

5.9 निबंधात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

शिक्षा हमारे जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। कहा जाता है कि शिक्षा के अभाव में मनुष्य निरा पशु ही है। मनुष्य में मानवीय गुणों का सही अर्थों में विकास शिक्षा के द्वारा ही होता है। शिक्षा को मुख्या रूप से तीन भागों में बाँटा जाता है; औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरौपचारिक। अनौपचारिक शिक्षा को तो नियोजित नहीं किया जा सकता परन्तु औपचारिक एवं निरौपचारिक शिक्षा नियोजित की जा सकती है और इन दोनों अभिकरणों के लिए पाठ्यचर्या की महती आवश्यकता है। जहाँ गुणों के निर्माण के लिए शिक्षा आधार के रूप में कार्य करती है वहीं पाठ्यचर्या शिक्षा के लिए मील के पत्थर के समान कार्य करती है। प्रस्तुत पाठ में हम पाठ्यचर्या निर्माण के दार्शनिक आधार का अध्ययन करेंगे जिसमें प्रगतिवाद, पदार्थवाद, पुनर्संरचनावाद दर्शन

के अनुसार पाठ्यचर्या के स्वरुप का अध्ययन किया जाएगा और अन्त में पाठ्यचर्या और मूल्यों के मध्य के अन्तर्सम्बन्धों पर प्रकाश डाला जाएगा।

5.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप-

1. पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न आधारों को बता सकेंगे।
2. पाठ्यचर्या निर्माण के दार्शनिक आधार की आवश्यकता को स्पष्ट कर सकेंगे।
3. प्रगतिवाद की संकल्पना की व्याख्या कर पाएंगे।
4. पाठ्यचर्या निर्माण के लिए प्रगतिवादी दर्शन की आवश्यकता को विश्लेषित कर सकेंगे।
5. पदार्थवाद की संकल्पना की व्याख्या कर पाएंगे।
6. पाठ्यचर्या निर्माण के लिए पदार्थवादी दर्शन की आवश्यकता को विश्लेषित कर सकेंगे।
7. पुनर्संरचनावाद की संकल्पना की व्याख्या कर पाएंगे।
8. पाठ्यचर्या निर्माण के लिए पुनर्संरचनावादी दर्शन की आवश्यकता को विश्लेषित कर सकेंगे।
9. मूल्य की संकल्पना समझाते हुए उसे परिभाषित कर सकेंगे।
10. पाठ्यचर्या एवं मूल्यों के मध्य सहसंबंध की व्याख्या कर सकेंगे।

5.3 पाठ्यचर्या निर्माण के आधार के रूप में दर्शन

किसी भी पाठ्यचर्या के निर्माण के पीछे विभिन्न उद्देश्य होते हैं जिनकी प्राप्ति हेतु पाठ्यचर्या विकसित की जाती है। यह पाठ्यचर्या सदैव ही अपने समाज की मान्यताओं, धारणाओं, विश्वासों, विचारों और मांग पर आधारित होती है। यहाँ अपने समाज से आशय स्थान विशेष, तात्कालिक स्थिति एवं परिस्थितियों से है। देशकाल एवं आवश्यकताओं के अनुरूप ही पाठयचर्या भी परिवर्तित होता रहता है। यह माना जाता है कि यदि समाज में परिवर्तन लाना है तो शिक्षा में, और उसमें भी मुख्य रूप से पाठयचर्या में परिवर्तन लाया जाए, परिवर्तन स्वतः हो जाएगा। पर इसके साथ ही साथ सामाजिक स्थितियों एवं समाज की मांग में जिस प्रकार का परिवर्तन होगा पाठयचर्या भी उसी प्रकार से परिवर्तित होगा क्योंकि पूर्व में यह स्पष्ट किया गया जा चुका है कि पाठयचर्या सदैव समाज की आवश्यकताओं और सामाजिक उद्देश्यों पर आधारित होता है। इसके साथ ही सामाजिक दशायें, देशकाल एवं स्थान विशेष अपने नागरिकों के दर्शन को भी प्रभावित करते हैं और

वहीं दूसरी तरफ दर्शन से स्थान विशेष का समाज प्रभावित भी होता है। पाठयचर्या के निर्माण के पीछे कई आधार हैं जो पाठयचर्या में सम्मिलित हो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के संतुलित निर्माण हेतु नींव का कार्य करते हैं। पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न मुख्य आधार इस प्रकार हैं;

- पाठयचर्या निर्माण के दार्शनिक आधार
- पाठयचर्या निर्माण के मनोवैज्ञानिक आधार
- पाठयचर्या निर्माण के सामाजिक आधार
- पाठयचर्या निर्माण के सांस्कृतिक आधार

पाठ्यचर्या निर्माण के पीछे दर्शन एक बल के रूप में कार्य करता है जो पाठ्यचर्या में दार्शनिक तथ्यों का समावेश करते हुए शिक्षा के सर्वोत्तम एवं उत्कृष्ट लक्ष्यों की ओर मानव को अग्रसर करता है। **ज़ैस** (1976) के पाठयचर्या के उदारवादी सिद्धांत के अनुसार पाठयचर्या निर्माण में क्या, क्यों, कैसे और कौन; ये चार पायों के रूप में हैं। वास्तव में में दर्शन की शुरुआत भी इन्हीं प्रश्नों से ही गाना जाता है। दार्शनिक या कोई भी दर्शन चाहे वह भारतीय दर्शन हो अथवा पाश्चात्य दर्शन, इन्हीं क्या, क्यों, कैसे और कौन प्रश्नों के उत्तर से जुड़े हैं। सदियों से दार्शनिक मनुष्य का अस्तित्व, नैतिकता, अच्छाई, सत्य, सुंदरता से सम्बंधित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं ताकि वह मानव को मिल रहे कष्टों का निवारण कर सके। कुछ दर्शनों में यह निवारण सांसारिक कष्टों से मुक्ति प्राप्त कर मोक्ष प्राप्ति की आकांक्षा से है वहीं कुछ दर्शनों में संसार में जीवन यापन करते मुए मनुष्य शरीर को मिलने वाले कष्टों को दूर करने से है। सभी दर्शन मानव अस्तित्व से सम्बंधित जिन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं, वे हैं;

- मैं कौन हूँ
- मैं क्या हूँ
- मैं कहाँ से आया हूँ
- मृत्यु के उपरांत मैं कहाँ जाऊंगा
- मृत्यु क्या है?
- जीवन क्या है?
- आत्मा का अस्तित्व क्या है?
- सत्य क्या है?
- किसी भी चीज को सत्य या असत्य कहने का आधार क्या है?
- जीवन का अर्थ क्या है
- हम किस प्रकार जान सकते हैं कि हम क्या जानते हैं?

- मनुष्य के रूप में जन्म लेने के पीछे विशेष क्या है?
- सही या गलत; अच्छा या बुरा के पीछे कौन से आधार हैं?
- नैतिक क्या है?
- सुन्दरता क्या है?

मनुष्य को विवेक का प्राणी माना जाता है। ये सभी प्रश्न मनुष्य के ही मस्तिष्क में उत्पन्न होते हैं और दर्शन की उत्पत्ति भी मनुष्य के द्वारा इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के प्रयास से ही मानी गयी है की स्वयं एवं इस विश्व कि उत्पत्ति एवं अस्तित्व को लेकर मनुष्य प्रारंभ से ही जिज्ञासु रहा है और कभी प्रयोगों एवं खोजों के माध्यम से तो कभी चिंतन-मनन के द्वारा प्रश्नों का उत्तर ढूंढने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा है। अतएव दर्शन की उत्पत्ति का आधार भी मानव का विवेक अथवा ज्ञान माना जाता है। यदि शब्दों के अर्थ के रूप में देखा जाए तो Philosophy शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द "philos" (प्रेम) and "sophia" (ज्ञान) से हुयी है जिसका अर्थ ज्ञान से प्रेम या ज्ञान के प्रति प्रेम है. वहीँ यदि दर्शन शब्द की उत्पत्ति की व्याख्या की जाए तो दर्शन शब्द दृ धातु से बना है जिसका अर्थ है देखना। यहाँ देखने का अर्थ सामान्य रूप से देखना नहीं बल्कि विवेक से किसी चीज को देखना। वस्तु से जुड़े उस सत्य को भी देखने की शक्ति जो आँखों से नहीं बल्कि विवेक से ही देखी और समझी जा सकती है। इस प्रकार भारतीय या पाश्चात्य कोई भी दर्शन हो, का आधार ज्ञान या विवेक ही है।

दर्शन हमारे व्यक्तिगत विश्वासों और मूल्यों पर निर्भर करता है. जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि दर्शन हमारा अपना दृष्टिकोण है की हम अपने आस-पास की दुनिया को किस रूप में और किस प्रकार से देखते हैं और इसके साथ ही हमारे आस-पास की इन चीजों में हम किसे अपने अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण समझते हैं. दार्शनिक तथ्यों ने सदैव समाज और विद्यालयों को प्रभावित किया है अतः पाठ्यचर्या निर्माण के अंतर्गत दार्शनिक आधार का अध्ययन अतिमहत्वपूर्ण हो जाता है. एच.टी. जॉनसन ने अपनी पुस्तक 'फाउंडेशन ऑफ़ एजुकेशन' में दर्शन को जीवन की आधारभूत समस्याओं का उत्तर प्राप्त करने तथा मनुष्य के जीवन को सार्थकता प्रदान करने के लिए किए जा रहे अध्ययन के रूप में परिभाषित किया है. शिक्षा प्राप्त करने का भी मुख्य उद्देश्य जीवन की आधारभूत समस्याओं का निवारण एवं मनुष्य जीवन को सार्थकता प्रदान करना है. पाठ्यचर्या निर्माण से पहले निर्माणकर्ताओं को मानव जीवन से सम्बंधित उद्देश्यों की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए अन्यथा पाठ्यचर्या के उद्देश्य भी अस्पष्ट होंगे

इसके साथ ही उन्हें समाज के विश्वासों, मान्यताओं और मूल्यों का भी स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए. प्रस्तुत इकाई में जिन मुख्य दार्शनिक आधारों का अध्ययन किया जाएगा वे इस प्रकार से हैं;

I. प्रगतिवाद

II. पदार्थवाद

III. पुनर्संरचनावाद

5.3.1 प्रगतिवाद

प्रगतिवाद शिक्षा बालकेंद्रित लक्ष्यों और पाठ्यचर्या से सम्बंधित मत है जो शिक्षा की सत्ता को उसके चले आ रहे रूप में मानने से इनकार करती है और इसके साथ इस पर बल देता है कि किसी भी शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र बालक होना चाहिए। शिक्षा बालक को इस प्रयोजन के साथ दी जाती है कि बालक का वर्तमान एवं भावी जीवन सुखमय बन सके। तो यदि शिक्षा बालक के अनुरूप नहीं होगी तो बालक शिक्षा में किस प्रकार रूचि ले पाएंगे और रूचि के अभाव में किसी भी व्यक्ति को शिक्षित करना एवं शिक्षा से जुड़े लक्ष्यों को प्राप्त करना असंभव है। प्रगतिवाद वह दार्शनिक मत या विश्वास है जिसका मानना है कि शिक्षा को वास्तविक जीवन पर आधारित होना चाहिए। विद्यालय बालक को उनके भावी जीवन के लिए तैयार करने के कारखाने हैं। बालक भावी जीवन में आ सकने वाली समस्याओं के निवारण की रणनीतियों को विद्यालय में सीखते हैं। मनुष्य अपनी मूल प्रकृति से सामाजिक होता है और बालक विद्यालय में समाज के लिए ही तैयार होता है कि किस प्रकार उसे समाज में रहते हुए जीवन का निर्वाह करना है, एक सक्रिय सदस्य के रूप में समाज के विकास में योगदान करना है। समाज में सहज एवं सरल रूप से रहने के लिए शिक्षा को भी इस प्रकार का होना चाहिए कि वह समाज से जुडी हुयी हो। साथ ही साथ बालकों को ऐसी शिक्षा मिले जो उनके भविष्य में आ सकने वाली समस्याओं के निवारण के लिए बालक को सामर्थ्यवान बना सके। इन परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं को ध्यानगत रखते हुए प्रगतिवादियों का मानना है कि बालक को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में शिक्षा देना चाहिए क्योंकि मनुष्य वास्तविक परिस्थितियों में सबसे अच्छी तरह से सीखता है। वहीं बालक-केन्द्रित प्रगतिवादियों का मानना है कि बालक स्वभाव से जिज्ञासु होता है (रूसो की मान्यता भी इस सम्बन्ध में ऐसी ही थी) अतः बच्चों को सीखने के लिए छोड़ देना चाहिए जिससे वे स्वयं की युक्तियों से सीख सकें। इसके सम्बन्ध में रोजेर्स का विचार है कि शिक्षक को विद्यार्थियों को सिखाने हेतु एक सहज निर्देशक के रूप में होना चाहिए। इस प्रकार प्रगतिशील पाठ्यचर्या के अंतर्गत शिक्षण किसी प्राधिकरण के अधीन नहीं होता है और पाठ्यचर्या का निर्धारण प्रत्येक बालक की प्रकृति के आधार पर उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप होता है।

प्रगतिवादी विचारकों में रूसो (1712-1788) और जॉन डीवी (1859-1952) का नाम उल्लेखनीय है। दोनों ही बाल-केन्द्रित शिक्षा के पक्षधर रहे हैं और उनके विचारों में प्रगतिवादी शिक्षा का समावेश मिलता है। वैसे तो रूसो प्रकृतिवादी और डीवी प्रयोजनवादी शैक्षिक विचारधारा के आधार स्तम्भ माने जाते हैं पर दोनों ही शिक्षा की धुरी में बालक को रखते हैं अतः दोनों ही अलग-अलग दार्शनिक विचारधारा के होने के बावजूद भी प्रगतिवादी विचारधारा के समर्थक माने जाते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य समर्थकों में पेस्टोलोज़ी, फ्रोबेल एवं मेरिया मोंटेसरी इत्यादि का नाम आता है।

शिक्षा की क्षेत्र में हुए प्रगतिशील आन्दोलन के फलस्वरूप अमेरिकी विद्यालयों में पाठ्यचर्या के परिवर्तन की मांग हुयी। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप पाठ्यचर्या को और अधिक व्यापक बनाया गया जिससे शिक्षा छात्रों के लिए उनके रूचि के अनुकूल एवं और भी प्रासंगिक बन सके। यद्यपि डीवी को प्रयोजनवाद के मुख्य दार्शनिक के रूप में जाना जाता है परन्तु प्रगतिवाद के क्षेत्र में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने शिक्षा के मनोविज्ञान, ज्ञानमीमांसा, मूल्य एवं लोकतंत्र जैसे विषयों पर व्यापक रूप से लिखा पर इसके साथ ही उनके द्वारा दिए गए शिक्षा के दर्शन ने प्रगतिवादी दर्शन की नींव रखी। वैसे देखा जाए तो प्रगतिवाद प्रयोजनवाद दोनों के ही शैक्षिक लक्ष्य समान हैं जहाँ बालक को समाज के लिए तैयार करने की बात की जाती है और इसके लिए उसे समाज की वास्तविक परिस्थितियों में शिक्षा देने की बात की जाती है।

प्रगतिवाद की वास्तविक शुरुआत 1886 में मानी जाती है जब जॉन डीवी यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत थे। अपने शैक्षिक विचारों के परीक्षण के लिए डीवी ने एक प्रयोगशाला स्कूल की स्थापना की। उनके लेखन एवं प्रयोगशाला विद्यालय में किए कार्य ने प्रगतिशील शिक्षा आन्दोलन के लिए मंच तैयार किया।

डीवी का मत है कि शिक्षा का लक्ष्य समाज के युवाओं को वयस्क जीवन के लिए तैयार करना है. डीवी लोकतंत्र का घोर समर्थक था. उसका मानना था कि लोकतंत्र की संकल्पना तभी फल-फूल और विकसित हो पायेगी जब शिक्षा शिक्षार्थियों को उनकी रूचि और क्षमताओं को महसूस कराने में सक्षम होगी. परिवर्तन का आधार शिक्षा है और जब शिक्षा का आधार लोकतान्त्रिक होगा तब समाज भी लोकतान्त्रिक हो जाएगा. इसके साथ ही प्रगतिवाद का मानना है कि विद्यार्थियों को समूह में सीखने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि कुछ योग्यताएं एवं कौशल समूह में रह कर ही सीखे जा सकते हैं जैसे-सहकारिता की भावना, हम की भावना, सामुदायिकता और ऐसी समस्याओं का समाधान जो व्यक्तिगत रूप से नहीं किया जा सकता है. सामूहिक रूप से सामाजिक एवं बौद्धिक रूप से हुयी अंतःक्रिया समाज में व्याप्त वर्गगत और जातिगत भेदभाव रूपी के कृत्रिम अवरोधों को समाप्त कर सकती है (डीवी, 1920)। भारत जैसे देश में जहाँ जातिगत भेदभाव, वर्गगत अंतर एवं धर्मगत विद्वेष सदा से ही समाज में रहे हैं एवं समाज के लोगों के मध्य अंतर को ख़त्म करने के लिए सरकार के द्वारा अनेक प्रभावी कदम समय-समय पर उठाये जाते रहे हों वैसे देश में प्रगतिवादी शिक्षा व्यवस्था परमावश्यक है. डीवी ने शिक्षा को वृद्धि और प्रयोगात्मकता की ऐसी प्रक्रिया के रूप में व्याख्या की है जो विचारों और मस्तिष्क के अन्दर उत्पन्न होने वाले कार्य-कारण सम्बन्ध को समस्या–समाधान हेतु प्रयोग में लाती है। समस्या के समाधान के लिए विद्यार्थियों को इन पांच महत्वपूर्ण कदमों से परिचित होना चाहिए तथा इनका अनुपालन भी करना चाहिए।

- समस्या से अवगत होना
- समस्या को परिभाषित करना
- समस्या को हल करने के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण करना

- परिकल्पनाओं का परीक्षण करना
- समस्या के सर्वोत्तम समाधान का मूल्यांकन

ज्ञान प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को लगातार स्वयं प्रयोग करते रहना चाहिए। साथ ही शिक्षकों को भी मात्र अभ्यासों पर ही ध्यान नहीं देना चाहिए बल्कि उन क्रियाकलापों पर ध्यान देना चाहिए जो उनकी वास्तविक जीवन की स्थितियों से सम्बंधित हों। उनका मानना था कि शिक्षा क्रिया करके स्वयं सीखने से सम्बंधित होनी चाहिए।

प्रगतिवादी शिक्षा में खोजपूर्ण सीखना को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। वे बच्चों को स्वयं ही खोज कर कुछ नया सिखाने पर बल देते हैं जो बच्चों को उनकी रूचि और जिज्ञासा के अनुसार 'खोजपूर्ण सीखने' की ओर ले जाती है। यह देखने के लिए की पाठ को पूर्ण और उचित रूप में स्वयं में समाहित कर लिया गया है अथवा नहीं यह जिम्मेदारी शिक्षक को दी जाती है कि इसका आकलन वह करे। प्रगतिवादी शिक्षा की शैक्षिक विचारधारा को जैसा रूसो इत्यादि शिक्षा से सम्बंधित अनुशंसा की है, को पूर्ण रूप से मनोविज्ञान पर आधारित माना जा सकता है।

हमारे भूत और भविष्य का ज्ञान वर्तमान के अनुभवों पर आधारित होता है जो स्वयं में वातावरण के साथ हुयी सभी अंतःक्रियाओं को समेटे हुए होता है। वर्तमान के अनुभवों के आधार पर ही भविष्य का निर्माण होता है। यह संरचित होता है जिसके द्वारा हम भविष्य की बाधाओं का अनुमान लगा सकते हैं एवं उससे बाहर आने का रास्ता ढूंढ सकते हैं। जैसे- इतिहास के अध्ययन के द्वारा हम उससे सम्बंधित अपनी समस्याओं को हल करने में सक्षम हो पाते हैं। वर्तमान में उपजी शैक्षिक समस्याओं का निवारण कर हम बेहतर कल बनाने की कल्पना करते हैं। इस विचारधारा ने डीवी के शैक्षिक सिद्धांतों पर अपना प्रभाव डाला। यद्यपि डीवी अमेरिका में प्रगतिवाद का संस्थापक नहीं था पर उसकी विचारधारा को प्रगतिवाद के निकट पाया जाता है जो कि यह मानती है कि समाज की समस्याओं के समाधान के लिए तथा समाज को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आगे ले जाने के लिए शिक्षा एक माध्यम के रूप में प्रयोग में लायी जा सकती है और शिक्षा के अतिरिक्त अन्य कोई माध्यम नहीं है जो इन समस्याओं के हल के लिए कुंजी के रूप में कार्य कर सके। डीवी कुछ हद तक तो इस विचार को मानते हैं पर उसी समय शिक्षा को मात्र एक उपकरण के रूप में देखने को अस्वीकार करते हैं। उनका मानना है कि शिक्षा मात्र इन समस्याओं का हल ढूंढने वाली या वैज्ञानिकता के विकास का उपकरण नहीं है बल्कि मनुष्य में मनुष्यता का विकास के लिए एक अहम् माध्यम है जिसके अभाव में मनुष्य निरा पशु ही है।

प्रगतिवादी पाठ्यचर्या का स्वरुप

1. प्रगतिवादी प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञान के अध्ययन पर बल देते हैं। उनका मानना है की विद्यार्थियों के लिए सबसे अधिक आवश्यक उनके आस-पास के वातावरण को जानना एवं सीखना है, वह चाहे प्राकृतिक वातावरण हो या सामाजिक. चूँकि बालक को अपना जीवन

निर्वाह उसी समाज और प्रकृति में करना है अतः बालक के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान को सीखना ही है। इसके लिए वे पाठ्यचर्या में इन विषयों के समावेश पर विशेष बल देते हैं।

2. प्रगतिवादी पाठ्यचर्या के अंतर्गत शिक्षक से यह अपेक्षा रखी जाती है कि अपने छात्रों को नए वैज्ञानिक खोजों, तकनीकों और सामाजिक परिवर्तनों का ज्ञान देते रहें। इसके लिए शिक्षकों को भी नवीन चीजों से परिचित होना चाहिए जिससे वे इस सम्बन्ध में छात्रों को जानकारी दे सकें।
3. विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अनुभवों को बढ़ाने के लिए उन्हें इस प्रकार से सिखाने की व्यवस्था करनी चाहिए कि नया दिया जाने वाला ज्ञान वर्तमान सामुदायिक जीवन से सम्बंधित हो। क्योंकि व्यक्ति उन्हीं परिस्थितियों में अच्छी तरह और जल्दी सीखता है जो उसके वास्तविक जीवन से सम्बंधित हो। अतएव पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए जो बालक के वास्तविक जीवन से सम्बंधित हो और उनकी रूचि, योग्यताओं एवं अनुभवों पर आधारित हो।
4. शिक्षकों को शिक्षण हेतु पाठ का आयोजन इस प्रकार करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में जिज्ञासा जागृत हो सके और इसके साथ ही वह विद्यार्थियों में उच्च स्तरीय चिंतन और ज्ञान का निर्माण कर सके। इसके लिए पाठ्यपुस्तकों में दिए ज्ञान को पढ़ने के साथ ही छात्रों को उसे कर के भी सीखना चाहिए। उदाहरणस्वरुप: फील्डस्ट्रिप विधि, जहाँ किसी जानकारी को छात्र पहले पुस्तक के माध्यम से प्राप्त करते हैं तत्पश्चात उसे प्राकृतिक वातावरण में समूह में सीखते हैं।
5. प्रगतिवादी शिक्षा विचारधारा के अनुसार पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियाँ ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों के मध्य परस्पर अंतःक्रिया को प्रोत्साहित .करे इसके लिए विचार विमर्श विधि को शिक्षण विधि के रूप में कक्षा में प्रयुक्त करने की सलाह दी जाती है। इसके साथ ही पाठ्यचर्या को सामाजिक मूल्यों जैसे सहयोग, सामंजस्य और सहनशीलता से सम्बंधित विभिन्न दृष्टिकोणों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए.
6. प्रगतिवाद एक से अधिक विषयों को पढाये जाने पर बल देता है। प्रगतिवादियों का मानना है कि पाठ्यचर्या में मात्र एक ही विषय को न पढाया जाए। बालक को अपना जीवन जीने के लिए कई विषयों के अध्ययन की आवश्यकता होती है। मात्र एक विषय में पारंगत होकर बालक भविष्य में आने वाली सभी कठिनाइयों का सामना नहीं कर सकता जैसे- भाषा में ही कोई विद्यार्थी पारंगत हो तथा सामान्य गणितीय क्रियाओं से बिलकुल अनिभिज्ञ हो तो वह दैनिक जीवन में आने वाली गणितीय समस्याओं का निवारण भाषा के ज्ञान के माध्यम से नहीं कर सकता। इसके लिए गणित का ज्ञान आवश्यक है अतः शिक्षकों को मात्र एक ही विषय पर ध्यान केन्द्रित कर के नहीं रखना चाहिए बल्कि अन्य विषयों का भी अध्यापन करना चाहिए। इसके लिए सबसे उपयुक्त है की विषय को अन्य विषयों से सम्बंधित कर ज्ञान दिया जाए जिससे ज्ञान स्थायी हो और एक विषय में अर्जित ज्ञान को दूसरे विषय में और तद्पश्चात वास्तविक परिस्थितियों में प्रयोग में लाया जा सके।

7. विद्यार्थियों के समक्ष एक अधिक लोकतान्त्रिक पाठ्यचर्या को प्रस्तुत करना चाहिए जो लैंगिक, वर्गगत, धार्मिक, प्रजातीय, जातीय, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि से सम्बंधित विभिन्नताओं को पीछे छोड़ते हुए सभी नागरिकों की उपलब्धियों की सराहना कर सकें तथा समाज के प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यताओं के अनुसार विकास का अवसर प्रदान कर सके।
8. औद्योगिक कला और गृह अर्थशास्त्र में अनुदेशन के द्वारा प्रगतिवादी विद्यालयी शिक्षा को रुचिपूर्ण और उपयोगी बनाने का प्रयास करते हैं। वे ऐसी शिक्षा पर बल देते हैं जहाँ शिक्षा सतत एवं रुचिपूर्ण तरीके से दी जाती हो। प्रगतिवादी शिक्षा व्यवस्था के अनुसार व्यवहारिक रूप से घर कार्यस्थल एवं विद्यालय साथ मिलकर एक सतत और आनंदप्रद शिक्षा जो की जीवन से सम्बंधित हो, देनी चाहिए।
9. कक्षा को जीवन्त होना चाहिए और इसके साथ ही पढाई जाने वाली चीजें रोचक होनी चाहिए। हमारी कक्षाएं नीरस और उबाऊ होती हैं जहाँ छात्रों को मात्र एक मशीने सैम अझते हुए पूरा दिन और पूरा सत्र मात्र कुछ सूचनाओं को भरने का प्रयास किया जाता है। ऐसे नीरस और उबाऊ ज्ञान को विद्यार्थी जल्दी भूलना चाहते हैं और भूल भी जाते हैं अतः शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि अतीत में सीखी हुयी चीजों को छात्र भविष्य में आसानी से पुनः स्मरित कर सकें।
10. छात्रों को कक्षा में समस्याओं को समाधान वास्तविक परिस्थितियों से जोड़ कर सिखाना चाहिए. छात्र कक्षा में समस्याओं का समाधान करना इस प्रकार से करना सीख सकें कि कक्षा से बाहर जब वास्तविक परिस्थितियों में समस्याएं आएं तो वे उन समस्याओं का समाधान सहजता से कर सकें.

इस प्रकार प्रगतिवादी पाठ्यचर्या में प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञान सम्बन्धी विषयों जैसे- भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान, के समावेश पर विशेष बल दिया जाता है। शिक्षण विधियों में उन विधियों को स्वीकार किया जाता है जो समूह में तथा स्वयं करके सीखने को प्रोत्साहित करती हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न आधार कौन-कौन से हैं?
2. प्रगतिवादी पाठ्यचर्या में किन विषयों के समावेश पर बल देते हैं?
3. प्रगतिवाद के मुख्य दार्शनिक कौन-कौन हैं?
4. प्रगतिवाद की शुरुआत .... ई. से माना जाता है।
5. .... प्रगतिवाद के सर्वप्रमुख दार्शनिक माने जाते हैं।
6. प्रगतिवाद मुख्य रूप से .... तरीके से सीखने पर बल देता है।
7. प्रगतिवाद के अनुसार पाठ्यचर्या का स्वरुप .... होना चाहिए।

5.3.2. पदार्थवाद

पदार्थवाद या Essentialism की उत्पत्ति Essential शब्द से हुयी है जिसका अर्थ बुनियादी चीज़ें या मुख्य चीज़ें हैं । पदार्थवाद एक परम्परावादी तथा रुढ़िवादी दर्शन है । इस दर्शन के मूल में आदर्शवाद एवं यथार्थवाद दोनों की अवधारणाएँ सन्निहित हैं । पदार्थवाद विश्व में शक्ति के स्रोत और प्रभुत्व से सम्बंधित एक प्राचीन सिद्धांत है जिसका मानना है कि प्रकृति का जटिल नियम प्रकृति में पाए जाने वाली प्रत्येक वस्तु में स्वयं ही आतंरिक रूप से है । इन नियमों को बाह्य रूप से इन वस्तुओं पर आरोपित करने की आवश्यकता नहीं है । अतः पदार्थवादी चीजों को उसी रूप में स्वीकार करते हैं जिस रूप में वे हैं । वे चीजों को इस रूप में स्वीकार नहीं करना चाहते कि वे ईश्वर द्वारा बनायीं हुयी हैं अथवा प्रकृति प्रदत्त हैं । पदार्थवाद की नवीन विचारधारा भी कुछ हद तक प्राचीन विचारधारा से मिलती है । प्राचीन विचारधारा के ही समान पदार्थवाद की नयी विचारधारा भी पदार्थ को उसके वास्तविक रूप में स्वीकार करने पर बल देते हैं । वे पदार्थ के उसके अस्तित्व और स्वरुप के पीछे प्रकृति के नियम को मानते हैं । वे इस प्रकार के प्रत्येक नियम को अस्वीकार करते हैं जो नियम बाह्य रूप से उसके स्वरुप का निर्धारण करे । वे नियम स्वीकार्य नहीं हैं जो यह आरोपित करें कि वास्तु को कैसा होना चाहिए । प्रकृति ने स्वयं ही प्रत्येक वस्तु का रूप तय करके रखा है । प्रत्येक वस्तु में प्रकृति एवं उसकी शक्ति निहित हैं । प्राचीन विचारधारा जो यहीं तक रुक जाती है वहीँ नवीन विचारधारा प्राचीन विचारधारा के उलट विश्व की आधुनिक वैज्ञानिक समझ की तत्वमीमांसा भी है । पदार्थवाद का 'प्रकृति के नियम' से सम्बंधित सिद्धांत 'Divine Command' सिद्धांत से पूर्णरूपेण अलग है । 'Divine Command' सिद्धांत के अनुसार प्रकृति का नियम वस्तुओं को ईश्वर द्वारा प्रदत्त है । प्राकृतिक विश्व की प्रत्येक चीज ईश्वर के द्वारा आदेशित है । डेकार्ते एवं न्यूटन ने प्रकृति के नियम को इसी रूप में स्वीकार किया है । इसके अनुसार वस्तुएं प्रकृति के नियमानुसार क्रिया करने को बाध्य हैं क्योंकि इन वस्तुओं की अपनी कोई शक्ति नहीं है । केवल आध्यात्मिक चीजें जैसे- ईश्वर, देवदूत या मनुष्य मानव मस्तिष्क इस प्रकार होते हैं कि वे इच्छित रूप में कार्य कर सकें । वे शक्ति के वास्तविक स्रोत के रूप में हैं ।

अठारहवीं शताब्दी में 'Divine Command' का नया रूप विकसित हुआ जिसमें प्राकृतिक दार्शनिकों ने ईश्वर को सभी कार्यों एवं शक्तियों का स्रोत मानाने के स्थान पर प्राकृतिक क्रियाओं के लिए प्रकृति के बल को उत्तरदायी माना ।

यदि पदार्थवाद की शैक्षिक दर्शन के रूप में व्याख्या की जाए तो पदार्थवाद एक ऐसा वाद है जो विद्यार्थियों में शैक्षणिक ज्ञान एवं चारित्रिक विकास को बुनियादी या अनिवार्य रूप से बीजारोपित करने पर बल देता है । शैक्षिक दर्शन के रूप में पदार्थवाद 1930 के दशक में प्रचलित हुआ. इस दशक में पदार्थवाद को प्रचलित करने का मुख्य श्रेय विलियम बेगले को है. 40 के दशक में यह दर्शन अंधकार में रहा । तद्पश्चात 1950 के दशक में आर्थर बेस्टर और एडमिरल रिकओवर ने इसे पुनः प्रकाश में ले आए । पदार्थवाद के मुख्य दार्शनिकों में डेकार्ते, न्यूटन, ह्यूम, लॉक, कांट इत्यादि आते हैं । जब अमेरिकी विद्यालयों में पदार्थवाद को शैक्षिक दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया गया तो

इसे एक कठोर दर्शन कहते हुए आलोचना की गयी। साथ ही यह भी कहा गया की इस दर्शन को विद्यालयों में लागू करना अत्यन्त कठिन है। 1957 में जब सोवियत यूनियन के द्वारा स्पूतनिक का प्रक्षेपण हुआ तब यह घटना अमेरिका के शैक्षणिक हलकों में दहशत का कारण बन गयी। क्योंकि अमेरिकियों द्वारा यह महसूस किया गया कि तकनीकी प्रगति में अमेरिका सोवियत यूनियन से बहुत पीछे छूट गया है। इसने अमेरिकी शिक्षाविदों को यह सोचने पर विवश किया की किस प्रकार से इस तकनीकी पिछड़ेपन को पाटा जा सकता है। शिक्षाविदों ने शिक्षा पर पुनर्विचार किया और यहीं से वास्तविक रूप में पदार्थवाद का जन्म हुआ।

चूँकि पदार्थवाद का जन्म का आधार ही वैज्ञानिकता है। अतः पदार्थवाद विज्ञान और वैज्ञानिकता को पाठ्यचर्या में शामिल करने पर विशेष बल देता है। पदार्थवाद ने विज्ञान के महत्व को विश्व के समक्ष रखने का प्रयास किया तथा कहा कि दुनिया को वैज्ञानिक प्रयोगों के माध्यम से समझने का प्रयास करना चाहिए। विश्व के विषय में आवश्यक और महत्वपूर्ण ज्ञान प्राकृतिक विज्ञान जैसे विषयों के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है अतः वे पाठ्यचर्या में दर्शन शास्त्र, धर्म, कला जैसे गैर-वैज्ञानिक विषयों के स्थान पर प्राकृतिक विज्ञान जैसे विषयों को रखने पर अधिक जोर दिया। प्रगतिवादियों का मानना है कि आज के युग में प्रगति के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैज्ञानिक विषयों की अधिक आवश्यकता है।

पदार्थवाद एक रुढ़िवादी दर्शन है जिसका मानना है कि विद्यालयों को समाज के पुनर्निर्माण का प्रयास नहीं करना चाहिए बल्कि इसके स्थान पर उन पारंपरिक नैतिक मूल्यों एवं विवेक को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए जो विद्यार्थियों को आधुनिक नागरिक बनाने में मदद करते हों। पदार्थवादियों का विचार है कि शिक्षक को पारंपरिक सद्गुणों से युक्त होना चाहिए। शिक्षकों में जिन पारंपरिक गुणों के होने की अनुशंसा की कई है; वे हैं- सत्ता के प्रति सम्मान का भाव, कर्तव्यों के प्रति निष्ठा, अन्य व्यक्तियों की वैयक्तिकता का सम्मान, तथा व्यावहारिकता।

पदार्थवादी पाठ्यचर्या का स्वरुप

पदार्थवादी दर्शन के अनुसार पाठ्यचर्या में निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिए;

1. पदार्थवाद पाठ्यचर्या में वैज्ञानिक विषयों का समावेश करने पर बल देता है। इस प्रकार पदार्थवादी पाठ्यचर्या के मुख्य विषयों में गणित, प्राकृतिक विज्ञान, इतिहास, विदेशी भाषायें, और साहित्य को स्थान दिया गया है। गणित और विज्ञान तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति के लिए आवश्यक हैं वहीँ इतिहास का अध्ययन अपने देश के इतिहास के साथ अन्य देशों का इतिहास वहां के परंपरागत मूल्यों के साथ-साथ इसका भी ज्ञान देते हैं कि देश ने किस प्रकार और कहाँ तक प्रगति की है। विदेशी भाषाओँ का अध्ययन देश विशेष के साहित्य के साथ-साथ वहां की पुस्तकों में निहित ज्ञान को प्राप्त करने में मदद करता है।

2. पदार्थवादी व्यायसायिक, जीवन-समायोजन से सम्बंधित तथा इस प्रकार के अन्य विषयों को पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने को अस्वीकार करते हैं। वे मुख्य रूप से विज्ञान जैसे विषयों पर बल देते हैं तथा पाठ्यचर्या में उन्हीं का समावेश करने की बात करते हैं।
3. प्राथमिक स्तर पर छात्रों को लिखने, पढ़ने और गणित (3 R's) में निपुणता प्राप्त करने सम्बन्धी शिक्षा दी जाती है क्योंकि आगामी शिक्षा हेतु वे आधार का कार्य करते हैं। पदार्थवादियों को मानना है कि जब तक विद्यार्थी कोई भी विषय जिसकी शिक्षा वे ग्रहण कर रहे हों उसमे पूर्ण ज्ञान एवं निपुणता प्राप्त करके ही वे अगली कक्षा में जाएँ।
4. जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि पदार्थवाद को विद्यालयों में लागू करने के पीछे यह कह कर आलोचना की गयी थी की पदार्थवादी पाठ्यचर्या शैक्षणिक रूप से अत्यन्त कठोर है। वास्तव में मंद गति से सीखनेवालों के साथ ही साथ तीव्र गति से भी सीखनेवालों के लिए भी समान रूप से ही कठोर है। पदार्थवाद छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं जैसे- योग्यताओं और रूचि को नज़रअंदाज करते हुए सभी को एक समान विषय को पढ़ाने की वकालत करता है। इस प्रकार यह तेज़ और कमजोर दोनों प्रकार के छात्रों के लिए समस्या का विषय बन जाता है।
5. सभी के लिए समान पाठ्यचर्या की बात करते हुए भी सीखने की मात्रा में अंतर की बात करता है कि छात्रों को कितना सीखना है यह उनकी योग्यता के अनुसार तय किया जा सकता है।
6. पदार्थवादी छात्रों के लिए चुनौतीपूर्ण पाठ्यचर्या की माँग करते हैं जिससे छात्र वास्तविक जीवन में मिल सकने वाली समस्याओं का समाधान करने में सामर्थ्यवान हो सकें। इस हेतु वे लम्बे विद्यालयी दिन, लम्बे शैक्षणिक साल एवं ऐसी पाठ्यपुस्तकों की वकालत करते हैं जो छात्रों के लिए चुनौतीपूर्ण हों।
7. पदार्थवादी पाठ्यचर्या में शिक्षक को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनके अनुसार ऐसी कक्षाओं का आयोजन करना चाहिए जिसमें मुख्य भूमिका शिक्षक की हो। कक्षायें शिक्षक के इर्द-गिर्द होनी चाहिए। पदार्थवादी शिक्षक को छात्रों के लिए एक role model के रूप में मानते हैं। जो छात्रों को मात्र बौद्धिक और नैतिक ज्ञान ही न दे बल्कि ज्ञान देने के साथ-साथ उनका बौद्धिक और नैतिक रूप से पथ-प्रदर्शन भी कर सके। उन्हें मात्र ज्ञान का प्राणी बनने में ही मदद न करे बल्कि चारित्रिक रूप से सामर्थ्यवान भी बनाए।
8. चूँकि पदार्थवादी शिक्षण प्रक्रिया को शिक्षक केन्द्रित मानते हैं अतः यह निर्णय लेने का कार्य भी शिक्षकों को दिया जाता है कि वे इस बात का निर्णय करें की विद्यार्थियों को सीखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है। पर इसके साथ ही शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे थोड़ा ध्यान छात्रों की रुचियों का भी रखें क्योंकि रूचि के अभाव में छात्र विषय पर कम ध्यान देंगे फलस्वरूप विषय के अध्ययन में समय अधिक लगेगा।
9. पदार्थवादी पाठ्यचर्या में सभी छात्रों की वैयक्तिक भिन्नताओं को दरकिनार करते हुए हर छात्र के लिए समान पाठ्यचर्या प्रस्तावित की जाती है अतः प्रगति के मूल्यांकन की प्रक्रिया में भी

उपलब्धि परीक्षणों में व्यक्तिगत रूप से किसी छात्र की उपलब्धि पर ध्यान देने के स्थान पर कक्षा के मध्यमान पर विशेष ध्यान देते हैं।

10. पदार्थवादी विद्यालयों में अनुशासन हेतु विशेष अनुशंसा की जाती है। वास्तव में क्रमबद्ध रूप से सीखने के लिए विद्यालय में अनुशासन का होना अनिवार्य है। विद्यार्थियों को विद्यालय तथा विद्यालय से बाहर प्रत्येक स्थान पर सत्ता का सम्मान करना चाहिए।
11. विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति का ज्ञान होना चाहिए जिससे सही रूप में संस्कृति का हस्तांतरण अगली पीढ़ी को हो सके। इसके लिए कक्षाओं में विद्यार्थियों को सांस्कृतिक रूप से साक्षर होने की शिक्षा दी जाती है जो लोगों, घटनाओं, विचारों एवं संस्थाओं के कार्यसाधक ज्ञान को लिए होता है।
12. शिक्षकों का सुशिक्षित एवं परिपक्व होना अत्यावश्यक है। शिक्षकों को अपने विषय का पारंगत होने के साथ-साथ उस ज्ञान को विद्यार्थियों में हस्तांतरित करने की योग्यता होनी चाहिए।
13. पदार्थवादी विद्यार्थियों में इस प्रकार से शिक्षा को बीजारोपित करने पर बल देते हैं की विद्यालय छोड़ने के पश्चात् भी वे न केवल बुनियादी ज्ञान और कौशल के अधिकारी बल्कि अनुशासित और व्यवहारिक ज्ञान के अधिकारी भी बने रहें जिससे वे सीखे गए ज्ञान का प्रयोग वास्तविक दुनिया एवं परिस्थितियों में कर सकें।

अभ्यास प्रश्न

8. पदार्थवादी दर्शन का जन्म किस देश में हुआ था ?

    i. सोवियत रूस
    ii. फ्रांस
    iii. अमेरिका
    iv. जर्मनी

9. पदार्थवादी दर्शन .... पर आधारित है।
10. 1930 के दशक में पदार्थवाद का प्रमुख दार्शनिक .... को माना जाता है।
11. पदार्थवादी पाठ्यचर्या में सभी विद्यार्थियों के लिए .... की बात की जाती है।
12. पदार्थवादी दर्शन के मुख्य समर्थकों में किन-किन दार्शनिकों का नाम आता है?

13. पदार्थवादी शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यचर्या में किन विषयों के समावेश पर बल दिया जाता है?

5.3.3 पुनर्संरचनावाद

पुनर्संरचनावाद को एक ऐसे शैक्षिक उपागम के रूप में देखा जाता है जिसने अमेरिका में सामाजिक परिवर्तन हेतु विद्यालयों के सामाजिक भूमिका निभाने पर बल दिया। पुनर्संरचनावाद के समर्थकों का मानना है कि सामाजिक परिवर्तन के लिए विद्यालयों को मात्र शिक्षा देने वाली शाला बन कर ही नहीं रहना चाहिए वरन इसके इतर विद्यालयों की कुछ सामाजिक भूमिकाएं भी होती हैं जिसे उन्हें भली-भांति निभाना चाहिए । 1930 से 1960 के दौरान पुनर्संरचनावाद अमेरिका में एक अतिलोकप्रिय दर्शन था। वैसे तो पुनर्संरचनावाद का प्रारंभ 1930 के काफी पहले ही हो चुका था पर लम्बे समय तक यह विचारधारा अन्धकार के गर्त में रही। काफी समय तक अंधकार में रहने के पश्चात् 1930 के दशक में यह विचारधारा पुनः प्रकाश में आयी परन्तु 1950 के दशक में यह पूर्णरूपेण पुष्पित-पल्लवित हुई। पुनर्संरचनावाद को काफी हद तक कोलंबिया टीचर्स कॉलेज के थोओडोर ब्रैमेल्ड, के मष्तिस्क की उपज के रूप में देखा जाता है जिसके कार्यों के द्वारा पुनर्संरचनावाद 1950 के दशक में अपने वास्तविक स्वरुप को प्राप्त कर सकी। थोओडोर ब्रैमेल्ड ने अध्ययन के फलस्वरूप अमेरिका में शिक्षा सम्बन्धी तीन मुख्य उपागमों की पहचान की। इसमे पहला स्थायित्ववाद है जिसका मानना है कि शिक्षा का आधार महान पुस्तकें होनी चाहिए दूसरा पदार्थवाद है जो सामाजिक विरासत उपागम पर आधारित थी और तीसरा प्रगतिवाद है जो विद्यार्थी को अपना विकास स्वयं के द्वारा करने की वकालत करता है। पहले दोनों को अस्वीकार करते हुए पाया कि उनकी शैक्षिक विचारधारा तीसरे से मिलती है। प्रारंभ में थोओडोर ब्रैमेल्ड एक कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रभावित थे परन्तु कालांतर में पुनर्संरचनावाद की ओर मुड़ गए।

पुनर्संरचनावाद के अन्य प्रमुख समर्थक जॉर्ज काउंट्स (1932) थे जिन्होंने अपने भाषण, जिसका शीर्षक "Dare the School Build a New Social Order" में यह सुझाव दिया कि विद्यालय सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक सुधार के प्रतिनिधि बन गए हैं। अतः इस दिशा में छात्रों से मात्र एक तटस्थ भूमिका निभाने को स्वीकार नहीं किया जा सकता है बल्कि उनसे समाज में एक स्थान, एक सामाजिक पद ग्रहण करने की आशा की जाती है ताकि वे सुधार में अपना विशेष योगदान दे सकें।

पुनर्संरचनावाद के अधिकांश समर्थक वर्ग मुक्त एवं विभेदमुक्त समाज की कल्पना करते हैं अतः पुनर्संरचनावादी जाति, लिंग, धर्म और सामाजिक-आर्थिक स्तर के अंतर को लेकर अधिक संवेदनशील हैं। पुनर्संरचनावाद से सम्बंधित एक अन्य विश्वास Critical Pedagogy है। यह मुख्य रूप से शिक्षण और पाठ्यचर्या सिद्धांत है जो कि हेनरी गिरोक्स और पीटर मैकलॉरेन के द्वारा इसका प्रारूप तैयार किया था जो कि कक्षा में क्रांतिकारी साहित्य के प्रयोग पर बल देता है जिसका लक्ष्य 'मुक्ति' को प्राप्त करना है। अपनी अवधारणाओं के आधार पर Critical Pedagogy मार्क्स के विचारधारा पर आधारित थी जो कि समाज में धन के वितरण में समानता की वकालत करती है और पूंजीवाद का घोर विरोध करती है।

नवीन पुनर्संरचनावादी जैसे पाउलो फ्रेइरे (1968) अपनी पुस्तक 'Pedagogy of the Oppressed' (1968) में गरीब छात्रों के लिए क्रांतिकारी शिक्षा की वकालत करते हैं जिसमें व्यक्ति विभिन्न चरणों से गुजरते हुए पूर्णता को प्राप्त करता है। छात्र स्वयं के लिए स्वयं ही क्रिया करें। ज्ञान के द्वारा वे विभेदनशीलता के विरुद्ध कारवाई करने में सक्षम हो सकें तथा स्वयं ही उत्पीड़न से बाहर निकल सकें।

समाज में परिवर्तन हेतु शिक्षा को एक उपकरण के रूप में है। पुनर्संरचनावादी समाज में सुधार के पक्ष में तर्क देते हैं और साथ ही शिक्षा में इस बात पर विशेष बल देते हैं कि विद्यार्थियों को यह सिखाना या पढाना चाहिए की संपूर्ण समाज या इसके किसी भी भाग में परिवर्तन किस प्रकार लाया जाए। सामान्य रूप में पुनर्संरचनावाद वह दर्शन है जो सामाजिक और सांस्कृतिक आधारभूत सुविधाओं के पुनर्निर्माण पर विश्वास करती हैं। पुनर्संरचनावाद के अनुसार शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जो छात्रों की सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करे और साथ ही समस्याओं के अध्ययन के पश्चात् सामाजिक उन्नति के लिए उचित रास्तों की तलाश करे।

पुनर्संरचनावादी पाठ्यचर्या का स्वरुप

पुनर्संरचनावादी दर्शन के अनुसार पाठ्यचर्या का स्वरुप निम्नवत होना चाहिए।

1. पुनर्संरचनावादी पाठ्यचर्या में, छात्रों के लिए सामाजिक समस्याओं की व्याख्या, विश्लेषण एवं मूल्यांकन करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि रचनात्मक परिवर्तन लाने के लिए छात्रों को सम्बंधित मुद्दों पर चर्चा करना और निवारण के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना आवश्यक है। उन्हें इस प्रकार तैयार करना जरुरी है कि वे सामाजिक समस्याओं को दूर करने के लिए प्रतिबद्ध हो जाएँ।
2. पाठ्यचर्या सामाजिक और आर्थिक मुद्दों के साथ-साथ सामाजिक सेवा पर भी आधारित होना चाहिए। पाठ्यचर्या में स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समुदायों महत्वपूर्ण विश्लेषण होना चाहिए जिससे छात्रों को स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समुदायों का समुचित ज्ञान हो सके। इन मुद्दों के कुछ उदाहरण पर्यावरण ह्रास, बेरोजगारी, अपराध, राजनीतिक उत्पीड़न, युद्ध, भूख इत्यादि हैं।
3. पुनर्संरचनावादी ऐसी पाठ्यचर्या की बात करते हैं जो सामाजिक असमानताओं को ख़त्म करने में मदद करती है। समाज में कई तरह की असमानताएं एवं अन्याय हैं जैसे- जाति, लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बंधित असमानताएं एवं इसकी वजह से उपजा अन्याय। विद्यालयों को छात्रों को इन अन्यायों के विरुद्ध एक क्रांतिकारी कदम लेने को प्रेरित करना चाहिए। इसके साथ ही साथ छात्रों को विवादस्पद मुद्दों की जाँच से भी पीछे नहीं हटना चाहिए। छात्रों को विभिन्न मुद्दों पर आम सहमति बनाने के सम्बन्ध में सीखना चाहिए और इसके लिए छात्रों को एक साथ समूह में कार्य करने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
4. समाज में हो रहे लगातार परिवर्तन के साथ ही पाठ्यचर्या को भी परिवर्तित होते रहना चाहिए। छात्रों को विभिन्न वैश्विक मुद्दों एवं राष्ट्रों के मध्य अन्योन्याश्रित संबंधों से अवगत होना चाहिए।

इसके साथ ही पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए जिसमें छात्रों में आपसी समझ और वैश्विक सहयोग बढ़ाने से सम्बंधित पाठ हों।

5. शिक्षकों को सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक नवीकरण एवं अंतर्राष्ट्रीयता को बढ़ाने वाले मुख्य प्रतिनिधियों के रूप में देखा जाता है अतः उन्हें पुरानी संरचनाओं को चुनौती देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और एक नयी सामाजिक व्यवस्था जो काल्पनिक हो सकती है, को लेने का प्रयास करना चाहिए।
6. पुनर्संरचनावादी सामान्य रूप से पाठ्यचर्या में विज्ञान के स्थान पर सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों को रखने की वकालत करते हैं। पाठ्यचर्या में जिन विषयों के समावेश पर मुख्य रूप से बल दिया जाता है उनमें इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, धर्म, मूल्य, कविता और दर्शन हैं

अभ्यास प्रश्न

14. पुनर्संरचनावाद को वास्तविक स्वरुप किस दार्शनिक ने प्रदान किया?

    i. पीटर मैकलॉरेन
    ii. जॉर्ज काउंट्स
    iii. थोओडोर ब्रैमेल्ड
    iv. जॉन डीवी

15. पुनर्संरचनावाद मुख्य रूप से किन मुद्दों को पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने की बात करता है?

    i. सामाजिक मुद्दे
    ii. राजनीतिक मुद्दे
    iii. सांस्कृतिक मुद्दे
    iv. आर्थिक मुद्दे

16. पुनर्संरचनावाद के अनुसार पाठ्यचर्या में किन विषयों का समावेश होना चाहिए?
17. पुनर्संरचनावाद पाठ्यचर्या के अनुसार शिक्षक की भूमिका की चर्चा करें।

5.4 पाठ्यचर्या एवं मूल्यों के बीच सम्बन्ध

पाठ्यचर्या क्या है इसका अध्ययन हम इस इकाई के प्रारंभ में कर चुके हैं। अतः पाठ्यचर्या एवं मूल्यों के मध्य सम्बन्ध जानने से पहले आवश्यक है कि मूल्य क्या हैं ये जान लिया जाए।

मूल्य

मूल्य हमारे समाज में निहित आदर्श और विश्वास हैं जो हमारे विचारों, रीति-रिवाजों, रहन-सहन, वेश-भूषा से परिलक्षित होता है। मूल्यों को विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया है; परन्तु सभी का आशय कमोबेश एक जैसा ही है।

काने ने मूल्यों को परिभाषित हुए कहा है कि, "मूल्य वे आदर्श तथा विश्वास हैं; जिन्हें समाज के अधिकांश सदस्यों ने अपना लिया है।" अर्थात जिस समाज में जो समाजसम्मत है उसे उस समाज का मूल्य माना जा सकता है। **अंतर्राष्ट्रीय विश्वकोष** के अनुसार, "मूल्य का अर्थ नियमों के उस समुच्चय से लिया जाता है जहाँ चरित्र को व्यक्ति तथा सामाजिक दलों के लिए नियंत्रित किया जाता है।" वहीं **अर्बन** ने मूल्यों की परिभाषा इस रूप में दी है कि "मूल्य वे हैं जो मानवीय अभिलाषाओं को संतुष्ट करते हैं"। **आर. के. मुखर्जी** के शब्दों में, "मूल्यों को सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य उन इच्छाओं तथा लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किया है जिन्हें अनुबंधन, अधिगम या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आभ्यान्तरीकृत किया जाता है तथा जो आत्मनिष्ठ प्राथमिकताओं, मानकों तथा आकांक्षाओं को ग्रहण करती है।"

मानव कुछ लक्ष्यों को ले कर जन्म लेता है जिनकी प्राप्ति के लिए वह जीवन भर प्रयासरत रहता है इन्हीं जीवन लक्ष्यों को मूल्य की संज्ञा दी जाती है। जीवन से सम्बंधित इन लक्ष्यों की उत्पति के स्रोत इस प्रकार हैं –

मूल्यों के स्रोत

मूल्य हमारे जीवन में ही निहित हैं। जीवन से जुड़े कई पहलू होते हैं जैसे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक। अतः मानव जीवन से सम्बंधित प्रत्येक पहलू से मूल्य सम्बंधित होते हैं और समाज में व्याप्त प्रत्येक मूल्य का जन्म मानव से सम्बंधित इन विभिन्न पक्षों से होता है। ये विविध पक्ष इस प्रकार हैं।

i. दर्शन से सम्बंधित मूल्य
ii. सामाजिक संरचना से सम्बंधित मूल्य
iii. धर्म से सम्बंधित मूल्य
iv. संस्कृति से सम्बंधित दर्शन

मूल्यों के प्रकार

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि ये मूल्य हमारे जीवन के लक्ष्य, पक्षों से सम्बंधित होते हैं एवं संस्कृति का ही एक भाग हैं। मूल रूप से प्रत्येक संस्कृति में सर्वमान्य कुछ मूल्य होते हैं। व्यक्तिगत, समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रजातान्त्रिक, भ्रातृत्व, धर्मनिरपेक्षता, सत्य व अहिंसा, आध्यामिकता, विश्व-बंधुत्व, भौतिकता आदि इसप्रकार के मूल्य हैं। अर्बन ने मनुष्य के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्षों के आधार पर मूल्य के तीन प्रकार बताये हैं (i) शारीरिक, (ii)

सामाजिक, (iii) आध्यात्मिक । अर्बन के अतिरिक्त अन्य विद्वानों ने भी इन पक्षों से सम्बंधित मूल्य के विभिन्न प्रकार बताये हैं जो इस प्रकार हैं-

सामान्य रूप से मान्य मूल्य-

i. दार्शनिक मूल्य
ii. मनोवैज्ञानिक मूल्य
iii. सामाजिक मूल्य
iv. मानवीय या सार्वभौमिक मूल्य

पाश्चात्य विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोणों के आधार पर मूल्य के भिन्न प्रकार बताये हैं जिनमें शारीरिक, आर्थिक, मनोरंजन, साहचर्य, चरित्र, सौन्दर्य, बौद्धिक एवं धार्मिक आदि सम्मिलित होते हैं। पश्चिमी संस्कृति की मूल्य मीमांसा के अनुसार मूल्यों के चार प्रकार बताए हैं-

i. नैतिक मूल्य
ii. सौन्दर्यपरक मूल्य
iii. सामाजिक या आर्थिक मूल्य
iv. धार्मिक या सांस्कृतिक मूल्य

मनु ने अपनी स्मृति में चार पुरुषार्थों का उल्लेख किया है, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष । ये चारों पुरुषार्थ चार भारतीय मूल्य के रूप में जाने जाते हैं । इसमें अर्थ और काम लौकिक मूल्य हैं तथा धर्म और मोक्ष आध्यात्मिक मूल्य हैं । इन मूल्यों के अतिरिक्त अन्य परंपरागत भारतीय मूल्य निम्नलिखित हैं-

i. सत्य
ii. धर्म
iii. शान्ति
iv. प्रेम
v. अहिंसा

जैसा कि पहले ही बताया गया है कि मूल्य समय के साथ परिवर्तनशील हैं। बदलते समय के साथ मूल्यों में भी परिवर्तन हुआ है । आधुनिक भारतीय समाज के मूल्यों के अंतर्गत स्वतंत्रता, न्याय, समानता, भ्रातृत्व, सत्य व अहिंसा, देश-प्रेम, विश्व-बंधुत्व एवं अंतर्राष्ट्रीय सदभाव की भावना तथा इन सबसे ऊपर नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य आते हैं जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक उसी प्रकार से अनुकरणीय हैं।

पाठ्यचर्या निर्माण

भारतीय सभ्यता और संस्कृति अति प्राचीन हैं। मूल्य संस्कृति में ही संलग्नित होते हैं। भारतीय संस्कृति स्वयं में अति मूल्यनिष्ठ संस्कृति मानी जाती है। वस्तुतः प्रत्येक संस्कृति में कुछ मूल्य निहित होते हैं। ये मूल्य उस स्थान उस देशकाल के दर्शन पर आधारित होते हैं। जैसा कि अधिकांश लोगों का मानना है है कि आधुनिकता या पश्चिमी सभ्यता मूल्यहीन है। पश्चिमीकरण, नगरीकरण अथवा आधुनिकीकरण; ये सभी अपने कुछ न कुछ मूल्यों को समाहित कर रखा है। ये बात और है कि ये सभी मूल्य एक हद तक हमारे देश में परंपरागत मान्य मूल्यों से नहीं मिलते, जिसकी वजह से इतना विरोध होता है। परन्तु मूल्यों के स्वरुप में परिवर्तन अवश्यम्भावी है।

इस विश्व में सनातन कुछ भी नहीं है। यदि कुछ स्थायी या सनातन है तो वह परिवर्तन ही है। समाज में परिवर्तन होता रहता है। विभिन्न परिवर्तनों के कारण समाज में परिवर्तन आता है। समाज में आए परिवर्तन के साथ ही दर्शन, आदर्श, विश्वास, धर्म, परम्परा, प्रथा, मनोभाव, साहित्य, विज्ञान सभी में परिवर्तन आता है और इन सभी के साथ मूल्यों में परिवर्तन आता है।

पाठ्यचर्या एवं मूल्य: पाठ्यचर्या के निर्माण के पीछे दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मानवीय जैसे आधार उत्तरदायी हैं। ये आधार मूल्यों के निर्माण के लिए भी उत्तरदायी हैं तो जैसे ही इन आधारों में परिवर्तन होता है मूल्यों में भी परिवर्तन हो जाता है और पाठ्यचर्या का मुख्य उद्देश्य इन जीवन मूल्यों की प्राप्ति है तो परिवर्तित मूल्यों की प्राप्ति हेतु पाठ्यचर्या में भी परिवर्तन हो जाता है। जिस प्रकार के हगारे समाज के मूल्य होते हैं हमारी पाठ्यचर्या भी उसी प्रकार की होती है। पाठ्यचर्या के माध्यम से इन मूल्यों को प्राप्त कर समाज के द्वारा नियत लक्ष्यों को पाने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा एवं पाठ्यचर्या में व्याप्त मूल्यों का को इस रेखाचित्र के माध्यम से समझा जा सकता है। मूल्यों ये परिवर्तन आगे चल कर संस्कृति में परिवर्तन करते हैं।

पाठ्यचर्या एवं मूल्यों के मध्य अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। दोनों एक-दूसरे से अंतर्संबंधित हैं साथ ही एक-दूसरे को प्रभावित करते और होते हैं। मूल्यों के आधार पर शैक्षिक उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं और फिर उन उद्देश्यों के लिए शैक्षिक संरचना बनायी जाती है। शैक्षिक संरचना के हिसाब से विद्यालयी और कक्षा के वातावरण का निर्माण किया जाता है जिसमें निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षा दी जानी है। तद्पश्चात उचित पाठ्यचर्या का शिक्षण सहायक सामग्रियों, शिक्षण विधियों एवं तकनीकों के माध्यम से विद्यार्थियों को ज्ञान दिया जाता है। तद्पश्चात उनका मूल्यांकन कर निर्धारित एवं गैरनिर्धारित परिणाम प्राप्त किए जाते हैं। ये स्पष्ट करते हैं कि किन मूल्यों की प्राप्ति नहीं हुयी है और उसके आधार पर संपूर्ण शिक्षण व्यवस्था को पुनर्निर्मित किया जाता है और इस प्रकार यह चक्र निरंतर चलता रहता है।

चित्र संख्या: 5.

शिक्षा में मूल्यों का प्रतिबिम्बन

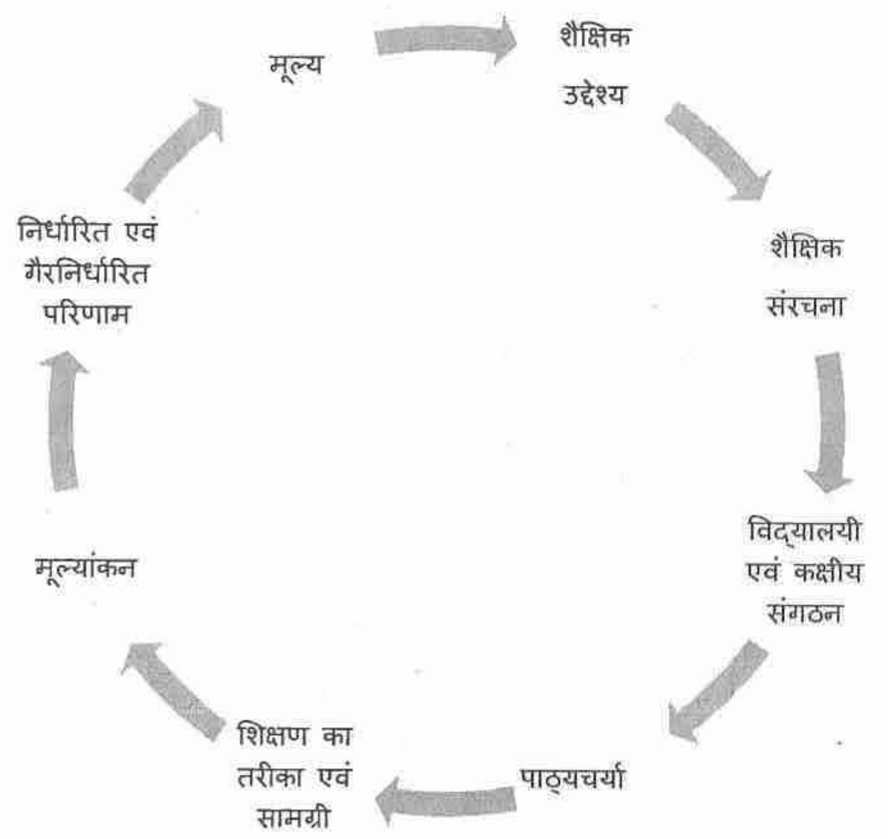

इस इकाई से यह स्पष्ट है कि प्रत्येक दर्शन का शिक्षा को अपनी तरह से प्रभावित करता है। तत्कालीन आदर्शों, विचारधाराओं और सामाजिक आवश्यकताओं के आधार पर शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकता भिन्न-भिन्न होती है। किसी न किसी रूप में शिक्षा सम्बन्धी ये दर्शन आज भी व्यावहारिक हैं। जहाँ पदार्थवादी दर्शन वैज्ञानिकता पर बल देता है वहीं प्रगतिवादी दर्शन प्राकृतिक विज्ञान के साथ-साथ सामाजिक विज्ञान पर भी बल देता है और पुनर्संरचनावादी दर्शन मूल रूप से सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिकता का विकास करने से सम्बंधित दार्शनिक विचारधारा है। इसीप्रकार संस्कृति में निहित मूल्य भी शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करते हैं।

देश की बढ़ती जनसंख्या के साथ कई समस्याओं ने जन्म लिया। बेरोजगारी की समस्या भी उन्हीं समस्याओं में से एक है। इस बढ़ती जनसंख्या के लिए सरकार के द्वारा सभी के लिए रोजगार की व्यवस्था करना अत्यन्त कठिन कार्य है। इस हेतु प्रगतिवादी शिक्षा व्यवस्था आवश्यक है जो स्वयं

करके सीखने पर बल देती है। स्वयं करके सीखने से जहाँ छात्रों द्वारा किया गया प्रयास, प्रयोग एवं हस्तकौशल तथा अन्य गामक क्रियाओं द्वारा सीखे जाने पर बल देता है वहीँ कहीं न कहीं से स्वरोजगार में सहायक होता है। इसके साथ ही जनसंख्या बढ़ने के साथ देश में परिवार नियोजन को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। जिससे पहले परिवार में जो माता-पिता और उनके दो बच्चे की संकल्पना थी वह दो बच्चों से घटकर मात्र एक बच्चे पर आ गयी है। समाजशास्त्रियों द्वारा यह अंदेशा व्यक्त किया जा रहा है कि आने वाली पीढियां भाई, बहन, बुआ, चाचा, मामा, मौसी जैसे रिश्तों से अनजान रहेंगी। इसका एक और दूरगामी पक्ष यह है कि इन रिश्तों से अनजान रहने के साथ ही उनमें सामाजिक एवं मानवीय गुणों जैसे सहयोग, सामाजिकता, परोपकार त्याग, करुणा, दया, समायोजन जैसे गुणों का अभाव हो जाएगा क्योंकि जीवन से सम्बंधित इस पाठ का प्रारंभ घर एवं परिवार से होता है। वर्तमान समय में भी नवीन पीढ़ियों में इन गुणों का अभाव दिख रहा है इसलिए इन सभी समस्याओं के निवारण के लिए प्रगतिवादी शिक्षा एक हल के रूप में देखी जा सकती है। इतना ही नहीं भारतवर्ष में विष की तरह व्याप्त साम्प्रदायिकता, जातिवाद, वर्णवाद के निवारण में प्रगतिवादी एवं पुनर्संरचनावादी शिक्षा पद्धति उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

पदार्थवादी शिक्षा व्यवस्था भी आज की मांग को देखते हुए आवश्यक है। पदार्थवादी शिक्षा वैज्ञानिकता एवं व्यावहारिकता से सम्बंधित है जो आधुनिक वैज्ञानिक युग के लिए उपयोगी है।

अभ्यास प्रश्न

18. मूल्य को परिभाषित करें?
19. भारतीय परम्परा के अनुसार कौन-कौन से मूल्य माने गए हैं?
20. समाज के मूल्यों में परिवर्तन के साथ पाठ्यचर्या भी परिवर्तित होनी चाहिए । सत्य/असत्य
21. अर्बन के अनुसार मुख्य रूप से पांच मूल्य होते हैं । सत्य/असत्य
22. मूल्य व्यापक रूप से पाठ्यचर्या को प्रभावित करते हैं । सत्य/असत्य
23. किन मूल्यों को आधुनिक भारत में मूल्य की संज्ञा दी जाती है?

सारांश

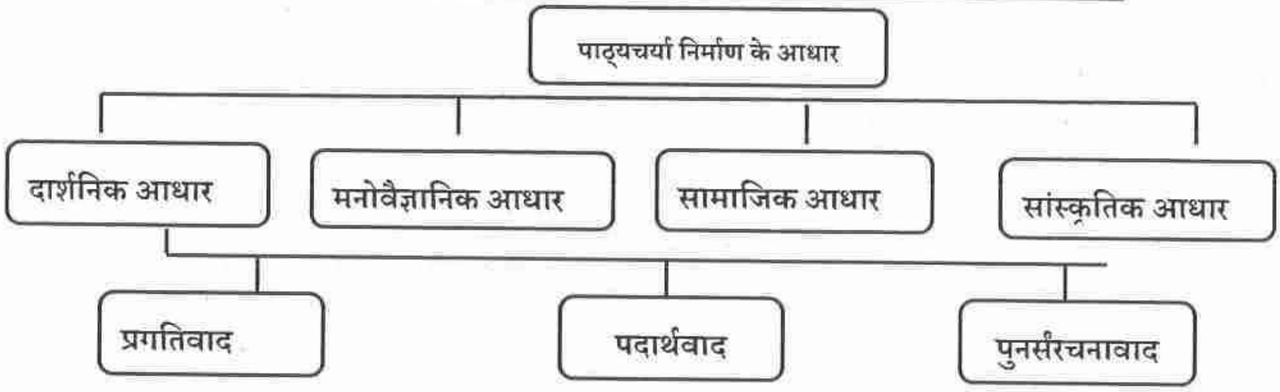

शिक्षा का बालकेंद्रित लक्ष्य व बालकेंद्रित पाठ्यचर्या, पाठ्यचर्या लोकतान्त्रिक वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में सीखना, खोजपूर्ण तरीके से सीखने पर बल, समूह में सीखने को प्रोत्साहन, प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञान के अध्ययन पर बल, शिक्षक को तत्वान्वेषी एवं अध्ययनशील होना चाहिए, शिक्षा आनंदप्रद, कक्षा जीवन्त, छात्र अंतःक्रिया आवश्यक, विभिन्न विषयों का सहसम्बन्ध विधि से अध्यापन ।

मुख्य दार्शनिक- रुसो, डीवी, पेस्टोलोज़ी, फ्रोबेल, मेरिया मोंटेसरी

विज्ञान तथा वैज्ञानिक पाठ्यचर्या को समर्थन, पारंपरिक मूल्यों को प्रोत्साहन, व्यावसायिक तथा जीवन समायोजन से सम्बंधित विषयों को पाठ्यचर्या में रखने को हतोत्साहित, 3R में विशेष ज्ञान या निपुणता प्राप्त करने पर बल, वैयक्तिक विभिन्नताओं को नज़रअंदाज़, सभी छात्रों के लिए समान पाठ्यचर्या पर छात्रों में अंतर, पाठ्यचर्या अत्यधिक चुनौतीपूर्ण, शिक्षक अत्यन्त महत्वपूर्ण, विषय का ज्ञाता एवं ज्ञान का स्रोत, छात्रों के लिए पथ-प्रदर्शक, व्यक्तिगत उपलब्धियों के स्थान पर सम्पूर्ण कक्षा की उपलब्धि के मध्यमान पर ध्यान, अनुशासन अत्यावश्यक,विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक रूप से साक्षर होना आवश्यक ।

मुख्य दार्शनिक- विलियम बेगले, आर्थर बेस्टर, एडमिरल रिकओवर डेकार्ते, न्यूटन, ह्यूम, लॉक, कांट

सांस्कृतिक व सामाजिक पुनर्निर्माण से सम्बंधित विचारधारा अतएव पाठ्यचर्या भी ऐसी ही, सामाजिक समस्याओं के अध्ययन से सम्बंधित, विद्यालय सामाजिक सुधार व सामाजिक परिवर्तन के प्रतिनिधि, छात्र भविष्य के समाजसुधारक, वर्गमुक्त एवं विभेदमुक्त समाज की कल्पना, पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान के विषयों पर विशेष बल, अंतर्राष्ट्रीयता को बढ़ावा एवं नए समाज की स्थापना की कल्पना ।

मुख्य दार्शनिक- थोओडोर ब्रैमेल्ड जॉर्ज काउंट्स, हेनरी गिरोक्स, पीटर मैकलॅरिन, पाउलो फ्रेइरे

5.6 शब्दावली

1. **प्रगतिवाद:** प्रगतिवाद वह दार्शनिक मत है जो इस पर बल देता है कि किसी भी शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र बालक होना चाहिए साथ ही शिक्षा वास्तविक जीवन पर आधारित होनी चाहिए।
2. **पदार्थवाद:** पदार्थवाद विश्व में शक्ति के स्रोत और प्रभुत्व से सम्बंधित एक प्राचीन सिद्धांत है जिसका मानना है कि प्रकृति का जटिल नियम प्रकृति में पाए जाने वाली प्रत्येक वस्तु में आतंरिक रूप से है । अतः रूप परिवर्तित करने के स्थान पर वस्तु को उसे उसी के रूप में स्वीकार करना चाहिए।
3. **पुनर्संरचनावाद:** पुनर्संरचनावाद वह शैक्षिक विचारधारा है जिसका मानना है कि सामाजिक परिवर्तन लाने में मुख्य योगदान विद्यालय ही कर सकते हैं।
4. **मूल्य:** मूल्य समाज के वे आदर्श या विश्वास हैं जो समाज सम्मत हैं तथा समाज के अधिकांश सदस्य गुणों के रूप में जिनका अनुसरण करते हैं।

5.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. पाठयचर्या निर्माण के मुख्य आधार इस प्रकार हैं;
   i. पाठयचर्या निर्माण के दार्शनिक आधार
   ii. पाठयचर्या निर्माण के मनोवैज्ञानिक आधार
   iii. पाठयचर्या निर्माण के सामाजिक आधार
   iv. पाठयचर्या निर्माण के सांस्कृतिक आधार
2. प्रगतिवादी पाठ्यचर्या में प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञान सम्बन्धी विषयों जैसे- भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान, को पाठ्यचर्या में शामिल करने पर विशेष बल दिया जाता है.
3. प्रगतिवाद के प्रमुख दार्शनिक रुसो, डीवी, पेस्टोलोज़ी, फ्रोबेल, मेरिया मोंटेसरी इत्यादि हैं।
4. 1886
5. जॉन डीवी
6. खोजपूर्ण
7. लोकतान्त्रिक
8. **iii.** अमेरिका
9. वैज्ञानिकता

10. विलियम बेगले
11. समान पाठ्यचर्या
12. पदार्थवाद के मुख्य दार्शनिकों में विलियम बेगले, आर्थर बेस्टर, एडमिरल रिकओवर डेकार्ते, न्यूटन, ह्यूम, लॉक, कांट इत्यादि आते हैं।
13. पदार्थवादी पाठ्यचर्या में मुख्यतः वैज्ञानिक विषयों का समावेश करने पर बल दिया जाता है। पाठ्यचर्या में गणित, प्राकृतिक विज्ञान, इतिहास, विदेशी भाषायें, और साहित्य विषय को सम्मिलित किया जाता है।
14. **iii.** थोओडोर ब्रैमेल्ड
15. **i.** सामाजिक मुद्दे
16. पुनर्संरचनावाद के अनुसार पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों को रखना चाहिए। सामाजिक विज्ञान में जिन विषयों के समावेश पर मुख्य रूप से बल दिया जाता है उनमें इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, धर्म, मूल्य, कविता और दर्शन इत्यादि हैं।
17. पुनर्संरचनावादी दर्शन में शिक्षक को एक महत्वपूर्ण भूमिका प्राप्त है। शिक्षक को सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक नवीकरण एवं अंतर्राष्ट्रीयता को बढ़ाने वाले मुख्य प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता है।
18. मूल्यों को सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य उन इच्छाओं तथा लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किया है जिन्हें अनुबंधन, अधिगम या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आभ्यान्तरीकृत किया जाता है तथा जो आत्मनिष्ठ प्राथमिकताओं, मानकों तथा आकांक्षाओं को ग्रहण करती है।
19. भारतीय परम्परा में मूल मूल्यों के रूप में सत्य, धर्म, शान्ति, प्रेम और अहिंसा हैं।
20. सत्य
21. असत्य
22. सत्य
23. आधुनिक भारतीय में स्वतंत्रता, न्याय, समानता, भ्रातृत्व, सत्य व अहिंसा, देश-प्रेम, विश्व-बंधुत्व एवं अंतर्राष्ट्रीय सदभाव की भावना इत्यादि को मूल्यों की संज्ञा दी जाती है।

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Connolly, J. J. (1998). *The Triumph of Ethnic Progressivism: Urban Political Culture in Boston 1900-1925*. Cambridge: Harvard University Press

2. Ellis, B. (2002). *The Philosophy of Nature: A Guide of the New Essentialism.* Chesham: Acumen Publishing limited
3. Heslep, R. (1997). *Philosophical Thinking in Educational Practice.* london: Greenwood Publishing.
4. abaree, D.F. (2005). Progressivism, Schools and Schools of Education: An American Romance. *Paedagogica Historica.* 41, (1 & 2), 275–288.
5. ink, W. A. (1992). The Paradox of Southern Progressivism, 1880-1930. USA: University of North Carolina Press.
6. insky, l. Reference, Essentialism, and Modality. The Journal of Philosophy, 66, No. (20), 687-700. Retrieved Feb. 17, 2013 from http://links.jstor.org/sici?sici=0022362X%2819691016%2966%3A20%3C687%3AREAM%3E2.0.CO%3B2-6
7. Nugent, W. (2010). *Progressivism: A Very Short Introduction.* New York: Oxford University Press, Inc.
8. Paul, l.A. (2006). In Defense of Essentialism. *Philosophical Perspectives.* 20.
9. Pestritto, R. J. & Atto, W. J. (Eds.) (2008). *American Progressivism.* lanham: lexington Books.
10. Radu, l. (2011). John Dewey and Progressivism in American Education. *Bulletin of the Transilvania University of BraŞov Series VII: Social Sciences, law.* 4 (2).
11. Rogers, C. (1990) The Carl Rogers Reader,ed. H.Kirschenbaum and V.land Henderson, london, Constable.
12. Anderson, W.J. (). Progressivism: An Historiographical Essay

5.9 सहायक/उपयोगी सामग्री

1. चतुर्वेदी, पी. एवं खण्डाई, एच. (2011). *मूल्य शिक्षा.* नयी दिल्ली: ए.पी.एच. पब्लिशिंग कारपोरेशन।

2. Doll, R.C. (1986). *Curriculum Improvement: Decision Making and Process*. Boston: Allyn and Bacon.
3. Goodlad, J.I. (1979). *Curriculum Inquiry*. New York: McGraw-Hill.
4. Mrunalini, T. (2008). *Curriculum Development.* Hyderabad: Neelkamal Publication PVT. ITD.
5. Ornstein, A. and Hunkins, F. (1998). *Curriculum: Foundations, Principle and Issues.* Boston, MA: Allyn & Bacon.
6. Ornstein, A. C. (nd). *Philosophy as a Basis for Curriculum Decisions*. Retrieved Feb 15, 2013 from https://wiki.usask.ca/download/attachments/44564505/Philosophy_%20Curriculum.pdf
7. Rao, U. (2011). *Education for Values.* New Delhi: Himalaya Publishing House.
8. Tanner, E. and Tanner, 1 (1980). *Curriculum Development: Theory into Practice.* New York: Macmillan Publishing Co.
9. Tyler, R.W. (1949). *Basic Principles of Curriculum and Instruction.* Chicago: University of Chicaga Press.

5.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. प्रगतिवाद क्या है? प्रगतिवादी दर्शन के अनुसार पाठ्यचर्या का स्वरुप कैसा होना चाहिए?
2. पदार्थवादी एवं पुनर्संरचनावादी दार्शनिक विचारधारा को स्पष्ट करें । पदार्थवादी एवं पुनर्संरचनावादी पाठ्यचर्या में क्या समानताएं एवं विभिन्नताएं हैं? विस्तार से वर्णन करें।
3. मूल्यों को परिभाषित करें। विभिन्न आधारों के अनुसार मूल्यों के कौन-कौन से प्रकार हैं एवं पाठ्यचर्या से मूल्य किस प्रकार सम्बंधित हैं?

इकाई -7 पाठयचर्या संरचना के समाजशास्त्रीय आधार

7.1 प्रस्तावना
7.2 उद्देश्य
7.3 पाठयचर्या निर्माण के समाज शास्त्रीय आधार
7.4 पाठयचर्या विकास हेतु समाज एक बल
7.5 भारत में सामाजिक परिवर्तन
7.5.1 विज्ञान एवं तकनीकी के प्रभाव के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन
7.5.2 पाठयचर्या विकास पर सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव
7.6 सारांश
7.7 शब्दावली
7.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.9 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री
7.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची
7.11 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार मे निरंतर परिवर्तन एवं परिमार्जन होता है। व्यक्ति के व्यवहार में यह परिवर्तन औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों माध्यमों से होता है। पाठयचर्या का संबंध शिक्षा के औपचारिक माध्यम से है। पाठयचर्या को विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित किया है। कनिंघम ने पाठयचर्या को कलाकार के हाथ में एक ऐसे साधन के रूप मे परिभाषित किया जिससे वह अपनी सामग्री(शिक्षार्थी) को अपने आदर्श(उद्देश्य) के अनुसार अपनी चित्रशाला(विद्यालय) में ढाल सके। डीवी के अनुसार "सीखने का विषय या पाठयचर्या , पदार्थों, विचारों और सिद्धांतों का चित्रण है जो निरंतर उद्देश्यपूर्ण क्रियांवेषण साधन या बाधा के रूप में आ जाते हैं।" भारतीय माध्यमिक शिक्षा आयोग ने पाठयचर्या को निम्न प्रकार परिभाषित किया, 'पाठयचर्या का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है जो विद्यालयों में परंपरागत रूप से पढ़ाये जाते हैं, बल्कि इसमें अनुभवों की संपूर्णता भी सम्मिलित होती है, जिनको विद्यार्थी विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोशाला, कार्यशाला, खेल के मैदान तथा शिक्षक एवं छत्रों के अनेकों

अनौपचारिक संपर्कों से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठयचर्या हो जाता है जो छत्रों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है और उनके संतुलित व्यतित्व के विकास मे सहायता देता है।' पाठयचर्या निर्माण करते समय शिक्षाविदों को जीवन एवं सृष्टि से जुड़े कई आधारभूत प्रश्नों, समाज की समस्याओं,वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों, समाज की अपेक्षाओं, सीखने वाले अर्थात बालक की मनोवैज्ञानिक प्रवृति, वैयक्तिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखना पड़ता है। निश्चित रूप से दार्शनिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आधारों पर निर्मित पाठयचर्या ही प्रभावशाली और उद्देश्यपूर्ण होता है। प्रस्तुत इकाई के अन्तर्गत आप पाठयचर्या निर्माण के समाजशास्त्रीय आधार से परिचित होंगे अर्थात आप पाठयचर्या निर्माण पर समाज की अपेक्षाएँ, सामाजिक लक्ष्य, सामाजिक समस्याएँ किस प्रकार प्रभाव डालतीं हैं ? उनको समझेंगे । हमारा समाज किस प्रकार पाठयचर्या निर्माण के लिए उत्तरदायी है? इस विषय के बारे में भी आप अध्ययन करेंगे अर्थात समाज किस प्रकार एक बल रूपी कारक है जिससे पाठयचर्या निर्माण समय-समय पर हमारे समाज से प्रभावित दिखायी पड़ता है। समाज में विभिन्न कारणों से सामाजिक परिवर्तन होते रहते हैं। आधुनिक युग में किस प्रकार नयी-नयी वैज्ञानिक खोजें एवं तकनीकी हमारे समाज को प्रभावित करती हैं? वर्तमान समय में किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन पाठयचर्या विकास को प्रभावित करता है? इस विषय पर स्पष्ट एवं विस्तृत चर्चा करेंगे।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

1. पाठयचर्या निर्माण के समाजशास्त्रीय आधारों का वर्णन कर सकेंगे।
2. पाठयचर्या विकास को प्रभावित करने वाले सामाजिक दबावों को स्पष्ट कर सकेंगे।
3. विज्ञान एवं तकनीकी के प्रभाव के सन्दर्भ में भारत में होने वाले सामाजिक परिवर्तन की चर्चा कर सकेंगें।
4. पाठयचर्या विकास पर सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव की व्याख्या कर सकेंगे।
5. पाठयचर्या विकास में समाज की भूमिका स्पष्ट कर सकेंगे।
6. सामाजिक परिवर्तन में विज्ञान एवं तकनीकी के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव की सूची बना सकेंगे।
7. पाठयचर्या निर्माण के समाज शास्त्रीय आधार का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगें।

7.3 पाठयचर्या निर्माण के समाजशास्त्रीय आधार

मनुष्य समाज में रहकर जीवन व्यतीत करता है जिसके कारण उसके जीवन का प्रत्येक पक्ष समाज से प्रभावित होता है। शिक्षा मनुष्य के जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों में से एक है। शिक्षा का मुख्य लक्ष्य ही बालक का समाजीकरण करना अर्थात उसे उचित सामाजिक जीवन जीने हेतु आवश्यक ज्ञान, योग्यतायें व कौशल प्राप्त करने में सहायता करना है। इससे स्पष्ट है कि शिक्षा के इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु निर्मित होने वाले पाठयचर्या में सामाजिक पृष्ठभूमि एवं समाज की अपेक्षाएँ अवश्य ही सम्मिलित रहती हैं। शिक्षा के माध्यम से बालक के व्यवहार में अपेक्षित/वांछित परिवर्तन लाया जाता है यह अपेक्षा/वांछनीयता सामाजिक आकांक्षाओं की दिशा में होती है। अतः पाठयचर्या जहाँ एक ओर व्यक्त् से संबन्धित होता है वहीं दूसरी ओर समाज से भी जुड़ा होता है। शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति समाज का योग्यतम सदस्य बनता है। कुछ विद्वानों का मत है कि 'शिक्षा समाज विज्ञान व्यक्ति तथा उसके सांस्कृतिक वातावरण में जिसमें दूसरे व्यक्ति, सामाजिक समूह व्यवहार के नमूने होते हैं।व्यक्ति के प्रतिक्रिया का अध्ययन करता है।'

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

- सामाजिक जीवन के लिये तैयार करता है। शिक्षा का उद्देश्य बालकों को सामाजिक जीवन के लिये तैयार करना है। इसलिये विद्यालयी परिस्थितियों में ऐसी क्रियाओं का संगठन एवं आयोजन किया जाता है जिससे बालकों में सामाजिक भावना पैदा हो। जैसे-खेलकूद, वाद-विवाद सभा, सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रम, स्काउट-गाइड आदि
- **समाजहित की भावना का विकास करना-** शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होता है कुशल एवं बुद्धिजीवी नागरिक तैयार करना जो समाज हित के लिए प्रयासरत हो।
- **सामाजिक प्रवृत्ति पर आधारित पाठयचर्या** - समाज के आधार पर ही पाठयचर्या पर प्रभाव पड़ता है। आधुनिक समय में सामाजिक विषयों पर लोगों का रूझान बढ़ा है तथा इस विषय को अधिक महत्व दिया जा रहा है। पाठयचर्या सदैव समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप् होना चाहिए।
- **शिक्षा का सामाजिक उन्नति में योगदान-** शिक्षा के द्वारा समाज के प्रत्येंक व्यक्ति में सामाजिक चेतना के भाव पैदा किये जातें है। मनुष्य में जागृत यह चेतना सामाजिक उन्नति एवं प्रगति में सहायक होती है अतः यह आवश्यक है कि समाज के हर व्यक्ति को शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान किये जाये।
- **विद्यालय समाज के लघु रूप में-** विद्यालय को समाज का लघु रूप कहते हैं तथा विद्यालय का समाज से अधिक संबंध होता है। अतः बालक को जो उपयोगी हो वही शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

- **प्रजातंत्र शासन का समर्थन-** ''सामाजिक प्रकृति प्रजातंत्र शासन का समर्थन करती है। यही कारण है कि अब शिक्षा देना सक सामाजिक कार्य माना जाता है। उपरोक्त विवरण के आधार पर आप समझ गये होंगे कि हमारी शिक्षा के क्या उद्देश्य हैं? तथा समाज के उत्थान में शिक्षा किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है?

समाजशास्त्रीय आधार और आधुनिक शिक्षा

आज भी शिक्षा में समाजशास्त्रीय आधार को विशेष रूप से लिया गया है। आप देखेंगे कि इन्हीं कारणों से शिक्षा में परिवर्तन दिखता है। ये परिवर्तन निम्नलिखित हैं।

- अध्यापकों की समय-समय पर तथा उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था पर अधिक बल दिया जाने लगा है।
- मानसिक मन्द एवं विकलांग श्रेणी के साथ-साथ गरीब बच्चों की शिक्षा की उचित व्यवस्था की जाने लगी है।
- मजदूरों एवं प्रौढ़ो की भी शिक्षा की उचित व्यवस्था की जाने लगी है।
- व्यवसायिक शिक्षा हेतु विभिन्न शैक्षिक/प्रशिक्षण संस्थान भी खोले जा रहे हैं।
- स्त्री शिक्षा पर बल दिया जा रहा है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर आप देख सकते हैं कि आधुनिक समय में शिक्षा पर समाजशास्त्रीय विचार का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है । शिक्षा के क्षेत्र में समाजवादी प्रवृत्ति का महत्व भी इस विचारधारा के साथ-साथ तथा अन्य कारणों से नयी-नथी प्रवृत्तियों का जन्म हो रहा है।

समाजशास्त्रीय प्रवृत्ति:- शिक्षा में समाजशास्त्रीय प्रवृत्ति का तात्पर्य शिक्षा में समाजिकतावाद को अधिक महत्व देने से ही अर्थात प्रत्येक मनुष्य में पूर्ण रूप से समाजिक विकास करने से है जिससे कि व्यक्ति सामाजिक जीवन के लिये तैयार हो सके और समाज का कल्याण कर सके। इस प्रवृत्ति के फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में अर्थात शिक्षा संगठन, शिक्षा प्रबन्ध, पाठ्य वस्तु, शिक्षण-पद्धति आदि में कई परिवर्तन हुए। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के द्वारा जाति की सामाजिक चेतना में भाग लेने से विकसित होती है।

शिक्षा में समाजशास्त्री प्रवृत्ति के कारण

i. **समाजिक उद्देश्य:-** समाजशास्त्र के विकास के साथ-साथ शिक्षा में समाजशास्त्रीय विचार धारा का ठीक विकास हुआ जिसके फलस्वरूप शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य को प्रमुखता मिली।

ii. **औद्योगिक क्रान्ति:-**18वीं शताब्दी में यूरोप में एक महान् व्यावसायिक औद्योगिक क्रान्ति हुई। इसके पश्चात नये-नये समाजों की रचना हुई और जीवन के आदर्शों में भी

परिवर्तन दिखलाई पड़ने लगा तथा लेखकों एवं राजनीतिज्ञों का ध्यान जन साधारण तथा काम-जीवियों की भलाई की ओर आकर्षित हुए।

iii. **मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक प्रवृत्तियां:-** मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के प्रवर्तक पेस्तालॉजी ने जनसाधारण का जीवन सुधारने पर, हरबर्ट ने नैतिक चरित्र के विकास पर तथा फ्रोबेल ने समाज सुधार पर बल दिया अर्थात सभी मनोवैज्ञानिको ने समाज सुधार पर ध्यान दिया।

iv. **जनतन्त्रीय भावनाओं का विकास-** 18वीं तथा 19वीं शताब्दी में जनतंत्र का विकास चारों तरफ हुआ तथा इस समय राजनीतिज्ञों ने यह अनुभव किया कि प्रजातंत्र के स्थायित्व में जनसाधारण का सहयोग आवश्यक है। यह सहयोग जनतंत्र से तभी पा सकते है जब उनके रहने का, उनकी आवश्यकता की पूर्ति का तथा उनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध किया जाए। तथा ये भी देखा गया कि अशिक्षित जनता द्वारा जनतंत्र का सफल संचालन नहीं हो सकता।

v. **सामाजिक शिक्षा की उत्पत्ति:-**व्यक्तिवादी धारा की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप सामाजिक प्रवृत्तियों को बल मिला और ऑगस्ट कॉम्टे ने समाजशास्त्र नामक एक नये विषय की रचना की जिसका उद्देश्य मानव तथा उसके सामाजिक संबंधों का अध्ययन था। इसी समय जार्ज पेनी ने समाज शास्त्री के आधार शैक्षिक समाजशास्त्र की रचना की जिसने समाजशास्त्र के अनुसार शिक्षा के विभिन्न अंगों को निश्चित किया। इससे न केवल समाजिकतावादी प्रवृत्ति को बल मिला। अपितु उसकी नींव और भी पक्की हो गयी।

vi. अतः उपरोक्त विस्तृत चर्चा के आधार पर आप सामाजिक प्रवृत्तियों तथा समाजशास्त्रीय प्रवृत्ति के विकास के कारणों के विषय में विस्तार से जान गये होंगे कि शिक्षा किस प्रकार समाजशास्त्रीय प्रवृत्तियों में समय-समय पर परिवर्तन करता है। जिससे हमारे समाज में शिक्षा एवं समाज के मध्य सामंजस्य रहता है।

7.4 पाठयचर्या विकास हेतु समाज एक बल रूपी कारक

शिक्षा और समाज में संबंध:-शिक्षा तथा समाज में घनिष्ठ संबंध होता है। शिक्षा और समाज को एक दूसरे से स्वतंत्र नहीं माना जा सकता है। वे एक दूसरे पर आधारित तथा एक-दूसरे के पूरक हैं। समाज में ही प्रत्येक मनुष्य का जन्म होता है। इनका पालन-पोषण होता है। और उसके व्यक्तित्व का विकास भी होता है। वह समाज के सदस्यों के साथ अंतःक्रिया करता है। वर्तमान समय की आवश्यकतानुसार समाज ही वर्तमान शिक्षा का आधार तथा भविष्य निर्धारित करता है।समाज ही नयी पीढ़ी हेतु सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं उसका हस्तांतरण करने का प्रबंध शिक्षा के माध्यम से ही करता है।

शिक्षा का समाजवादी दर्शन:-जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के द्वारा जाति की सामजिक चेतना में भाग लेने से विकसित होती है। इस दृष्टि से उचित शिक्षा के विधान के लिए सामाजिक चेतना का अध्ययन करना अति आवश्यक है। शैक्षिक समाज शास्त्र में व्यक्ति, समाज, सामाजिक संस्थाओं, समूहों और सामाजिक वर्गो आदि का अध्ययन किया जाता है और यह देखा जाता है कि इन सबका मनुष्य के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है। तत्पश्चात इस आधार पर शिक्षा का स्वरूप निश्चित किया जाता है।

अतः उपरोक्त विवरण के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा में पाठयचर्या विकास हेतु समाज एक आधार प्रदान करता है। समय-समय पर सामाजिक परिवर्तन हो रहे हैं जिससे समाज में रहने वालों का रहन-सहन तथा सोच परिवर्तित हो रहा है। इस परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए समाजिक प्राणियों के आवश्यकतानुसार समय-समय पर पाठयचर्या में भी परिवर्तन आवश्यक होता है। तथा इनके आवश्यकता अनुरूप इन्हें शिक्षा प्रदान की जाती है। समाज की अपेक्षाओं/आकांक्षाओं के अनुरूप ही पाठयचर्या विकास अर्थात पाठयचर्या निर्माण करना सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होता है। वर्तमान समय में पाठयचर्या में ऐसे तथ्यों का समावेश करने पर ज़ोर दिया जा रहा है जो बालकों को व्यावसायिक रूप से दक्ष बनाने के साथ-साथ उनमें सहयोग,प्रेम, सहिष्णुता, परोपकार आदि सामाजिक मूल्यों का विकास हो सके, जिससे समाज का हित हो सके। क्योंकि हम सभी यह जानते हैं कि विद्यालय समाज का एक लघु रूप है विद्यालय से जो शिक्षा ग्रहण करेंगे, वैसे ही हम समाज में रहेंगे।

उपरोक्त विवरण से आप जान गयें होंगे कि किस प्रकार समाज, पाठयचर्या विकास हेतु मुख्य आधार का काम करता है?

अभ्यास प्रश्न

1. पाठयचर्या निर्माण के समाजशास्त्रीय आधार का क्या अर्थ है ?
2. शिक्षा एवं समाज में क्या संबंध है ?
3. जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा किस प्रकार की किया है ?
4. पाठयचर्या विकास में समाज की कोई दो भूमिका बताइए ?

7.5 भारत में सामाजिक परिवर्तन

जिस प्रकार मनुष्य गतिशील है ठीक उसी प्रकार मनुष्य निर्मित समाज भी गतिशील है। अर्थात सामाजिक परिवर्तन का अर्थ है समाज सम्बन्धी हेरफेर अथवा समाज मे होने वाले परिवर्तन जैसे- मानव जीवन सदैव एक सा नहीं रहता अपितु उसके विचारों आदतों तथा मूल्यों में किसी न किसी प्रकार परिवर्तन सदैव होता रहता है। इस दृष्टि से यदि मानव जीवन में परिवर्तन का होना आवश्यक है

तो मानव की इकाई से बने हुए समाज में भी परिवर्तन का होना स्वाभाविक ही है। भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तनों को सरलतापूर्वक उपस्थित करने में सामाजिक कार्यकर्ताओं को दोहरा प्रयास करना पड़ेगा। एक और तो उसको प्रत्येक दिशा में परिवर्तन के लिए रचनात्मक सुझाव देने होंगे तथा दूसरी ओर उनको उन सुझावों को क्रियान्वित करने के मार्ग की बाधाओं को हटाने की भी व्यवस्था करनी पड़ेगी।

सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति एवं विशेषताएँ

इसकी प्रकृति एवं विशेषताएं निम्नलिखित हैं

- **सामाजिक परिवर्तन एक अनिवार्य तथा सतत् प्रक्रिया है-** प्रत्येक समाज में सामाजिक परिवर्तन निरन्तर होता रहता है जैसे यहाँ वैदिक काल में कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था थी वहीं उत्तर वैदिक काल में जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था हो गयी।
- सामाजिक परिवर्तन से व्यक्तियों की अन्तः क्रिया में परिवर्तन होता है। किसी भी समाज में जब परिवर्तन होता है तो व्यक्ति और व्यक्ति समाज में अन्तर हो जाता है।
- सामाजिक परिवर्तन से व्यक्तियों के व्यवहार में परिवर्तन आता है। जबसे यहाँ औद्योगीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई है। तभी से इसमें नगरीकरण की प्रक्रिया में तेजी आई है। तथा लोगों के व्यवहार, प्रेम एवं सहयोग पूर्ण व्यवहार में परिवर्तन स्पष्ट हो गया है।
- सामाजिक परिवर्तन से सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन आता है। हमारे भारतीय समाज में जैसे ही कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था में परिवर्तित हो गई। हमारे समाज की सामाजिक व्यवस्था भी बदल गयी।
- सामाजिक परिवर्तन कभी विकासोन्मुख तथा कभी पतनोन्मुखः- कभी किसी सामाजिक परिवर्तन से समाज का उत्थान हुआ और कभी पतन इतिहास बताता है कि हमारे भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था परिवर्तित हुई वैसे ही समाज का रूप ही चरमरा गया इससे वर्णभेद बढ़ गया जिससे आज भी हमें मुक्ति नहीं मिली।
- सभी समाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन नहीं होतेः-सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन नही होते किन्तु सभी सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन अवश्य होते हैं। जैसे-जन्मदिन पर केक काटना एवं मोमबत्तियाँ बुझाना पाश्चात्य शैली की नकल है।

वर्तमान भारत में सामाजिक परिवर्तन के कारण

वर्तमान भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या, विविध संस्कृतियाँ, लोकतन्त्र शासन प्रणाली, विभिन्न राजनैतिक दलों के भिन्न-भिन्न मत, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अंधाधुन्ध औद्योगीकरण, शिक्षा आदि कारक भारत के वर्तमान सामाजिक परिवर्तन के लिए जिम्मेदार हैं।

उपरोक्त समस्त कारकों में शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का बहुत महत्वपूर्ण कारक है।आइये अब हम शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के संबंध का अध्ययन करें।

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन का गहरा संबंध है कोई समाज अपनी अपेक्षाओं तथा जरूरतों की पूर्ति शिक्षा के माध्यम से ही करता है। सामाजिक दृष्टि से शिक्षा के समस्त कार्यो को दो वर्गों में बाटा जा सकता है।

1. सामाजिक नियंत्रण
2. सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक नियंत्रण का अर्थ है- समाज की संरचना, उसके व्यवहार प्रतिमानों ओर कार्य-विधियों की सुरक्षा और समाजिक परिवर्तन का अर्थ है- समाज की संरचना, उसके व्यवहार प्रतिमानों और कार्य-विधियों में परिवर्तन।

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। सामाजिक परिवर्तन शिक्षा के स्वरूप उसके उद्देश्य और पाठ्यचर्चा आदि सभी को प्रभावित करता है। यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। आइये आगे देखते हैं कि किस प्रकार शिक्षा सामाजिक परिवर्तन करती है? तथा किस प्रकार शिक्षा समाजिक परिवर्तन को प्रभावित करता है?

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन करती है- सामाजिक परिवर्तन के जो घटक बताये गये हैं उन सबके विकास का मूल कारण शिक्षा ही होती है प्रत्येक सभ्य समाज अपने नागरिकों के लिये औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था करता है। इस शिक्षा से मनुष्य का मानसिक विकास होता है। यह अपने तथा समाज के और सम्पूर्ण विश्व के विषय में सदैव सोचता रहता है। जिससे उसे समाज की आवश्यकताओं और समस्याओं की अनुभूति भी होती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति और समस्याओं के हल के लिये वह विचार विमर्श कर के उसका हल खोजता है। और इससे समाज को प्रभावित करता है अतः यह कार्य शिक्षा के अभाव में सम्भव नहीं है। प्राचीन काल में पाठ्यचर्चा में धर्म और नैतिकता मुख्य विषय थे जिससे हमारा समाज धर्म प्रधान था। वर्तमान समय में पाठ्यचर्चा व्यवसायिक शिक्षा/तकनीकी शिक्षा पर ज्यादा बल दिया गया है।

सामाजिक परिवर्तन शिक्षा को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक समाज अपनी शिक्षा का निर्माण स्वयं करता है अतः उसका स्वरूप वैसा ही होता है, जैसा समाज होता है अब यदि समाज में कुछ परिवर्तन होते हैं तो वह समाज अपनी शिक्षा को उसी के अनुरूप बदलने का प्रयास करता है। अतः प्रभावित करता है। प्राचीन भारत में धर्म प्रधान समाज था इसलिए उस समय की शिक्षा भी धर्म-प्रधान थी और धर्म उस समय पाठ्यचर्चा का मुख्य विषय था। आधुनिक युग में अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा, स्त्री शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, कृषि शिक्षा, तकनीकी शिक्षा पर विशेष बल दिया जाने लगा है।

आप जान गये होंगे कि किस प्रकार शिक्षा सामाजिक परिवर्तन को तथा सामाजिक परिवर्तन शिक्षा को प्रभावित करता है।

7.5.1 विज्ञान एवं तकनीकी के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन

भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में निरन्तर प्रगति हो रही है, इस सबसे पुरानी मान्यताएं समाप्त सी हो रही हैं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो रहा है इससे सामाजिक परिवर्तन बहुत तेजी से हो रहा है। प्राचीन समय से अब तक वर्ण व्यवस्था कायम है किन्तु विज्ञान यह कहता है कि अर्न्तजातीय विवाह से उत्पन्न होने वाली पीढ़ी सदैव अपने माता-पिता से उच्च कोटि की जाति होगी तथा इन संतानों के शीलगुण सर्वश्रेष्ठ होंगे अतः विज्ञान किसी जाति व्यवस्था को नहीं मानता। कल तक हमारे परिवार में आये अतिथि का हम स्वागत सत्कार करते थे तथा कुशल-क्षेम पूछते थे किन्तु तकनीकी के विकास ने टेलीविजन का आविष्कार कर दिया जिससे आजकल हम अतिथि को सीधे टेलिविजन के सामने बिठा देते हैं। इस युग में मशीनों के आविष्कार से कुटीर उद्योग धन्धों के स्थान पर भारी उद्योगों का विकास हुआ है। परिणामतः बेरोजगारी बढ़ी है। इससे धनी और धनी हुए है तथा निर्धन और निर्धन, प्रेम और सहयोग के आधार पर बने समाजों में द्वेष और असहयोग बढ़ रहा है। कितना बड़ा सामाजिक परिवर्तन हुआ है। आधुनिक समय में विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी ने हमारे समाज का स्वरूप ही बदल दिया है। वैज्ञानिक उपकरणों, वैज्ञानिक खोजों ने मानव की जीवनशैली को बहुत गहराई से प्रभावित किया है। कंप्यूटर एवं मोबाइल सबसे सशक्त उदाहरण हैं जिन्होने मनुष्य जीवन के अनेकों पक्षों को प्रभावित किया है। ऐसे कई उपकरण व वस्तुएं हैं जो वैज्ञानिक आविष्कार का परिणाम हैं, जिन्होने सामाजिक सम्बन्धों एवं संस्कृति को प्रभावित किया है।

7.5.2 पाठयचर्या विकास पर सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव

पाठयचर्या विकास पर सामाजिक परिवर्तन का पूरा-पूरा प्रभाव दिखता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है समय-समय पर पाठयचर्या में परिवर्तन। सामाजिक परिवर्तन का पाठयचर्या विकास पर, सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव की विवेचना हम दो पक्षों में कर सकते हैं। सर्वप्रथम सकारात्मक पक्ष तथा दूसरा नकारात्मक पक्ष। आधुनिक समाज की बदलती हुई आवश्यकताएं उसमें तीव्र गति से होने वाले परिवर्तनों की ही देन होती हैं। कोई भी समाज इन तीव्रगामी परिवर्तनों से तभी ढंग से अनुकूलन कर सकता है जब वह उन परिवर्तन से उपजी वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, तकनीकी एवं पारिस्थितिकीय आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था करे पाठयचर्या विकास पर सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव का साकारात्मक पक्ष यह है कि यह नागरिक कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति उचित दृष्टिकोण विकसित कर रहा है, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास तेजी से हो रहा है जिससे लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोंण विकसित हो रहा है, समाज में लोगों के आर्थिक प्रगति के लिए व्यावसायिक एवं औद्योगिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है। प्राकृतिक संसाधनों के अधिकतम सदुपायोग के लिए लोगों में कौशल विकसित किये जा रहे हैं, स्वास्थ्य शिक्षा, जनसंख्या

शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा आदि पर विशेष बल दिया जा रहा है। वही दूसरी तरफ इसका नकारात्मक पक्ष यह बताता है कि वर्तमान शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास करने में असमर्थ है व्यक्ति के अभिवृत्तियों एवं मूल्यों का प्रतिपादन तथा परम्परागत एवं नवीन मूल्यों में सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है।

अभ्यास प्रश्न

5. भारत में सामाजिक परिवर्तन से क्या तात्पर्य है ?
6. सामाजिक परिवर्तन की कोई दो प्रकृति बताइए ?
7. शिक्षा सामाजिक परिवर्तन को कैसे प्रभावित करती है ?
8. विज्ञान तथा तकनीकि किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन में भूमिका अदा करती है ?

7.6 सारांश

इस इकाई में आपने पाठयचर्या विकास के समाज शास्त्रीय आधार के विषय में अध्ययन किया तथा यह ज्ञान प्राप्त किया कि किस प्रकार पाठयचर्या विकास में समाज भूमिका अदा करता है अर्थात हमारी शिक्षा व्यवस्था समाज की आवश्यकताओं एवं समस्याओं को ध्यान में रख कर बनायी जाती है इसलिये समय-समय पर आवश्यकता होने पर हम पाठयचर्या में परिवर्तन भी करते रहते हैं। इस इकाई में आपने यह भी देखा कि किस प्रकार प्राचीन सगय से आधुनिक समय में समाज में परिवर्तन परिलक्षित हुये हैं तथा विज्ञान एवं तकनीकी किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है। इसी क्रम में आपने देखा कि किस प्रकार समय-समय पर सामाजिक परिवर्तन होने पर पाठयचर्या विकास पर इस सामाजिक परिवर्तन का क्या प्रभाव पड़ता है? इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएं, सामाजिक परिवर्तन के कारक, शिक्षा तथा सामाजिक परिनर्तन में संबंध आदि अवधारणाओं के विषय में विस्तार से जान गये होंगे।

7.7 शब्दावली

1. **पाठयचर्या विकास**-शिक्षा प्रदान करने हेतु आवश्यक पाठ्य विषय वस्तु को सूचीबद्ध करना।
2. **समाजशास्त्रीय आधार**-सामाजिक शिक्षा से ज्ञान प्राप्त करके।
3. **सामाजिक परिवर्तन**-समाज में होने वाला फेर-बदल।
4. **सांस्कृतिक परिवर्तन**- सांस्कृतिक कार्यक्रमों की क्रियाविधि में फेरबदल।
5. **समाजशास्त्रीय शिक्षा**-समाज की उन्नति एवं समाज के विषय में ज्ञान देने वाली शिक्षा।
6. **विकासोन्मुख सामाजिक परिवर्तन**-विकास की ओर ले जाने वाला सामाजिक फेरबदल।

7. **पतनोन्मुख सामाजिक परिवर्तन**-पतन की ओर ले जाने वाला सामाजिक फेरबदल

7.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया पूरी करना।
2. शिक्षा एवं समाज में घनिष्ठ संबध है क्योंकि विद्यालय समाज का लघु रूप होता है।
3. जॉज डीवी के अनुसार शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है।
4. पातयचर्या विकास में समाज एक आधार प्रदान करता है समाज वर्तमान जरूरतों एवं समस्याओं से अवगत कराता है।
5. भारत में सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य है कि भारत मेँ प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक किस प्रकार समाज के लोगों का रहन सहन एवं सोचने के तरीके में परिवर्तन हुआ है।
6. सामाजिक परिवर्तन एक अनिवार्य एवं सतत् पक्रिया है। सामाजिक परिवर्तन से समाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होता है।
7. शिक्षा सामाजिक परिवर्तन करती है सामाजिक परिवर्तन के जो घटक बताये गये हैं। उन सबके विकास का मूल कारण शिक्षा ही है। शिक्षा समाज के लोगों के मानसिक विकास एवं चिंतन स्तर को विकसित करती है जो कि सामाजिक परिवर्तन के लिये उत्तरदायी होता है।
8. विज्ञान तथा तकनीकि प्राचीन काल से चल रही वर्ण व्यवस्था एवं प्राचीन मान्यताओं को गलत ठहराते हुए सामाजिक परिवर्तन में अपनी भूमिका अदा कर रही है।

7.9 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. Harap, Henry (1970). *The changing curriculum.* New York.
2. Jacoles, Heidi (1974). *Curriculum design and implementation.* New York.
3. J. Dewey (1966). The child and the curriculum – The School and Society. USA: Phonix.
4. Kelly, A.V. (1977). *The curriculum: theory and practice.* London: Harper and Row.
5. Ornstein, C.& Hunkins P. (1988). Curriculum, Foundations, Principles and Issues. New Jersey: Prentice Hall.
6. Stake, R.E. et al (1969). *Curriculum foundations: principles and issues.*New Jersey : Prentice Hall.

7. Stufflebeam et al (1971). *Curriculum foundations principles and issues*.New Jersey: Prentice Hall.

7.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यादव, एस. (2010). *पाठयचर्या विकास*, आगरा: श्री विनोद पुस्तक मंदिर.
2. Agrawal, J.C. (1990). *Curriculum reforms in India.* New Delhi.
3. Bhatt, B.D. and Sharma, S.R. (1992). Principles of Curriculum Construction. New Delhi: Kanishka Publishing House.
4. Dewal, O.S. (2004). National Curriculum. *In Encyclopedia of Indian Education.* New Delhi: NCERT.
5. Government of India (1966). *Report of the education commission 1964-66.* New Delhi: Government of India.
6. Government of India (1966). *National Policy on Education - 1986.* New Delhi: Government of India.
7. IGNOU (1997). *Curriculum and instruction (Block 1 & 2).* New Delhi: IGNOU.
8. Mohanty, J. (1981). *Indian education in emerging society.* New Delhi.
9. NCERT (1985). *National curriculum for primary and secondary education.* New Delhi: NCERT.
10. Teba, Hilda (1962). *Curriculum development, theory and practice.* New York: Harcourt.

7.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार से क्या समझते हैं? विस्तार से वर्णन कीजिए तथा पाठयचर्या निर्माण में इसकी क्या भूमिका है ? समझाइए।
2. सामाजिक परिवर्तन से आप क्या समझते हैं ? तथा शिक्षा किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन हेतु उत्तरदायी है। स्पष्ट कीजिए।
3. विज्ञान तथा तकनीकी किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन में भूमिका अदा कर रही है? साथ ही साथ सामाजिक परिवर्तन के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों पर प्रकाश डालिए ?

4. पाठयचर्या विकास से आप क्या समझते हैं? इसका विकास किन-किन समाजशास्त्रीय आधारों पर करते हैं तथा पाठयचर्या विकास को सामाजिक परिवर्तन किस प्रकार प्रभावित करता है? स्पष्ट कीजिए।

इकाई 8 पाठयचर्या प्रारुप, पाठयचर्या निर्माण के सिद्धांत एवं पाठयचर्या के संदर्भ में पाठ्यचर्या को संगठित करने की विधियाँ

8.1 प्रस्तवाना
8.2 उद्देश्य
8.3 पाठयचर्या प्रारुप का अर्थ एवं परिभाषा
8.4 पाठयचर्या प्रारुप के तत्व
8.5 पाठयचर्या के स्रोत
8.6 पाठयचर्या निर्माण के सिद्धांत
8.7 पाठयच्चर्या की संक्रियाओं के संदर्भ गें पाठ्यचर्या संगठन की विधियाँ
8.8 सारांश
8.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.10 संदर्भ ग्रंथ
8.11 निबंधात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

शिक्षा एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठयचर्या शामिल हैं। यूँ तो शिक्षण प्रक्रिया के ये तीनों ध्रुव महत्वपूर्ण हैं लेकिन इन तीनों में पाठयचर्या सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि समस्त शिक्षण प्रक्रिया इसी पाठयचर्या रुपी धुरि के चारों तरफ चक्कर काटती है। अतः विद्यार्थियों को पाठयचर्या के संदर्भ में जानकारी होना आवश्यक है। पुनः पाठयचर्या निर्माण एक जटिल प्रक्रिया है। इसके तहत कई सारी उप प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं तथा कई सारे तथ्य भी शामिल होते हैं। पाठयचर्या प्रारुप उसके तत्व, उसके स्रोत, पाठयचर्या निर्माण के सिद्धांत, पाठ्यचर्या संगठन आदि कई ऐसे तथ्य हैं जिनके विषय में विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों को जानकारी होना आवशय्क है। एक अच्छा पाठयचर्या ही शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है। अतः पाठयचर्या संबंधी ये सारे तत्व महत्वपूर्ण हो जाते हैं। प्रस्तुत इकाई की रचना इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर की गई है।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:

1. पाठयचर्या प्रारुप का अर्थ समझ सकेंगे।
2. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न तत्वों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न स्रोतों का वर्णन कर सकेंगे।
4. पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न सिद्धांतों को समझ सकेंगे।
5. पाठ्यचर्या संगठन की विभिन्न विधियों या उपागमों को समझ सकेंगे।

8.3 पाठयचर्या प्रारुप: अर्थ एवं परिभाषा

पाठयचर्या प्रारुप शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द करिकुलम डिजाइन का हिन्दी रुपांतर है। डिजाइन शब्द का प्रयोग क्रिया की तरह या संज्ञा की तरह किया जाता है। जब इसका प्रयोग क्रिया की तरह किया जाता है तो यह एक प्रक्रिया को इंगित करता है, जैसे- पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया। जब इसका प्रयोग संज्ञा की तरह किया जाता है तो यह उस प्रक्रिया के परिणामस्वरुप आए उत्पाद को इंगित करता है, जैसे- पाठयचर्या प्रारुप। करिकुलम यानि पाठयचर्या को जब डिजाइन शब्द के साथ जोड़ा जाता है तो यह मुख्य रुप से संज्ञा की तरह ही प्रयुक्त होता है। इस प्रकार साधारण शब्दों में पाठयचर्या प्रारुप को पाठयचर्या की एक व्यस्थित रुपरेखा कहा जाता है, जिसमें उसके निर्माण एवं मूल्यांकन तक की सारी प्रक्रिया का क्रमवार विवरण होता है। पाठयचर्या प्रारुप को निम्न शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है- यह निश्चित समयावधि के लिए निश्चित अनुदेशात्मक खंडों की एक प्रस्तावित रुपरेखा होती है, साथ ही इसमें उन अनुदेशात्मक खंडों को कैसे अनुपालित किया जाए इसका भी निर्देश होता है।

एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप की विशेषताएँ

एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं:

1. **एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप उद्देश्यपूर्ण होता है-** पाठयचर्या प्रारुप सिर्फ विषयवस्तु का एक क्रमवार संकलन ही नहीं होता है बल्कि यह एक स्पष्ट उद्देश्यों के साथ विषयवस्तु का क्रमवार संकलन होता है ताकि पाठयचर्या अभ्यासकर्ता इसका प्रभावपूर्ण प्रयोग कर सके;
2. **एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप सुव्यस्थित एवं सुनियोजित होता है-** पाठयचर्या प्रारुप, निर्माणकर्ता के एक सुव्यस्थित प्रयास का परिणाम होता है। इसमें क्या करना है? कब करना है? और किसे करना है? इन सब बातों का स्पष्ट उल्लेख होता है;
3. **एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप सृजनात्मक होता है-** स्पष्ट उद्देश्य एवं सुव्यवस्थित पाठ्यवस्तु के विवरण के साथ-साथ एक पाठयचर्या प्रारुप सृजनात्मक भी होता है। यह

सिर्फ सुपरिभाषित विधियों, जिन्हें विभिन्न चरणों में संपादित करना होता है का ब्योरा ही नहीं होता है बल्कि इसमें हरेक पड़ाव पर नवाचार के अवसर होते हैं; तथा

4. **एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप को लोचशील होना चाहिए-** लोचशीलता से आशय उस गुण से है जो समय एवं परिस्थिति की माँग के अनुसार परिवर्तन का आदेश देती है। एक पाठयचर्या प्रारुप को लोचशील भी होना चाहिए ताकि समय एवं परिस्थिति के अनुसार समाज की बदलती हुई माँग के अनुकूल पाठयचर्या को सामंजित किया जा सके।

अभ्यास प्रश्न

1. एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप के विशेषताओं की सूची बनाएँ।

8.4 पाठयचर्या प्रारुप के तत्व

पाठयचर्या प्रांरुप के पाँच प्रमुख तत्व या घटक है:

1. शिक्षार्थी एवं समाज के विषय में मानयताओं का एक संरचनात्मक ढाँचा
2. लक्ष्य एवं उद्देश्य
3. विषयवस्तु का चयन, उसका क्षेत्र विस्तार एवं उसका क्रम
4. क्रियान्वयन की विधि
5. मूल्यांकन

अब आप बारी-बारी से एक-एक का अध्ययन करेंगे।

1. **शिक्षार्थी एवं समाज के विषय में मान्यताओं का एक संरचनात्मक ढाँचा-** कोई भी पाठयचर्या समाज एवं उसमें रहनेवाले व्यक्तियों से संबधित मान्यताओं के साथ प्रारंभ होता है। पाठयचर्या निर्माणकर्ताओं का पहला कार्य शिक्षार्थी की योग्यता, आवश्यकता, रुचि, अभिप्रेरणा एवं किसी सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयवस्तु को सीखने की क्षमता का निर्धारण करना होता है। उपर्युक्त तथ्यों के संदर्भ में विभिन्न विषयों जैसे कि मनोविज्ञान, मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षास्शास्त्र आदि में अनेक शोधकार्य हुए हैं। उपर्युक्त शोध कार्यों में प्रमुख रुप से शिक्षार्थी क्या आत्मसात कर सकता है? किस परिस्थिति में कर सकता है? और उसके परिणाम क्या होंगे? आदि प्रश्नों के उत्तर देने के प्रयास किए गए हैं। इनसे हमें पाठयचर्या प्रारुप के तत्व की जानकारी मिलती है।
2. **लक्ष्य एवं उद्देश्य-** पाठयचर्या प्रारुप का दूसरा प्रमुख तत्व पाठयचर्या के लक्ष्य एवं उद्देश्य होते हैं। चूँकि पाठयचर्या के उद्देश्य विषयवस्तु एवं मूल्यांकन प्रक्रिया के चयन के आधार होते हैं; अतः, ये सुपरिभाषित एवं सुव्यवस्थित होने चाहिए। पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों के बजाय, शिक्षार्थी की रुचि, आवश्यकता, आदि को ध्यान में रखकर नवीन उद्देश्यों का

निर्माण होना चाहिए। इन उद्देश्यों के निर्धारण में ज्ञान, कौशल, मूल्य, अभिक्षमता एवं आदतों के विकास जो कि शिक्षण प्रक्रिया के वांछित परिणाम को प्रभवित करते हैं, को भी ध्यान में रखना चाहिए। उद्देश्य एवं लक्ष्य शिक्षक के लिए, शिक्षण –अधिगम के क्षेत्र को भी चित्रांकित करते हैं। उद्देश्य एवं लक्ष्य, समाज एवं अधिगमकर्ता के दार्शनिक मान्यताओं को प्रतिबिंबित करते हैं। ये वैश्विक या विशिष्ट भी हो सकते हैं। ये अधिगमकर्ता में किसी विशिष्ट व्यवहार को विकसित करने वाले हो सकते हैं या व्यवहार के सामान्य प्रारुप को विकसित करनेवाले। ये गतिशील होते हैं अर्थात समाज में परिवर्तन के साथ ये भी परिवर्तित हो जाते हैं। इन दोनों प्रकार के परिवर्तनों अर्थात सामाजिक परिवर्तन तथा उद्देश्य एवं लक्ष्य में परिवर्तन के बीच सांमजस्य एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप की आवश्यक शर्त है लेकिन आज समस्त विश्व में इस प्रकर के सांमजस्य का अभाव है।

3. **विषयवस्तु क्ला चयन, उसका क्षेत्र विस्तार एवं उसका क्रम-** विषयवस्तु को चयनित कर, शिक्षक एवं शिक्षार्थी के प्रयोग के लिए, एक क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। विषयवस्तु या पाठ्यवस्तु को निम्नलिखित तीन रुपों में समझा जा सकता है:
   i. एक वर्षीय पाठयचर्या के लिए विषयों की सूची;
   ii. एक अनुशासन(जैसे-विज्ञान, गणित आदि); तथा
   iii. एक विशिष्ट विषय (जैसे- जीव विज्ञान, भौतिकि आदि)

   विषयवस्तु के चयन में तीन मुख्य तत्वों को ध्यान में रखा जाता है:
   i. ज्ञान
   ii. प्रक्रिया/कौशल; तथा
   iii. प्रभाव

   विषयवस्तु के चयन के लिए निकष-
   i. प्रासंगिकता- विषयवस्तु वर्तमान समय के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकि आवश्यकताओं के अनुकूल होना चाहिए।
   ii. संतुलन- शिक्षा के दोनों ध्रुवों अर्थात क्या स्थायी है? और क्या परिवर्तनशील है? को समझकर उनके मध्य संतुलन स्थापित करना पड़ता है।
   iii. विषयवस्तु की वैधता- विषयवस्तु को वास्तविक रुप से उन्हीं अधिगम अनुभवों को प्रदान करनेवाला होना चाहिए जिनके लिए उन्हें चयनित किया गया है।
   iv. शिक्षार्थी केन्द्रित- विषयवस्तु का चयन शिक्षार्थी के विकास की अवस्था के अनुकूल, होना चाहिए।
   v. सहजता- विषयवस्तु समय, मानवीय, भौतिक एवं वित्तीय संसाधनों की दृष्टि से सहज होना चाहिए।

4. **क्रियान्वयन की दशाएँ** – पाठयचर्या प्रारुप के एक तत्व के रुप में क्रियान्वयन की दशाओं का आशय विषयवस्तु को शिक्षार्थियों तक पहुँचाने की विभिन्न विधियों से है। ये पाठयचर्या प्रारुप का एक मुख्य तत्व है क्योंकि यह शिक्षार्थी के परिणाम को निर्धारित करता है। यह शिक्षार्थी के अभिरुचि एवं विषयवस्तु पर उसके स्वामित्व को प्रभावित करता है साथ ही साथ शिक्षक के व्यवहार को भी प्रभावित करता है। पहले, क्रियान्वयन की दशाएँ शिक्षक- केन्द्रित हो या विद्यार्थी केन्द्रित, इस बात पर बहुत ध्यान दिया जाता था लेकिन कालांतर में विषयवस्तु के विद्युतीय प्रस्तुतीकरण, जैसे कि स्मार्टबोर्ड, पॉवरप्वायंट प्रस्तुतीकरण आदि के विकास के कारण शिक्षक की भूमिका में बदलाव आया है। पुनः क्रियान्वयन की दशाओं को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दो भागों में बाँटा जा सकता है। ये बँटवारा पाठयचर्या के क्रियान्वयन में शिक्षक एवं शिक्षार्थी की भागीदारी की मात्रा के आधार पर किया जाता है। पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न तत्वों में से जिस तत्व पर सबसे ज़्यादा शोध कार्य किया जाता है, वो क्रियान्वयन की दशाएँ हैं।
5. **मूल्यांकन-** पाठयचर्या प्रारुप के तत्व के रुप में मूल्यांकन के कई आयाम होते हैं। समेकित रुप में मूल्यांकन शिक्षार्थी को उसके निष्पादन के विषय में बताता है तथा विषयवस्तु को अगले चरण की ओर निर्देशित करता है। इस प्रकार मूल्यांकन विषयवस्तु के क्रम एवं पाठयक्रम के क्रियान्वयन को निर्देशित करते हैं। मूल्यांकन का दूसरा आयाम शिक्षार्थी के अधिगम के संबंध में वो सूचना प्राप्त करना है जो विद्यार्थी को चयनित एवं निरस्त, उतीर्ण एवं अनुतीर्ण करने में सहयोग प्रदान करते हैं तथा इस संदर्भ में कि विद्यालय राष्ट्रीय नीति का कितने अच्छे तरीके से अनुपालन कर रहे हैं, आँकड़े एकत्रित करना या प्रदान करना है (वॉकर,1976)। इस प्रकार मूल्यांकन शिक्षार्थी एवं शिक्षक के लिए पृष्ठपोषण का कार्य करता है(ऐश,1974)।

अभ्यास प्रश्न

2. शिक्षार्थी एवं समाज के विषय में मान्यताओं का एक संरचनात्मक ढाँचा, पाठयचर्या प्रारुप के पाँच प्रमुख ____________ में से एक है।
3. सामाजिक परिवर्तन तथा उद्देश्य एवं लक्ष्य में परिवर्तन के बीच सांमजस्य एक अच्छे ____________ की आवश्यक शर्त है।
4. विषयवस्तु के चयन में ध्यान में रखे जाने वाले तीन मुख्य तत्वों के नाम ज्ञान, प्रक्रिया/कौशल तथा ____________ है।
5. क्रियान्वयन की दशाओं का आशय ____________ को शिक्षार्थियों तक पहुँचाने की विभिन्न विधियों से है।
6. मूल्यांकन शिक्षार्थी एवं शिक्षक के लिए ____________ का कार्य करता है।

8.5 पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत

पाठयचर्या प्रारुप के निम्नलिखित तीन मुख्य स्रोत हैं:

i. सुव्यवस्थित पाठ्यवस्तु
ii. विद्यार्थी
iii. समाज

अब आप बारी-बारी से एक-एक का अध्ययन करेंगे।

1. **सुव्यवस्थित पाठ्यवस्तु** – पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न स्रोतों में यह सबसे ज़्यादा प्रयुक्त होनेवाला स्रोत है। इसका प्रयोग इसलिए किया जाता है कि यह मानव जाति के सामूहिक ज्ञान को प्रतिबिंबित करता है तथा मनुष्य के सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करता है। ज्ञान के एक संगठित इकाई के रुप में विभिन्न विषयों का अध्ययन सभ्यता के विकास के लिए अवश्यक है। पाठयचर्या प्रारुप का यह एक प्रारंभिक स्रोत है और इसके प्रयोग का एक प्रमुख लाभ यह है कि यह विषयवस्तु के तार्किक संगठन को बल प्रदान करता है(हॉकिंस,1980 सेलर एण्ड अलेक्जेंडर,1974 ताबा,1962 जैस,1976)।

   इस स्रोत के प्रयोग की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

   i. विभिन्न विषय, विद्यार्थियों को उनके सांस्कृतिक विरासत को क्रमिक ढंग से समझने एवं सीखने में सहायता करते हैं
   ii. पाठयचर्या प्रारुप के इस स्रोत का प्रयोग कर पाठयचर्या के निर्माण का एक लंबा इतिहास है
   iii. शिक्षक इसी तरीके से शिक्षित किए गए हैं
   iv. अधिकांश उपयोगी सामग्री एवं संसाधन का निर्माण इसी स्रोत का प्रयोग कर के किया गया है।

इस स्रोत के प्रयोग की निम्नलिखित सीमाएँ हैं:

i. यह ज्ञान के खंडन को बढ़ावा देता है, जिससे विस्मरण की प्रवृति को बल मिलता है;
ii. इस स्रोत के प्रयोग से बना पाठयचर्या प्रारुप विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन से परे होता है;
iii. यह स्रोत विद्यार्थियों की क्षमता, रुचि, आवश्यकता एवं विगत अनुभवों पर कम ध्यान देता है फलस्वरुप विद्यार्थियों में अधिगम के लिए अभिप्रेरणा की कमी होती है; तथा
iv. यह अधिगम में सतहीपन एवं निष्क्रियता को बढ़ावा देता है।

2. **विद्यार्थी पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत के रुप में-** जब विद्यार्थी को पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत के रुप में स्थान दिया जाता है तो पाठयचर्या प्रारुप के निर्माण में विद्यार्थी की आवश्यकताओं, रुचियों, क्षमताओं एवं विगत अनुभवों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। अधिगम अनुभव तथा विषयवस्तु के चयन एवं संगठन के लिए विद्यार्थियों से संपर्क कर

उनका अवलोकन किया जाता है तथा उनसे साक्षात्कार किया जाता है। विषय क्षेत्र विद्यार्थियों के रुचि एवं आवश्याकता के अनुकूल होते हैं। जब विद्यार्थी को पाठयचर्या प्रारुप के मुख्य स्रोत के रुप में लिया जाता है तब इस प्रकार के पाठयचर्या को नवोदित क्रिया-कलाप या अनुभव पर आधारित पाठयचर्या कहा जाता है। मुक्त विद्यालय, वैकल्पिक विद्यालय, मुक्त शिक्षा एवं ब्रिटिश शिशु विद्यालय इसी प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप का प्रयोग करते हैं। इस स्रोत के समर्थक यह मानते हैं कि वास्तविक शिक्षा तभी सम्पन्न हो सकती है जबकि विद्यार्थी खुद अपने लिए पाठ्यवस्तु का चयन करे और इसे कोई व्यक्तिगत अर्थ प्रदान करें।

इस स्रोत के प्रयोग की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

i. जब विद्यार्थी को पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत के रुप में प्रयुक्त किया जाता है तो विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ, रुचि, योग्यताएँ एवं अनुभव पाठयचर्या प्रारुप को निर्देशित करती हैं,परिणामस्वरुप अधिगम व्यक्तिगत, प्रासंगिक एवं अर्थपूर्ण होता है;

ii. विद्यार्थी स्वत:प्रेरित होते हैं और उन्हें अभिप्रेरणा के लिए किसी बाहरी तत्व की आवश्यकता नहीं होती है;

iii. व्यक्तिगत विभिनाता को पूर्ण महत्व दिया जाता है; तथा

iv. विद्यार्थियों को जीवन की माँग को संतुष्ट करने के लिए तैयार करता है(हॉकिंस,1980 जैस,1976)।

इरा स्रोत के प्रयोग की निम्नलिखित सीमाएँ हैं:

i. यह शिक्षा के सामाजिक लक्ष्यों एवं मानव के सांस्कृतिक विरासत की उपेक्षा करता है;

ii. अधिगम के परिणाम अनिश्चित होते हैं; तथा

iii. पाठ्यसामग्री की उपलब्धता असहज होती है और यह खर्चीला होता है।

3. **समाज-** यह पाठयचर्या प्रारुप का तीसरा प्रमुख स्रोत होता है। यह एक अद्वितीय पाठयचर्या प्रारुप के निर्माण में सहायक होता है, जिसका मूल्य, समाज को समझने एवं उन्नत करने में होता है। सामुदायिक विद्यालय पाठयचर्या प्रारुप के इसी स्रोत का प्रयोग करते हैं। समाजिक अध्ययन के कार्यक्रम भी समाज को पाठयचर्या प्रारुप के प्रमुख स्रोत के रुप में प्रयुक्त करते हैं। इस प्रारुप में पाठ्यवस्तु सामाजिक जीवन से निकाली जाती है। यह समाज के कार्य, सामाजिक जीवन के मुख्य कार्य-कलाप तथा विद्यार्थियों या मनुष्य की मुख्य समस्याओं पर बल देता है।

इस स्रोत के प्रयोग की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1. यह पाठ्यवस्तु की अखंडता एवं विद्यार्थी तथा समाज के लिए उसकी प्रासंगिकता पर बल देती है (ताबा,1962);
   समस्या समाधान विधि पर बल दिया जाता है;
   पाठ्यवस्तु विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक रुप में होती है
2. इस प्रकार पाठ्यवस्तु विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक एवं अर्थपूर्ण होती है;
3. चूँकि विद्यार्थी, अध्ययन के सभी चरण पर, इसमें सक्रिय रुप से शामिल होते हैं, इसलिए वो अध्ययन को बनाए रखने के लिए आंतरिक रुप से अभिप्रेरित होते हैं; तथा
4. इस प्रारुप से समाज के विकास में भी सहायता मिलती है।

इस स्रोत के प्रयोग निम्नलिखित सीमाएँ हैं:

i. इसका क्षेत्र और क्रम स्पष्ट नहीं होता है
ii. शिक्षक इस विधि से पढ़ाने के लिए तैयार नहीं होते हैं
iii. संसाधन नहीं उपलब्ध होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

7. पाठयचर्या प्रारुप के एक स्रोत के रुप में सुव्यवस्थित पाठ्यवस्तु की विशेषताओं का उल्लेख करें?।
8. पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत के रुप में विद्यार्थी की सीमाओं का वर्णन करें।

8.6 पाठयचर्या निर्माण के सिद्धांत

पाठयचर्या के निर्माण में दर्शन, समाज, राज्यतंत्र, अर्थतंत्र, विज्ञान एवं मनोविज्ञान की महती भूमिका होती है। चाहे कोई भी राष्ट्र हो या कोई भी समाज, उपरोक्त उल्लिखित सारे तत्व पाठयचर्या पर अपना प्रभाव डालते हैं। इन तत्वों के प्रभाव को हीं सिद्धांतों का नाम दे दिया गया है। शिक्षा के भिन्न-भिन्न स्तर के लिए यह भिन्न-भिन्न होते है। वर्तमान समय में हमारे देश में 10+2+3 शिक्षा पद्धति प्रचलित है और इसमें प्रथम 10 वर्षों की शिक्षा सामान्य है। अतः, हम इसी 10 वर्षीय शिक्षा के स्तर के लिए पाठयचर्या निर्माण के सिद्धांतों की चर्चा करेंगे। इस स्तर के लिए पाठयचर्या निर्माण के लिए निम्नलिखित 11 मुख्य सिद्धांत हैं-

1. **उद्देश्यों की प्राप्ति का सिद्धांत-** शिक्षा प्रदान करने के कुछ उद्देश्य होते हैं और शिक्षा प्रदान करने के लिए पाठयचर्या का होना अनिवार्य है। अतः, पाठयचर्या का निर्माण करते समय हमें शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए और पाठयचर्या में उन्हीं विषयों एवं क्रियाओं का समावेश करना चाहिए, जिनको हम छात्रों में विकसित करना चाहते हैं।

2. **उपयोगिता का सिद्धांत-** पाठयचर्या निर्माण का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत, उपयोगिता का सिद्धांत है। इस सिद्धांत का आशय यह है कि पाठयचर्या विद्यार्थी के वास्तविक जीवन के लिए उपयोगी होना चाहिए। इस संबंध में नन का कहना है- "साधारण मनुष्य सामान्यतः यह चाहता है कि उसके बच्चे केवल ज्ञान के प्रदर्शन के लिए कुछ व्यर्थ की बातों को ही न सीखे, परंतु समग्र रुप से वह यह चाहता है कि उनको वो बातें सिखाई जाएँ जो बालक के वास्तविक जीवन से संबंधित हो"। उदाहरणार्थ , आज का युग कम्प्युटर का युग है। यदि आज हम कोई पाठयचर्या निर्मित करते हैं तो हमें उसमें कम्प्युटर प्रौद्योगिकि को ज़रूर स्थान देना चाहिए।
3. **रचनात्मक कार्य का सिद्धांत–** प्रत्येक बालक अद्वितीय होता है और उसमें कुछ न कुछ सृजन करने की शक्ति होती है। अतः, पाठयचर्या ऐसा होना चाहिए कि वो विद्यार्थियों को अपने अंदर छुपी हुई रचनात्मक शक्ति को पहचानने एवं पहचान कर उसे निखारने का अवसर प्रदान करे। रेमॉण्ट ने इस संदर्भ में लिखा है- " जो पाठयचर्या , वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त है, उसमें निश्चित रुप से रचनात्मक विषयों के प्रति निश्चित सुझाव है"।
4. **वरीयता क्रम का सिद्धांत-** पाठयचर्या अनेक विषयों का समूह होता है। लेकिन यह समूह अव्यवस्थित नहीं होता है। बल्कि एक निश्चित व्यवस्था में बँधा होता है। यह व्यवस्था पाठयचर्या में शामिल विषय एवं प्रत्येक विषय में शामिल पाठ्यवस्तु के क्रम को विद्यार्थियों की आवश्यकता के आधार पर निर्धारित करती है। अतः, पाठयचर्या का निर्माण करते समय हमें इस वरीयता क्रम का भी ध्यान रखना चाहिए।
5. **सामुदायिक जीवन से संबद्धता का सिद्धांत-** माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार-" पाठयचर्या सामुदायिक जीवन से सजीव की ओर आंगिक रुप से संबंधित होना चाहिए"।मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज में ही अपने जीवन के समस्त कार्य–व्यापार संपादित करता है। अतः, उसे पढ़ाया जानेवाला पाठयचर्या भी सामुदायिक एवं सामाजिक जीवन से संबंधित होना चाहिए। पाठयचर्या निर्माण के समय हमें इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए।
6. **अग्रदर्शिता का सिद्धांत-** शिक्षा विद्यार्थियों का सिर्फ वर्तमान ही नहीं वरन् भविष्य भी सँवारती है। अतः, पाठयचर्या का निर्माण करते समय हमें इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि भविष्य में शिक्षा की दशा एवं दिशा क्या होगी? अर्थात भविष्य में किस क्षेत्र में कुशल मानव शक्ति की माँग होगी और कितनी मात्रा में होगी।? इन तथ्यों को ध्यान में रखकर पाठयचर्या में पाठ्यवस्तु का समावेश किया जाना चाहिए ताकि पाठयचर्या वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की आवश्यकताओं को भी संतुष्ट कर सके।
7. **आवश्यकता का सिद्धांत-** पाठयचर्या विद्यार्थी के लिए निर्मित किया जाता है न कि विद्यार्थी पाठयचर्या के लिए। अतः, पाठयचर्या का निर्माण करते समय विद्यार्थियों की

आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए। विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, एवं धार्मिक परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग होती है। अतः, पाठयचर्या के निर्माण में, इस बात को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि विद्यार्थी किस सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थिति में रहते हैं। इसके इतर विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ, उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास की अवस्थाओं पर भी निर्भर करती है। अतः, पाठयचर्या निर्माण के समय विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास की अवस्थाओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

8. **रुचि का सिद्धांत-** अतीत में हुए अनेक शोधकार्यों द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि विद्यार्थियों की रुचि एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि में गहन संबंध होते हैं। इसका कारण यह है कि जिस कार्य में विद्यार्थी की रुचि होती है, उसे सीखने के लिए विद्यार्थी आंतरिक रुप से अभिप्रेरित होते हैं और फलस्वरुप परिणाम अच्छा होता है। अतः, पाठयचर्या का निर्माण करते समय हमें विद्यार्थियों की रुचि को ध्यान में रखना चाहिए।
9. **सुसंबद्धता का सिद्धांत-** पाठयचर्या के संदर्भ में सुंसंबद्धता से आशय इस बात से है कि पाठ्यवस्तु एक-दूसरे से भली-भाँति संबंधित हो। इसके अलावा जो क्रिया-कलाप पाठयचर्या में शामिल किए जाएँ वो भी पाठ्यवस्तु से भली-भाँति संबंधित हो। अतः, पाठयचर्या निर्माण करते समय हमें सुसंबद्धता के सिद्धांत को ध्यान में रखना चाहिए।
10. **क्रिया का सिद्धांत-** मनोविज्ञान में हुए शोधकार्यों ने यह प्रमाणित किया है कि 'कर के सीखा ज्ञान' ज़्यादा स्थायी होता है और यह व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है। अतः, हमें पाठयचर्या का निर्माण करते समय विभिन्न क्रिया-कलापों को पाठयचर्या में स्थान देना चाहिए ताकि विद्यार्थी द्वारा अर्जित ज्ञान में स्थायित्व आ सके और विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो सके।
11. **विविधता एवं लचीलेपन का सिद्धांत-** माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार, " पाठयचर्या में काफी विविधता एवं लचीलापन होना चाहिए, जिससे कि वैयक्तिक विभिन्नताओं और वैयक्तिक आवश्यकताओं एवं रुचियों का अनुकूलन हो सके"। पाठयचर्या में विविधता एवं लचीलापन इस कारण से होना चाहिए कि उसे विद्यार्थियों कि शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं तथा उनकी रुचि के अनुकूल बनाया जा सके। अतः, पाठयचर्या निर्माण करते समय हमें इस सिद्धांत को ध्यान में रखना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

9. पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न सिद्धांतों को सूचीबद्ध करें।

8.7 पाठयचर्या की संक्रियाओं के संदर्भ में पाठ्यचर्या संगठन की विधियाँ

पाठ्यचर्या मुख्य रुप से इस बात पर निर्भर करती है हम विद्यार्थियों में किन अधिगम अनुभवों को विकसित करना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में यदि कहें तो अधिगम के प्रत्याशित परिणाम पर पाठ्यचर्या का संगठन निर्भर करता है। अतः, सर्वप्रथम, अधिगम के परिणाम को निश्चित किया जाता है, उसके बाद पाठ्यचर्या को। सामान्यतः पाठ्यचर्या में जो भी विषय रखने होते हैं और उन विषयों के तहत जो भी पाठ्यवस्तु रखनी होती है, पहले उसपर संबंधित विभाग में, तब उस विद्यालय या संकाय के बोर्ड ऑफ स्टडीज्स में और उसके बाद एकेडमिक कौंसिल में चर्चा की जाती है। इसके बाद इसे अस्तित्व में लाया जाता है। शिक्षक इसमें दोहरी भूमिका निभाता है – एक तो उपरोक्त निकायों के सदस्य के रुप में तथा दूसरा पाठ्यचर्या के मूल प्रारुप को तैयार करने में। लेकिन शिक्षक अपने मन से पाठ्यचर्या में विषयों और विभिन्न विषयों के पाठ्यवस्तुओं को शामिल नहीं करता है। इसके लिए वो विभिन्न उपागमों का सहारा लेता है। ये उपागम ही पाठ्यचर्या के संगठन की विधियाँ या पाठ्यचर्या के संगठन के उपागम कहलाते हैं। ये निम्नलिखित हैं:

i. विषयवस्तु / अनुशासन आधारित उपागम
ii. विशिष्ट दक्षता उपागम
iii. मानवीय गुण/प्रक्रिया उपागम
iv. सामाजिक प्रकार्य/क्रिया-कलाप उपागाम
v. व्यक्तिगत आवश्यकता एवं रुचि उपागम।

1. **विषयवस्तु/अनुशासन उपागम** – अध्ययन किए जानेवाले प्रत्येक विषय या अनुशासन के अपने विशिष्ट गुण एवं प्रारुप होते हैं जो एक पाठयचर्या निर्माता को पाठ्यचर्या बनाने में सहायता करते हैं। उदाहरण के तौर पर विज्ञान विषय की विशेषता है, अवलोकन योग्य तथ्यों का ज्ञान, प्रयोग द्वारा प्रमाणित किया जा सकने वाला सिद्धांत तथा उन सिद्धांतों का सामान्यीकरण। कला से संबंधित विषयों की विशेषता है, उन सामाजिक घटनाओं क अध्ययन जिनसे व्यवहार के प्रारुप का सामान्यीकरण होता है तथा विविध प्रकार के संस्कृति के अस्तित्व का वर्णन करने के लिए विभिन्न सिद्धांतों का निर्माण होता है। एक बार अधिगम उद्देश्य एवं उनके प्रत्याशित परिणामों के आधार पर जब अनुशासन या विषय का चयन कर लिया जाता है तब उसके क्षेत्र अर्थात उसके अंतर्गत पढ़ाए जानेवाले पाठ्यवस्तु का चयन किया जाता है। इसके लिए अंतर-अनुशासनिक उपागम का भी सहारा लिया जाता है। उदाहरण के तौर पर, प्रबंध विज्ञान के एक पाठयचर्या में विज्ञान और कला दोनों अनुशासनों के विषय, जैसे- संगठनात्मक प्रारुप एवं ऑपरेशन रिसर्च शामिल होते हैं।

2. **विशिष्ट दक्षता उपागम-** प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ विशेष गुण होते हैं। पाठयचर्या ऐसा होना चाहिए कि वो विद्यार्थी के अंदर निहित विशेष गुण को पहचानने का तथा पहचान कर उन्हें निखारने का अवसर प्रदान करे ताकि विद्यार्थी उस गुण में दक्ष हो जाए और वो विशेष गुण उसका एक कौशल बन जाए। पाठयचर्या के लिए, पाठ्यचर्या का संगठन करते समय उसमें ऐसे क्रिया-कलापों एवं विषयों को स्थान दिया जाता है जो उपरोक्त कार्य में विद्यार्थी की सहायता कर सके। अधिगम संबंधी क्रिया-कलापों के साथ-साथ विद्यार्थियों के निष्पत्ति के सूचक भी उन्हीं विशिष्ट कौशलों के इर्द-गिर्द घूमते हैं। इसमें 'कर के सीखने' पर ज़्यादा पर बल दिया जाता है। सभी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में पाठ्यचर्या संगठित करने की इस विधि का ज़्यादा प्रयोग किया जाता है।
3. **मानवीय गुण/प्रक्रिया उपागम-** यह विधि मुख्य रुप से विद्यार्थी में मानवीय मूल्यों, विशेषतः सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करने पर बल देती है। इसमें सबसे मुख्य बात उपयुक्त अनुभवों की उपलब्धता होती है। मूल्यों का विकास तभी संभव है जब विद्यार्थी को अनुभवों एवं.गुणों/मूल्यों के संबंध के विषय में, सोचने एवं विश्लेषण करने का अवसर प्राप्त हो। रोल मॉडल को भी स्थान दिया जा सकता है क्योंकि मूल्यों के विकास में ये भी सहायक होते हैं। भारतीय संदर्भ में इस उपागम की बड़ी भूमिका होती है।
4. **सामाजिक प्रकार्य/ क्रिया-कलाप उपागम –** यह उपागम इस मान्यता पर आधारित है कि शिक्षण प्रक्रिया समाज में सम्पन्न होती है और इसलिए उस समाज के प्रति उत्तरदायी है जिसमें यह कार्य करती है। इस उपागम का प्रयोग कर जब पाठ्यचर्या का संगठन किया जाता है तो उसमें तीन बातों का विशेष रुप से ध्यान दिया जाता है:
    - जीवन के वास्तविक परिस्थितियों के इर्द –गिर्द विकसित होना चाहिए;
    - समाज की आवश्यकता को व्यक्ति विशेष की आवश्यकता से ज़्यादा बल देना चाहिए;
    - विद्यार्थियों की प्रत्यक्ष सहभागिता के द्वारा सामाजिक कार्य-क्षमता एवं सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना चाहिए।
5. **व्यक्तिगत आवश्यकता एवं रुचि उपागम-** इस विधि के द्वारा पाठ्यचर्या संगठन में विद्यार्थी को केन्द्र में रखा जाता है। इस विधि के प्रयोग के पीछे यह मान्यता कार्य करती है कि विद्यार्थी को केन्द्र में रखने से अधिगम प्रक्रिया में उनकी रुचि बढ़ती है। वर्तमान में पाठयचर्या के संदर्भ में जो शोध हो रहे है उनमें इस उपागम को ज़्यादा महत्त्व दिया जा रहा है।

पाठ्यचर्या संगठन की उपयुक्त विधियों को जानने के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि पाठ्यचर्या संगठन के ये विभिन्न उपागम यद्यपि अपने-आप में पूर्ण है लेकिन इनमें से किसी एक के प्रयोग से संतुलित पाठयचर्या का निर्माण नहीं हो सकता है। संतुलित पाठयचर्या के

निर्माण में इन सभी उपागमों का सहरा लेना पड़ता है। अतः, एक संतुलित पाठयचर्या के निर्माण के लिए इन सभी उपागमों का समुचित प्रयोग आवश्यक है।

अभ्यास प्रश्न

10. पाठ्यचर्या संगठन की विभिन्न विधियों को सूचीबद्ध करें।
11. सामाजिक प्रकार्य/ क्रिया-कलाप उपागम का प्रयोग कर जब पाठ्यचर्या का संगठन किया जाता है तो जिन तीन बातों का विशेष रुप से ध्यान दिया जाता है, उन्हें सूचीबद्ध करें।

8.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई, पाठयचर्या प्रारुप का अर्थ, पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न तत्वों, पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न स्रोतों, पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न सिद्धांतों एवं पाठ्यचर्या संगठन के विभिन्न उपागमों की व्याख्या करता है। पाठयचर्या शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका निर्माण एक आवश्यक प्रक्रिया है। वर्तमान परिवेश में शिक्षक इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अत: शिक्षा शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वो पाठयचर्या संबंधी विभिन्न तथ्यों को जानें एवं समझें। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस इकाई की रचना की गई है जो विद्यार्थियों के लिए निश्चित ही उपयोगी होगी।

8.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप के विशेषताऐं निम्न हैं-
   i. एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप उद्देश्यपूर्ण होता है
   ii. एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप सुव्यस्थित एवं सुनियोजित होता है
   iii. एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप सृजनात्मक होता है
   iv. एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप को लोचशील होना चाहिए
2. तत्व
3. पाठयचर्या
4. प्रभाव
5. विषयवस्तु
6. पृष्ठपोषण
7. पाठयचर्या प्रारुप के एक स्रोत के रुप में सुव्यवस्थित पाठ्यवस्तु की विशेषताऐं-

i. विभिन्न विषय, विद्यार्थियों को उनके सांस्कृतिक विरासत को क्रमिक ढंग से समझने एवं सीखने में सहायता करते हैं
ii. पाठयचर्या प्रारुप के इस स्रोत का प्रयोग कर पाठयचर्या के निर्माण का एक लंबा इतिहास है
iii. शिक्षक इसी तरीके से शिक्षित किए गए हैं
iv. अधिकांश उपयोगी सामग्री एवं संसाधन का निर्माण इसी स्रोत का प्रयोग कर के किया गया है।

8. पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत के रुप में विद्यार्थी की सीमाऐं-
   i. यह शिक्षा के सामाजिक लक्ष्यों एवं मानव के सांस्कृतिक विरासत की उपेक्षा करता है;
   ii. अधिगम के परिणाम अनिश्चित होते हैं; तथा
   iii. पाठ्यसामग्री की उपलब्धता असहज होती है और यह खर्चीला होता है।
9. पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न सिद्धांतोंकी सूची निम्न है-
   i. उद्देश्यों की प्राप्ति की सिद्धांत
   ii. उपयोगिता का सिद्धांत
   iii. रचनात्मक कार्य का सिद्धांत
   iv. वरीयता क्रम का सिद्धांत
   v. सामुदायिक जीवन से संबद्धता का सिद्धांत
   vi. अग्रदर्शिता का सिद्धांत
   vii. आवश्यकता का सिद्धांत
   viii. रुचि का सिद्धांत
   ix. सुसंबद्धता का सिद्धांत
   x. क्रिया का सिद्धांत
   xi. विविधता एवं लचीलेपन का सिद्धांत
10. पाठ्यचर्या संगठन की विभिन्न विधियों की सूची-
   i. विषयवस्तु / अनुशासन आधारित उपागम
   ii. विशिष्ट दक्षता उपागम
   iii. मानवीय गुण/प्रक्रिया उपागम
   iv. सामाजिक प्रकार्य/क्रिया-कलाप उपागाम
   v. व्यक्तिगत आवश्यकता एवं रुचि उपागम।
11. सामाजिक प्रकार्य/ क्रिया-कलाप उपागम का प्रयोग कर जब पाठ्यचर्या का संगठन किया जाता है तो जिन तीन बातों का विशेष रुप से ध्यान दिया जाता है, वो निम्न हैं-
   i. जीवन के वास्तविक परिस्थितियों के इर्द –गिर्द विकसित होना चाहिए;
   ii. समाज की आवश्यकता को व्यक्ति विशेष की आवश्यकता से ज़्यादा बल देना चाहिए;

iii. विद्यार्थियों की प्रत्यक्ष सहभागिता के द्वारा सामाजिक कार्य-क्षमता एवं सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना चाहिए।

8.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Eash, M. 1974. Instructional Materials In: Walberg H. J. (ed.) 1974. **Evaluating Educational Performance.** Mc Cutchan, Berkeley, California, Pp. 125-52.
2. Hunkins, F.P. 1980. **Curriculum Development: Program Planning and Improvement**. Merrill, Columbus, Ohio.
3. Saylor, J.G., Alexander, W.M. 1974. **Planning Curriculum for Schools.** Holt,. Rinehart and Winston, New York.
4. Taba, H. 1962. **Curriculum Development; Theory and Practice.** Harcourt, Brace and World, New York.
5. Walker, D.A. 1976, The IEA Six Subject Survey: An Empirical Study of Education Twenty-one Countries. Almquist and wiksell, Stockhom.
6. Zais, R.S. 1976, Curriculum: Principles and Foundations. Crowell, New York.
7. नन्द, के0 विजय एवं त्यागी, गुरुसरनदास, 2005, उदीयमान भारत में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा.
8. Hunkins, F.P. 1980. Curriculum Development: Program Planning and Improvement. Merrill, Columbus, Ohio.
9. लाल, रमन बिहारी 2009. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ.

8.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठयचर्या का अर्थ समझाते हुए एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप की विशेषताओं का वर्णन करें।
2. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न तत्वों की व्याख्या करें।
3. पाठयचर्या प्रारुप के स्रोतों पर एक संक्षिप्त निबंध लिखें।
4. पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न सिद्धांतों की व्याख्या करें।
5. पाठयचर्या की संक्रियाओं के संदर्भ में पाठ्यचर्या संगठन के विभिन्न विधियों की व्याख्या करें।

6. वर्तमान माध्यमिक स्तर की पाठ्यचर्या की समीक्षा करते हुए यह बताए कि वह कौन से प्रारुप पर आधारित है और क्यों?

इकाई 9 पाठयचर्या प्रारुप : इसके प्रकार

9.1 प्रस्तवाना
9.2 उद्देश्य
9.3 पाठयचर्या प्रारुप के प्रकार
9.3.1 विषय केन्द्रित प्रारुप
9.3.2 विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप
9.3.3 समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप
9.4 सारांश
9.5 शब्दावली
9.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7 संदर्भ ग्रंथ सूची
9.8 सहायक/उपयोगी पाठ्यसामग्री
9.9 निबंधात्मक प्रश्न

9.1 प्रस्तावना

पाठयचर्या प्रारुप, पाठयचर्या निर्माण की दिशा में पहला कदम है। यह पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया को दिशा निर्देशित करता है। चूँकि पाठयचर्या एक परिवर्तनशील तत्व है इसलिए पाठयचर्या प्रारुप में भी निरंतर परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन बदलती हुई समाज की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु करना पड़ता है। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरुप पाठयचर्या प्रारुप के अनेक प्रकार अस्तित्व में आए।

पाठयचर्या शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली को समझने के लिए, उसमें प्रचलित पाठयचर्या को समग्र रुप में एवं खंड में समझना पड़ता है। अर्थात पाठयक्रम के विभिन्न तत्वों के अलग-अलग प्रभाव को एवं समग्र प्रभाव को समझना पड़ता है। इसके लिए पाठयचर्या के विभिन्न प्रकार का ज्ञान होना आवश्यक है। ये विभिन्न प्रकार के पाठयचर्या , विभिन्न प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप पर निर्भर करते हैं। अतः पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकार का ज्ञान भी आवश्यक है।

शिक्षा प्रणाली के संतुलित विकास के लिए भी पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकार का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि किसी एक प्रारुप पर आधारित पाठयचर्या से शिक्षा प्रणाली का समुचित

विकास नहीं हो सकता है। उपयुक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर इस इकाई की रचना की गई है जो विद्यार्थियों को पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकार के विषय में जानकारी प्रदान करेगा।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप -

1. पाठयचर्या प्रारुप के नाम बता सकेंगे।
2. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकार की व्याख्या कर सकेंगे।
3. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकार की विशेषताओं एवं सीमाओं से अवगत हो सकेंगे।

9.3 पाठयचर्या प्रारुप के प्रकार

पाठयचर्या प्रारुप को मुख्य रुप से तीन भागों में विभाजित किया जाता है। ये तीन प्रकार निम्नलिखित है:

1. विषयकेन्द्रित प्रारुप
2. विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप
3. समस्या केन्द्रित प्रारुप

9.3.1 विषय केन्द्रित प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप विभिन्न विषयों को केन्द्र में रखता है। इस प्रारुप के तहत अधिगम के पारंपरिक क्षेत्रों के लिए पारंपरिक विषयों को, अंतर्नुशासनिक विषयों के लिए समस्या-समाधान संबंधी तथा निर्णयन क्षमता संबंधी प्रक्रिया को इस उद्देश्य के साथ शामिल किया जाता है कि विद्यार्थी इन से प्राप्त सूचनाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सके। विषयकेन्द्रित प्रारुप को निम्नलिखित चित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है:

विषय केन्द्रित प्रारुप को पारंपरिक प्रारुप भी कहा जाता है। यह फिलिपींस देश में बहुत प्रसिद्ध है।

विषय केन्द्रित प्रारुप की विशेषताएँ

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1. इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप की मुख्य विशेषता है कि अत्यधिक संरचनात्मक स्वरुप के कारण इसका निर्माण काफी सरल होता है।

यह प्रारुप इस बात पर बल देता है कि विद्यार्थी किसी विशेष विषय या कोर्स से संबंधित ज्ञान का अधिकतम अर्जन कर सके।

रेखाचित्र संख्या - 1: विषय केन्द्रित प्रारुप

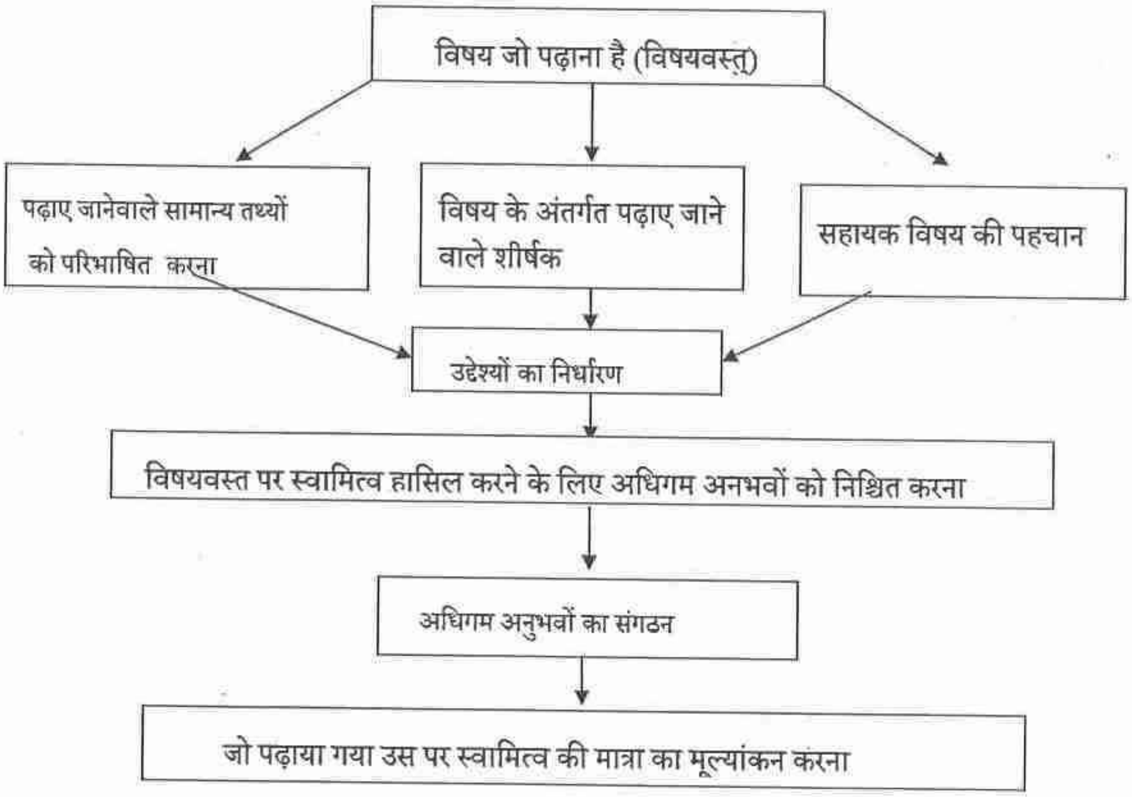

विषय केन्द्रित प्रारुप की सीमाएँ

1. इसमें अधिगम अत्यंत सीमित हो जाता है
2. यह विषयवस्तु पर इतना ज़्यादा ध्यान देता है कि बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों एवं रुचियों
   की ओर ध्यान नहीं दे पाता है।

अभ्यास प्रश्न

1. पाठयचर्या प्रारुप के कितने मुख्य प्रकार होते हैं?
2. पाठयचर्या का कौन सा प्रारुप विभिन्न विषयों को अपने केन्द्र में रखता है?
3. विषय केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप का निर्माण अत्यधिक सरल होने का क्या कारण है?

4. पाठयचर्या का विषय केन्द्रित प्रारुप, अधिगम को अत्यंत सीमित कर देता है। हाँ या नहीं

विषय केन्द्रित प्रारुप के प्रकार

इसके पाँच प्रकार होते हैं:

1. विषय प्रारुप
2. अनुशासन प्रारुप
3. सहसंबंधात्मक प्रारुप
4. प्रक्रिया प्रारुप
5. विस्तृत क्षेत्र प्रारुप

विषय प्रारुप

यह प्रारुप मुख्य रुप से इस मान्यता पर आधारित है कि मनुष्य को अद्वितीय उसकी बौद्धिकता बनाती है और ज्ञान की खोज एवं प्राप्ति बौद्धिकता की स्वाभाविक आवश्यकता है।

यह सबसे प्राचीन एवं प्रसिद्ध पाठयचर्या प्रारुप है। इस प्रारुप के तहत पाठयचर्या में मुख्य रुप से भाषा (वाचन, लेखन, व्याकरण एवं साहित्य), गणित, विज्ञान, इतिहास एवं विदेशी भाषाओं को ध्यान में रखा जाता है।

विषय प्रारुप की विशेषताएँ

1. इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।
2. यह शाब्दिक क्रियाओं पर ज़्यादा बल देता है।
3. विद्यार्थियों को समाज के लिए आवश्यक ज्ञान से परिचित करता है।
4. क्रियान्वित करने में आसान होता है।
5. यह पारंपरिक है।

विषय प्रारुप की विशेषताएँ:

1. इसकी निम्नलिखित सीमाएँ हैं-
2. यह व्यक्ति विशेष पर बल नहीं दे पाता है।
3. विद्यार्थियों को हतोत्साहित करता है।
4. विद्यार्थियों के सामाजिक, शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास करने में असफल है।
5. अधिगम को सीमित करता है ।
6. विद्यार्थियों की रुचि, आवश्यकता एवं अनुभव को नकारता है।
7. निष्क्रियता को बढ़ाता है।

अनुशासन प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप सन् 1950 में प्रयोग में आना शुरु हुआ और सन् 1960 में इसका पूरे जोर-शोर से प्रयोग हो रहा था। पाठयचर्या का यह प्रारुप ब्रुनर के सिद्धांत पर आधारित है। ब्रुनर ने अपने सिद्धांत में कहा कि किसी भी उम्र के विद्यार्थी किसी भी विषय की मूलभूत बातों को समझने के योग्य होता हैं। इसके लिए किशोरावस्था या वयस्क होने का इंतज़ार नहीं करना पड़ता है। अतः पाठयचर्या को उस अनुशासन की संरचना के अनुसार व्यस्थित करना चाहिए जिसे पढ़ना है। पाठयचर्या के इस प्रारुप में पाठ्यवस्तु को जिस विधि से सीखना होता है वो विद्वानों द्वारा अपने क्षेत्र में अध्ययन करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। उदाहरणार्थ इतिहास का विद्यार्थी उसी विधि को प्रयोग में लाता है जो इतिहासविद् प्रयोग में लाते हैं।

अनुशासन प्रारुप की विशेषताएँ:

1. इस प्रारुप की निम्नलिखित विशेषताएँ थी
2. विद्यार्थी पाठ्यवस्तु पर स्वामित्व प्राप्त कर लेता है।
3. इस प्रारुप के तहत अधिगम स्बतंत्र होता है।
4. विकास के किसी भी अवस्था पर विद्यार्थी को कोई भी विषय सीखाया जा सकता है।

अनुशासन प्रारुप की सीमाएँ

इस प्रारुप की निम्नलिखित सीमाएँ हैं:

1. यह ज्ञान एवं सूचनाओं की एक बड़ी मात्रा, जिन्हें किसी अनुशासन के रुप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता हैको नज़रअं ,दाज़ करता है।
2. विद्यार्थियों को पाठयचर्या को अपने अनुसार अनुकुलित करना पड़ता है।

अभ्यास प्रश्न

5. सहसंबंधात्मक प्रारुप .... का एक प्रकार है।
6. पाठयचर्या का अनुशासन प्रारुप सन् .... में शुरु हुआ।
7. .... ने अपने सिद्धांत में कहा कि कोई भी बालक विकास के किसी भी अवस्था में कुछ भी सीख सकता है।
8. विषय प्रारुप की एक सीमा यह है कि यह .... को हतोत्साहित करता है।

सहसंबंधात्मक प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप मुख्य रुप से इस बात पर बल देता है कि दो अलग-अलग विषयों को कैसे एक-दूसरे से संबंधित किया जाए ताकि उनके बीच सहसंबंध भी स्थापित हो जाए और उनकी

अलग-अलग विषयों के रुप में पहचान भी बनी रहे। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी साहित्य और इतिहास माध्यमिक स्तर पर सहसंबंधित होनेवाले दो विषय है। इतिहास के चक्र में इतिहास पढ़ने के बाद विद्यार्थी अंग्रेजी के चक्र में उसी अवधि के अंग्रेजी साहित्य को पढ़ता है।

सहसंबंधात्मक प्रारुप की विशेषताएँ

इस प्रारुप की मुख्य विशेषता है कि इससे विषयों के बीच में अंतर्संबंध स्थापित होता है और विषयों की खंडता में कमी आती है;

सहसंबंधात्मक प्रारुप की सीमाएँ

इसकी सीमाएँ निम्नलिखित हैं:

1. इसके लिए एक वैकल्पिक समय णी की आवश्यकता होती हैसार-।
2. अलग तरीके से योजना बनाने के लिए दक्ष शिक्षकों की आवश्यकता होती है।

प्रक्रिया प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप , सामान्य विधियों एवं सामान्य प्रक्रियाओं जो कि विषय विशेष के लिए नहीं बल्कि सभी विषयों को सीखने के लिए प्रयोग में लाई जा सकती हैं, को सीखने पर बल देता है। आलोचनात्मक और सर्जनात्मक चिंतन को सीखने के लिए प्रयोग में लाए जानेवाले पाठयचर्या , प्रक्रिया प्रारुप का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

यह प्रारुप इस मान्यता पर आधारित है कि कुछ कौशल एवं प्रक्रियाएँ किसी भी विषय को सीखने के लिए समान रुप से आवश्यक होती हैं। उन प्रक्रियाओं को सीखाना ही इस पाठयचर्या प्रारुप का मुख्य उद्देश्य है।

प्रक्रिया प्रारुप की विशेषता

इस प्रारुप की प्रमुख विशेषता यह है कि यह विद्यार्थियों को आलोचनात्मक रुप से चिंतन करना सीखाता है।

प्रक्रिया प्रारुप की सीमाएँ

यह विषयवस्तु पर बहुत कम ध्यान देता है।

विस्तृत क्षेत्र प्रारुप

इस प्रारुप को अंतर्नुशासनिक प्रारुप भी कहा जाता है। पाठयचर्या का यह प्रारुप उन विषयवस्तुओं को, जो एक-दूसरे के साथ तर्कसंगत रुप से जुड़ सकते हैं, को जोडने का प्रयास करता है। उदाहरण के तौर पर भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र विषय के अलग-अलग

पाठयचर्या को संलयित कर समाजशास्त्र का पाठयचर्या बनाया गया। पाठयचर्या के विस्तृत क्षेत्र प्रारुप को निम्नलिखित रेखाचित्र के माध्यम से और अच्छे तरीके से समझा जा सकता है:

रेखाचित्र संख्या-2 विस्तृत क्षेत्र पाठयचर्या प्रारुप

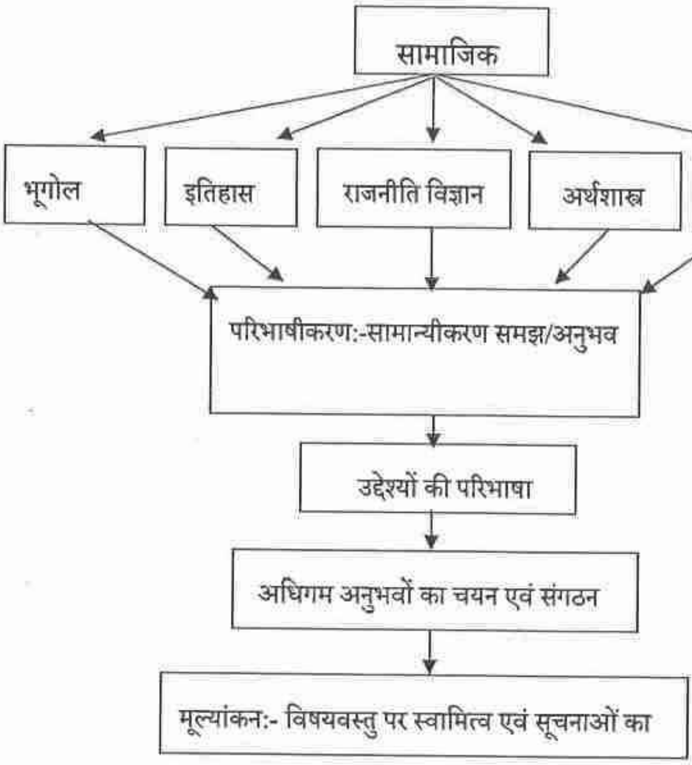

विस्तृत क्षेत्र पाठयचर्या प्रारुप की विशेषताएँ

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1. विद्यार्थियों को विषयवस्तु के विभिन्न पक्षों के मध्य संबंध स्थापित करने की अनुमति देता है
2. ज्ञान का प्रसंकरण होता है।

विस्तृत क्षेत्र पाठयचर्या प्रारुप की सीमाएँ

पाठयचर्या के इस प्रारुप की मुख्य सीमा यह है कि पाठ्यवस्तु में विस्तार तो हो जाता है लेकिन उसकी गहनता खत्म हो जाती है।

अभ्यास प्रश्न

9. सहसंबंधात्मक प्रारुप के लिए वैकल्पिक समय-सारणी की आवश्यकता होती है। (सत्य/असत्य)
10. प्रक्रिया प्रारुप समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप का एक प्रकार है। (सत्य/असत्य)
11. प्रक्रिया प्रारुप विद्यार्थियों को आलोचनात्मक रुप से चिंतन करना सीखाने पर बल देता है। (सत्य/असत्य)
12. विस्तृत क्षेत्र प्रारुप में पाठ्यवस्तु में विस्तार होने के साथ-साथ उसकी गहनता भी बनी रहती है। (सत्य/असत्य)
13. विस्तृत क्षेत्र प्रारुप ज्ञान के प्रसंकरण को जन्म देता है। (सत्य/असत्य)

9.3.2 विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप मुख्यत: विद्यार्थियों की रुचि एवं आवश्यकता को केन्द्र में रखकर बनाया जाता है। इस प्रकार के प्रारुप में कुछ सामान्य कार्य-कलाप जैसे- खेल, चित्रकला, कहानी आदि जिसमें कि बच्चों को शामिल किया जा सकता है, को अध्ययन-अध्ययापन के केन्द्र में रखा जाता है। पाठ्यवस्तु अलग-अलग विषयों(गणित, विज्ञान) आदि में विभाजित होकर कार्य-कलापों (खेलना, कहानी- कथन) आदि में विभाजित रहता है। विद्यालय पूर्व स्तर पर इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप को काफी महत्व दिया जाता है।

विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप की विशेषताएँ

इस पाठयचर्या प्रारुप की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें थ्री आर (रिडिंग, राइटिंग एवं अर्थमेटिक) के संप्रत्यय को विभिन्न कार्य-कलापों में समाहित कर दिया जाता है।

विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप की सीमाएँ

यह विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के पक्ष को नकारता है।

विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप के प्रकार

इसके चार प्रकार हैं:

1. बाल केन्द्रित प्रारुप
2. अनुभव केन्द्रित प्रारुप
3. रुमानी या रैडिकल प्रारुप
4. मानवतावादी प्रारुप

बाल केन्द्रित प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप विद्यार्थियों को उनके वास्तविक वातावरण में सक्रिय रखकर अध्ययन-अध्ययापन की बात करता है। अर्थात पाठयचर्या का यह प्रारुप शिक्षण को वास्तविक जीवन से अलग नहीं मानता है। पाठयचर्या के इस प्रारुप के निर्माण में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों की सक्रिय भूमिका होती है। दोनों मिलकर पाठयचर्या के लिए योजना बनाते हैं, उसके उद्देश्य तय करते हैं, कार्य-कलाप तथा प्रयोग में लाए जानेवाले साधनों को तय करते हैं। इस तरह के पाठयचर्या प्रारुप के समर्थकों में जॉन डीवी, रुसो, पेस्टालॉजी, फ्रॉबेल का नाम उल्लेखनीय है।

बाल केन्द्रित प्रारुप की विशेषताएँ

1. सरंचनात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करता है
2. पाठ्यवस्तु को अलग-अलग विषयों में नहीं बल्कि अनुभव की इकाइयों के रुप में विभाजित किया जाता है
3. कर के सीखने पर ज़्यादा बल देता है, फलस्वरुप विद्यार्थी शिक्षक और वातावरण के मध्य अंतर्क्रिया को भी बल मिलता है।

बाल केन्द्रित प्रारुप की सीमाएँ

1. पाठ्यवस्तु निश्चित नहीं होती है।
2. कर के सीखने की विधि हर तरह के पाठ्यवस्तु के लिए उपयुक्त नहीं होती है।

अनुभव केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप, बाल केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप से बहुत ज़्यादा मिलत-जुलता है। लेकिन इस तरह के पाठयचर्या प्रारुप में सबकुछ कार्यस्थल अर्थात विद्यालय में शिक्षण के समय हीं संपादित होता है। इसमें विद्यार्थियों की रुचियों एव आवश्यकताओं को पहले से कल्पित नहीं किया जाता है। पाठयचर्या का यह प्रारुप, बच्चों के विद्यालय की दुनिया को व्यवस्थित करने के लिए बालकों के विचार एवं सोच को प्रयोग में लाते हैं।

अनुभव केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप की विशेषताएँ

इसकी मुख्य विशेषता है कि यह विद्यार्थियों के स्वाभाविक अनुभव पर आधारित होता है।

अनुभव केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप की सीमाएँ

इसकी निम्नलिखित सीमाएँ हैं-

1. इसमें पाठयचर्या का कोई भी घटक विशिष्ट नहीं होता है।
2. एक सार्वभौम पाठयचर्या संरचना का निर्माण नहीं किया जा सकता है।

3. इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप का क्रियान्वयन अत्यंत हीं चुनौतीपूर्ण है।

रुमानी या रैडिकल प्रारुप

पठ्यक्रम का यह प्रारुप मुक्ति को शिक्षा का लक्ष्य मानता है। इसका मानना है कि विद्यार्थियों को, जागरुकता, दक्षता तथा अभिरुचि विकसित करने की आवश्यकता है ताकि अपने इन्द्रियों या अपने जीवनचर्या को नियंत्रित करने में वो सक्षम हो सके। इस सिद्धांत की पृष्ठभूमि में यह मान्यता कार्य करती है कि वर्तमान समाज भ्रष्ट एवं दमनकारी है तथा इसको ठीक करना भी संभव नहीं है।

रुमानी या रैडिकल प्रारुप की विशेषताएँ-

1. विद्यार्थी को मुक्ति मार्ग पर अग्रसर करता है।
2. इस प्रारुप का आधार दार्शनिक सिद्धांत है।
3. इस प्रकार का पाठयचर्या प्रारुप मनुष्यों के मध्य पारस्परिक अंतर्क्रिया को बढ़ावा देता है।

रुमानी या रैडिकल प्रारुप की सीमाएँ

1. यह समाज के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है।
2. सिर्फ मुक्ति को शिक्षा का उद्देश्य नहीं माना जा सकता है।

मानावतावादी प्रारुप

पाठयचर्या के इस प्रारुप के समर्थकों में अब्राहम मास्लो एवं कार्ल रोजर्स का नाम उल्लेखनीय है। यहं मुख्य रुप से अब्राहम मास्लो द्वारा विकसित सेल्फ एक्चुलाइजेशन के सिद्धांत पर आधारित है। पाठयचर्या का यह प्रारुप मनुष्य अर्थात विद्यार्थी की क्षमताओं को विकसित करने और विद्यार्थी को स्वनिर्माण की प्रक्रिया में शामिल करने संबंधी एवं गतिविधियों एवं पाठ्यवस्तुओं को केन्द्र में रखता है। पाठयचर्या का यह प्रारुप मानता है कि 'स्व-निर्माण' अधिगम का अंतिम उद्देश्य है तथा संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यात्मक पक्ष अलग-अलग होते हुए भी एक-दूसरे से सार्थक रुप में सहसंबंधित हैं और इन तीनों को इसी रुप में पाठयचर्या में शामिल भी किया जाना चाहिए।

मानवतावादी प्रारुप की विशेषताएँ

1. यह व्यक्ति विशेष को सामर्थ्यवान बनाता है। प्रत्येक व्यक्ति खुद की आवश्यकताओं को भली-भाँति जानने में समर्थ हो जाता है
2. यह प्रारुप विद्यार्थियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य को भी सम्मान देता है।
3. गह कक्षाकक्ष से बाहर की दुनिया के लिए आवश्यक शिक्षा तक विद्यार्थियों की पहुँच बनाने हेतु कक्षाकक्ष गतिविधि एवं विद्यार्थी के मध्य एक प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करता है।

परिणामस्वरुप, विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन में, विद्यालय में सीखे गए ज्ञान का आसानी से प्रयोग कर सकता है।

मानवतावादी प्रारुप की सीमाएँ

1. समाज की आवश्यकता की तुलना में व्यक्ति विशेष की आवश्यकता पर बल देता है
2. इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप के निर्माण के लिए शिक्षक को उत्तरदायी माना गया है।लेकिन शिक्षक के पर्याप्त मात्रा में योग्य नहीं होने के कारण तथा संसाधन एवं समय की कमी के कारण पाठयचर्या के इस प्रारुप का निर्माण कठिन हो जाता है
3. विद्यार्थियों की रुचियों एवं वर्तमान परिदृश्य के लिए आवश्यक कौशलों के मध्य संतुलन स्थापित करना एक दुष्कर कार्य है।

अभ्यास प्रश्न

14. समूह 'क' को समूह 'ख' से मिलाइए।

समूह क	समूह ख
1. मानवतावादी प्रारुप	(अ) पाठयचर्या निर्माण में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों की सक्रिय भूमिका
2. रुमानी या रैडिकल प्रारुप	(ब) विद्यार्थियों के स्वाभाविक अनुभव पर आधारित
3. अनुभव केन्द्रित प्रारुप	(स) समाज के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह
4. बाल केन्द्रित प्रारुप	(द) व्यक्ति विशेष की आवश्यकता पर अधिक बल

9.3.3 समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप

किसी वास्तविक या उपकल्पित समस्या को केन्द्र में रखकर पाठ्यवस्तु को संगठित करने के लिए जब पाठयचर्या प्रारुप का निर्माण किया जाता है, तो इसे समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप कहा जात्ता है। पाठयचर्या के इस प्रारुप में विद्यार्थी अधिक शामिल होते हैं क्योंकि उनका उद्देश्य अपनी समस्या का समाधान करना होता है। इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप में मुख्य रुप से निम्नलिखित समस्याओं को ध्यान रखा जाता है:

1. जीवन की वास्तविक समस्याएँ
2. विद्यालयी जीवन की समस्याएँ
3. स्थानीय परिस्थिति जनित समस्याएँ
4. दार्शनिक एवं नैतिक समस्याएँ।

समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप की विशेषताएँ

इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप की मुख्य विशेषताएँ यह है कि पाठयचर्या जिसके लिए बनाया जाता है वो सिर्फ सैद्धांतिक रुप से हीं नहीं वरन् व्यवहारिक रुप से भी अधिक सहभागिता प्रदर्शित करता है।

समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप की सीमाएँ

इस पाठयचर्या प्रारुप की मुख्य सीमा यह है कि समय, धन एवं आवश्यक संसाधनों के अभाव में इसका क्रियान्वयन समुचित रुप से नहीं हो पाता है।

समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप के प्रकार

पाठयचर्या के इस प्रारुप के तीन प्रकार हैं-

1. जीवन-परिस्थिति प्रारुप
2. आधारभूत प्रारुप
3. सामाजिकि समस्या एवं सरंचनात्मकवादी प्रारुप

जीवन परिस्थिति प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप हर्बर्ट स्पेंसर के पाठयचर्या संबंधी लेखों पर आधारित है। उन्होंने अपने पाठयचर्या संबंधी लेखों में उन क्रिया-कलापों जो जीवन को उन्नत करता है, व्यक्ति विशेष के सामाजिक और राजनैतिक संबंधों को बनाए रखता है, अवकाश के समय में तथा कार्य एवं महसूस करने की क्षमता में वृद्धि करता है, पर बल दिया गया है। जीवन परिस्थिति पाठयचर्या प्रारुप भी इससे प्रकार की क्रियाओं को पठ्यक्रम में शामिल करने पर बल देता है। पाठयचर्या का यह प्रारुप म्रुख्य रुप से तीन मान्याअताओं पर आधारित है:

जीवन की जटिल परिस्थितियाँ समाज को बेहतर एवं सफल कार्य प्राणली के लिए महत्वपूर्ण है परिणामस्वरुप उनको केन्द्र में रखकर एक पाठयचर्या बनाना आवश्यक है;

विद्यार्थी जो पढ़ते हैं, उसकी प्रासंगिकता सामाजिक जीवन के संदर्भ में देखते हैं, यदि पाठ्यवस्तु सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर संगठित किया गया है।विद्यार्थी समाज के विकास में प्रत्यक्ष रुप से सहभागी होंगे।

इस प्रकार जब पाठयचर्या प्रारुप का निर्माण विद्यार्थी की सामाजिक विकास में प्रत्यक्ष सहभागिता को बढ़ाने के उद्देश्य के साथ, विद्यार्थी के विगत एवं वर्तमान अनुभवों के द्वार जीवन के आधारभूत क्षेत्रों का विश्लेषण कर, उन क्षेत्रों को विकसित करनेवाले कार्य-कलापों को केन्द्र में रखकर किया जाता है, तो उसे जीवन-परिस्थिति पाठयचर्या प्रारुप कहते हैं। अति सरल शब्दों में यदि कहा जाय तो पाठयचर्या का यह प्रारुप जीवन की विभिन्न परिस्थितियों एवं समस्याओं जैसे स्वास्थ्य,

आवास, व्यवसाय, नैतिकता आदि पर आधारित होता है।

जीवन परिस्थिति प्रारुप की विशेषताएँ

1. पाठ्यवस्तु का जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से संबंधित होने के कारण, पाठयचर्या की प्रासंगिकता में वृद्धि हो जाती है।
2. विषयवस्तु को खंडों के बजाय एक समग्र इकाई के रुप में प्रस्तुत करता है; तथा
3. समस्या समाधान विधि का पाठयचर्या के इस प्रारुप में बहुत प्रयोग किया जाता है।

जीवन परिस्थिति प्रारुप की सीमाएँ-

1. अधिगम के आवश्यक क्षेत्रों एवं उसके क्रम को कैसे निर्धारित किया जाएगा, पाठयचर्या का यह प, इस विषय पर मौन है।
2. विद्यार्थियों को उनके सांस्कृतिक विरासत से बहुत अधिक परिचित नहीं करा पाता है।

आधारभूत (कोर) प्रारुप

इस प्रकार का पाठ्यक्रम प्रारुप औपचारिक शिक्षा पर आधारित होता है। समस्याएँ सामान्य मानवीय क्रियाओं पर आधरित होती हैं जिनका चयन शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों मिलकर कर सकते हैं या दोनों में से कोई एक भी। विद्यार्थियों के समक्ष क्रियान्वित करने से पहले पाठयचर्या पूरी तरह नियोजित हो जाता है लेकिन इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि यदि आवश्यकता पड़े तो उसमें सामंजन किया जा सके।

आधारभूत (कोर) प्रारुप की विशेषताएँ-

1. पाठ्यवस्तु में एकरुपता होती है।
2. पाठ्यवस्तु प्रासंगिक होती है।
3. कक्षाकक्ष में प्रजातंत्र की भावना के विकास का संवर्द्धन करता है।

आधारभूत (कोर) प्रारुप की सीमाएँ

1. इसके लिए विशेष रुप से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती है।
2. पाठ्यसामग्री की प्राप्ति भी एक दुष्कर कार्य है।

सामाजिक समस्या एवं पुनर्निर्माणवादी प्रारुप

पाठयचर्या के इस प्रारुप का मुख्य लक्ष्य अनेक गंभीर मानवीय समस्याओं के विश्लेषण प्रक्रिया में, विद्यार्थी को शामिल करना होता है। यह मुख्य रुप से उन क्रिया-कलापों पर आधारित होता है जो विद्यार्थी को स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का आलोचनात्मक विश्लेषण करने में

सहायता प्रदान करते हैं। व्यापारियों एवं समाज के राजनीतिक क्रिया-कलापों तथा अर्थव्यवस्था पर उसके प्रभाव को भी पाठ्यवस्तु के अंतर्गत रखा जाता है।

सामाजिक प्रारुप की विशेषताएँ

1. इस पाठयचर्या प्रारुप की प्रमुख विशेषता यह है कि पाठ्यवस्तु एवं शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण उसी के द्वारा किया जाता है जो वास्तविक रुप से पाठयचर्या का निर्माण करता है।
2. पाठयचर्या के इस प्रारुप का उद्देश्य समाज का पुनर्निर्माण है।

सामाजिक प्रारुप की सीमाएँ:

इस प्रारुप की मुख्य सीमा यह है कि यह सामाजिक विकास को व्यक्तिगत विकास की तुलना में अधिक बल देता है।

अभ्यास प्रश्न

15. निम्न में से कौन समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप का प्रकार नहीं है:
    i. जीवन परिस्थिति प्रारुप
    ii. आधारभूत प्रारुप
    iii. सामाजिक समस्या एवं सरंचनात्मकतावादी प्रारुप
    iv. मानवतावादी प्रारुप
16. समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है-
    i. अधिगमकर्ता सिर्फ सैद्धांतिक रुप से शामिल होता है।
    ii. सैद्धंतिक एवं व्यावहारिक दोनों रुपों में शामिल होता है।
    iii. आवश्यक संसाधनों के अभाव में अनुचित क्रियान्वयन।
    iv. उपयुक्त सभी सत्य है।
17. जीवन परिस्थिति प्रारुप किसके लेखों पर मुख्य रुप से आधारित है:
    i. अब्राहाम मॉस्लो
    ii. कार्ल रोजर्स
    iii. फ्रोबेल
    iv. हर्बर्ट स्पेंसर
18. आधारभूत(कोर) प्रारुप के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है:
    i. पाठ्यवस्तु में एकरुपता होती है
    ii. पाठ्यवस्तु प्रासंगिक होती है
    iii. पाठ्यसामग्री की प्राप्ति एक दुष्कर कार्य है

iv. इसके लिए विशेष रुप से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता नहीं है।

9.4 सारांश

शिक्षा प्रणाली के एक महत्वपूर्ण अंग, पाठयचर्या के निर्माण से पहले उसके रुप-रेखा अर्थात उसके प्रारुप के विभिन्न प्रकार का ज्ञान विद्यार्थी के लिए अति उपयोगी है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत इकाई में पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकार की विस्तृत व्याख्या उनकी विशेषताओं एवं सीमाओं के साथ की गई है। स्थान-स्थान पर उपयुक्त उदाहरणों एवं रेखाचित्रों के द्वारा विषयवस्तु को और अधिक स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है ताकि विषयवस्तु अधिगम कर्ता के लिए सुग्राह्य हो सके। पाठयचर्या प्रारुप के मुख्य प्रकार के साथ-साथ उनके उप प्रकारों का भी विस्तृत वर्णन किया गया है ताकि विषयवस्तु अधिगमकर्ता को अधिक स्पष्ट हो सके और अधिगमकर्ता जीवन की वास्तविक परिस्थिति में इसका उपयोग कर सके। इस प्रकार यह इकाई विद्यार्थी के लिए अति उपयोगी सिद्ध होगी।

9.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. पाठयचर्या प्रारुप के 3प्रकार होते हैं
2. विषय केन्द्रित प्रारुप
3. अत्यधिक संरचनात्मक स्वरुप
4. हाँ
5. विषय केन्द्रित प्रारुप
6. 1950
7. ब्रुनर
8. विद्यार्थियों
9. सत्य
10. असत्य
11. असत्य
12. सत्य
13. सत्य
14. (1) द (2) स (3) ब (4) अ
15. iv मानवतावादी प्रारुप
16. i अधिगमकर्ता सिर्फ सैद्धांतिक रुप से शामिल होता है।
17. iv हर्बर्ट स्पेंसर

18. iv इसके लिए विशेष रुप से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता नहीं है।

9.6 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Retrived from www.slideshare.com on 15 March,2013
2. Retrived from www.slideshare.com on 17 March,2013

9.7 सहायक/उपयोगी पाठ्यसामग्री

1. Anderson, D.C. (1980). Evaluating Curriculum proposals : A critical Guide. Wiley, New York.
2. Rug, H.O. (1927). The foundations of curriculum making. Twenty-sixth yearbook of the
3. National Society for the Study Of Education. Part II, Public school publishing. Bloomington, Illinois.
4. Schubert, W.H. (1980). Curriculum Books : the first eighty years : context, commentary and bibliography. University press of America, Lanham, Maryland.

9.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकारों का उनकी विशेषताओं एवं सीमाओं के साथ वर्णन करें।
2. विषय केन्द्रित प्रारुप के विभिन्न प्रकारों का उनकी विशेषताओं एवं सीमाओं के साथ वर्णन करें।
3. विद्यार्थी केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकारों का वर्णन उनकी विशेषताओं एवं सीमाओं के साथ करें।
4. आप जिस पाठयचर्या का अध्ययन कर रहे हैं वो किस पाठयचर्या प्रारुप का अनुपालन करता है ? तर्कसंगत उत्तर दें।

इकाई 10 पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न प्रतिमान

10.1 प्रस्तवाना

10.2 उद्देश्य

10.3 पाठयचर्या प्रतिमान का अर्थ एवं संप्रत्यय

10.4 पाठयचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण

10.4.1 पाठयचर्या का उद्देश्य/मूल्यांकन प्रतिमान

10.4.2 पाठयचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान

10.4.3 पाठयचर्या का परिस्थिति प्रतिमान

10.5 पाठयचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण: स्वरुप के आधार पर

10.5.1 पाठयचर्या विकास का सामान्य प्रतिमान

10.5.2 पाठयचर्या विकास का विशिष्ट प्रतिमान

10.6 सारांश

10.7 शब्दावली

10.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

10.9 संदर्भ ग्रंथ

10.10 निबंधात्मक प्रश्न

10.1 प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा एक आवश्यक प्रक्रिया है जिसके संपादन के लिए पाठयचर्या एक आवश्यक शर्त्त है। पाठयचर्या राष्ट्र की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक स्थिति आदि पर निर्भर करता है। अब चूकि, राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थितियाँ परिवर्तनशील है फलस्वरुप पाठयचर्या भी परिवर्तित होते रहता है। इस प्रकार, देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार, पाठयचर्या के कई रुप सामने आए लेकिन ये अस्पष्ट थे और इनके पीछे कोई वैज्ञानिक आधार नहीं था। कालांतर में जब पाठयचर्या निर्माण के क्षेत्र में शोधकार्य प्रारंभ हुए, तो पाठयचर्या निर्माण के अनेक प्रतिमान विकसित हुए। प्रस्तुत इकाई इन्हीं पाठयचर्या प्रतिमानों पर प्रकाश डालती है।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

1. पाठयचर्या निर्माण के अर्थ एवं संप्रत्यय को समझ सकेंगे
2. पाठयचर्या प्रतिमान का विभिन्न आधारों पर वर्गीकरण कर सकेंगे
3. विभिन्न पाठयचर्या प्रतिमानों का उदाहरण प्रस्तुत कर सकेंगे।

10.3 पाठयचर्या प्रतिमान का अर्थ एवं संप्रत्यय

प्रतिमान शब्द आंग्ल भाषा के शब्द 'मॉडल' का हिन्दी रुपांतर है, जिसका अर्थ होता है, किसी व्यक्ति, वस्तु, अथवा क्रिया के वास्तविक स्वरुप का बोध कराने वाला परिकल्पनात्मक या कार्यात्मक रुप। हेनरी सीसिल वील्ड ने 'युनिवर्सल डिक्शनरी ऑफ एंगलिश लैंग्वेज' में मॉडल को परिभाषित करते हुए लिखा है – " किसी आदर्श के अनुरुप व्यवहार क्रिया को ढ़ालने तथा क्रिया की ओर निर्देशित करने की प्रक्रिया, मॉडल या प्रतिमान होती है।

पाठयचर्या शब्द को प्रतिमान के साथ जोड़ देने पर यह पाठयचर्या प्रतिमान हो जाता है, जिसका अर्थ होता है 'पाठयचर्या का स्वरुप' जो शैक्षिक लक्ष्यों पर आधारित होता है। पाठयचर्या प्रतिमान को निम्न शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है- पाठयचर्या प्रतिमान से आशय शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु, पाठयचर्या के निर्माण या इसके लिए दिशा-निर्देशन की प्रक्रिया के स्वरुप निर्धारण से है।

अभ्यास प्रश्न

1. प्रतिमान शब्द आंग्ल भाषा के शब्द 'मॉडल' का हिन्दी रुपांतर है?
2. हेनरी सीसिल वील्ड द्वारा 'युनिवर्सल डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज' में 'मॉडल' शब्द के लिए जो अर्थ दिया है उसे लिखें।

10.4 पाठयचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण

चूँकि पाठयचर्या में उद्देश्य, प्रक्रिया एवं परिस्थिति तीन तथ्यों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है, इसलिए इन तीन तथ्यों में परिवर्तन के साथ पाठयचर्या विकास के प्रतिमान में भी परिवर्तन होते रहते हैं। वर्तमान में मौजूद पाठयचर्या प्रतिमान को उपर्युक्त तीन तथ्यों के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है। ये तीन वर्ग निम्नलिखित हैं:

1. उद्देश्य या मूल्यांकन प्रतिमान
2. प्रक्रिया प्रतिमान
3. परिस्थिति प्रतिमान

10.4.1 पाठयचर्या का उद्देश्य/मूल्यांकन प्रतिमान

इस प्रतिमान में शैक्षिक उद्देश्यों को अत्यधिक महत्व प्रदान करते हुए पाठयचर्या का निर्माण किया जाता है। उद्देश्यों की प्राप्ति का ज्ञान शिक्षार्थी के व्यवहार में वांछित परिवर्तन से होता है और शिक्षार्थी के व्यवहार में परिवर्तन का ज्ञान मूल्यांकन से होता है। अत: इसे मूल्यांकन प्रतिमान भी कहते हैं। इस प्रतिमान में निम्नलिखित सोपान का अनुसरण किया जाता है:

i. शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण
ii. उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अधिगम
iii. वांछित व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन

पाठयचर्या विकास का यह प्रतिमान व्यावहारिक मनोविज्ञान पर आधारित होता है।

10.4.2 पाठयचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान

इस प्रकार के प्रतिमान में प्रक्रिया को प्राथमिकता दी जाती है। इस प्रकार के प्रतिमान में पाठ्यवस्तु की सहायता से मानवीय गुणों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। चूँकि यह एक प्रक्रिया प्रतिमान है और शिक्षण प्रक्रिया का संपादन मुख्य रुप से शिक्षक के द्वारा होता है। अतः इस प्रकार के प्रतिमान में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह प्रतिमान 'मानव-व्यवस्था सिद्धांत' पर निर्भर करता है। इस प्रकार के प्रतिमान में शिक्षण व्यवस्था छात्र-केन्द्रित होती है तथा इसमें छात्रों की अवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा जाता है। इसी प्रतिमान के आधार पर पाठयचर्या को अनुभव-केन्द्रित, कार्य-केन्द्रित तथा एकीकृत पाठयचर्या का निर्माण किया गया है।

10.4.3 पाठयचर्या का परिस्थिति प्रतिमान

इस प्रतिमान के अंतर्गत उन परिस्थितियों को महत्व दिया जाता है जो शिक्षा एवं पाठयचर्या को प्रभावित करती है। प्रणाली उपागम के प्रयोग द्वारा शैक्षिक परिस्थितियों के वाह्य एवं आंतरिक घटकों को पहचाना जाता है। तत्पश्चात इन घटकों को ध्यान में रखकर पाठयचर्या का निर्माण किया जाता है। इस प्रतिमान के आधार पर विषय केन्द्रित पाठयचर्या , कोर पाठयचर्या , बाल-केन्द्रित पाठयचर्या तथा सुसंबद्ध पाठयचर्या आदि का निर्माण किया गया है।

अभ्यास प्रश्न

3. पाठयचर्या प्रतिमान के सामान्य वर्गीकरण के अनुसार उसके कितने प्रतिमान हैं?
4. पाठयचर्या के उद्देश्य/मूल्यांकन प्रतिमान में -------------को अत्यधिक महत्व प्रदान करते हुए पाठयचर्या का निर्माण किया जाता है।
5. ------------- प्रतिमान 'मानव-व्यवस्था सिद्धांत' पर निर्भर करता है।

6. पाठयचर्या के उद्देश्य प्रतिमान को मूल्यांकन प्रतिमान भी कहते हैं। (सत्य/असत्य)
7. -------------- प्रतिमान के आधार पर विषय केन्द्रित पाठयचर्या , कोर पाठयचर्या , बाल-केन्द्रित पाठयचर्या तथा सुसंबद्ध पाठयचर्या आदि का निर्माण किया गया है।
8. पाठयचर्या के परिस्थिति प्रतिमान के अंतर्गत उन परिस्थितियों को महत्व दिया जाता है जो शिक्षा एवं पाठयचर्या को प्रभावित करती है। (सत्य/असत्य)
9. -------------- प्रकार के प्रतिमान में शिक्षण व्यवस्था छात्र-केन्द्रित होती है।

10.5 पाठयचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण

स्वरुप के आधार पर पाठयचर्या प्रारुप को दो मुख्य भागों में बाँटा गया है:

1. पाठयचर्या विकास का सामान्य प्रतिमान
2. पाठयचर्या विकास के कुछ विशिष्ट प्रतिमान।

10.5.1 पाठयचर्या विकास का सामान्य प्रतिमान

इस प्रकार के पाठयचर्या प्रतिमान का विकास शिक्षकों एवं शिक्षण प्रक्रिया के अन्य सहभागी घटकों के सहयोग से सामान्य रुप में कर लिया जाता है। इस प्रकार के प्रतिमान का निर्माण में मुख्य रुप से निम्न सोपानों का प्रयोग किया जाता है:

1. शिक्षक तथा शिक्षण प्रक्रिया के अन्य सजीव तथा मूर्त घटक के दल द्वारा पाठयचर्या के क्षेत्र का सर्वेक्षण तथा उपल्ब्ध साधानों का आकलन।
2. शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण।
3. शैक्षिक उद्देश्यों के अनुकूल पाठ्यवस्तु का चयन एवं निर्माण।
4. विद्यालयों में पाठ्यवस्तु के पूर्व परीक्षण, पुनःमूल्यांकन एवं संशोधन।
5. पाठ्यवस्तु का कुछ विद्यालयों में पूर्व परीक्षण।
6. पूर्व-परीक्षण के आधार पर पाठ्यसामग्री का मूल्यांकन एवं आवश्यकतानुसार संशोधन।
7. आवश्यकता पड़ने पर व्यापक स्तर पर पूर्व-परीक्षण पुनः मूल्यांकन तथा संशोधन।
8. तैयार सामग्री का प्रकाशन एवं प्रसार तथा उसके उपयोग के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण का आयोजन।
9. पाठयचर्या का क्रियान्वय्रन।
10. पाठयचर्या का मूल्यांकन एवं आवश्यकतानुसार संशोधन ।

10.5.2 पाठयचर्या विकास के विशिष्ट प्रतिमान

जब पाठयचर्या विशेषज्ञों द्वारा पाठयचर्या विकास के प्रतिमान तैयार किए जाते हैं तो इसे पाठयचर्या विकास के विशिष्ट प्रतिमान कहे जाते हैं। विशेषज्ञों ने कई महत्वपूर्ण प्रतिमान विकसित किए हैं जिनमें से कुछ प्रमुख का निम्नलिखित हैं:

1. पाठयचर्या विकास का व्यस्था आधारित प्रतिमान
2. पाठयचर्या विकास का कार्यात्मक प्रतिमान
3. पाठयचर्या आयोजन का प्रक्रिया प्रतिमान
4. हिल्दा टाबा का व्यापक मूल्यांकन पाठयचर्या प्रतिमान
5. मुखोपाध्याय निर्मित पाठयचर्या प्रतिमान
6. सरन अदा प्रणाली पाठयचर्या प्रतिमान
7. टेलर का प्रतिमान।

पाठयचर्या का व्यवस्था आधारित प्रतिमान

पाठयचर्या के व्यवस्था आधारित प्रतिमान के प्रतिपादक श्री एम0 एस0 हक महोदय है। इस प्रतिमान में पाठयचर्या को निवेश के रुप में तथा शिक्षित मानव शक्ति को उत्पाद माना जाता है। यह प्रतिमान पाठयचर्या परिवर्तन के समय स्वीकृत सामाजिक मूल्यों को राष्ट्रीय लक्ष्यों का एक आवश्यक अंग मानाता है।

अभ्यास प्रश्न

10. जब पाठयचर्या विशेषज्ञों द्वारा पाठयचर्या विकास के प्रतिमांन तैयार किए जाते हैं तो वे पाठयचर्या विकास के--------- कहे जाते हैं।
11. पाठयचर्या के व्यवस्था आधारित प्रतिमान के प्रतिपादक हैं -----------।
12. पाठयचर्या के व्यवस्था आधारित प्रतिमान में पाठयचर्या को निवेश के रुप में तथा शिक्षित मानव शक्ति को उत्पाद माना जाता है।(सत्य/ असत्य)

पाठयचर्या विकास का कार्यात्मक प्रतिमान

इस प्रतिमान का प्रतिपादन जॉन एफ0 केर ने किया था। इस प्रतिमान को निम्नलिखित रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है:

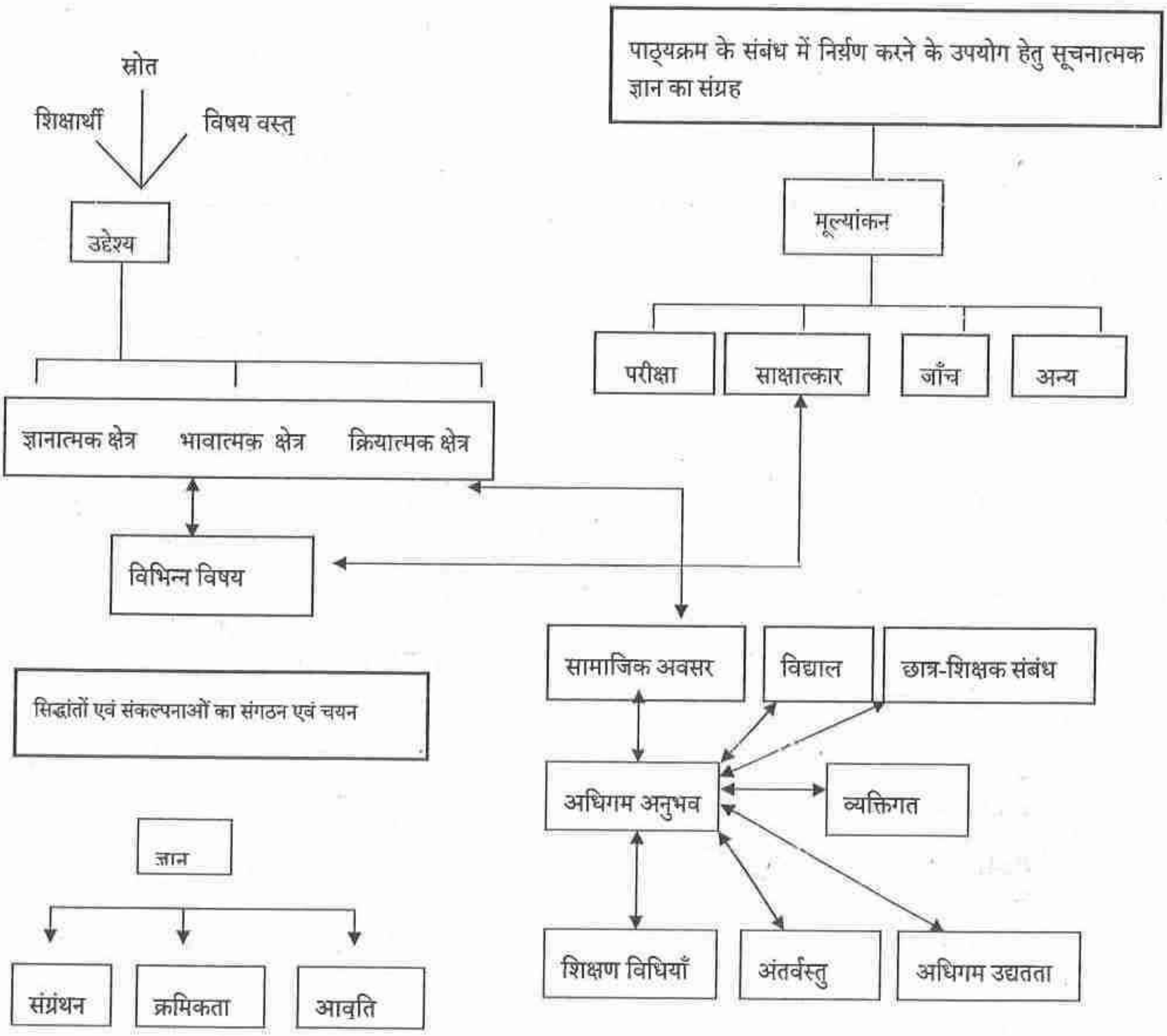
पाठ्यक्रम के संबंध में निर्णण करने के उपयोग हेतु सूचनात्मक ज्ञान का संग्रह
स्रोत
शिक्षार्थी
विषय वस्तु
उद्देश्य
मूल्यांकन
परीक्षा
साक्षात्कार
जाँच
अन्य
ज्ञानात्मक क्षेत्र
भावात्मक क्षेत्र
क्रियात्मक क्षेत्र
विभिन्न विषय
सामाजिक अवसर
विद्याल
छात्र-शिक्षक संबंध
सिद्धांतों एवं संकल्पनाओं का संगठन एवं चयन
अधिगम अनुभव
व्यक्तिगत
ज्ञान
संग्रंथन
क्रमिकता
आवृति
शिक्षण विधियाँ
अंतर्वस्तु
अधिगम उद्यतता

विकास विशेष रुप से भारतीय परिस्थितियों के लिए किया गया है। इस प्रतिमान में पाठयचर्या विकास की प्रक्रिया को, जिन्हें कुल पाँच सोपानों में प्रतिपादित किया जाता है। इन पाँच सोपानों में से प्रथम तीन पाठयचर्या विकास की प्रथम अवस्था से संबंधित होते हैं तथा अंतिम दो सोपान पाठयचर्या विकास की दित्तीय या अंतिम अवस्था से संबंधित होते हैं। इन सोपानों का क्रमवार विवरण निम्नलिखित है:

1. पाठयचर्या विकास की प्रथम अवस्था-
   i. सोपान 1-प्रारंभिक उद्देश्यों का निर्धारण(छात्र, समाज एवं पाठ्यवस्तु के आधार पर)
   ii. सोपान 2 उद्देश्यों का विशिष्टीकरण(व्यावहारिक रुप में लिखना),पाठ्यवस्तु की व्यवस्था, अनुदेशन तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के स्वरुप को निश्चित करना जिससे छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके।
   iii. सोपान 3 उपलब्ध साधनों का समुचित उपयोग।

2. पाठयचर्या विकास की द्वितीय अवस्था
   i. सोपान 4 - शिक्षकों एवं विकास स्रोत के आधार पर पाठयचर्या के प्रारुप में सुधार (निरंतर निरीक्षण एवं मूल्यांकन द्वारा)
   ii. सोपान 5- पाठयचर्या के प्रारुप में किया गया सुधार कितना उपयोगी एवं सार्थक रहा है, इसके लिए शिक्षण अधिगम क्रियाओं के निरीक्षण एवं मूल्यांकन के द्वारा पाठयचर्या का मूल्यांकन। पाठयचर्या का यह मूल्यांकन भी उद्देश्य केन्द्रित होना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

13. स्तंभ 'अ' स्तंभ 'ब' को मिलाइए

(अ)	(ब)
(अ) व्यवस्था आधारित प्रतिमान	(1) हिल्दा टाबा
(ब) कार्यात्मक प्रतिमान	(2) सेलर एवं अलेक्जेंढर
(स) आयोजन का प्रक्रिया प्रतिमान	(3) जॉन एफ0 केर
(द) व्यापक मूल्यांकन प्रतिमान	(4) एम0 एस0 हक

सरन अदा प्रणाली पाठयचर्या प्रतिमान

वाई0 सरन ने सन् 1976 में इस प्रतिमान का विकास किया। चूकि इस प्रतिमान का विकास भारतीय परिस्थिति को ध्यान में रखकर किया गया है इसलिए यह प्रतिमान भारत में बहुत प्रचलित हुआ। प्रणाली विश्लेषण के माध्यम से विकसित इस प्रतिमान में विशिष्ट उद्देश्यों को प्राथमिकता दी जाती है तथा तकनीकी के तीन प्रमुख पक्षों- अदा, प्रदा एवं प्रक्रिया के आधार पर पाठयचर्या को विश्लेषित

किया जाता है। इस विश्लेषण के पश्चात पाठयचर्या का विकास एवं सुधार किया जाता है। इस प्रतिमान की प्रमुख मान्यताएँ निम्नलिखित हैं:

1. कोई भी पाठयचर्या हो उसमें सुधार एवं विकास की संभावना सदैव रहती है क्योंकि वह पूर्ण नहीं होता है;
2. कोई नव-निर्मित पाठयचर्या भी पूर्ण नहीं हो सकता है, लेकिन वर्तमान पाठयचर्या के कमजोरियों एवं समस्याओं को दूर कर उसे उन्नत बनाया जा सकता है जिससे वह अत्यधिक उपयोगी हो जाए;
3. प्रणाली विश्लेषण से की सहायता से सुधारा गया पाठयचर्या अधिक उपयोगी होता है।

सरन अदा प्रतिमान के प्रमुख पक्ष- इस प्रतिमान के तीन प्रमुख पक्ष हैं जो निम्नलिखित हैं:

1. अदा- इस पक्ष के अंतर्गत विशेषज्ञों के सुझाव एवं आवश्यकता के आधार पर पाठ्यवस्तु के स्रोतों की पहचान की जाती है। उद्देश्यों का प्रतिपादन आवश्यकता के अनुकूल किया जाता है तथा उद्देश्यों के अनुकूल अन्तर्वस्तु चयनित की जाती है। इसके पश्चात उद्देश्य एवं पाठ्यवस्तु की सहायता लेकर पाठयचर्या के प्रारुप का निर्माण किया जाता है।
2. प्रक्रिया- जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है इस पक्ष में क्रिया होती है । ये क्रिया उद्देश्यों को व्यावहारिक रुप में लिखा जाता है अर्थात उन्हें व्यावहारिक रुप दिया जाता है। पाठयचर्या के क्रियान्वयन के लिए उपयुक्त संसाधनों का विकास भी इसी पक्ष में किया जाता है। पाठयचर्या का क्रियान्वयन भी इसी पक्ष का हिस्सा है।अधिगम अनुभवों का प्रस्तुतीकरण भी इसी पक्ष का एक अंग है।
3. प्रदा- प्रदा पक्ष का इस प्रतिमान में अपना अलग महत्व है। वांछित उद्देश्य प्राप्त हुए की नहीं, यदि प्राप्त हुए तो किस सीमा तक, इन बातों की जानकारी प्रदा पक्ष के द्वारा हीं होती है। इस पक्ष का सबसे महत्वपूर्ण अंग मूल्यांकन प्रणाली होता है। यह प्रणाली उद्देश्य केन्द्रित होती है। इस प्रणाली का प्रयोग दो प्रमुख कार्यों को संपादित करने के लिए किया जाता है। ये दो प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं:

- पहला, इस बात का निर्णय करना कि वांछित उद्देश्य प्राप्त हुए हैं कि नहीं और यदि हुए है तो किस सीमा तक;
- दूसरा, यदि वांछित उद्देश्य प्राप्त नहीं हुए या कुछ सीमा तक ही हुए तो इसका कारण क्या है और इसका निवारण क्या होगा?

इस प्रकार, प्रतिमान के ये तीन पक्ष महत्वपूर्ण हैं एवं पाठयचर्या विकास को दिशा प्रदान करते हैं। सरन अदा प्रतिमान के प्रमुख सोपान- इस प्रतिमान में नौ सोपानों का अनुसरण किया जाता है। ये नौ सोपान निम्नलिखित है:

1. आवश्यकताओं के अनुमान हेतु सर्वेक्षण- साक्षात्कार, निरीक्षण एवं प्रश्नावली आदि का प्रयोग कर, छत्र, समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं का अनुमान लगया जाता है;
2. भविष्य की आवश्यकताओं का आकलन- इस पड़ाव पर व्यक्ति, समाज, एवं राष्ट्र के भविष्य की आवश्यकताओं का अनुमान लगाया जाता है। चूँकि शिक्षा विद्यार्थी को वर्तमान के साथ-साथ भावी जीवन के लिए भी तैयार करती है, इसलिए भविष्य की आवश्यकताओं का आकलन आवश्यक है।
3. उद्देश्यों की पहचान- सोपान एक तथा सोपान दो में अनुमानित आवश्यकताओं के आधार पर शैक्षिक उद्देश्यों की पहचान की जाती है।
4. उद्देश्यों को व्यवहारिक रुप में लिखना- इस पड़ाव पर रॉबर्ट मेगर्ट विधि या क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय मैसूर विधि (आर0 सी0 ई0 एम0 मेथड) का प्रयोग कर उद्देश्यों को व्यावहारिक रुप में लिखा जाता है। उद्देश्यों का व्यावहारिक रुप में लिखा जाना शिक्षण अधिगम क्रियाओं को सुनिश्चित करता है।
5. पाठ्यवस्तु का चयन- पाठ्यवस्तु, शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रमुख साधन है। अतः, उद्देश्यों, शिक्षण स्तर, तथा छात्रों की बोधगम्यता को ध्यान में रखकर इसका चयन किया जाता है।
6. मूल्यांकन प्रणाली का प्रारुप- इस प्रतिमान का छँठा सोपान मूल्यांकन प्रणाली के प्रारुप के निर्धारण का है। पाठयचर्या के सुधार एवं विकास हेतु ठोस आधार मूल्यांकन से ही प्राप्त होते हैं। अतः मूल्यांकन के लिए एक सुपरिभाषित प्रणाली का होना आवश्यक है।
7. संसाधनों का विकास- पाठयचर्या के बेहतर क्रियान्वयन के लिए संसाधनों का विकास आवश्यक है।
8. जाँच करना- छात्रों एवं उद्देश्यों के संदर्भ में पाठयचर्या की सार्थकता की जाँच की जाती है। यह कार्य अति महत्त्वपूर्ण है।
9. समीक्षा- इस पड़ाव पर पूरे प्रारुप की समीक्षा होती है और इस समीक्षा के पश्चात पाठयचर्या को अंतिम रुप दिया जाता है।

   इस प्रकार यह प्रतिमान अधिक व्यावहारिक है।

टेलर का प्रतिमान-

सन् 1949 में टेलर ने एक पुस्तक 'बेसिक प्रिंसिपल्स ऑफ करिकुलम एण्ड इन्स्ट्रक्शंस' प्रकाशित कराई जिसमें उन्होंने पाठयचर्या विकास के लिए एक प्रतिमान दिया। यह पाठयचर्या विकास का सर्वाधिक वैज्ञानिक प्रतिमान है। इस प्रतिमान के चार प्रमुख सोपान हैं, जो निम्नलिखित हैं:

1. उद्देश्यों का निर्धारण
2. उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अधिगम-अनुभवों का निर्धारण
3. अधिगम अनुभवों का प्रभावपूर्ण संगठन

4. उद्देश्यों की प्राप्ति का मूल्यांकन।

इस प्रतिमान के प्रथम सोपान में शिक्षक, सलाहकार समिति, विश्वविद्यालय के प्रशासक एवं शिक्षा उद्योग में शामिल अन्य लोग, समाज एवं शिक्षार्थी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, शिक्षा के उद्देश्यों के संबंध में निर्न्रण लेते हैं। उद्देश्यों का निर्धरण इस प्रतिमान के अन्य सोपानों के सफल क्रियान्वयन के लिए आवश्यक है क्योंकि स्पष्ट एवं सुपरिभाषित उद्देश्य ही शिक्षण प्रक्रिया को दिशा-निर्देशित करते हैं।

इस प्रतिमान का दूसरा सोपान उन अधिगम अनुभवों का निर्धारण करना है जो कि उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होते हैं।

तीसरे सोपान में यह विशेष रुप से ध्यान रखा जाता है कि जो भी अधिगम अनुभव निर्धारित किए जाए वो अधिगम के तीनों क्षेत्रों- संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यात्मक को अपने में समाहित किए हुए हो। अधिगम अनुभवों को सरल से जटिल की ओर तथा सामान्य से विशिष्ट की ओर के क्रम में व्यवस्थित किया जाए। इस प्रकार, तीसरा सोपान पूर्ण रुप से अधिगम अनुभवों के निर्धारण से संबंधित होता है।

चौथे सोपान में इस बात का निर्धारण किया जाता है कि वो कौन से तरीके होंगे जो यह मूल्यांकित करेंगे कि शिक्षण प्रक्रिया के उपरांत निर्धारित अधिगम मूल्यों की प्राप्ति हुई कि नहीं। अर्थात इस सोपान में निर्धारित अधिगम मूल्यों के शिक्षण प्रक्रिया के उपरांत प्राप्ति का मूल्यांकन के तरीके निर्धारित किए जाते हैं। मूल्यांकन के लिए मुख्य रुप से 'फॉलो-अप स्टड्जीस', 'स्नातक उपाधि धारक विद्यार्थियों के साक्षात्कार' एवं 'कार्यक्रम-समीक्षा' का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार इन चार सोपानों की सहायता से पाठयचर्या का विकास किया जाता है।

अभ्यास प्रश्न

14. सरन अदा प्रणाली पाठयचर्या का विकास सन् -------------------- ई0 में किया गया।
15. टेलर की पुस्तक का नाम -------------------------------- है।

10.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई शिक्षण प्रणाली के एक महत्वपूर्ण घटक पाठयचर्या से संबंधित है। बदलती हुई शिक्षण प्रणाली के कारण पाठयचर्या के कई रुप सामने आए। उन विभिन्न रुपों को विद्वानों द्वारा विभिन्न समूहों में वर्गीकृत किया गया। कालांतर में पाठयचर्या विकास के क्षेत्र में हो रहे शोध कार्यों के परिणामस्वरुप विद्वानों द्वारा पाठयचर्या विकास के प्रतिमान निर्मित किए गए, जिनमें पाठयचर्या निर्माण के लिए सुनिश्चित एवं क्रमबद्ध सोपान बताए गए ताकि पाठयचर्या विकास की क्रिया सरल

एवं वैज्ञानिक हो जाए। प्रस्तुत इकाई में इन्हीं प्रतिमानों की विस्तृत चर्चा की गई है। पाठयचर्या विकास के प्रतिमान के अर्थ एवं संप्रत्यय, पाठयचर्या विकास के प्रतिमान के वर्गीकरण एवं विभिन्न पाठयचर्या प्रतिमानों को समाहित किए हुए यह इकाई अपने-आप में अति उपयोगी है। साथ ही साथ यह पाठयचर्या विकास की प्रक्रिया में शामिल अन्य व्यक्तियों के लिए भी उपयोगी है।

10.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. प्रतिमान शब्द आंग्ल भाषा के शब्द 'मॉडल' का हिन्दी रुपांतर है
2. 'युनिवर्सल डिक्शनरी ऑफ एंगलिश लैंग्वेज' में मॉडल को परिभाषित करते हुए लिखा है – " किसी आदर्श के अनुरुप व्यवहार क्रिया को ढ़ालने तथा क्रिया की ओर निर्देशित करने की प्रक्रिया, मॉडल या प्रतिमान होती है।
3. पाठयचर्या प्रतिमान के सामान्य वर्गीकरण के अनुसार उसके तीन प्रतिमान हैं
4. शैक्षिक उद्देश्यों
5. पाठयचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान
6. सत्य
7. पाठयचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान
8. सत्य
9. पाठयचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान
10. विशिष्ट प्रतिमान
11. एम0 एस0 हक
12. सत्य
13. (अ) – 4
    (ब) – 3
    (स) - 2
    (द) – 1
14. 1976
15. बेसिक प्रिंसिपल्स ऑफ करिकुलम एण्ड इन्स्ट्रक्शंस

10.8 संदर्भ ग्रंथ

1. Howson, A.G. (ed.) (1970) **Developing a New Curriculum,** London, Hieneman Educational Books Ltd.

2. Kerr, John F. (ed.) (1977) **Changing the Curriculum**, London, University of London Press Ltd.
1. Tyler, R.W. (1969) **Basic Principales of Curriculum and Instruction,** University of Chicago Press.
2. Wyld, C. Henery (1961), **The Universal Dictionary of English Language London.**
3. Agrawal, J.C. (1993) **Development and Planning of Modern Education** New Delhi, Vikas Publishing House.
4. यादव, सियाराम (2011), **पाठयचर्या विकास**, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशंस

10.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठयचर्या विकास के प्रतिमान का अर्थ स्पष्ट करें।
2. पाठयचर्या विकास के प्रतिमान को वर्गीकृत करें।
3. पाठयचर्या विकास के सामान्य प्रतिमान का वर्णन करें।
4. सरन अदा प्रणाली पाठयचर्या प्रतिमान की व्याख्या करें।
5. हिल्दा टाबा द्वारा प्रतिपादित व्यापक मूल्यांकन पाठयचर्या प्रतिमान का वर्णन करें।

इकाई- 11 पाठ्यचर्या मूल्यांकन

11.1 प्रस्तावना
11.2 उद्देश्य
11.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की संकल्पना
11.4 पाठ्यचर्या निर्माण के चरण
11.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उद्देश्य
11.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार
11.7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता
11.8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व
11.9 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण
11.10 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की तकनीकें
11.11 सारांश
11.12 शब्दावली
11.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.14 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
11.15 निबंधात्मक प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक में निहित शक्तियों को जागृत कर उन्हें चरमोत्कर्ष पर ले जाना है। इसके द्वारा उसके व्यवहार में ऐसा परिवर्तन लाना है कि भविष्य की कठिनाइयों का सामना वह आसानी से कर जीवन को सरल तथा सहज बना सके। शिक्षा मात्र जानकारी प्राप्त करना नहीं बल्कि प्राप्त ज्ञान को कक्षा से इतर वास्तविक जीवन एवं वास्तविक परिस्थितियों में व्यवहार में लाना भी है। इस हेतु शिक्षा के कुछ लक्ष्य एवं उद्देश्य हैं। पाठ्यचर्या के माध्यम से यह प्रयास किया जाता है कि विद्यार्थी उन लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें। लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि पाठ्यचर्या के विभिन्न पथों एवं क्रियाकलापों में वे सन्निहित हो। पाठ्यचर्या बालक में उन शक्तियों, उन गुणों को जागृत करने में तथा भविष्य के लिए तैयार करने में सक्षम है, यह जानने हेतु पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक है। प्रस्तुत इकाई में पाठ्यचर्या मूल्यांकन से सम्बंधित विभिन्न बिन्दुओं का अध्ययन किया जाएगा।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

1. पाठ्यचर्या की संकल्पना को स्पष्ट कर सकेंगे।
2. मूल्यांकन को परिभाषित कर सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की संकल्पना का विश्लेषण कर सकेंगे।
4. पाठ्यचर्या विकास के विभिन्न चरणों को बता सकेंगे।
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकारों का नामोल्लेख कर सकेंगे।
6. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकारों का अन्तर स्पष्ट करते हुए उनकी व्याख्या कर पाएंगें।
7. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता को स्पष्ट कर सकेंगे।
8. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के महत्व को बता सकेंगे।
9. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विभिन्न चरणों की व्याख्या कर सकेंगे।
10. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु प्रयोग में लायी जाने वाली विभिन्न तकनीकों की व्याख्या कर पाएंगें।

11.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की संकल्पना

इस इकाई में मुख्य बिन्दुओं के साथ कुछ अन्य बिन्दुओं का अध्ययन किया जाएगा जो पाठ्यचर्या मूल्यांकन से सम्बंधित हैं तथा पाठ्यचर्या मूल्यांकन को समझने हेतु उनका उल्लेख करना आवश्यक है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन में दो शब्द निहित हैं; पहला शब्द है पाठ्यचर्या और दूसरा मूल्यांकन। सबसे पहले पाठ्यचर्या क्या है? पिछली इकाईयों में पाठ्यचर्या क्या है इसका अध्ययन किया जा चुका है अतः यहाँ हम अत्यंत संक्षिप्त रूप में जानेंगे कि पाठ्यचर्या क्या है।

पाठ्यचर्या - पाठ्यचर्या को सभी अनुभवों के योग या राशि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक शैक्षिक संस्थान में प्रदान किए जाते हैं। व्हीलर (1967) के अनुसार "पाठ्यचर्या का अर्थ विद्यालय के मार्गदर्शन में शिक्षार्थियों को नियोजित अनुभवों को देना है।" टैनर एवं टैनर (1975) ने भी पाठ्यचर्या को नियोजित एवं निर्देशित शिक्षण अनुभवों के रूप में माना है जो विद्यार्थियों में विद्यालय के तत्वावधान में व्यवस्थित पुनर्निर्माण के माध्यम से ज्ञान एवं अनुभवों के द्वारा विद्यार्थी का अकादमिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षमता में सतत एवं वांछित विकास करती है।

इस प्रकार से देखा जा सकता है कि पाठ्यचर्या उन अनुभवों का संकलन है जो विद्यालय के परिवेश में शिक्षार्थी को दी जाती हैं। परन्तु कुछ विद्वान इसे मात्र विद्यालय के वातावरण में दिए जा रहे अनुभवों से जोड़ कर नहीं देखते बल्कि इसे उच्चतर जीवन के लिए की जा रही प्रत्येक क्रियायें जो प्रतिदिन और दिन के प्रति घंटे में की जाती हैं, से जोड़कर देखते हैं। अगर व्यापक परिप्रेक्ष्य में दी गयी

पाठ्यचर्या की परिभाषाओं को देखा जाए तो ये मात्र विद्यालय और विद्यालयी अनुभवों एवं विद्यालय में दिया जा रहा ज्ञान ही नहीं है बल्कि इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ है। ले का मानना है कि "पाठ्यचर्या का विस्तार वहां तक है जहाँ तक जीवन का विस्तार है।" फ्रोबेल के अनुसार "पाठ्यचर्या संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए।" इस प्रकार विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या जीवन जीने के लिए आवश्यक कला को सीखने में मदद करती है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने पाठ्यचर्या को परिभाषित करते हुए कहा है कि-

"पाठ्यचर्या का अर्थ केवल उन सैद्धांतिक विषयों से नहीं है जो विद्यालयों में परंपरागत रूप से पढ़ाये जाते हैं, बल्कि इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी सम्मिलित होती है, जिनको विद्यार्थी विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला, खेल के मैदान तथा शिक्षक एवं विद्यार्थियों के अनेकों अनौपचारिक संबंधों से प्राप्त करता है। इस प्रकार से विद्यालय का संपूर्ण जीवन पाठ्यचर्या ही हो जाती है जो विद्यार्थियों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करती है और उनके संतुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देती है।"

विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या का अर्थ मात्र विद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगींण विकास के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रम से नहीं है बल्कि विद्यालय से बाहर के भी उन अनुभवों से है जो दिन के प्रत्येक घंटे में विद्यार्थी आजीवन प्राप्त करता रहता है। किन्तु समस्या यह है की विद्यालय से बाहर के अनुभवों को नियोजित नहीं किया जा सकता है या उन्हें मूल्यांकित कर उनमें संशोधन या परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत पाठ में हम पाठ्यचर्या के रूप में विद्यालय के अन्दर चलाए जा रहे शैक्षिक कार्यक्रम को ही संबोधित करेंगे।

पाठ्यचर्या के पश्चात् अब अगला प्रश्न है कि मूल्यांकन क्या है ?

मूल्यांकन - मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह दो शब्दों से मिलकर बना है मूल्य तथा अंकन, अर्थात् किसी भी चीज को मूल्य प्रदायित करनाया या मूल्य का निर्धारण करना. रेमर्स तथा गेज (1955) ने मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए कहा है कि "मूल्यांकन के अंतर्गत व्यक्ति या समाज या दोनों की दृष्टि से जो उत्तम एवं वांछनीय हो उसका ही प्रयोग किया जाता है।"

प्रो. दांडेकर ने मूल्यांकन की परिभाषा इस प्रकार दिया है "मूल्यांकन की परिभाषा एक व्यवस्थित प्रक्रिया के रूप में की जा सकती है जो इस बात को निश्चित करती है की किस सीमा तक विद्यार्थी शैक्षिक उद्देश्य प्राप्त करने में समर्थ रहा है।"

कोठारी कमीशन ने मूल्यांकन की व्याख्या इस प्रकार से की है "अब यह माना जाने लगा है कि मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है, जो कि संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा उसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है।"

पाठ्यचर्या निर्माण

NCERT के अनुसार "यह एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जो देखती है कि (i) निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों (specified educational objectives)की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है (ii) कक्षा में दिए गए अधिगम अनुभव (learning experiences) कितने प्रभावशाली रहे हैं तथा शिक्षा के लक्ष्य (goals of education) कितने अच्छे से पूर्ण हो रहे हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया से सम्बंधित है जो यह सुनिश्चित करता है की किन-किन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुयी है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन- इससे पहले इस इकाई में हम देख चुके हैं कि पाठ्यचर्या क्या है और मूल्यांकन क्या है। पाठ्यचर्या विकास का एक अभिन्न अंग पाठ्यचर्या मूल्यांकन है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह पाठ्यचर्या एवं मूल्यांकन दोनों को अपने अन्दर समेटे हुए है। अगर इसे और भी स्पष्ट रूप में कहा जाए तो यह कहा जा सकता है की पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत दो अति महत्वपूर्ण तथ्य समाहित हैं, प्रथम; यह कि जिन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निश्चित पाठ अथवा पाठ्यचर्या का अध्यापन किया गया है उनमें से किन-किन उद्देश्यों की प्राप्ति हुयी है और इसके साथ ही साथ कौन कौन से उद्देश्य अप्राप्य रह गए हैं, द्वितीय; यह कि कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षण के प्रति छात्रों के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं। यही नहीं चूँकि पाठ्यचर्या स्वयं में एक अति विस्तृत अवधारणा है जो अपने अन्दर पाठयचर्या , पाठ्यवस्तु तथा इसके साथ- साथ पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को भी लिए हुए है तो पाठ्यच्चर्या मूल्यांकन के अंतर्गत इन सभी का मूल्यांकन भी सम्मिलित किया जाता है कि उपर्युक्त सभी के साथ विद्यार्थी के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं।

McNeil (1977) के अनुसार, "पाठयचर्या मूल्यांकन में दो प्रश्नों पर प्रकाश डाल करने का प्रयास किया जाता है: क्या नियोजित अधिगम अवसरों, कार्यक्रमों, पाठयचर्या , और गतिविधियों का विकास एवं आयोजन इस प्रकार किया गया कि वे वांछित परिणाम ला सकते हैं? सीखने के रूप में विकसित की है और आयोजन वास्तव में वांछित परिणाम का उत्पादन की योजना बनाई है? आयोजित पाठ्यचर्या में सर्वोत्तम होने के लिए सुधार किस प्रकार हो सकता है?

Worthen & Sanders (1987) पाठ्यच्चर्या मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि पाठ्यचर्या मूल्यांकन "किसी कार्यक्रम, उत्पाद, योजना, प्रक्रिया, उद्देश्य या पाठ्यचर्या की गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्यों का निर्धारण है।"

Gay (1985) के अनुसार, "पाठ्यचर्या मूल्यांकन का लक्ष्य पाठ्यचर्या से सम्बंधित दुर्बल एवं सबल पक्षों के साथ-साथ कार्यान्वयन में आई समस्याओं की पहचान करना, पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया में सुधार करना, पाठ्यचर्या एवं आवंटित वित्त की प्रभावकारिता का निर्धारित करना है।"

पाठ्यचर्या में उद्देश्यों एवं अनुभवों की प्राप्ति को दो स्तरों पर मूल्यांकित किया जा सकता है। इसमें एक मूल्यांकन को शिक्षक के द्वारा किए गए मूल्यांकन के रूप में देखा जा सकता है जो छोटे स्तर पर होता है जिसमे अध्यापक किसी पाठ या किसी इकाई या किसी विषय से सम्बंधित उद्देश्यों तथा अनुभवों का मापन एवं मूल्यांकन करता है और दूसरे स्तर पर पाठ्यचर्या का वृहद् और विस्तृत मूल्यांकन किया जाता है जिसमें संपूर्ण पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है कि पाठ्यचर्या कितनी प्रभावी रही है अर्थात संपूर्ण पाठ्यचर्या किस स्तर तक विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन करने में सक्षम हुयी है तथा साथ ही विद्यार्थी के अनुभव कैसे रहे हैं।

पाठ्यचर्या को संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए। इसके अभाव में पाठ्यचर्या को सही नहीं माना जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न

1. "पाठ्यचर्या संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए।" पाठ्यचर्या की यह व्यापक परिभाषा किस विद्वान ने दी है ?
2. "मूल्यांकन एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जो देखती है कि (i) निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों (specified educational objectives)की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है (ii) कक्षा में दिए गए अधिगम अनुभव (learning experiences) कितने प्रभावशाली रहे हैं तथा शिक्षा के लक्ष्य (goals of education) कितने अच्छे से पूर्ण हो रहे हैं।" मूल्यांकन को यह परिभाषा किसके द्वारा दी गयी है।
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत किन महत्वपूर्ण तथ्यों का अध्ययन किया जाता है?

11.4. पाठ्यचर्या निर्माण के चरण

कोई भी पाठ्यचर्या कई स्तरों या चरणों से गुजरती हुयी सम्पूर्णता को प्राप्त करती है और यह सम्पूर्णता भी समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ही होता है जिसमे समाज की नयी आवश्यकताओं को देखते हुए पुरानी पाठ्यचर्या अव्यावहारिक हो जाती है। पाठ्यचर्या के निर्माण में कई चरण होते हैं। इन सभी चरणों से गुजरते हुए ही पाठ्यचर्या अपने वास्तविक रूप में आती है। ये चरण इस प्रकार हैं-

i. पाठ्यचर्या आवश्यकता विश्लेषण चरण
ii. पाठ्यचर्या अभिकल्प चरण
iii. पाठ्यचर्या क्रियान्वयन चरण
iv. पाठ्यचर्या मूल्यांकन चरण

पाठ्यचर्या निर्माण

पाठ्यचर्या के निर्माण की प्रक्रिया को इस रेखाचित्र (11.1) के माध्यम से समझा जा सकता है। निर्माण के प्रथम चरण में सर्वप्रथम यह निर्धारित किया जाता है कि किन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाना है। तद्पश्चात उन आवश्यकताओं के आधार पर पाठ्यचर्या की डिज़ाइन या प्रारूप तैयार किया जाता है। प्रारूप के निर्माण के पश्चात् उस पाठ्यचर्या का क्रियान्वन किया जाता है और उसके उपरांत पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इन सभी स्तरों पर पृष्ठ-पोषण लिया जाता रहता है तथा उसके आधार पर हर एक स्तर पर संशोधन भी किया जाता रहता है।

आरेख: 11.1 पाठ्यचर्या
विकास के चरण

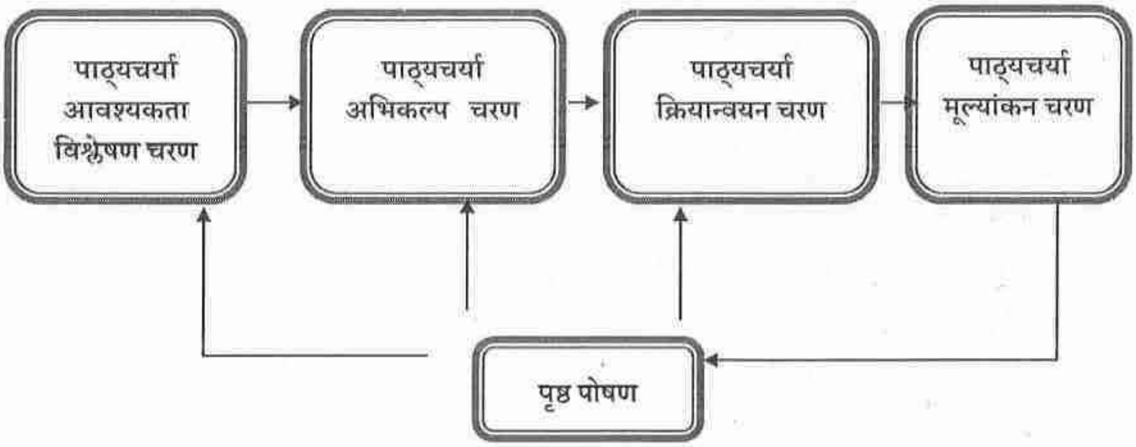

11.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्य

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के कुछ उद्देश्यों को लेकर किए जाते हैं। मूल्यांकन से सम्बंधित विभिन्न उद्देश्य इस प्रकार हैं-

i. पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु
ii. पुरानी पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु
iii. व्यक्ति के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु
iv. प्रशासनिक नियमन हेतु

11.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार

जैसा की पहले ही बताया जा चुका है कि पाठ्यचर्या का मूल्यांकन पाठ्यचर्या निर्माण एवं विकास से सम्बंधित एक अहम् बिन्दु है जिसके अभाव में पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कई विधियों का प्रयोग किया जाता है जो पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार के रूप में इस खंड में वर्णित हैं। बिना मूल्यांकन के पाठ्यचर्या उन उद्देश्यों की पूर्ति करेगी अथवा नहीं, जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है, के विषय में भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है।पाठ्यचर्या मूल्यांकन के ये प्रकार मूल्यांकन की प्रक्रिया को अत्यन्त व्यापक बना देते हैं। मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं-

निर्माणात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन

निर्माणात्मक मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह मूल्यांकन पाठ्यचर्या के निर्माण के दौरान किया जाता है। निर्माणात्मक मूल्यांकन में पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए आंकड़ो का संकलन पाठ्यचर्या की योजना, विकास अथवा निर्माण के दौरान किया जाता है जिसके द्वारा निर्माण के दौरान ही पाठ्यचर्या का पुनरावलोकन करते हुए दोषों को दूर किया जा सके। इस प्रकार से निर्माणात्मक मूल्यांकन पाठ्यचर्या के निर्माण के चरण में ही पाठ्यचर्या में संशोधन का अवसर देता है। निर्माणात्मक मूल्यांकन के परिणाम पाठ्यचर्या निर्माण के जिन प्रयोजनों में सहायक सिद्ध होते हैं वे हैं, (1) पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों का चयन एवं (2) पाठ्यचर्या में शामिल दूषित तत्वों का संशोधन। निर्माणात्मक मूल्यांकन सर्वप्रथम यह निश्चित करता है कि पाठ्यचर्या कि आवश्यकता किसे है, उसे पाठ्यचर्या की आवश्यकता किस सीमा तक है और निर्धारित पाठ्यचर्या किस प्रकार उन आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। शिक्षा में, निर्माणात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य पाठ्यचर्या या कार्यक्रम को बेहतर बनाने के लिए सूचनाएं इकट्ठी करनी है। पाठ्यचर्या में संशोधन के लिए मूल्यांकन दो स्तरों पर किया जाता है पहला पाठ्यचर्या विकास के प्रक्रिया स्तर पर जहाँ प्रक्रिया का मूल्यांकन किया जाता है तथा दूसरा पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन स्तर पर जहाँ विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है।

योगात्मक मूल्यांकन के अंतर्गत आंकड़ो का संकलन पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के उपरांत किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन तब किया जाता है जब कोई नवीन पाठ्यचर्या को लागू किया गया हो। इसके लिए नए कार्यक्रम को लागू करने के संपूर्ण वर्ष के पश्चात् या कुछ महीनों के पश्चात् परीक्षा के माध्यम से पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन में मूल्यांकन से पूर्व यह निश्चित कर लेने की आवश्यकता होती है कि मूल्यांकन के द्वारा किन प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करने का प्रयास किया जा रहा है तथा। मूल्यांकन द्वारा प्राप्त परिणामों से क्या निर्णय लिए जाएगें। इसमे यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है कि विद्यार्थियों ने पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त किया है अथवा पाठ्यचर्या के द्वारा वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति हुयी है अथवा नहीं। इन परिणामों का निर्धारण औपचारिक मूल्यांकन जैसे परीक्षणों और परीक्षाओं में प्राप्त अंको के आधार पर किया

जा सकता है। यह इसका भी मूल्यांकन करता है कि क्या नवाचार प्रभावी था, क्या पाठ्यचर्या को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दिया गया, क्या प्राप्त परिणामों में कुछ ऐसे भी परिणाम थे जो अप्रत्याशित थे?

निर्माणात्मक और योगात्मक मूल्यांकन को रोबर्ट स्टेक्स के इस कथन से समझा जा सकता है कि "When the cook tastes the soup, that's formative evaluation; When the guests taste the soup, that's summative evaluation" अर्थात् जब कुक यानि भोजन पकाने वाला सूप चखता है तो यह निर्माणात्मक मूल्यांकन होगा, जब मेहमान सूप चखेंगे तो यह योगात्मक मूल्यांकन होगा।

निकष संदर्भित तथा मानक संदर्भित मूल्यांकन

निकष संदर्भित परीक्षण के द्वारा भी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करते हैं। इस प्रकार के मूल्यांकन में सर्वप्रथम पाठ्यचर्या के सभी उद्देश्यों की सूची तैयार की जाती है इस सूची में सभी उद्देश्य व्यवहारात्मक रूप में लिखे गए होते हैं साथ ही साथ कसौटियों के परीक्षण के लिए परिस्थितियों का भी निर्धारण किया जाता है । इसके साथ ही मूल्यांकनकर्ता इसका निर्धारण भी करता है कि किस सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति पर पाठ्यचर्या को उपयुक्त माना जाएगा। इसके बाद विद्यार्थियों का परीक्षण किया जाता है और यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यचर्या के द्वारा किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है अगर निर्धारित सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो पाठ्यचर्या को उपयुक्त मान लिया जाता है।

मानक संदर्भित परीक्षण में किसी मानक से तुलना करते हुए पाठ्यचर्या की उपयुक्तता का मूल्यांकन किया जाता है। किसी अन्य पाठ्यचर्या को मानक मानते हुए उसके सापेक्ष में नयी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार के पाठ्यचर्या मूल्यांकन में पाठ्यचर्या के दो सेट होते हैं और जिसमें एक का मानकीकरण पहले किया जा चुका होता है। मानकीकृत पाठ्यचर्या के सापेक्ष में नवीन पाठ्यचर्या का मूल्यांकन उससे सहसम्बन्धित करते हुए किया जाता है।

पूर्व तथा पश्च परीक्षण

पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए पूर्व तथा पश्च परीक्षण सामान्यतया सर्वाधिक प्रयोग में लायी जाती है. इस मूल्यांकन विधि में पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या समाप्त होने के पश्चात सत्रोपरांत में विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन के आकलन हेतु किया जाता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इस परीक्षण में दो बार परीक्षा ली जाती है एक पहले और दूसरी बाद में। दो बार के व्यवहार के आकलन हेतु परीक्षणों के दो सेट पहले ही तैयार कर लिए जाते हैं। किसी पाठ्यचर्या को पढ़ाने से पूर्व ही एक सेट का प्रशासन विद्यार्थियों पर करके विशिष्ट क्षेत्र में उनके ज्ञान का मूल्यांकन कर लिया जाता है तत्पश्चात विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्यचर्या को पढाया जाता है। उसके बाद विद्यार्थियों पर दूसरे सेट का प्रशासन कर व्यवहार एवं ज्ञान में आए परिवर्तन का आकलन किया जाता है । विद्यार्थियों के ज्ञान में आए सकारात्मक अंतर को पाठ्यचर्या का परिणाम माना जाता है साथ ही यह भी देखा

जाता है की जिन उद्देश्यों की प्राप्ति का लक्ष्य रखा गया था वे उद्देश्य प्राप्त हुए हैं की नहीं। यदि व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आया है और उद्देश्यों की प्राप्ति निश्चित सीमा तक हो गयी है तो पाठ्यचर्या को प्रभावशाली मान लिया जाता है।

आरेख 11.2

पूर्व तथा पश्च परीक्षण

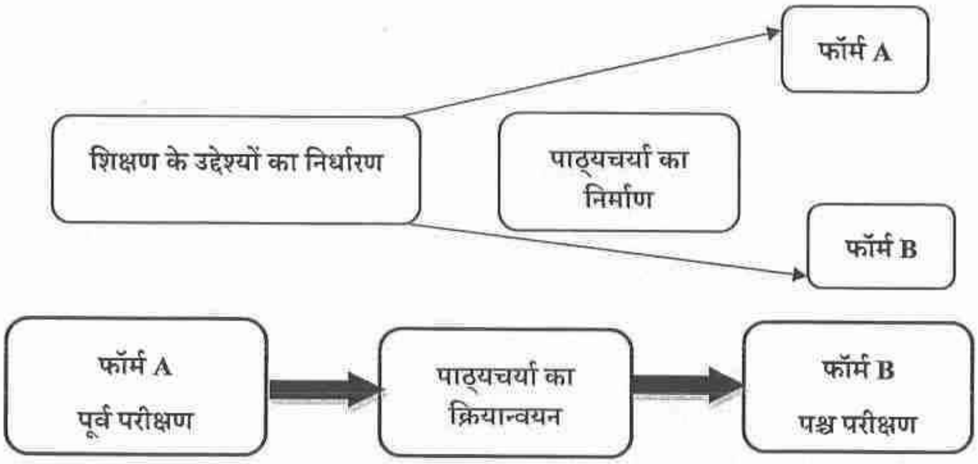

रेखाचित्र 11.2 के माध्यम से यह स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि किस प्रकार पूर्व और पश्च परीक्षण विधि से पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार के मूल्यांकन में शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण के पश्चात विशेषज्ञों के द्वारा पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाता है और इसके साथ ही परीक्षण के लिए दो सेट तैयार कर लिए जाते हैं जिसमें से एक का प्रशासन पाठ्यचर्या के प्रशासन के पूर्व करके छात्रों के ज्ञान का मूल्यांकन उस निश्चित क्षेत्र में कर लिया जाता है। तद्पश्चात दूसरे सेट का प्रशासन पाठ्यचर्या को पढ़ाने के पश्चात किया जाता है और अंकों के आधार पर पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन कर लिया जाता है।

अभ्यास प्रश्न

4. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उद्देश्य कौन-कौन से हैं?
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार बताएं।
6. निर्माणात्मक मूल्यांकन के परिणाम पाठ्यचर्या निर्माण के किन प्रयोजनों में सहायक सिद्ध होते हैं?

11.7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

समाज की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यचर्या में परिवर्तन होता है । यदि अगर बहुत लम्बे समय तक किसी पाठ्यचर्या में परिवर्तन या संशोधन न किया जाए तो परिवर्तनशील युग के लिए पाठ्यचर्या पुरानी हो जाएगी और नवीन आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ और प्रभावी सिद्ध नहीं होगी। समय के साथ नवीन ज्ञान अथवा तथ्यों का पाठ्यचर्या में समावेश किया जाना अनिवार्य है। अतएव समय-समय पर पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक है ताकि इसे समय की मांग के हिसाब से प्रभावी बनाया जा सके। इस प्रकार पाठ्यचर्या मूल्यांकन पाठ्यचर्या निर्माण/विकास का एक अभिन्न अंग है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

नवीन पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु: किसी भी नयी पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु पाठ्यचर्या मूल्यांकन आवश्यक है । वास्तव में समाज को उपयुक्त दिशा पर ले जाने का बोझ शिक्षा के ऊपर ही है। किसी भी नयी पाठ्यचर्या को बिना मूल्यांकित किए विद्यालयों में लागु नहीं किया जा सकता है। पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में यह देखा जाना आवश्यक है कि वह शिक्षा से जुड़े लक्ष्यों और उद्देश्यों की पूर्ति कर रही है अथवा नहीं। अतः नवीन पाठ्यचर्या के निर्माण के साथ छात्रों पर उसके क्रियान्वयन से पहले पाठ्यचर्या का मूल्यांकन आवश्यक होता है

पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु: जो ज्ञान आज नवीन है समय के साथ कल पुराना हो जाएगा और उसके पश्चात् वह अपचलित हो जाएगा। ऐसी निष्क्रिय सामग्री को पाठ्यचर्या से हटाना अनिवार्य हो जाता है। पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के द्वारा इन सामग्रियों को पाठ्यचर्या से हटाया जा सकता है।

अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाने हेतु: अप्रचलित और निष्क्रिय सामग्रियों को हटाने के साथ सामयिक तथ्यों को पाठ्यचर्या में जोड़ा जाना भी आवश्यक है ताकि पाठ्यचर्या व्यावहारिक एवं उपयुक्त बनी रहे । इस हेतु नवीन ज्ञान, तथ्य. सामग्रियों को पाठ्यचर्या में शामिल किया जाता है इन तथ्यों को सही रूप में पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने के लिए पाठ्यचर्या का मूल्यांकन आवश्यक होता है।

पाठ्यचर्या की व्यवहारिकता एवं प्रभावशीलता ज्ञात करने हेतु: इसी प्रकार कोई पाठ्यचर्या सैद्धान्तिक रूप से अच्छी हो सकती है परन्तु आवश्यक नहीं कि वह व्यवहारिक रूप से प्रयुक्त की ही जा सके। उसकी निष्पति में कई समस्याएं हो सकती है। उदाहरणस्वरुप- वर्तमान युग के लिए कंप्यूटर शिक्षा आवश्यक है और इसे पाठ्यचर्या में शामिल किया जाना चाहिए। परन्तु इसे हर जगह व्यवहारिक बनाना संभव नहीं है। भारत में कई गाँव ऐसे हैं जहाँ बिजली की सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसे स्थानों के विद्यालयों में कंप्यूटर की शिक्षा देना संभव नहीं है और यदि दी भी जाती है तो छात्रों के लिए उतनी व्यवहारिक नहीं है जितना कृषि या कोई अन्य विषय होगा। ऐसे में पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा ऐसे विषयों में परिशोधन किया जा सकता है और पाठ्यचर्या तथा शिक्षा की प्रभावशीलता को बढाया जा सकता है।

शिक्षा के उत्पाद के सम्बन्ध में जानकारी हेतु: शिक्षा मात्र विषय की जानकारी देने से सम्बंधित न होकर मनुष्य को सही रूप में संसाधन बनाने से भी सम्बंधित है। पाठ्यचर्या के द्वारा व्यक्ति की कुशलता में वृद्धि हो रही है या नहीं और वह समाज और देश के लिए कितना उपयोगी सिद्ध होगा यह आकलन करना भी आवश्यक है। इसके लिए निवेश और उसके पश्चात उत्पादन का विश्लेषण किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा इसे ज्ञात किया जा सकता है।

11.8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व

पाठ्यचर्या का मूल्यांकन उतना ही महत्वपूर्ण है जितनी महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या स्वयं है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन का सबसे बड़ा महत्व यह है कि अधिगम में सुधार के साथ-साथ शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु यह सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। बिना मूल्यांकन के पाठ्यचर्या को उपयुक्त नहीं माना जा सकता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के महत्व निम्नलिखित हैं-

किसी भी स्तर पर नयी पाठ्यचर्या के विकास हेतु पुरानी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक है कि विद्यमान पाठ्यचर्या में कहाँ कमी है तथा किन संशोधनों के पश्चात् पाठ्यचर्या नयी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के अनुरूप हो जाएगी। नयी पाठ्यचर्या के विकास पर निर्णय के लिए चल रही पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा नीति निर्माताओं, प्रशासकों और समाज के अन्य सदस्यों को सूचना मिल जाती है कि निर्मित पाठ्यचर्या आवश्यताओं की पूर्ति में सक्षम है कि नहीं। इसके साथ ही इसके द्वारा शिक्षकों, पाठ्यचर्या विशेषज्ञों, विद्यालय प्रशासकों और उन सभी को जो पाठ्यचर्या विकास में सम्मिलित होते हैं उन्हें भी पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में जानकारी मिल जाती है। यह पाठ्यचर्या के मजबूत और कमजोर पक्षों के सम्बन्ध में पृष्ठपोषण प्रदान करता है कि पाठ्यचर्या मानकों के अनुरूप है अथवा नहीं।

पाठ्यचर्या समय के साथ पुरानी होने लगती है तथा समय के साथ उसमें वर्णित तथ्य तथा विचार अव्यवहारिक हो जाते हैं जिन्हें हटा कर नए तथ्यों और को सम्मिलित करना आवश्यक हो जाता है जिससे पाठ्यचर्या व्यवहारिक और उपयोगी बनी रहे। यदि पुराने तथ्य या ज्ञान व्यवहारिक और उपयोगी हों तब भी पाठ्यचर्या में समय के साथ आए परिवर्तनों से सम्बंधित ज्ञान को जोड़ा जाना जरुरी होता है ताकि पाठ्यचर्या वर्तमान की मांग को पूरी कर सके।

पाठ्यचर्या का निर्माण विभिन्न उद्देश्यों के आधार किया जाता है। उन उद्देश्यों की प्राप्ति पाठ्यचर्या का लक्ष्य होता है। अतः यह देखना अत्यन्त जरुरी है कि जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यचर्या का निर्माण किया गया है क्या वे उद्देश्य पूर्ण हो रहे हैं। पाठ्यचर्या एक विशेष समूह के लिए भी निर्मित की जाती है तो मूल्यांकन के द्वारा यह निश्चित किया जाता है की उन विशेष समूहों की आवश्यकता को पाठ्यचर्या पूरी कर रही है या नहीं।

पाठ्यचर्या मात्र सूचना देने या जानकारी देने से सम्बंधित नहीं है। मूल्यांकन के द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है की पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को ज्ञान देने के साथ-साथ उनमे गहरी समझ का विकास करने में भी सक्षम है।

11.9 पाठयचर्या मूल्यांकन के चरण

पाठयचर्या मूल्यांकन एक क्रमिक प्रक्रिया है जिसके विभिन्न चरणों से गुजरते हुए मूल्यांकन कार्य किया जाता है। इस प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को चार भाग में विभाजित किया जा सकता है, जो आरेख 11.3 के माध्यम से समझा जा सकता है।

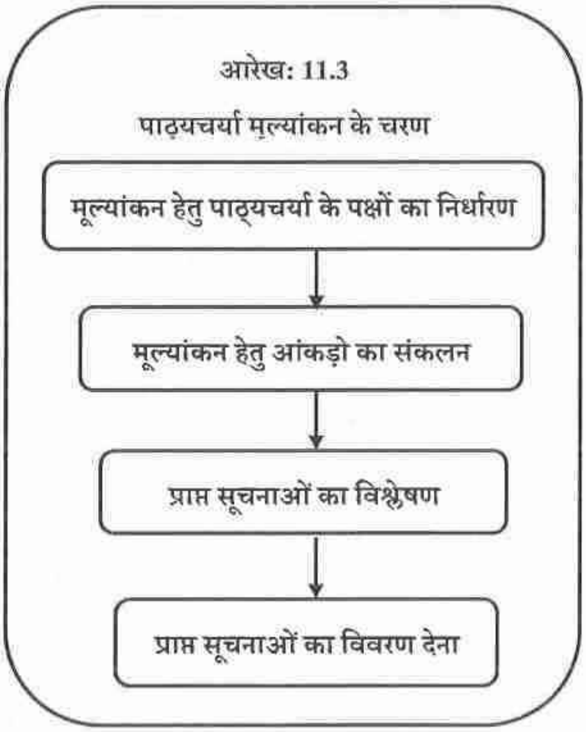

आरेख: 11.3
पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण

मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों का निर्धारण: मूल्यांकनकर्ता सर्वप्रथम यह निर्धारित करता है कि पाठयचर्या के किन पक्षों का मूल्यांकन किया जाना है। इस हेतु वह सर्वप्रथम मूल्यांकन क्रिया के उद्देशों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

मूल्यांकन हेतु आंकड़ो का संकलन: मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों के निर्धारण के पश्चात् मूल्यांकनकर्ता आंकड़ो का संग्रहण करता है। इस हेतु वह पहले उन सूचनाओं को चिह्नित करता है जिनका संग्रहण किया जाना है साथ ही सूचनाओं के संग्रहण हेतु जिन उपकरणों का प्रयोग किया जाने वाला है उनका भी चयन किया जाता है। उपकरणों के रूप में साक्षात्कार, परीक्षण, प्रश्नावली,

अनुसूचियों इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। इस क्रम में उस जनसंख्या को चिन्हित तथा प्रतिदर्शों को सूचीबद्ध किया जाता है जिनपर उपकरणों का प्रशासन कर सूचनाओं का संग्रहण किया जाता है।

प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण: प्राप्त आंकड़ों का तदपश्चात विश्लेषण किया जाता है और उन्हें तालिका एवं ग्राफ के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके हेतु उद्देश्यों, आंकड़ों एवं उपकरणों के आधार पर सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। सांख्यिकी का प्रयोग अक्सर दो या अधिक पाठ्यचर्या के मध्य सार्थक अंतर या सहसंबंध जानने के लिए किया जाता है।

प्राप्त सूचनाओं का विवरण देना: आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त सूचनाओं का विवरण दिया जाता है। विवरणों का लेखन प्राप्त निष्कर्षों पर आधारित होता है। सूचनाओं के विश्लेषण से कुछ निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। उन्हीं निष्कर्षों का लेखन इस चरण में किया जाता है । निष्कर्षों के आधार पर पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मापन किया जाता है। जिन उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हुयी होती है उनके लिए पाठ्यचर्या के कुछ पहलूओं पर पुनर्विचार करने हेतु संस्तुतियां की जाती हैं।

11.10 मूल्यांकन प्रक्रिया की तकनीकें

पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कई तकनीकों को प्रयोग में लाया जाता है। सभी तकनीकों का यहाँ पर वर्णन करना मुश्किल है अतः उनमें से कुछ मुख्य तकनीकों का वर्णन यहाँ पर किया जाएगा।

i. **प्रश्नावली:** प्रश्नावलियों का प्रयोग पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। प्रश्नावलियों का प्रयोग पाठ्यचर्या से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूपों से जुड़े stakeholders पर किया जाता है जिसमें छात्र, अध्यापक, माता-पिता, प्रशासक एवं पाठ्यचर्या निर्माण से जुड़े अन्य व्यक्ति आ जाते हैं। इन्हें पाठ्यचर्या से जुड़े विभिन्न प्रश्न दिए जाते हैं जिनका उत्तर इन्हें देना होता है।

ii. **प्रेक्षण:** यह पाठ्यचर्या के सम्पादन से सम्बंधित है। प्रेक्षण तकनीक मूल्यांकनकर्ता को मूल्यांकन प्रक्रिया के हेतु सर्वाधिक सम्बंधित पहलू पर विशेष ध्यान देने में मदद करता है। यह विधि उस स्थिति में अधिक वैध मानी जाती है जब इसमें व्यक्तिनिष्ठता एवं वस्तुनिष्ठता का उचित समावेश होता है। प्रेक्षण के साथ-साथ साक्षात्कार एवं पृष्ठ-पोषण तथा इसके साथ ही साथ अन्य लिखित साक्ष्य प्रेक्षण से प्राप्त परिणामों कि सार्थकता में वृद्धि करते हैं।

iii. **चेक लिस्ट**: चेक लिस्ट को मात्र प्रयोग करके इसके द्वारा पूर्ण जानकारी प्राप्त करना कठिन कार्य है अतः चेक लिस्ट को प्रश्नावली या साक्षात्कार के साथ एक पूरक या भाग के रूप में प्रयोग करते हैं। यह उत्तरों की संपूर्ण सूची होती है उत्तरदाता जिसमें अपने हिसाब से सबसे उपयुक्त उत्तरों को चुनता है अर्थात सही उत्तरों की सूची में से कुछ उत्तरों को अपने विचार के आधार पर सही मनाता है और उन्हें सही के निशान से चयनित कर लेता है। मूल्यांकनकर्ता को पाठ्यचर्या से सम्बंधित विभिन्न तथ्यों को सूचीबद्ध कर उन्हें उत्तरदाता

को दे देना चाहिए एवं इसके द्वारा पाठ्यचर्या में किन बिन्दुओं में समस्याएँ हैं; किन पाठों की आवश्यकता नहीं है, कौन से पाठ अप्रासंगिक हैं, कहाँ संशोधन की आवश्यकता है और कौन से नए पक्ष जोड़े जाने चाहिए, की जानकारी ली जा सकती है।

iv. **साक्षात्कार:** साक्षात्कार, सूचनाओं के संग्रहण एवं मूल्यांकन हेतु एक आधारभूत तकनीक के रूप देखा जाता है। साक्षात्कार आवश्यकताओं और उद्देश्यों के आधार पर औपचारिक एवं अनौपचारिक अथवा संगठित अथवा असंगठित कैसा भी हो सकता है। इसके लिए पाठ्यचर्या से सम्बन्धित जिन सूचनाओं की प्राप्ति साक्षात्कार के माध्यम से करनी है वह उचित प्रकार से परिभाषित एवं लिखित होना चाहिए एवं प्रश्नों का प्रस्तुतीकरण उचित प्रकार से होना चाहिए। अर्थात साक्षात्कारकर्ता के द्वारा प्रश्न उचित प्रकार से पूछे जाने चाहिए और किसी भी प्रकार की जल्दबाजी और पक्षपात नहीं करना चाहिए। मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में किसी विशेषज्ञ से उचित प्रश् पूछे जाएँ और फिर उन उत्तरों के आधार पर पाठ्यचर्या को मूल्यांकित किया जाना चाहिए।

v. **कार्यशाला एवं समूह परिचर्चा**: पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कार्यशालाओं और समूह परिचर्चाओं का प्रयोग किया है। इस तकनीक में विशेषज्ञों को पाठ्यचर्या पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया जाता है और तद्पश्चात समूह परिचर्चा करायी जाती है और निर्धारित निकषों के आधार पर जो कि मूल्यांकनकर्ता के द्वारा निर्धारित की गयी होती हैं, पर पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन पाठ्यचर्या के विकास एवं उसके क्रियान्वयन के किए उपयोगी जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया एवं माध्यम है। यदि इसे और स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो यह इसे इस भांति समझा जा सकता है कि किसी भी पाठ्यचर्या का निर्माण कुछ निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किया जाता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि निर्धारित पाठ्यचर्या के द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हो रही है अथवा नहीं और यदि हुयी है तो उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त हुए हैं। मूल्यांकन के अभाव में पाठ्यचर्या दिशाहीन हो जाएगी और दिशाहीन पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को कहाँ ले जाएगी इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। जिस प्रकार से गंतव्य का ज्ञान होने के पश्चात् भी यदि चुना गया मार्ग सही नहीं हो तो गंतव्य तक नहीं जाया जा सकता ठीक उसी प्रकार शिक्षण उद्देश्यों की जानकारी होने पर भी यदि पाठ्यचर्या सही नहीं हो तो निर्धारित उद्देश्यों तक कभी नहीं पहुंचा जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न

7. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
8. पाठ्यचर्या से अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाया जाना क्यों आवश्यक है?
9. पाठ्यचर्या मूल्यांकन केवल नयी पाठ्यचर्या हेतु ही आवश्यक है। (सत्य/असत्य)

10. चेकलिस्ट का प्रयोग कर पाठ्यचर्या को पूर्ण रूप से मूल्यांकित किया जा सकता है। (सत्य/असत्य)
11. साक्षात्कार विधि में किसी विशेषज्ञ के साक्षात्कार के द्वारा पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता मूल्यांकित की जाती है। (सत्य/असत्य)
12. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न चरण कौन-कौन से हैं?
13. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु किन-किन तकनीकों को प्रयोग में लाया जाता है?

11.11 सारांश

पाठ्यचर्या मूल्यांकन: पाठ्यचर्या मूल्यांकन किसी कार्यक्रम, उत्पाद, योजना, प्रक्रिया उद्देश्य या पाठ्यचर्या की गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्यों का निर्धारण है

पाठ्यचर्या निर्माण के चरण

- आवश्यकता विश्लेषण चरण
- अभिकल्प चरण
- क्रियान्वयन चरण
- मूल्यांकन चरण

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार

निर्माणात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन: पाठ्यचर्या के निर्माण के चरण में ही पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता जानने के लिए किया जाने वाला मूल्यांकन निर्माणात्मक मूल्यांकन कहा जाता है। पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के पश्चात् पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता को जानने के लिए किए जाने वाला मूल्यांकन योगात्मक मल्यांकन कहा जाता है।	**निकष संदर्भित तथा मानक संदर्भित मूल्यांकन:** निकष संदर्भित मूल्यांकन में यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यचर्या के द्वारा किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है अगर निधारित सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो पाठ्यचर्या को उपयुक्त मान लिया जाता है। मानक संदर्भित परीक्षण में किसी मानक से तुलना करते हुए पाठ्यचर्या की उपयुक्तता का	**पूर्व तथा पश्च परीक्षण:** इस प्रकार के मूल्यांकन में पाठ्यचर्या को पढ़ाने से पूर्व एक सेट का प्रशासन कर विद्यार्थियों का विशिष्ट क्षेत्र में ज्ञान का मूल्यांकन कर लिया जाता है तत्पश्चात निर्धारित पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को पढ़ाने के पश्चात् दूसरे सेट का प्रशासन कर व्यवहार एवं ज्ञान में आए परिवर्तन का आकलन किया जाता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

(i) पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु (ii) पुरानी पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु (iii) व्यक्ति के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु (iv) प्रशासनिक नियमन हेतु

पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व : पाठ्यचर्या मूल्यांकन अधिगम में सुधार के साथ-साथ शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु यह सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण

पाठ्यचर्या के पक्षों का निर्धारण
आंकड़ो का संकलन
सूचनाओं का विश्लेषण
सूचनाओं का विवरण

पाठ्यचर्या मूल्यांकन प्रक्रिया की तकनीकें

प्रश्नावली
प्रेक्षण
चेकलिस्ट
साक्षात्कार
कार्यशाला एवं समूह परिचर्चा

11.12 शब्दावली

1. **पाठ्यचर्या:** पाठ्यचर्या नियोजित एवं निर्देशित शिक्षण अनुभव है जो विद्यार्थियों में विद्यालय के तत्वावधान में व्यवस्थित पुनर्निर्माण के माध्यम से ज्ञान एवं अनुभवों के द्वारा विद्यार्थी का अकादमिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षमता में सतत एवं वांछित विकास करती है।
2. **मूल्यांकन:** मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया से सम्बंधित है जो यह सुनिश्चित करता है की किन-किन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुयी है
3. **पाठ्यचर्या मूल्यांकन:** पाठ्यचर्या मूल्यांकन पाठ्यचर्या से सम्बंधित दुर्बल एवं सबल पक्षों के साथ-साथ कार्यान्वियन में आई समस्याओं की पहचान, पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया में सुधार, पाठ्यचर्या एवं आवंटित वित्त की प्रभावकारिता का निर्धारण है।
4. **निर्माणात्मक मूल्यांकन:** निर्माणात्मक मूल्यांकन मूल्यांकन को कहते हैं जिसमें पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए आंकड़ो का संकलन पाठ्यचर्या की योजना, विकास अथवा निर्माण के दौरान किया जाता है जिससे निर्माण के दौरान ही पाठ्यचर्या का पुनरावलोकन करते हुए दोषों को दूर किया जा सके। निर्माणात्मक मूल्यांकन पाठ्यचर्या के निर्माण के चरण में ही पाठ्यचर्या में संशोधन का अवसर देता है।
5. **योगात्मक मूल्यांकन:** योगात्मक मूल्यांकन नवीन पाठ्यचर्या को लागू करने के पश्चात् किया जाता है। इसके लिए नए कार्यक्रम को लागू करने के संपूर्ण वर्ष के पश्चात् या कुछ महीनों के पश्चात् परीक्षा के माध्यम से पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है।
6. **निकष संदर्भित मूल्यांकन:** निकष संदर्भित मूल्यांकन में सर्वप्रथम पाठ्यचर्या के सभी उद्देश्यों की सूची तैयार की जाती है। इसके बाद विद्यार्थियों का परीक्षण किया जाता है और यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यचर्या के द्वारा किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है अगर निर्धारित सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो पाठ्यचर्या को उपयुक्त मान लिया जाता है।
7. **मानक संदर्भित मूल्यांकन:** मानक संदर्भित परीक्षण में किसी मानक से तुलना करते हुए पाठ्यचर्या की उपयुक्तता का मूल्यांकन किया जाता है । ऐसी पाठ्यचर्या मूल्याकन के द्वारा जिसकी उपयुक्तता जाँच ली गयी हो, को मानक मानते हुए उसके सापेक्ष में नयी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है।

11.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. फ्रोबेल

2. NCERT
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत जिन दो महत्वपूर्ण तथ्यों का अध्ययन किया जाता है वे हैं, (i) जिन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निश्चित पाठ अथवा पाठ्यचर्या का अध्यापन किया गया है उनमें से किन-किन उद्देश्यों की प्राप्ति हुयी है तथा कौन से उद्देश्य अप्राप्य रह गए हैं, (ii) कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षण के प्रति छात्रों के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं।
4. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न उद्देश्य निम्नलिखित हैं-
   i. पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु
   ii. पुरानी पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु
   iii. व्यक्ति के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु
   iv. प्रशासनिक नियमन हेतु
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं
   i. निर्माणात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन
   ii. निकष संदर्भित एवं मानक संदर्भित मूल्यांकन
   iii. पूर्व तथा पश्च मूल्यांकन
6. निर्माणात्मक मूल्यांकन के द्वारा पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों का चयन एवं पाठ्यचर्या में शामिल दूषित तत्वों का संशोधन किया जाता है।
7. पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता बनाए रखने के लिए पाठ्यचर्या मूल्यांकन आवश्यक है।
8. पाठ्यचर्या को व्यावहारिक एवं उपयुक्त बनाए रखने के लिए पाठ्यचर्या से अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाया जाना आवश्यक है।
9. असत्य
10. असत्य
11. सत्य
12. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के मुख्य चरण इस प्रकार हैं
   i. मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों का निर्धारण
   ii. मूल्यांकन हेतु आंकड़ो का संकलन
   iii. प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण
   iv. प्राप्त सूचनाओं का विवरण देना।
13. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु प्रश्नावली, प्रेक्षण, चेकलिस्ट, साक्षात्कार, कार्यशाला एवं समूह परिचर्चा जैसी तकनीकों को प्रयोग में लाया जाता है।

11.14 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bharvad, J. A., (2010). Curriculum Evaluation. International Research Journal September, 1 (1), 72-74.
2. Cronbach,. (1963). Course Improvement through Evaluation. San Fransisco: Jossey , Bars. (Teachers College Record, 64, 672-683)
3. Doll, R.C. (1986). Curriculum Improvement: Decision Making and Process. Boston: Allyn and Bacon.
4. ayton, D. (1973). Science for People. New York: Science History Publications.
5. Ornstein, A. and Hunkins, F. (1998). Curriculum: Foundations, Principle and Issues. Boston, MA: Allyn & Bacon.
6. Sanders, J.R. (1990). Curriculum Evaluation. In: Walberg, H. J. & Haertel, G.D. (eds.). The International Encyclopaedia of Education Evaluation. New York: Pergamon Press.
7. Sowell, E. (2000). Curriculum: An Integrative Introduction. NJ: Prentice-Hall.
8. Stake, R.E. (1967). The Countenance of Educational Evaluation Teachers College Record.
9. Stufflebeam, I.D. (1971). Educational Evaluation & Decision Making. Itasea: Ill, Peacock.
10. Wheeler, D.K. (1967). Curriculum Process. london: U.K. University of london Press ltd.
11. Wiles, J. & Bondi, J. (1989). Curriculum Development. A Guide to Practice (3rd Edition). Columbus OH: Merril Publishing Company.
12. Worthen, B.R. (1990). Program Evaluation. In: Walberg, H. J. & Haertel, G.D. (eds.). The International Encyclopaedia of Education Evaluation. New York: Pergamon Press.

11.15 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्या है? पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्यों पड़ती है? पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के विभिन्न चरणों का उल्लेख करें।

2. पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्यों महत्वपूर्ण है? पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकें कौन-कौन सी हैं? संक्षिप्त व्याख्या करें।
3. एक नयी पाठ्यचर्या का विकास किन-किन चरणों से गुजरते हुए होता है? नयी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन होना क्यों आवश्यक है?

इकाई 12- पाठ्यक्रम मूल्यांकन के मॉडल, पाठ्यक्रम मूल्यांकन में प्रवृत्तियां

12.1 प्रस्तावना
12.2 उद्देश्य
12.3 पाठ्यक्रम मूल्यांकन
12.4 पाठ्यक्रम मूल्यांकन मॉडल
12.5 स्टफलबीम मॉडल
12.6 स्टेक मॉडल
12.7 आइजनर का सूक्ष्म निरूपण मॉडल
12.8 टायलर का उद्देश्य- केंद्रित मॉडल
12.9 सारांश
12.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.11 संदर्भ-ग्रन्थ
12.12 निबन्धात्मक प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

हम क्या निर्धारित योजना के रूप में पाठ्यक्रम ने अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को हासिल किया है पर ध्यान केंद्रित करेंगे| दूसरे शब्दों में, वित्त और मानव संसाधन के मामले में सभी प्रयास सार्थक कर दिये गये हैं या नहीं यह निर्धारित करने के लिए पाठ्यक्रम मूल्यांकन किया जाना है| विभिन्न मूल्यांकनकर्ता पाठ्यक्रम को किस हद तक सफलतापूर्वक लागू किया गया है जानना चाहते हैं| एक पाठ्यक्रम के मूल्यांकन से एकत्र जानकारी निर्णय करने के लिए आधार रूपों के बारे में कैसे सफलतापूर्वक कार्यक्रम अपने इच्छित परिणाम और कार्यक्रम मूल्य हासिल किये हैं या के लायक है| इस इकाई में हम पाठ्यक्रम मूल्यांकन, एवं पाठ्यक्रम मूल्यांकन के विभिन्न मॉडलों की चर्चा करेंगे।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप -

8. पाठ्यक्रम मूल्यांकन की परिभाषा तथा उसकी संकल्पना समझ सकेंगे।
9. पाठ्यक्रम मूल्यांकन की विविध परिभाषाएं बता सकेंगे।
10. पाठ्यक्रम मूल्यांकन के विभिन्न मॉडलों को बता सकेंगे।
11. पाठ्यक्रम मूल्यांकन के विभिन्न मॉडलों की विशेषताओं को बता सकेंगे।
12. पाठ्यक्रम मूल्यांकन अध्यापक और विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण है यह समझ सकेंगे।

12.3 पाठ्यक्रम मूल्यांकन

मूल्यांकन क्या है? मूल्यांकन कार्यक्रम को अपनाने, अस्वीकार, या संशोधित करने के लायक के उद्देश्य से आंकड़ों को एकत्रित करने की प्रक्रिया है| कार्यक्रम विभिन्न पक्षों के प्रश्नों और चिंताओं के जवाब का मूल्यांकन हैं| समाज जानना चाहता है कि कार्यान्वित पाठ्यक्रम ने अपने लक्ष्य और उद्देश्य को हासिल किया है| शिक्षक जानना चाहते हैं कि क्या जो वे कक्षा में कर रहे हैं, प्रभावी है ? और विकासकर्ता या नियोजक जानना चाहते हैं कि कैसे पाठ्यक्रम उत्पाद को बेहतर बनाया जाये| मूल्यांकन कार्यक्रमों और प्रक्रियाओं का महत्व या मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया है|

मेक नील (1977) के अनुसार "पाठ्यक्रम मूल्यांकन दो प्रश्नों पर प्रकाश डालने का प्रयास है- सीखने के अवसर, कार्यक्रमों, पाठ्यक्रमों और गतिविधियों की विकसित और संगठित योजना करना वास्तव में वांछित परिणाम प्राप्त हों| कैसे पाठ्यक्रम में प्रस्तावित रूप में सबसे अच्छा सुधार किया जा सकता है?"

वार्थेन और सैंडर्स ने पाठ्यक्रम मूल्यांकन को परिभाषित- "एक कार्यक्रम, उत्पाद, परियोजना, प्रक्रिया, उद्देश्य, या पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, प्रभावशीलता, या मूल्य का औपचारिक अवधारणा या निरूपण से है|"

ऑलिवा(1988) ने पाठ्यक्रम मूल्यांकन को जानकारी प्रदान करने की प्रक्रिया के रूप में, वर्णन करने और प्राप्त करने के लिए निर्णयन विकल्प को पहचानने के रूप में परिभाषित किया|

मूल्यांकन बातों का मूल्य निर्धारित करने के लिए एक अनुशासित पड़ताल है| बातों में 'कार्यक्रम, प्रक्रियाएं या वस्तुएं शामिल हो सकते हैं| सामान्यतया अनुसंधान और मूल्यांकन में समान डाटा संग्रह उपकरणों का इस्तेमाल किया जा सकता है, भले ही वे अलग हैं| तीन आयाम हैं ,जिस पर वे अलग हो सकते हैं-

1 सबसे पहले, मूल्यांकन को अपने उद्देश्य की ज्ञान की पीढ़ी के रूप में जरूरत नहीं है| अनुसंधान बुनियादी हो जाता है, जबकि मूल्यांकन लागू किया जाता है|

2 दूसरा, मूल्यांकन मुमकिन है निर्णय या नीति रूप के आधार बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली जानकारी का उत्पन्न करती हो| मूल्यांकन तत्काल उपयोग की गयी जानकारी अर्जित करता है जबकि अनुसंधान में इसकी आवश्यकता नहीं है|

3 तीसरे, मूल्यांकन बातों का एक निर्णय है| मूल्यांकन मूल्य निर्णय परिणाम है जबकि अनुसंधान को कुछ नहीं चाहिए और जरूरत नहीं होती है

12.4 पाठ्यक्रम मूल्यांकन मॉडल

आपको कैसे पाठ्यक्रम के मूल्यांकन के बारे में पता होना चाहिए? कई विशेषज्ञों ने विभिन्न मॉडलों का प्रस्ताव दिया है कि कैसे और क्या एक पाठ्यक्रम के मूल्यांकन में शामिल किया जाना चाहिए| मॉडल उपयोगी होते हैं क्योंकि वे आपको एक मूल्यांकन के मापदंडों को परिभाषित करने में मददगार साबित होते हैं| अनेक मूल्यांकन मॉडलों का निर्माण किया गया है लेकिन उनमे से कुछ प्रमुख मॉडलों का वर्णन इस इकाई में किया जा रहा है-

12.5 स्टफलबीम मॉडल

इसे **Context, Input, Process, Product Model (CIPP Model)** भी कहते हैं| डैनिएल एल.स्टफलबीम, जिन्होंने मूल्यांकन पर फाई डेल्टा कापा राष्ट्रीय अध्ययन समिति (Phi Delta Kappa National Study Committee) की अध्यक्षता की ने मूल्यांकन का एक व्यापक रूप से उद्धृत मॉडल CIPP Model पेश किया| Stufflebeam के मॉडल का एक प्रमुख पहलू निर्णय लेने या कार्यक्रम की शुरुआत के बारे में किसी के मन बनाने के कार्य पर केन्द्रित है| पाठ्यक्रम मूल्यांकनकर्ताओं को सही ढंग से किया और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सहायता के लिए मूल्यांकन करने के लिए –

पहले क्या मूल्यांकन किया जाना है उन जानकारियों को निर्धारित कर जो एकत्र हो गयी है वर्णन करना (उदाहरण के लिए प्राथमिक ग्रेड में बच्चों की वैज्ञानिक सोच कौशल को बढ़ाने में नए विज्ञान कार्यक्रम को कैसे प्रभावी किया गया है)

दूसरा चयनित तकनीक और तरीकों का उपयोग कर जानकारी प्राप्त करने या एकत्र करने के लिए है (उदाहरण के लिए शिक्षकों के साक्षात्कार, छात्रों के टेस्ट स्कोर एकत्र करना)

तीसरे इच्छुक समुदाय के लिए सूचना (तालिकाओं, ग्राफ के रूप में) प्रदान करने या उपलब्ध कराने के लिए है| नए पाठ्यक्रम को बनाए रखने, संशोधित करने या कार्यक्रम को समाप्त करने के लिए मूल्यांकन के निम्नलिखित प्रकार 4 तय करने की सूचना प्राप्त की है- संदर्भ (context), प्रदा (input), प्रक्रिया (process) और उत्पाद (product).

मूल्यांकन का स्टफलबीम (Stufflebeam) मॉडल एक पाठ्यक्रम कार्यक्रम के समग्र प्रभाव को निर्धारित करने के लिए दोनों रचनात्मक (formative) और योगात्मक (summative) मूल्यांकन पर निर्भर करता है(देखें चित्र संख्या 1) मूल्यांकन कार्यान्वित कार्यक्रम के सभी स्तरों पर आवश्यक है|

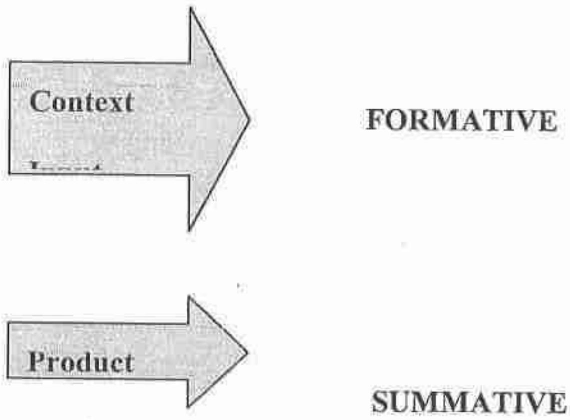

1 संदर्भ मूल्यांकन (Context Evaluation) (क्या करने की आवश्यकता है और किस संदर्भ में?)

यह उद्देश्यों के लिए एक औचित्य अथवा मूल कारण प्रदान करने के प्रयोजन के साथ मूल्यांकन का सबसे बुनियादी प्रकार है| मूल्यांकनकर्ता वातावरण को परिभाषित करता है.जिसमें पाठ्यक्रम जो एक कक्षा, स्कूल या प्रशिक्षण विभाग हो सकता है को लागू करता है| इसके अलावा समीक्षा के तहत संगठन में कमियाँ और समस्याएं हैं जिनकी पहचान की गयी है (जैसे माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों का एक बड़ा अनुपात, वांछित स्तर पर पढ़ने में असमर्थ हैं, कंप्यूटरों के लिए छात्रों का अनुपात बड़ा है, विज्ञान शिक्षकों का एक बड़ा अनुपात अंग्रेजी में पढ़ाने के लिए कुशल नहीं है) लक्ष्य और उद्देश्य संदर्भ के मूल्यांकन के आधार पर निर्दिष्ट हो रहे हैं| दूसरे शब्दों में, मूल्यांकनकर्ता पृष्ठभूमि निर्धारित करता है जिसमें नवाचारों को लागू किया जा रहा है|

2 प्रदा मूल्यांकन (input Evaluation) (यह कैसे किया जाना चाहिए?)

मूल्यांकन उद्देश्य जिनमें से पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संसाधनों का उपयोग करने के लिए कैसे निर्धारित करने के लिए जानकारी प्रदान करना है| दुर्भाग्य से, इनपुट मूल्यांकन के तरीके शिक्षा के क्षेत्र में कमी कर रहे हैं| प्रचलित प्रथाओं में पेशेवर साहित्य से अपील, विचार विमर्श समिति, सलाहकार और मार्गदर्शक प्रायोगिक परियोजनाओं का सेवायोजन शामिल है|

3 प्रक्रिया मूल्यांकन (Process Evaluation) क्या यह किया जा रहा है?)

क्या आवर्ती प्रतिपुष्टि का प्रावधान है जबकि पाठ्यक्रम कार्यान्वित किया जा रहा है?

4 उत्पाद मूल्यांकन (Product Evaluation) क्या यह सफल था?)

पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के लिए व्यवस्थित रूप से प्राप्त करने हेतु आंकड़े (data) को निर्धारित करने के लिए एकत्र किया जाता है उदाहरण के लिए किस हद तक के छात्रों में विज्ञान की दिशा की और अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया है|) उत्पाद मूल्यांकन में उद्देश्यों की उपलब्धि को मापने के डेटा की व्याख्या और, नए पाठ्यक्रम को संशोधित करने जारी रखने या समाप्त करने जानकारी के साथ उपलब्ध कराने के लिए तय करना शामिल है|उदाहरण के लिए उत्पाद मूल्यांकन छात्रों में विज्ञान के क्षेत्र में अधिक रुचि हो इसके लिए नए विज्ञान पाठ्यक्रम के परिचय के बाद और इस विषय के प्रति अधिक सकारात्मक रहे बता सकता है|

अभ्यास प्रश्न

8. एल.स्टफलबीम, जिन्होंने मूल्यांकन पर Phi Delta Kappa National Study Committee की अध्यक्षता की। (सत्य/असत्य)
9. इसे **Context, ..., Process, ... Model** भी कहते हैं|
10. मूल्यांकनकर्ता पृष्ठभूमि निर्धारित करता है जिसमें .... को लागू किया जा रहा है|

12.6 स्टेक मॉडल

रॉबर्ट स्टेक द्वारा प्रस्तावित मॉडल में पाठ्यक्रम मूल्यांकन के तीन चरणों का पता चलता है- पूर्ववर्ती चरण, लेन देन-चरण, और परिणाम चरण| पूर्ववर्ती चरण में अनुदेशन के पिछले परिणामों से संबंधित मौजूदा स्थितियां शामिल हो सकती हैं| लेन देन-चरण शिक्षा की प्रक्रिया के गठन से ,जबकि परिणाम चरण कार्यक्रम के प्रभाव से संबंधित है| स्टेक दो बातों पर जोर देता है- विवरण और निर्णय पर |

विवरण क्या प्रयोजन था ,क्या उल्लेख करने के लिए या क्या वास्तव में मनाया गया के अनुसार विभाजित है| निर्णय पर पहुंचने में या वास्तविक निर्णय करने के लिए इस्तेमाल किया मानकों का उल्लेख करने के अनुसार निर्णय को विभक्त किया हुआ है|

12.7 आयजनर का सूक्ष्म-निरूपण मॉडल

इलियट आइजनर, एक प्रसिद्ध कला शिक्षक ने तर्क दिया शिक्षण बहुत जटिल था इसलिए उद्देश्यों की एक सूची को छोटे भागों में तोड़ दिया है और यह निर्धारित करने के लिए यह जगह मात्रात्मक माप ने ले ली है या नहीं| जब तक हम छात्रों का मूल्यांकन छात्रों की सूचना के आधार पर करते हैं हमे केवल सूचना के छोटे भागों को सीखना होगा| आइजनर का तर्क है मूल्यांकन हमेशा पाठ्यक्रम को चलाना और करना है| यदि हम चाहते हैं कि छात्र समस्याओं के समाधान और सूक्षम रूप से

विचार करने में सक्षम हो तो हमें इस समस्या को सुलझाने और महत्वपूर्ण सोच, कौशल का मूल्यांकन करना होगा जो आवृत्ति अभ्यास से सीखा नहीं जा सकता है| तो, एक कार्यक्रम का मूल्यांकन करने के लिए हमें कक्षा की घटनाओं की समृद्धि और जटिलता पर अधिकृत करने का प्रयास करना चाहिए| उन्होंने सूक्ष्म निरूपण मॉडल का प्रस्ताव रखा, जिसमें एक जानकार मूल्यांकनकर्ता निर्धारित कर दावा कर सकता है कि यदि कौशल और अनुभव के संयोजन का उपयोग करें तो पाठ्यक्रम सफल रहा है| शब्द 'connoisseurship' लैटिन शब्द cognoscere से निकला है, जिसका अर्थ जानना है| उदाहरण के लिए, आप आलोचना करने में सक्षम हैं और उससे पूर्व भोजन, चित्रों या फिल्मों के पारखी होने के लिए, आपको भोजन, चित्रों या फिल्मों के विभिन्न प्रकारों के साथ अनुभव और के बारे में ज्ञान होना आवश्यक है| एक आलोचक होने के लिए घटना में सूक्ष्म अंतर जिनकी आप जांच कर रहे हैं उनके गुणों को जानने और उनकी जानकारी आपको होनी चाहिए| दूसरे शब्दों में, पाठ्यक्रम मूल्यांकनकर्ता को एक शैक्षिक आलोचक होने की तलाश करना चाहिए| परख मॉडल के अनुसार, मूल्यांकनकर्ता पाठ्यक्रम योजना के कार्यान्वित हेतु विवरण और व्याख्या प्रदान करते हैं-

1) विवरण :मूल्यांकनकर्ता छात्रों, शिक्षकों और प्रशासकों के अनुभवों के वातावरण की विशेषताओं और क्रियाओं का अभिलेख रखते हैं| लोग मूल्यांकन रिपोर्ट को पढ़ कल्पना करने में सक्षम हो जायेंगे जो प्रक्रियाओं की तरह लग रहा है और स्थान ले रहा है|
2) व्याख्या :मूल्यांकनकर्ता सूचना घटनाओं को संदर्भ में रखकर अर्थ बताते हैं|उदाहरण के लिए, क्यों अकादमिक रूप से कमजोर छात्रों को सवाल पूछने के लिए प्रेरित किया जाता था|

12.8 टायलर का उद्देश्य-केन्द्रित मॉडल

शुरुआती पाठ्यक्रम मूल्यांकन मॉडलों में से एक है जो कई मूल्यांकन परियोजनाओं को प्रभावित करने के लिए सतत है| राल्फ टायलर) 1950द्वारा पाठ्यक्रम और शिक्षा के मूल सिद्धांतों (*Basic principles of curriculum and Instruction)* विषय पर लेख में इस मॉडल को प्रस्तुत किया गया| जैसा कि इस काम में और कई बड़े पैमाने पर मूल्यांकन के प्रयासों में, प्रयोग कर व्याख्या की है| टायलर दृष्टिकोण तर्क और व्यवस्थित ढंग से कई संबंधित चरणों के माध्यम से प्रस्तुत है-

1. पहले से निर्धारित किये गये व्यवहारिक उद्देश्यों के साथ शुरू करना| उन उद्देश्यों को सीखने की सामग्री और संभावित छात्र व्यवहार दोनों में निर्दिष्ट करना चाहिए:
2. इस व्यवहार के पैदा या प्रोत्साहित करने के लिए उन स्थितियों को पहचानें जोकि उद्देश्य में छात्र को सन्निहित व्यवहार व्यक्त करने का अवसर दे देंगे| इस प्रकार आप मौखिक भाषा

के प्रयोग का आकलन करना चाहते हैं तो मौखिक भाषा के उत्पन्न होने की स्थितियों की पहचान करें|

3. संशोधित, या उपयुक्त मूल्यांकन उपकरणों का निर्माण, का चयन करें, और निष्पक्षता, विश्वसनीयता और वैधता के लिए उपकरणों की जाँच करें.
4. संक्षेप में प्रस्तुत करना या आकलन के परिणाम प्राप्त करने के लिए उपकरणों का उपयोग करें
5. दी गई अवधि के पहले और बाद में मात्रा का अनुमान लगाने के लिए कई उपकरणों से प्राप्त परिणामों की तुलना अथवा स्थान लेने के क्रम करें.
6. पाठ्यक्रम की कमजोरियों और मजबूती का निर्धारण करने के क्रम में परिणामों का विश्लेषण और मजबूतियों और कमजोरियों के कारण इस विशेष पद्धति बारे में संभव स्पष्टीकरण के लिए पहचान करने के लिए|
7. पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन करने के लिए परिणामों का उपयोग करें

टायलर मॉडल के कई लाभ हैं-यह समझने के लिए और लागू करने के लिए अपेक्षाकृत आसान है| यह तर्कसंगत और व्यवस्थित है| यह व्यक्तिगत छात्रों के प्रदर्शन के साथ पूरी तरह से चिंतित होने के बजाय, पाठयक्रम की मजबूती और कमजोरियों पर ध्यान केंद्रित करता है| यह मूल्यांकन, विश्लेषण और सुधार की एक सतत चक्र के महत्व पर भी जोर देता है| Guba और linciln (1981) के अनुसार, हालांकि, यह कई कमियों से ग्रस्त है| यह सुझाव नहीं देता है कि कैसे उद्देश्यों के लिए खुद का मूल्यांकन किया जाना चाहिए| यह मानकों को जोड़ने या मानकों को विकसित किये जाने का सुझाव नहीं देता है| पाठ्यक्रम विकास में रचनात्मकता को सीमित करने हेतु उद्देश्यों की पूर्व कथन पर जोर देता है और यह पूरी तरह से ऐसा प्रतीत लगता है कि प्रारंभिक आकलन के लिए की आवश्यकता की अनदेखी, पूर्व आकलन और बाद के आकलन पर अनुचित जोर देता है|

12.9 सारांश

पाठ्यक्रम के मूल्यांकन से एकत्र जानकारी निर्णय करने के लिए आधार रूपों के बारे में कैसे सफलतापूर्वक कार्यक्रम अपने इच्छित परिणाम और कार्यक्रम मूल्य हासिल किये गए हैं जाना जा सकता है| शिक्षक जानना चाहते हैं कि क्या जो वे कक्षा में कर रहे हैं, प्रभावी है ? और विकासकर्ता या नियोजक जानना चाहते हैं कि कैसे पाठ्यक्रम उत्पाद को बेहतर बनाया जाये| मूल्यांकन कार्यक्रमों और प्रक्रियाओं का महत्व या मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया है| कई विशेषज्ञों ने विभिन्न मॉडलों का प्रस्ताव दिया है कि कैसे और क्या एक पाठ्यक्रम के मूल्यांकन में शामिल किया जाना

चाहिए| Stufflebeam के मॉडल का प्रमुख पहलू निर्णय लेने या कार्यक्रम की शुरुआत के बारे में किसी के मन बनाने के कार्य पर केन्द्रित है| रॉबर्ट स्टेक द्वारा प्रस्तावित मॉडल में पाठ्यक्रम मूल्यांकन के तीन चरणों का पता चलता है- पूर्ववर्ती चरण, लेन देन-चरण, और परिणाम चरण| इलियट आइजनर, एक प्रसिद्ध कला शिक्षक ने तर्क दिया शिक्षण बहुत जटिल था इसलिए उद्देश्यों को एक सूची के छोटे भागों में तोड़ दिया |

12.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

8. सत्य
9. **Input, Product**
10. नवाचारों
11. पाठ्यचर्या ,पाठयचर्या
12. यूनेस्को की रिपोर्ट
13. क्रो और क्रो
14. फ्रांसिस जे० ब्राउन

12.11 संदर्भ-ग्रन्थ

7. Crow, I.D, Alice Crow (1962), Introduction of Education, EurasiaPublishing House, New Delhi.
8. Spears, H (1953), Some Principles of Teaching,Prentice Hall, New *York.*
9. http://peoplelearn.homestead.com/assess/module_8.evaluation.doc
10. माथुर, एस०.एस० (1981), शिक्षण कला, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
11. मिश्र, आत्मानन्द(1985), शिक्षण कला, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

12.12 निबंधात्मक प्रश्न

6. पाठ्यक्रम के मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?
7. स्टफलबीम के पाठ्यक्रम मूल्यांकन मॉडल को समझाइए ?
8. टायलर मॉडल से आप क्या समझते हैं?इसके क्या लाभ हैं ?

इकाई 13 पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र

13.1 प्रस्तावना
13.2 उद्देश्य
13.3 पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र : एक परिचय
13.4 पठ्यक्रम संबंधी शोध की प्रवृति
13.5 सारांश
13.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
13.7 संदर्भ ग्रंथ सूची
13.8 निबंधात्मक प्रश्न

13.1 प्रस्तावना

पाठयचर्या शिक्षण प्रणाली का सबसे महत्तवपूर्ण अंग है। पूरा शिक्षण तंत्र पाठयचर्या के चारों तरफ ही चक्कर काटता है। शिक्षण प्रक्रिया की शुरुआत से लेकर मूल्यांकन तक सबकुछ पाठयचर्या के द्वारा ही निर्धारित होता है। अर्थात क्या पढ़ाना है? किसे पढ़ाना है? कितना पढ़ाना है? कैसे पढ़ाना है? और कौन पढ़ाएगा? आदि प्रश्नों के उत्तर हमें पाठयचर्या से ही प्राप्त होते हैं। ऐसे में पाठयचर्या के संबंध में शोधकार्य महत्वपूर्ण हो जाते हैं। चूँकि शिक्षा समाज का दर्पण है। अतः, जैसा समाज होता है वैसी ही अपनी शिक्षा पद्धति होती है। पाठयचर्या शिक्षा पद्धति का केन्द्रबिदु है। अतः,पाठयचर्या भी समाज पर निर्भर करता है। उदाहरण के तौर पर उत्तर वैदिक काल में समाज में अध्यात्मिकता की प्रधानता थी तो हमारा पाठयचर्या भी अध्यात्म से परिपूर्ण था। गुरुकुलों में विद्यार्थियों को वेद, पुराण, स्मृति, आदि पढ़ाए जाते थे। कालांतर में समाज में अमूल-चूल परिवर्तन हुए और इसके परिणामस्वरुप पाठयचर्या में।

आज हमारा समाज निरंतर हो रहे परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में वर्तमान परिदृश्य में समाज को किस प्रकार के शिक्षा की आवश्यकता है? भविष्य में शिक्षा की क्या माँग होगी? आदि जैसे प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए पाठयचर्या के क्षेत्र में शोध होना आवश्यक है। निरंतर शोधकार्य हो भी रहे हैं और अतीत में भी हुए हैं। प्रस्तुत इकाई में हम इस बात का अध्ययन करेंगे कि पाठयचर्या संबंधी शोध में हम किन- किन शोध को शामिल कर सकते हैं अर्थत पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र क्या होंगे।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप -

1. पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र का अर्थ समझ सकेंगे
2. पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र का वर्णन कर सकेंगे
3. पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र की प्रवृति की व्याख्या कर सकेंगे।

13.3 पाठयचर्या संबंधी शोध का क्षेत्र : एक परिचय

'पाठयचर्या संबंधी शोध' एक व्यापक पद है जिसके अंतर्गत मुख्यतः पाठयचर्या के प्रस्ताव, क्रिया-कलाप या उसके परिणाम द्वारा जनित समस्याओं को समझने में शोध तकनीकों/प्रविधियों के अनुप्रयोग आदि समाहित होते हैं।

पाठयचर्या का व्यवहारिक अभ्यास कोई नई घटना नहीं हैं। इसकी शुरुआत तब से मानी जा सकती है जब से मनुष्य ने शिक्षा प्रदान करने के पुनीत कार्य की शुरुआत की। लेकिन पाठयचर्या निर्माण संबंधी क्रिया-कलापों का अध्ययन अपेक्षाकृत एक नया प्रयास है। पाठयचर्या का एक अध्ययन क्षेत्र के रुप में औपचारिक विकास 12वीं शताब्दी में माना जाता है। हाँलाकि इससे पूर्व भी थोड़े बहुत प्रयास हो चुके थे। फ्लरे द्वारा 1695 ई0 में " द हिस्ट्री ऑफ च्वॉयस एण्ड मेथड्स ऑफ स्टडी" नामक पुस्तक को पाठयचर्या संबंधी प्रारंभिक पुस्तक मानी जाती है(स्चुबेर्त(1980) । कालांतर में शिक्षण-प्रक्रिया में विद्यालय का महत्व बढ़ने के कारण पाठयचर्या निर्माण के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा और पाठयचर्या के स्वरुप, पाठयचर्या संबंधी साहित्य, जो एक अध्ययन क्षेत्र को दूसरे अध्ययन क्षेत्र से अलग कर सके, से संबंधित एक स्थायी स्वरुप के चिंतन का विकास हुआ(क्रेमिन,1971) । औपचारिक रुप से इसका उदय संयुक्त राज्य अमेरिका में, 1927 में, शिक्षा के अध्ययन के लिए बनी राष्ट्रीय सोशाइटी के एक समिति द्वारा तैयार एक वार्षिक पुस्तिका(इयरबुक), जिसमें पाठ्यक्रम निर्माण के लिए विचारों को एक साथ रखकर प्रयास करने पर बल दिया गया था, के प्रकाशन के साथ हुई(रज, 1927)। समय के साथ इसमें विकास होता गया और आज इसका क्षेत्र अति व्यापक हो गया है। पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र को आप निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं:

i. पाठयचर्या निर्माण की नीति संबंधी शोध
ii. पाठयचर्या विश्लेषण संबंधी शोध
iii. पाठयचर्या प्रारुप, अनुप्रयोग एवं क्रियात्मक शोध
iv. पाठयचर्या मूल्यांकन

अभ्यास प्रश्न

1. पाठयचर्या का एक अध्ययन क्षेत्र के रुप में औपचारिक विकास ....शताब्दी में माना जाता है।
2. " द हिस्ट्री ऑफ च्वॉयस एण्ड मेथड्स ऑफ स्टडी" नामक पुस्तक.................. ने लिखी।
3. " द हिस्ट्री ऑफ च्वॉयस एण्ड मेथड्स ऑफ स्टडी" नामक पुस्तक वर्ष .... में लिखी गयी।
4. औपचारिक रुप से पाठयचर्या संबंधी विकास का प्रारंभ ....नामक देश में हुआ।

पाठयचर्या निर्माण की नीति संबंधी शोध Policy Related Curriculum Research

पाठयचर्या संबंधी शोध के एक क्षेत्र के रुप में, पाठयचर्या संबंधी नीति विषयक शोध को माना जाता है। इसके तहत शिक्षा प्रणाली में अधिकारियों की वरीयता जो हर देश में अलग-अलग होती है, को शामिल किया जाता है।

वो देश, जिनका पाठयचर्या केन्द्रीय होता है अर्थात पूरे देश के लिए एक ही पाठयचर्या होता है, वो शिक्षक की योग्यता एवं उनकी विशेषताओं के संबंध में आँकड़े एकत्र करने में ज़्यादा रुचि रखते हैं। वो ये भी जानना चाहते हैं कि शिक्षक वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विकास में अपने योगदान दे सकते हैं कि नहीं। इस प्रकार के शोध को भी पाठयचर्या संबंधी नीति विषयक शोध में स्थान दिया जाता है। निरंतर बदल रही आर्थिक परिस्थितियों के दबाव में आधुनिक, विकसित एवं औद्योगिक रुप से सशक्त देशों ने उत्तरदायित्वबोध और उसके अनुरुप विद्यालयों को मानव-शक्ति के एक उत्पादक तंत्र के रुप में देखने की प्रवृति विकसित की है। इस प्रकार से शोध के एक और क्षेत्र का विकास हुआ है जिसके अंतर्गत परिवर्तन के संकेतकों की माप की जाती है। ये संकेतक वो चर होते हैं जो किसी नीति के उन तथ्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें उस नीति विकास का प्रयोग सुचारु रुप से हो सके।

शिक्षा प्रणाली में नीति, शिक्षा प्रणाली के विभिन्न संगठनों के मध्य घुमती रहती है। यह मूर्त्त एवं अमूर्त्त तथ्यों तथा केन्द्रीय एवं परिधीय तथ्यों के मध्य भी घुमती रहती है। ऐसी परिस्थिति में पाठयचर्या विषयक शोध, अपने प्रायोजकों एवं अभ्यासकर्ताओं के सैद्धांतिक मान्यताओं पर आधारित होता है। संभवतः इसने एक महत्वपूर्ण सरकारी सूचना कि विवादास्पद मुद्दों के समाधान के रुप में इसका राजनीतिकरण हो गया है के रुप में तटस्थ प्रवृति प्राप्त की थी या संभवतः पाठयचर्या पर हो रही परिचर्चा के एक भाग के रुप में इसने एक रोचक स्थिति प्राप्त कर ली था। लेकिन इस बात के भी कुछ प्रमाण मिले हैं की शोधकर्ताओं का समूह इसकी भूमिका को कुछ ज़्यादा बढ़ा रहे थे। अमेरिका में, फेडरल शैक्षिक नियमों को प्रभावित करनेवालों कारकों की सूची में नीति संबंधी

अध्ययन को सबसे नीचे का स्थान एक अनुसंधान के तहत प्रदान किया गया था। इसके पीछे सम्माननीय एवं विश्वसनीय मित्र राष्ट्रों के प्रबल विचार थे।

पाठयचर्या के संदर्भ में नीति संबंधी शोध उसके स्थानीय अनुकूलन को बढ़ावा देने के लिए भी किया जाता है।

अपनी पुस्तक 'बियोण्ड द स्टेबल स्टेट' में डोनाल्ड् स्कोन ने सीखे जाने वाले अनुदेशनों की चर्चा की है। लेकिन उनके मन में जिस अधिगम की बात चल रही थी वो स्थानीय नीति-निर्माता के अनुभवों, निर्णयों और युक्तियुक्त ज्ञान पर आधारित था। इसलिए विगत कुछ वर्षों से विद्यालय विशेष के केस स्टडी को पाठयचर्या संबंधी शोध में स्थान दिया जाने लगा है और इससे प्राप्त औपचारिक सामान्यीकरण को नीति-निर्माताओं को प्रमाणिक पाठयचर्या शोध के रुप में प्रदान किया गया। अन्य शब्दों में यदि कहा जाए तो विद्यालय विशेष के केस स्टडी को भी पाठयचर्या संबंधी शोध में स्थान दिया गया। ऐसे शोध, नीति-निर्माताओं को शोधकर्ता का दर्ज़ा नहीं देते हैं और नहीं ये साधाराण रुप से कुछ प्रश्नों का उत्तर देते हैं। ये उस प्रायोगिक आधार को विस्तृत करने का प्रयास करते हैं जिस पर प्रचलित पाठयचर्या के संदर्भ में तार्किक रुप से किए जानेवाले गेस की जाँच की जा सके।

कुछ देश विशेषतः इंगलैण्ड में पाठयचर्या के मामले में दिशा-निर्देश का अभाव था। वहाँ इस बात को लेक भ्रम था कि वास्तव में पाठयचर्या में कुल क्या-क्या चीजें शामिल हैं और विद्यालय विशेष के लिए पाठयचर्या में क्या शामिल है? परिणामस्वरुप वहाँ इस दिशा में कुछ आधारभूत शोध की आवश्यकताएँ उत्पन्न हुई ताकि इस संबंध में आँकड़े एकत्र किए जा सके कि विद्यालयों में क्या पढ़ाया और सीखाया जाना चाहिए। यूनाइटेड किंगडम में पाठयचर्या इस विवाद का विषय हो गया था कि क्या उतारदायित्व; बोर्ड के विचारों मे उत्पन्न विवादों में घिरा रहना चाहिए। इसे पेशवरों(जो कि शिक्षकों के निर्णयों पर बल दे रहे थे) और नौकरशाह(जो स्वयं के विचारों पर बल दे रहे थे) के विवाद के रुप में भी पहचाना जा सकता है। शिक्षा और विज्ञान विभाग तथा स्थानीय शिक्षण संस्थाएँ दोनों अपने-अपने स्थानों पर शिक्षा संबंधी शोध कर रहे थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पाठयचर्या पर उत्तम नियंत्रण पाना था। जुलाई, 1977 के ग्रीन पपेर में किसी पाठयचर्या का कौन सा हिस्सा मुख्य होना चाहिए, विषय पर शोध करने की आवश्यकता पर एक रिपोर्ट प्रकाशित किया गया था। दो वर्ष बाद शिक्षा एवं विज्ञान विभाग के एक सर्कुलर 14/77 में विद्यालय के पाठयचर्या को व्यवस्थित करने के लिए स्थानीय अधिकरणों की आवश्यकता की बात की गई थी। इसके अलावा विद्यालय परिषदों ने कई शोध कार्यों जो पाठयचर्या के विश्लेषण एवं व्यवस्था के विश्लेषण पर ज़्यादा बल दे रहे थे का प्रकाशन किया।

पाठयचर्या सुधार की प्रक्रिया को संस्थागत करने के क्षेत्र में काम कर रहे देशों, जिनके पास विश्वास एवं क्षमता की अलग-अलग मात्राएँ थी ने इस कार्य-कलाप के लिए 'शोध एवं विकास' नामक संस्था का गठन किया तथा तत्संबंधी साहित्य का प्रकाशान कार्य किया।

पाठ्यचर्या निर्माण

इस प्रकार आप देखते हैं कि पाठयचर्या विषयक शोध में पाठयचर्या संबंधी नीति को लेकर, जिसमें पाठयचर्या क्या होना चाहिए, शिक्षक योग्य है कि नहीं, पाठयचर्या संबंधी शोध क्या होगी, कौन सी संस्था पाठयचर्या संबंधी शोध के लिए उत्तरदायी है आदि को लेकर अनेक शोध कार्य हुए हैं। वर्तमान में भी पाठयचर्या के संबंध में नीति-निर्धारण एक महत्वपूर्ण विषय है।

अभ्यास प्रश्न

5. जुलाई, 1977 के ग्रीन पपेर में किसी पाठयचर्या का कौन सा हिस्सा मुख्य होना चाहिए विषय पर शोध करने की आवश्यकता पर एक रिपोर्ट प्रकाशित किया गया था। (सही/गलत)
6. पुस्तक 'बियोण्ड द स्टेबल स्टेट' डोनाल्ड् बर्फील्ड ने लिखी है। (सही/गलत)
7. इंगलैण्ड में पाठयचर्या के मामले में दिशा-निर्देश का अभाव था। (सही/गलत)
8. पाठयचर्या के संदर्भ में नीति संबंधी शोध उसके स्थानीय अनुकूलन को बढ़ावा देने के लिए भी किया जाता है। (सही/गलत)
9. शिक्षा प्रणाली में नीति का शिक्षा प्रणाली के विभिन्न संगठनों से कोई संबंध नहीं होता है। (सही/गलत)

पाठयचर्या विश्लेषण Curriculum Analysis

पाठयचर्या संबंधी शोध का एक और क्षेत्र वर्तमान पाठयचर्या या पाठयचर्या -प्रस्ताव का विश्लेषण करना है। इसके लिए प्रयुक्त प्रविधि सत्तारुढ़ दल के कारण परिवर्तित होते रहती है या विभिन्न देशों में अलग-अलग होती है। प्रत्येक पाठयचर्या तत्कालीन सत्तारूढ़ राजनीतिक दल के विचारों से प्रभावित होता है। ऐसे में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि जो पठ्यक्रम प्रचलन में है उस पर सत्तारूढ़ दल का कितना प्रभाव है और वह तत्कालीन शिक्षा प्रणाली के लिए कहाँ तक उपयोगी है या शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में वह कैसे सहायक है। जैसे साम्यवादी देशों में पाठयचर्या को मार्क्सवादी एवं नवमार्क्सवादी, दोनों विचारधाराएँ प्रभावित करती हैं। परिणामस्वरुप पाठयचर्या इन दोनों विचारधारओं के बीच में उलझा रहता है। अतः इन देशों में इन विचारधाराओं को ध्यान में रखकर पाठयचर्या विश्लेषण की आवश्यकता है।

विद्यालयों में जो पाठयचर्या प्रचलन में होता है उस पर गुप्त पाठयचर्या (हिडेन करिकुलम) का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। ये गुप्त पाठयचर्या सांकेतिक हिंसा फैलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते है परिणामस्वरुप शिक्षण कार्य सुचारु रुप से नहीं होता था। इसको देखते हुए कई शोध कार्य विद्यालयों की कार्य प्रणाली के विश्लेषण के क्षेत्र में भी किए गए। पाठयचर्या या कक्षाकक्ष शोध में व्यापक परिदृश्य की पृष्ठभूमि पर सूक्ष्म एथनोग्राफी पाना कठिन है। इसलिए इस क्षेत्र में जो कुछ अच्छे कार्य हैं उनके प्रयोग उदाहरण के तौर पर अधिक मात्रा में किया जाता है। इस क्षेत्र में हुए कार्यों

की जो एक लंबी शृखंला है, वो शोध की निर्भरता सामान्य तथ्यों पर प्रदर्शित करती है। इस परिस्थिति में यह विचार कि पूँजीवादी समाज में पाठयचर्या , जो पूँजीवादियों द्वारा चलाया गया एक धोखा है, पीढ़ी दर पीढ़ी शासक या कुलीन वर्ग की श्रेष्ठता के मिथक को प्रसारित करता है। यह युक्ति 'शक्ति की असमानता' को 'संस्कृति की असमनाता' में परिवर्तित करने की है।

पाठयचर्या विश्लेषण संबंधी शोध, पाठयचर्या या पाठयचर्या –प्रस्ताव के तार्किक या आनुभिवक अध्ययन की बात करता है। फ्रासेर(1972) ने पाठयचर्या के उद्देशय संबंधी मूलभूत समस्याओं की जांच करने के लिए अनेक तरीकों का सर्वेक्षण किया। उसने यह पाया कि इस बात को जानने के लिए कि कोई पाठयचर्या विशेषज्ञों की राय में वैध है कि नहीं, आनुभविक शोध का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार ऑस्ट्रेलियन सांइस प्रोजेक्ट के उद्देशयों की जाँच एक सर्वे के माध्यम से की गई थी। पाठयचर्या संबंधी योजनाओं के अध्ययन के स्थायी प्रकृति के कारण इस बात की शंका है की शोधकर्ता अपने विचारों एवं मूल्यों को प्रकाश में नहीं आने देना चाहते हैं। एण्डरसन(1980) ने यद्यपि शोध प्रविधियों के विश्लेषण पर बहुत ज़्यादा ध्यान नहीं दिया है लेकिन वो पाठयचर्या के लिखित प्रस्ताव के अनुमोदन के लिए आधार प्रदान करना चाहते हैं।

पाठयचर्या प्रारुप, अनुप्रयोग एवं क्रियात्मक शोध Curriculum Design, Application and Action Research

पाठयचर्या के अभ्यासकर्ता के दृष्टिकोण से पाठयचर्या प्रारुप का निर्माण या विकास एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है। कभी-कभी इनमें विचारों जिनमें सुवर्णित युक्तियों का संचय होता है जो कि पाठयचर्या के अच्छे अभ्यास का परिणाम होती है। अक्सर, शोधकार्य पाठयचर्या के प्रारुप के निर्माण से संबद्ध होता है ताकि पाठयचर्या प्रारुप सिद्धांत और व्यवहार दोनों के स्तर पर संतुलित हो सके। अर्थात सैद्धांतिक रुप से बने पाठयचर्या के प्रारुप को व्यवहार में लाया जा सके। इस प्रकार के शोधकार्य के उदाहारण में, टेलर(1970) का शोधकार्य "हाउ टीचर्स प्लान दियर कोर्स" एवं वॉकर(1975) का "एकाउंट ऑफ द पार्टिकुलर ऑफ इनकारनेशन ऑफ डेलिबरेटिव थ्योरी" को शामिल किया जाता है।

यद्यपि वॉकर(1976) के इस कथन कि 'पाठयचर्या निर्माण और साधारण तरीके से शिक्षण कार्य करना' शोध के बहुत जटिल प्रकार नहीं है, से असहमत होने का कोई काराण नहीं है तथापि बृहद् स्तर के पाठयचर्या प्रस्ताव के लिए यह असाधारण बात नहीं है कि उनके आवश्यक तत्वों का आधार शोधकार्य के परिणाम हो। यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि निर्माण और विसरण मॉडल का शोध, स्वयं पाठयचर्या संबंधी शोध हो। अति साधारण शब्दों में पाठयचर्या सुधार आन्दोलन को अपने कार्य-कलापों के लिए इसे अर्द्धवैज्ञानिक शोध कहा जा सकता है।

पाठयचर्या प्रारुप के संदर्भ में यद्यपि नियोजित परिवर्तन का सिद्धांत काफी अस्पष्ट एवं अव्यवहारिक है तथापि पाठयचर्या में नियोजित परिवर्तन संबंधी शोध, दो उपलब्ध महत्वपूर्ण पैराडाइम्स,

पाठ्यचर्या निर्माण

प्रणाली-निर्माण एवं यांत्रिक में से किसी एक में शामिल होने की प्रवृति रखता है। इसके अंतर्गत हम ऑस्ट्रेलियन करिकुलम में हुए नवाचार पर शिक्षण वातावरण के प्रभाव को सारणीबद्ध करने के लिए तिसर एवं पॉवर द्वारा 1978 में किए गए शोधकार्य, जिनमें उनलोगों ने प्रतीपगमन विश्लेषण(रीग्रेशन एनालसिस) का प्रयोग किया था को शामिल करते हैं।

पाठयचर्या के अनुप्रयोग संबंधी शोध की प्रवृति, नवाचार के समाजशास्त्र और समाज मनोविज्ञान के आधार पर समूह बनाने की है। अनुप्रयोग संबंधी अध्ययन किसी विशेष विद्यालय की केस स्टडी है जिसमें एक नई प्रवृति मल्टिसाइट सेटिंग में एथनोग्राफिक शोध जिसमें अंतःसाइट सामान्यीकरण को भी ध्यान में रखा जाता है, देखने को मिल रही है(स्टेक और आइसेल, 1978)। इस स्थिति में ये शोध एथनोग्राफिक कम और क्षेत्रीय कार्य का ब्यूरोक्राइटाइजेशन ज्यदा प्रतीत होता है। साथ-साथ ही ये अध्ययन सर्वे आधारित अध्ययन एवं पॉलिसी आधारित अध्ययन प्रतीत होते थे।

अभी क्रियात्मक अनुसंधान में भी शोधकर्ताओं की रुचि जागृत हुई है। सामान्य रुप से इस प्रकार के अध्ययन में सहभागी अवलोकन को शामिल किया जाता है जिसमें एक अवलोकनकर्ता स्वयं को अवलोकन में स्वाभाविक रुप से शामिल करता है ताकि अनुभवों के द्वारा सीख सके। स्पष्टतः यह किसी व्यक्ति विशेष के स्वयं के निष्पादन के प्रति उसके उत्साही, खोजी एवं चिंतनशील मस्तिष्क की मांग करता है। जब किसी विश्वविद्यालय का एक शोधकर्ता किसी शिक्षक के साथ मिलकर शोध कार्य करता है तो वह आंतरिक एवं वाह्य परस्पेक्टिव्स को शामिल कर भी सकता है और भी नहीं भी लेकिन जब एक शिक्षक शोध कार्य करता है, तो वह सामान्यतः पाठयचर्या संबंधी उन विचरधाराओं, जो कि जाँचे जाते हैं के प्रति कुछ विचारणीय विश्लेषण के संदर्भ में दिए गए बौद्धिक वर्णन के परे जाकर अध्ययन करता है अर्थात वह उन सारे विश्लेषणों को अपने अध्ययन में शामिल करता है, उन पर चिंतन करता है तथा उनके संदर्भ में अपने विचार भी रखता है। इन विचारधाराओं को विधि संबंधी परिकल्पनाओं के रुप में भी जाना जाता है। 'द फोर्ड टीचिंग प्रोजेक्ट' ने शोध के तरीकों को स्थापित करने के में बहुत भूमिका निभाई है। यद्यपि उसके द्वारा प्रतिपादित विचारधारा कि इसकी, सहभागियों में आत्म प्रावर्तन का संवर्द्धन करने की योग्यता, कम है, इस सत्य को कहने के लिए बाहरवालों को कम महत्व देना चाहिए, के साथ कुछ असहमति भी है।

पाठयचर्या मूल्यांकन Curriculum Evaluation

पाठयचर्या मूल्यांकन संबंधी कार्यक्रम ने अतीत में शैक्षिक शोध की प्रविधियों के संदर्भ में चल रहे विवाद में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कुछ लेखकों ने मूल्यांकन को शोध से अलग करने का प्रयास किया था। उनका यह मानना था कि 'पाठयचर्या मूल्यांकन' कार्यक्रम, पाठयचर्या के प्रायोजकों, निर्माणकर्ताओं एवं उपयोग करनेवाले समूहों के प्रति एक कार्यात्मक उत्तरदायित्व के

कारण अपनी खुद की शोध समस्या उत्पन्न करने में अक्षम है लेकिन उनका ये कहना की पाठयचर्या का मूल्यांकन सिर्फ 'अभ्यासकर्ता को ज्ञान' प्रदान करता है एवं 'विस्तृत सिद्धांत' को जन्म देता है, भी अच्छा नहीं है। पाठयचर्या मूल्यांकन और शैक्षिक शोध के मध्य संबंध को व्यक्त करनेवाला एक और तथ्य, सामान्य प्रवृति, शोध पैराडाइम्स एवं विधि के अभ्यास के उदय पर बल देता है। पाठयचर्या मूल्यांकन तार्किक रुप से पाठयचर्या निर्माण की आवश्यकता है। स्टेनहाउस(1981) ने यह सुझाव दिया कि पाठयचर्या सुधार आंदोलन ने शैक्षिक प्रणाली में वित्तीय संसाधनों के पुनर्वितरण को प्रदर्शित किया है। अतः, पाठयचर्या के मूल्यांकन के लिए शोध पैरडाइम के निर्माण के प्रारंभिक प्रयास को कुछ वित्तीय संसाधनों को सुव्यवस्थित करने के शोध के प्रयास के रुप में पढ़ा जाना चाहिए। इस प्रकार मूल्यांकन की प्रविधि को सबसे पहले आवश्यक रुप से सामान्य नियमों के खोज से संबंधित शोध प्रविधि के समान समझना चाहिए। शिक्षा में पाठयचर्या निर्माण एक निश्चित उपचारात्मक कार्यक्रम हो गया था जिसकी जाँच ठीक उसी तरीके से की जाती है जिससे कृषि विज्ञान में फसल उत्पादन की। शोध प्रविधि की आवश्यकताओं से मिलने के लिए यह आवश्यक है की ये प्रभाव मापनीय हो और मनोमीतिय उपागम का प्रयोग करे ताकि वांछित ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति उत्पन्न किया जा सके। लेकिन शीघ्र ही साहित्य की कमी स्पष्ट हो गई और मूल्यांकन की तकनीकि, पाठयचर्या के प्रारुप के आगे-पीछे, ऊपर-नीचे घुमने लगी। इस प्रकार के मूल्यांकन संबंधी अध्ययनों को किसी विशेष शैक्षिक कार्यक्रम में क्या सीखा गया है और पाठयचर्या के एक क्षेत्र जिसकी विशेषता वर्णानात्मक कौशल है, की सूची के रुप में सूचीबद्ध किया जा सकता है।

क्रोनबैक(1975) ने सामान्य एवं पाठयचर्या मूल्यांकन संबंधी शैक्षिक शोधों की प्राथमिकताएँ उलटे क्रम में कर देने की बात की।

लेवी(1973) ने इस बात की ओर इशारा किया कि पाठयचर्या मूल्यांकन के वर्तमान अवस्था पर चर्चा करना ज़्यादा तार्किक होगा जो सैद्धांतिक मॉडलों तथा अनुप्रयुक्त शोध प्रविधियों में बहुत ज़्यादा अंतर से भरा पड़ा है। ये अंतर मुख्य रुप से साइकोमेट्रिक और इल्युमिनेटिव तथा भाववाद एवं प्रकृतिवाद के मध्य है। फ्रासेर (1982) के पाठयचर्या मूल्यांकन साहित्य संबंधी एनोटेटेड बिबलियोग्राफी पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट होता है कि शोध विधि संबंधी यह भ्रम कितना व्यापक है। एक तरफ बेस्तैन एवं साथी जैसे लेखकों ने अपने आप को मुख्य रुप से शोध की जटिल समस्याओं जैसे- वाह्य वैधता का भय और 'उपचारों के भ्रामक प्रभाव' को और 'परिस्थिति के प्रभाव' को अलग करने की आशा से जुड़े मानते हैं तो दूसरी ओर गुबा(1978) और स्मिथ(1978) जैसे लेखक खुद को अनुसंधान के प्राकृतिक तरीके से जोड़कर देखते हैं तथा मानते हैं कि जो पाठयचर्या प्रचलन में है उसका मूल्यांकन, सहभागी अवलोकन के निर्णयों, साहित्य एवं अर्द्धऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर होना चाहिए। इस प्रकार, मूल्यांकन अध्ययन, जब 'साधारण अनुभवों' को प्रसारित करने के बजाय 'क्रमबद्ध अनुभवों एवं विचारों' के प्रकाशन पर बल देता है, तब शोध कार्य के समीप हो जाता है। स्वध्याय और स्वमूल्यांकन, पाठयचर्या मूल्यांकन

के लिए काफी प्रयोग में लाए जाते हैं। यह स्वमूल्यांकन या स्वध्याय, पाठयचर्या संबंधी क्रियात्मक शोध से संबद्ध हो सकते है। इनका संबंध शोधकर्ता के पाठयचर्या मूल्यांकन संबंधी अपने विचारों को प्रकाशित करने से भी होता है।

अभ्यास प्रश्न

10. मिलान करें

समूह क	समूह ख
(अ) स्टेनहाउस(1981)	(1) सामान्य एवं पाठयचर्या मूल्यांकन संबंधी शैक्षिक शोधों की प्राथमिकताएँ उलटे क्रम में कर देने की बात की।
(ब) क्रोनबैक(1975)	(2) पाठयचर्या सुधार आंदोलन ने शैक्षिक प्रणाली में वित्तीय संसाधनों के पुनर्वितरण को प्रदर्शित किया है।
(स) बेस्तैंन	(3) अनुसंधान के प्राकृतिक तरीके से संबंधित।
(द) गुबा(1978)	(4) शोध की जटिल समस्याओं जैसे- व्हाय वैधता का भय से संबंधित।

13.4 पठ्यक्रम संबंधी शोध की प्रवृति Trends of Curriculum Research

पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र में एक लंबी शृखंला होने के बावजूद जो सामान्य प्रवृति है, वो संख्यात्मक, एथनोग्राफिक और विवेचनात्मक अध्ययन की है। कुछ सीमा तक हरमेनेटिक और आइडियोग्राफिक अध्ययनों को भी स्थान दिया गया है। जैसा की वॉकर(1976) ने इंगित किया है की यह एक अंश है, क्योंकि पठ्यक्रम की जटिलता सत्य और रोचक परिकल्पनाओं, जिनको की जाँचा जा सके, को बहुत ज़यादा मात्रा में जन्म नहीं देती है।

पाठयचर्या की समस्याओं के अध्ययन के लिए जांच सह प्रमाण विधि भी अप्रत्यक्ष प्रयास के अंतर्गत आते हैं।

करिकुलम को केस स्टडी द्वारा समझने के प्रयास में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और प्रक्रियात्मक अध्ययन को शामिल किया जाता है। इसके तहत विद्यालयों की केस स्टडी की जाती है। प्राकृतिक शोध भी बहुत प्रयोग में लाया गया है क्योंकि इसकी वैधता, वास्तविक कार्यस्थल पर किए गए अवलोकन की मत्रा पर निर्भर करती है।

इस प्रकार आप यह समझ सकते हैं कि पाठयचर्या संबंधी शोध विविधताओं से भरा हुआ है। इसएं अनेक शोध प्रविधियों को स्थान दिया गया है।

13.5 सारांश

इस इकाई में पाठयचर्या संबंधी शोध कार्य के क्षेत्र यानि कि स्कोप ऑफ करिकुलम रिसर्च का वर्णन किया गया है। इसके अंतर्गत पाठयचर्या संबंधी शोध कार्य के क्षेत्र का अर्थ का वर्णन किया गया है तथा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले विभिन्न पहलुओं की चर्चा की गई है। इस इकाई में पाठयचर्या संबंधी शोध कार्य की प्रवृति का भी वर्णन किया गया है।

चूँकि पाठयचर्या निरंतर परिवर्तनशील है तथा शिक्षा प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण भी है। अतः, इस निरंतर परिवर्तनशील तथ्य को समझकर तथा परिवर्तन की माँग को समझकर शिक्षा–प्रणाली को समायोजित करने के लिए इस इकाई का ज्ञान अति उपयोगी है।

इस इकाई में अतीत में यूरोपीय एवं कुछ अन्य पश्चिमी देशों में हुए पाठयचर्या संबंधी शोध कार्य को आधार बनाया गया है जिससे यह इकाई और भी उपयोगी हो जाती है।

13.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. 12वीं
2. फ्लरे
3. 1695ई0
4. संयुक्त राज्य अमेरिका
5. सही
6. गलत
7. सही
8. सही
9. गलत
10. (अ) 2
    (ब) 1
    (स) 4
    (द) 3

13.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Anderson, D.C. (1980). *Evaluating Curriculum proposals : A critical Guide.* Wiley, NewYork.
2. Bernstein, I. Bohrnstedt G. Brogalta E. , (1975). External validity and evaluation research : A codification of problems. Soc. Methods res. 4.
3. Cremin, L. A. , (1971). Curriculum making in the united states teach. Coll. Rec. 73, 20712.
4. Cronbach, L.J. (1975). Beyond the two Disciplines of Scientific Psychology. Am. Psychol. 30, 116- 27.
5. Frasser, B.J. (1977). Evaluating the intrinsic worth of curricular goals : A discussion and an example. J. Curric. Stud. 9 , 125-32.
6. Lewy, A. (1973). The practice of curriculum evaluation. Curric Theory network 11, 6-33.
7. Rug, H.O.(1927) *The foundations of curriculum making. Twenty-sixth yearbook of the national society for the study of education.* Part II, Public school publishing. Bloomington, Illinois.
8. Schubert, W.H. (1980). *Curriculum Books : the first eighty years : context, commentary and bibliography.* University press of America, Lanham, Maryland.
9. Stenhouse, L.(1981). Case study in educational research and evaluation. Centre for applied research in education (CARE), University of East Anglia, Norwich.
10. Taylor, P.H. (1970). *How Teachers Plan Their Courses : Studies In Curriculum Planning*, National foundation for educational research. (NFER), Slough.

13.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र से आप क्या समझते हैं?
2. पाठयचर्या संबंधी शोध के एक क्षेत्र के रुप में पाठयचर्या मूल्यांकन का वर्णन करें।
3. पाठयचर्या निर्माण की नीति संबंधी शोध से आपका क्या तात्पर्य है?
4. पाठयचर्या संबंधी शोध की प्रवृति का वर्णन करें।

इकाई 14 भारत में पाठयचर्या संबंधी शोध

14.1 प्रस्तावना
14.2 उद्देश्य
14.3 भारत में पाठयचर्या संबंधी शोध
14.4 भारत में पाठयचर्या संबंधी हुए कुछ शोध कार्यों के उदाहरण
14.5 सारांश
14.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
14.7 संदर्भ ग्रंथ सूची
14.8 निबंधात्मक प्रश्न

14.1 प्रस्तावना

पाठयचर्या शिक्षा प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। यह शिक्षा की गुणवत्ता का निर्धारक तत्व है। शिक्षा की गुणवत्ता अंतिम रुप से पाठयचर्या के व्यक्तिगत और सामाजिक प्रासंगिकता तथा शिक्षण संस्थानों में इसके प्रभावपूर्ण अनुप्रयोग की सीमा पर निर्भर करता है। शिक्षा प्रणाली में पाठयचर्या का प्रभावपूर्ण अनुप्रयोग तभी संभव है जब वह पाठयचर्या शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता के अनुकूल हो। तात्पर्य यह है कि हमारी शिक्षा प्रणाली परिवर्तनशील है और यह समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुकूल परिवर्तित होती रहती है। पाठयचर्या को भी उन परिवर्तनों के अनुकूल परिवर्तित करना पड़ता है।

शिक्षा किसी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए राजपथ का कार्य करती है। विकास के विभिन्न पक्षों, जैसे- सामाजिक, आर्थिक आदि में अनेक समानताएँ होती है लेकिन इनकी अपनी कुछ विशेषताएँ भी होती हैं। इनकी ये विशेषताएँ इनके पाठयचर्या में झलकनी चाहिए और पाठयचर्या इन विशेषताओं की प्राप्ति के लिए उपयुक्त होना चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी, विशेषतः शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थी को पाठयचर्या एवं पाठयचर्या संबंधी शोध के संदर्भ में जानकारी होनी चाहिए। उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत इकाई की रचना की गई है। इस इकाई में भारत में हुए पाठयचर्या संबंधी कुछ शोध कार्यों पर प्रकाश डाला गया है ताकि अध्येता उनसे अवगत हो सके।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप-

1. विद्यार्थी भारत में हो रहे पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य की संरचना को समझ सकेंगे
2. विद्यार्थी भारत में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हो रहे पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की प्रवृति का वर्णन कर सकेंगे
3. विद्यार्थी अधिगम के विभिन्न क्षेत्रों मे हो रहे पाठयचर्या संबंधी विभिन्न शोधकार्यों का भारतीय परिदृश्य में वर्णन कर सकेंगे
4. विद्यार्थी पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में प्रयुक्त होनेवाले प्रमुख शोध उपकरणों एवं प्रमुख शोध विधियों से अवगत हो सकेंगे
5. विद्यार्थी पाठयचर्या के विभिन्न घटकों से संबंधित शोधकार्यों की प्रवृति से परिचित हो सकेंगे।

14.3 भारत में पाठयचर्या संबंधी शोध

भारत में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य एक नवीन घटना है। इसका लगभग 57 वर्षों का अपना एक संक्षिप्त इतिहास है। 57 वर्षों की इस अवधि में पाठयचर्या निर्माण के क्षेत्र में अनेक शोधकार्य हुए हैं। ये शोधकार्य बहुआयामी है और लगभग पाठयचर्या के प्रत्येक पहलु को समाहित किए हुए हैं। किसी क्षेत्र विशेष की ओर शोधकर्ताओं का ध्यान कम या ज़्यादा रहा हो, ऐसा हो सकता है लेकिन कोई भी पहलू शोधकर्ताओं ने अछूता नहीं छोड़ा है। इस बहुआयामी शोधकार्य की प्रवृत्ति को समझने के लिए इसका विशद् अध्ययन अति आवश्यक है। अध्ययन के सुविधा की दृष्टि से हम भारत में अब तक हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों को मुख्य रुप से पाँच भागों में बाँट सकते हैं। ये पाँच भाग निम्नलिखित हैं जिसे हम पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य की संरचना भी कह सकते हैं:

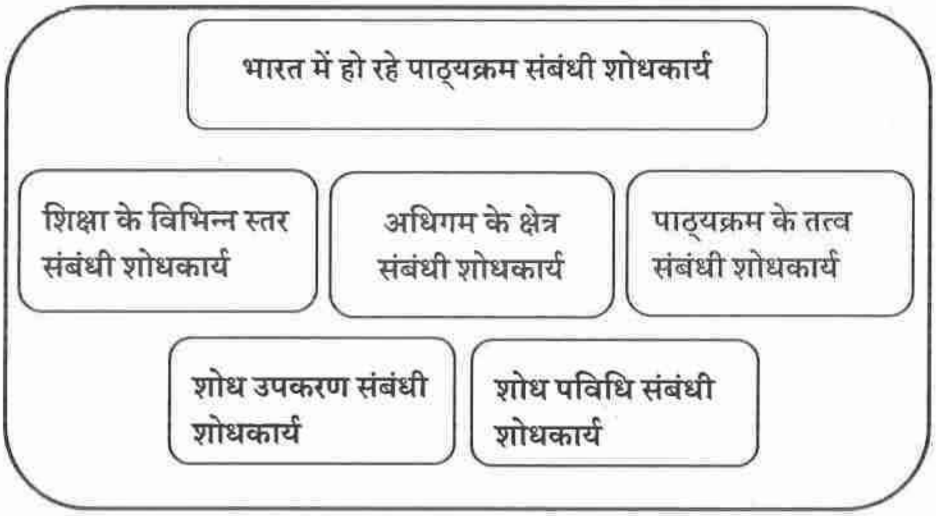

रेखाचित्र संख्या-1

1. शिक्षा के स्तर संबंधी शोध – प्री-स्कूल, प्राथमिक कक्षाएँ, माध्यमिक कक्षाएँ, उच्चतर माध्यमिक कक्षाएँ, उच्च शिक्षा, समग्र तथा सामान्य;
2. अधिगम के क्षेत्र संबंधी शोध – भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कार्य अनुभव, व्यावसायिक/ तकनीकि शिक्षा; स्वास्थय एवं शारीरिक शिक्षा; जनसंख्या एव यौन शिक्षा, समग्र एवं सामान्य;
3. पाठयचर्या के घटक – उद्देश्य एवं पाठ्यवस्तु, अधिगम अनुभव, पाठ्यपुस्तक, मूल्यांकन, शैक्षणिक सुविधाएँ
4. शोध उपकरण संबंधी शोध
5. शोध प्रविधि संबंधी शोध।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य

शिक्षा के विभिन्न स्तर पर पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य की संरचना निम्नलिखित है:

- प्री-स्कूल(विद्यालय पूर्व)
- प्राथमिक स्तर
- माध्यमिक स्तर
- उच्चतर माध्यमिक स्तर
- उच्च शिक्षा
- समग्र
- सामान्य

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों का यदि अध्ययन किया जाय तो यह देखने को मिलता है की पाठ्ययक्रम संबंधी शोधकार्यों में, प्री-स्कूल स्तर पर हुए शोधकार्यों का स्थान नगण्य है। इस तथ्य को जानने के बावजूद भी कि किसी व्यक्ति के विकास के लिए यह एक अति महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील अवस्था है, यह सबसे उपेक्षित रहा है। इस पर और ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्राथमिक स्तर पर सार्वाधिक शोधकार्य हुए हैं। सन् 1998 तक इन कार्यों का प्रतिशत 35% था। और इस क्षेत्र में निरंतर प्रगति होती गयी है। इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक शिक्षा पर शोधकर्ताओं के द्वारा उपयुक्त ध्यान दिया गया है। इसमें भी निम्न प्राथमिक शिक्षा पर ज़्यदा महत्व दिया गया है।

माध्यमिक शिक्षा की ओर शोधकर्ताओं का रुझान शुरु से हो रहा है। पाठयचर्या संबंधी हुए समस्त शोधकार्यों में इनका योगदान लगभग 35.8% है। इससे से यह स्पष्ट होता है कि इस स्तर पर पाठयचर्या निर्माण को ज़्यादा महत्व दिया गया है। हाँलाकि इसमें उतार-चढ़ाव होते रहे हैं फिर भी शोधकर्ताओं का पर्याप्त ध्यान इस स्तर की ओर रहा है।

पाठ्यचर्या निर्माण

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की संख्या घती-बढ़ती रही है। सन् 1978-83 की अवधि में जो संख्या 3.7 % थी वो बढ़कर सन् 1983-88 में 14.1 % हो गई थी। सन् 1988-92 की अवधि में यह क्षेत्र अत्यंत ही उपेक्षित रहा है। इससे तात्पर्य यह है कि इस स्तर पर शोधकर्ताओं का रुझान परिवर्तित होते रहा है। लेकिन अंतिम रुप से इस स्तर को भी शोधकर्ताओं द्वारा समुचित सम्मान नहीं दिया गया क्योंकि बाद में इस क्षेत्र में और पतन हुआ।

विद्यालय स्तर के समग्र पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य को भी समुचित स्थान दिया गया है। सन् 1967-72 में 10%, सन् 1972-78 में 15.1%, सन् 1978-83 में 9.2%, सन् 1983-88 में 5.0% शोधकार्य इस क्षेत्र में हुए हैं। हाँलाकि इसमें भी उतार-चाढ़ाव होते रहे हैं लेकिन फिर भी शोधकर्ताओं का रुझान इस ओर रहा है । ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि विद्यालय स्तर का समग्र पाठयचर्या , पाठयचर्या की समस्याओं को व्यापक परिदृश्य में देखता है ।

उच्च शिक्षा के स्तर पर शोधकर्ताओं का रुझान हाँलाकि पहले तो नहीं था या बहुत कम था लेकिन धीरे-धीरे यह बढ़ता गया । सन् 1967-72 में 2.8%, सन् 1972-78 में 10.1%, सन् 1978-83 में 14.8% तथा सन् 1983-88 में यह 16.6% था। सन् 1988-92 की अवधि में इस क्षेत्र में शोधकार्यों की संख्या 30% थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि शोधकर्ताओं ने बाद में उच्च शिक्षा के स्तर पर पाठयचर्या निर्माण संबंधी शोधकार्य को स्थान दिया । वर्तमान परिदृश्य में देखा जाए तो प्री-स्कूल स्तर की ओर आज बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की ओर शोधकर्ताओं का रुझान अभी भी बना हुआ है। समस्त शोधकार्य का लगभग 50% इस क्षेत्र में हो रहे हैं। उच्च शिक्षा को भी महत्व दिया जा रहा है तथा आनेवाले समय में पाठयचर्या निर्माण के महत्वपूर्ण तत्व की सूची में इसका नाम भी शामिल हो जाएगा। सामान्य पाठयचर्या संबंधी शोध की भी कुछ ऐसी ही स्थिति है।

अभ्यास प्रश्न

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की संख्या का प्रतिशत सन् 1983-88 में .... था।
2. उच्च शिक्षा के स्तर पर पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की संख्या का प्रतिशत सन् 1967-72 में .... था ।
3. 1967-72 में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य का .... प्रतिशत विद्यालय स्तर के समग्र पाठयचर्या के क्षेत्र में हुआ था।
4. शिक्षा के .... स्तर पर पाठयचर्या संबंधी सर्वाधिक शोधकार्य हुए हैं।

5. पाठयचर्या संबंधी हुए समस्त शोधकार्यों में माध्यमिक स्तर पर .... प्रतिशत शोधकार्य हुए हैं।

अधिगम के क्षेत्र संबंधी शोधकार्य

अधिगम के विभिन्न क्षेत्र

- भाषा
- विज्ञान
- गणित
- सामाजिक विज्ञान
- जनसंख्या एवं यौन शिक्षा
- स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा
- कार्य अनुभव, व्यावसायिक, तकनीकि एवं कृषि शिक्षा
- मूल्य शिक्षा
- अधिगम के समस्त क्षेत्र पर समावेशी

- **भाषा-** शोधकर्ताओं का रुझान इस ओर प्रारंभ में तो बहुत अधिक था लेकिन बाद के वर्षों मे इस तरफ से शोधकर्ताओं का रुझान घटता गया। इस क्षेत्र में हुए शोधकार्यों पर दृष्टिपात करने से एक और बात स्पष्ट होती है कि इनमें से ज़्यादातर शोधकार्य शब्दकोष या भाषा विज्ञान संबंधी शोधकार्य थे। पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य तो बहुत कम ही थे।
- **विज्ञान-** इस क्षेत्र में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की संख्या घटती-बढ़ती रही है। सन् 1967-72 की अवधि में जो संख्या 5.7% थी वो बढ़कर सन् 1978-83 में 23.9% हो गई लेकिन सन् 1988-92 की अवधि में यह घटकर 13.04 % हो गया था। चूँकि समय के साथ विज्ञान का महत्व जीवन के हर क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है, अतः इस क्षेत्र में शोधकार्यों की संखया बढ़नी चाहिए। इस क्षेत्र में पर्यावरण विज्ञान के एक नए क्षेत्र को बल मिला है, जो उत्साहजनक है।
- **गणित-** इस क्षेत्र की ओर शोधकर्ताओं के रुझान में विज्ञान की ही भाँति मिली-जुली प्रवृति रही है।
- **सामाजिक विज्ञान-** इस क्षेत्र को शोधकर्ताओं का प्रारंभ से ही कम रुझान मिला है और यही प्रवृति बनी रही है।

- **जनसंख्या और यौन शिक्षा-** जनसंख्या एवं यौन शिक्षा के क्षेत्र में प्रारंभिक वर्षों में तो शोधकर्ताओं का ध्यान नहीं था परंतु बाद के वर्षों में इस ओर इनका ध्यान खींचा। चूँकि भारतीय विद्यालयों के पाठयचर्या में यह एक नई प्रविष्टि थी इसलिए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में इसे सम्मानजनक स्थान मिलना चाहिए, लेकिन ऐसा है नहीं।
- **स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा-** इस क्षेत्र में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य को बहुत ज़्यादा महत्व नहीं दिया गया है। अतीत में हुए 370 शोधकार्यों में सिर्फ 18 शोधकार्य इस क्षेत्र से संबंधित थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के संदर्भ में शोधकार्य हासिए पर स्थित है। इस क्षेत्र की ओर और अधिक ध्यान की आवश्यकता है और इसके लिए इस विषय़ से संबंधित शिक्षकों को शुरुआत करनी होगी।
- **कार्य-अनुभव, व्यावसायिक, तकनीकी एवं कृषि शिक्षा** के क्षेत्र में पठ्यक्रम संबंधी शोधकार्यों की संख्या लगभग स्थिर रही है। कृषि शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा की ओर शोधकर्ताओं का ज़्यादा रुझान रहा है। कार्य-अनुभव पाठयचर्या में बिल्कुल सीमा रेखा पर स्थित है इसलिए शोधकर्ताओं का ध्यान इस ओर आकर्षित नही हुआ है। तकनीकी शिक्षा पर पहले से बहुत ज़्यादा ध्यान नहीं दिया गया था लेकिन अब इस ओर ध्यान दिया जा रहा है।
- **मूल्य शिक्षा** के क्षेत्र में बहुत बाद में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य प्रारंभ हुए लेकिन शीघ्र ही इसने शोधकर्ताओं की प्राथमिकताओं की सूची में अपना स्थान बना लिया।
- **अधिगम के समस्त क्षेत्र पर समावेशी** रुप से पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य की ओर भी शोधकर्ताओं का रुझान था। लेकिन उसमें उतार-चढ़व होता रहा है । इस क्षेत्र में शोधकार्य होना भी अति महत्वपूर्ण है।

पाठयचर्या के घटक संबंधी शोध कार्य

पाठयचर्या के विभिन्न घटक

- उद्देश्य एवं पाठ्यवस्तु
- अधिगम अनुभव
- पाठ्यपुस्तक
- मूल्यांकन
- शैक्षणिक सुविधाएँ

पाठयचर्या के घटक संबंधी शोधकार्यों में प्रारंभ के कुछ वर्षों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान शोधकर्ताओं द्वारा अधिगम अनुभव संबंधी शोधकार्यों को दिया गया है। सन् 1967 से लेकर सन् 1988 तक इस क्षेत्र में हुए कुल शोधकार्यों की संख्या 102 थी लेकिन इसके बाद इस क्षेत्र में

शोधकर्ताओं का रुझान गिरता गया । सन् 1988 से सन् 1992 तक की अवधि में सिर्फ एक शोध कार्य इस क्षेत्र में हुआ । शोधकर्ताओं को इस क्षेत्र की ओर ध्यान देना आवश्यक है ।

सभी घटकों पर सम्मिलित रुप से कार्य करने की प्रति भी शोधकर्ताओं का रुझान रहा है। सन् 1967-1988 की अवधि तक लगभग इस क्षेत्र में 80 शोधकार्य हुए थे । यह उत्साहजनक प्रवृति थी और यह प्रवृति बराबर बनी रही।

उद्देश्य और सिलेबस के क्षेत्र में शोधकार्यों की संख्या में वृद्धि और ह्रास की प्रवृति दृष्टिगोचर हुई है। प्रारंभ के वर्षों में इस क्षेत्र की ओर शोधकर्ताओं का रुझान बहुत ज़्यादा था। सन् 1967 से सन् 1978 तक की अवधि में इस क्षेत्र कुल 45 कार्य हुए थे। लेकिन इसके बाद इस क्षेत्र में निरंतर ह्रास होता गया है। सन् 1978-83 की अवधि में इस क्षेत्र में कुल 17 शोधकार्य, सन् 1983-88 की अवधि में 14 तथा 1988-92 की अवधि में 2 शोधकार्य इस क्षेत्र में हुए थे। इस प्रकार पाठयचर्या का एक महत्वपूर्ण घटक लगातार उपेक्षित होता गया है। एक प्रभावी पाठयचर्या बनाने के लिए शोधकर्ताओं का इस ओर रुझान होना आवश्यक है।

पाठयचर्या का एक महत्वपूर्ण घटक मूल्यांकन भी है। इस क्षेत्र की ओर भी शोधकर्ताओं की रुचि में उतार-चढ़ाव होता रहा है। सन् 1967-72 की अवधि में इस क्षेत्र में हुए शोधकार्यों की संख्या जहाँ 17 थी वो कालांतर में घटते-घटते 1988-92 की अवधि में 6 हो गई थी। इस क्षेत्र में हो रहे शोधकार्यों की संख्या में निरंतर गिरावट ही आई है। यह स्थिति एक चेतावनी है क्योंकि मूल्यांकन प्रक्रिया के बिना कोई पाठयचर्या प्रभावी हो हीं नहीं सकता है।

पाठ्यपुस्तकों के प्रति शोधकर्ताओं का रुझान भी निरंतर ह्रास की प्रवृति प्रद्रशित कर रहा है। विभिन्न अवधि में पाठ्यपुस्तकों के संबंध में हुए शोधकार्यों के प्रतिशत को यदि देखा जाए तो सन् 1967-78 में यह 12.8 % था जो घटकर सन् 1988-92 में 4.35% रह गया था । आगे भी इस प्रवृति में ह्रास दृष्टिगोचर हुआ है। लेकिन इस प्रवृति में वृद्धि के आसार दिख रहे है। पाठयचर्या संबंधी शोध का यह क्षेत्र शोधकर्ताओं को अपनी ओर भविष्य में आकर्षित करेगा।

शिक्षक अनुक्रिया पाठयचर्या का एक नया घटक है जिसकी ओर अभी शोधकर्ता आकर्षित हो रहे हैं। इसके अलावा अनुदेशनात्मक प्रारुप एवं मॉड्युल भी पाठयचर्या का एक घटक है जो शोधकर्ताओं को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।

अभ्यास प्रश्न

6. पाठयचर्या के सभी घटकों पर सम्मिलित रुप से सन् 1967-1988 की अवधि तक कितने शोधकार्य हुए थे?
7. उद्देश्य और सिलेबस के क्षेत्र में शोधकार्यों की संख्या में कैसी प्रवृति दृष्टिगोचर हुई है?

8. अतीत में हुए 370 शोधकार्यों में सिर्फ स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा से कितने शोधकार्य इस क्षेत्र से संबंधित थे?
9. भाषा के क्षेत्र में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों के संदर्भ में शोधकर्ताओं की प्रवृति कैसी रही है?

शोध के उपकरण

पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में विविध प्रकार के शोध उपकरणों का उपयोग किया गया है। उनमें से मुख्य प्रश्नावली है जिसका प्रयोग 39% शोधकार्यों में किया गया है। साक्षत्कार और विषयवस्तु विश्लेषण का भी प्रयोग पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में किया गया है। इनका प्रयोग लगभग 26% शोधकार्यों में किया गया है। उपलब्धि परीक्षण का 21.7% शोधकार्यों में उपयोग किया गया है। चेकलिस्ट, ओपिनियनआयर , व्यक्तित्व परीक्षण और सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण का भी उपयोग इस क्षेत्र में किया गया है। पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य में सबसे कम प्रयुक्त किए गए शोध उपकरण, नैदानिक परीक्षण, अभिवृत्ति परीक्षण अनुसूची आदि है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पाठयचर्या संबंधी शोध कार्य में, शोधकर्ताओं द्वारा प्रशनावली, साक्षात्कार और विषयवस्तु विश्लेषण को समर्थन दिया गया है।

शोध–प्रविधि

शोध-प्रविधि में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में विभिन्न शोध प्रविधियों का प्रयोग शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है। इनमें सार्वाधिक प्रयुक्त विधि सर्वे विधि है। सन् 1967 से लेकर 1992 तक हुए पाठयचर्या संबंधी विभिन्न शोधकार्यों में, उन शोधकार्यों जिनमें कि सर्वे विधि का प्रयोग हुआ है का प्रतिशत 47.83% है।

प्रयोग विधि दूसरी सबसे ज़्यादा प्रयुक्त विधि है। इसका प्रतिशत उपर्युक्त अवधि में 25.14% रहा है। हाँलाकि इस विधि के प्रयोग के प्रति शोधकर्ताओं का रुझान घटता-बढ़ता रहा है फिर भी इस विधि के प्रयोग को शोधकर्ताओं के मध्य एक सम्मानजनक स्थिति प्राप्त है।

ऐतिहासिक विधि को शोधकर्ताओं द्वारा बहुत ज़्यादा महत्व नहीं दिया गया है। मूल्यांकन को भी शोधकर्ताओं द्वारा एक विधि के रुप में प्रयुक्त किया गया है। हाँलाकि इसका प्रयोग मिश्रित प्रवृति दिखाता है अर्थात इसके प्रयोग की मात्रा घटती-बढती रही है। लेकिन इस अस्थिर प्रवृति के बाद भी इसकी स्थिति सम्मानजनक है और सन् 1967 से सन् 1992 तक हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में लगभग 13.5% शोधकार्यों में इसका प्रयोग हुआ है।

कुछ शोधकार्यों में संयुक्त विधि अर्थात् एक या अधिक शोध विधियों का एक साथ प्रयोग किया गया है लेकिन इनकी संख्या बहुत कम है। अब तक हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में 6.75% शोधकार्य ऐसे हैं जिनमें संयुक्त विधि का प्रयोग किया गया है।

पाठ्यचर्या निर्माण

पाठयचर्या संबधी शोधकार्यों में सबसे कम प्रयुक्त होनेवाली शोध विधि अवलोकन विधि है। सिर्फ 0.5% पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में इस विधि का प्रयोग किया गया है। अवलोकन विधि शोध के लिए एक शक्तिशाली है और इसका प्रयोग होना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं है।

अभ्यास प्रश्न

10. सन् 1967 से लेकर 1992 तक हुए पाठयचर्या संबंधी विभिन्न शोधकार्यों में, उन शोधकार्यों जिनमें कि सर्वे विधि का प्रयोग हुआ है का प्रतिशत 47.83% है।(सही/गलत)
11. पाठयचर्या संबधी शोधकार्यों में सबसे ज़्यादा प्रयुक्त होनेवाली शोध विधि अवलोकन विधि है। (सही/गलत)
12. उपलब्धि परीक्षण का 21.7% पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में उपयोग किया गया है। (सही/गलत)
13. पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में प्रयुक्त शोध उपकरणों में मुख्य, प्रश्नावली है। (सही/गलत)
14. ऐतिहासिक विधि को शोधकर्ताओं द्वारा बहुत ज़्यादा महत्व दिया गया है। (सही/गलत)

14.4 भारत में पाठयचर्या संबंधी हुए कुछ शोध कार्यों के उदाहरण

भारत में हुए पाठयचर्या संबंधी विभिन्न शोधकार्यों में से दो शोधकार्य का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है:

अरुन कुमार, पी., ए स्टडी ऑफ द एफेक्ट ऑफ रिऑर्गनाइजिंग द प्रेस्क्राइब्ड करिकुलम फ्रेमवर्क ऑन द कॉम्बिनेटोरियल रिजनिंग एण्ड कंट्रोलिंग ऑफ वैरिएबल्स ऑन ग्रेड नाइन्थ स्टुडेन्टस, पीएच0 डी0, ईडीयु0, एमएसयु0 1985

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे:

1. कक्षा 9 के विद्यार्थियों के रिजनिंग के स्तर का कॉम्बिनेटोरियल रिजनिंग और चरों के नियंत्रण के संदर्भ में मूल्यांकन करना
2. विद्यार्थियों में उपलब्ध रिजनिंग स्तर के अनुकूल बनाने के लिए पाठयचर्या के रसायन शास्त्र विषय के भाग का पुनर्संगठन करने की दृष्टि से मूल्यांकन करना
3. कॉम्बिनेटोरियल रिजनिंग और चरों के नियंत्रण के संदर्भ में पाठयचर्या की संरचना के पुनर्संगठन के प्रभाव का वर्तमान पाठयचर्या संरचना की तुलना में, अध्ययन करना
4. उपयुक्त रिजनिंग प्रारुप पर प्रीएसेसमेंट के प्रभाव का अध्ययन करना
5. प्री मूल्यांकन और ट्रीटमेंट के मध्य अंतर्क्रिया का अध्ययन करना।

पाठ्यचर्या निर्माण

समस्या की जाँच सोलोमन फोर ग्रुप डिजाइन जहाँ बड़ोदा शहर के एक अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के नवीं कक्षा के चार समूह लिए गए जिनमें विद्यार्थियों के बँटवारे के लिए कोई निश्चित निकष(क्राइटेरिया) नहीं था। प्रतिदर्श की कुल संख्या 204 थी जिसमें 50, 52, 52 तथा 50 के 4 समूह थे। ये चारों समूह आयु एवं बुद्धि के स्तर पर समान थे। बुद्धि परीक्षण के लिए 'रावेन का स्टैण्डर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिक्सेस' का प्रयोग किया गया था। 'ऑब्जर्वेशन ऑफ कॉगनेटिव प्रॉसेस इन सांइस इंसट्रक्शन सिस्टम' नाम के एक ऑब्जर्वेशन शेड्युल का भी प्रयोग शोधकर्ता द्वारा अनुदेशनात्मक प्रक्रिया का अध्ययन के लिए किया गया। विद्यार्थियों के रिजनिंग प्रारुप का अध्ययन करने के लिए, पियाजे के कार्य पर आधारित नैदानिक साक्षात्कार का भी प्रयोग भी किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए गुणात्मक तकनीकि एवं 'टी-परीक्षण' का प्रयोग किया गया।

इस अध्ययन के परिणाम निम्नलिखित है:

1. प्रस्तावित पाठयचर्या संरचना के पुनर्मूल्यांकन एवं अनुदेशन के एक गतिशील मॉडल के द्वारा उसके क्रियान्वयन ने कॉम्बिनेटोरियल रिजनिंग एवं चरों के नियंत्रण को उन विद्यार्थियों की तुलना में जो प्रस्तावित पाठयचर्या पर आधारित सामान्य कक्षाकक्ष शिक्षण पद्धति से होकर गुजर रहे थे, सकारात्मक रुप से प्रभावित किया है।
2. विद्यार्थियों के रिजनिंग प्रारुप के पूर्वमूल्यांकन(प्री एसेसमेंट) एवं ट्रीटमेंट के बीच सार्थक अंतर्क्रिया है।
3. रिजनिंग प्रारुप पर इतिहास एवं परिपक्वता का कोई असर नहीं पड़ता है।

   उपर्युक्त निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के रिजनिंग पैटर्न में वृद्धि के लिए वर्तमान विज्ञान विषय के पाठयचर्या को कॉम्बिनेटोरियल रिजनिंग और चरों के नियंत्रण के संदर्भ में पुनर्व्यवस्थित किया जा सकता है।

कुमार, के0 टिचिंग ऑफ पॉपुलेशन एजुकेशन, पीएच0 डी0, साइको., आगरा वि0वि0, 1984.

इस शोधकार्य की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित थी:

1. उच्च, मध्य एवं निम्न सागाजिक-आर्थिक स्तर के प्रयोग एवं नियंत्रित समूह के प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. ग्रामीण, उपनगरीय एवं नगरीय क्षेत्र के नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक समूह के प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च, औसत एवं निम्न शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले माता-पिता से संबंधित प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

4. उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पश्च परीक्षण के प्राप्तांक के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. ग्रामीण, उपनगरीय एवं नगरीय क्षेत्र के नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक समूह के प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।
6. उच्च, औसत एवं निम्न शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले माता-पिता से संबंधित प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

प्रतिदर्श के रुप में शोधकर्ता ने सन् 1982-83 के नवीं एवं दसवीं कक्षा के 360 विद्यार्थियों का चयन किया गया था जो 13-17 वर्ष की आयु के थे। अध्ययन में प्री-टेस्ट पोस्ट टेस्ट एक्सपेरीमेंटल कंट्रोल ग्रुप डिजाइन का प्रयोग किया गया है। प्रयोगात्मक समूह को सामान्य शिक्षा के साथ-साथ जनसंख्या शिक्षा भी दी गई थी। परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति को एम0 ए0 हरकिन तथा यशवीर सिंह द्वारा विकसित "परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी" के द्वारा मापा गया। आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए 'टी-परीक्षण' एवं सहसंबंध तकनीक का प्रयोग किया गया था।
अध्ययन के परिणाम निम्नलिखित थे:

1. सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति के कुछ पक्ष जैसे- निवास-स्थान एवं माता-पिता के शैक्षिक स्तर ने कंट्रोल ग्रुप के विद्यार्थियों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अंतर दिखाए हैं।
2. जनसंख्या शिक्षा के शिक्षण का, परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव है।

14.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में भारत में हो रहे पाठयचर्या संबंधी विभिन्न शोधकार्यों की प्रवृत्ति का वर्णन किया गया है। पाठयचर्या संबंधी जितने भी शोध कार्य हो चुके हैं या हो रहे है उनको मुख्य रुप से पाँच भागों में बाँटकर इस इकाई में प्रस्तुत किया गया । ये पाँच भाग क्रमशः शिक्षा के विभिन्न स्तर, अधिगम के विभिन्न क्षेत्र, पाठयचर्या के विभिन्न घटक, पाठयचर्या संबंधी शोध में प्रयुक्त उपकरण एवं पाठयचर्या रांबंधी शोध में प्रयुक्त शोध विधि है। शोधकार्यों की प्रवृत्ति को और अधिक स्पष्टता के साथ विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए इन पाँच भागों को विभिन्न उपविभागों में बाँटा गया है। अंत में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य के दो उदाहरण भी विद्यार्थियों के लिए दिए गए हैं। इस प्रकार, इस इकाई में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की स्पष्ट व्याख्या करने के का प्रयास लेखक द्वारा किया गया है। यह इकाई विद्यार्थियों के लिए अति उपयोगी है।

14.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. 14.1 %
2. 2.8 %
3. 10.00 %
4. प्राथमिक
5. 35.8 %
6. 80
7. वृद्धि और ह्रास
8. 18
9. मिली-जुली
10. सही
11. गलत
12. सही
13. सही
14. गलत

14.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Buch, M..B., (1983-1988), **Fourth survey of research in education,** Volume I, New Delhi: (NCERT)
2. Buch M..B.,(1988-1992), **Fifth survey ofresearch in education,** Volume I, New Delhi: (NCERT)

14.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. भारत में हो रहे पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य की प्रवृत्ति की संरचना का एक रेखाचित्रीय प्रदर्शन करें।
2. भारत में अधिगम के विभिन्न क्षेत्रों में हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की प्रवृत्ति का वर्णन करें ।
3. शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की प्रवृत्ति का वर्णन करें।
4. भारतीय परिदृश्य में, पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में प्रयुक्त शोध के उपकरणों एवं शोध विधियों की प्रवृत्ति का संक्षिप्त वर्णन करें।
5. पाठयचर्या के विभिन्न घटक को लेकर अब तक जो भी पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य हुए हैं, उनकी प्रवृत्ति का वर्णन करें।

इकाई 15: पाठ्यचर्या विकास से सम्बंधित विभिन्न आयोग/समितियों के सुझाव

15.1 प्रस्तावना
15.2 उद्देश्य
15.3 पाठयचर्या संरचना: एक संक्षिप्त परिचय
15.4 आजादीपूर्व आयोग /समितियों द्वारा पाठयचर्या पर सुझाव
15.5 स्वतंत्रता के बाद के आयोग/समितियों द्वारा पाठयचर्या पर सुझाव
15.6 सारांश
15.7 शब्दावली
15.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
15.9 संदर्भ ग्रंथ सूची
15.10 निबंधात्मक प्रश्न

15.1 प्रस्तावना

पूर्व के इकाईयों में आप ने जाना कि पाठयचर्या से सम्बन्धित शोध कार्य किन किन क्षेत्र में किया जाता है एवं भारत में विगत दिनों में पाठयचर्या पर किस प्रकार के शोध कार्य हुए हैं।पाठयचर्या एक ऐसा विषय है जिस पर शोधकार्य करने से पहले शोधकर्ता को यह पता होना चाहिए कि यह शोध किस दिशा में होना चाहिए। शोध के लिए कौन कौन से दिशा-निर्देशों का अनुपालन आवश्यक हैं। चुँकि पाठयचर्या समाज का एक सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है, इसलिए यह जरूरी है कि पाठयचर्या में किसी भी प्रकार का परिवर्तन या परिमार्जन उस समाज के लिए हितकारी हो। यह तभी सम्भव है जब शोधकर्ता को यह पता रहे कि पाठयचर्या समाज के कौन कौन से पहलु से सम्बन्धित है।
समय समय पर बनायें गये आयोग या समितियाँ इन्ही बातों को ध्यान में रखकर पाठयचर्या पर अपना सुझाव देते रहे हैं, जिससे शोधकर्ताओं को एक दिशा-निर्देश मिलता रहे और पाठयचर्या सम्बन्धित शोध कार्य और उन्नत तरीके से किया जा सके।
इसी बात को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत इकाई में आप लोग भारत में अलग-अलग समय पर स्थापित विभिन्न आयोग या समितियों की पाठयचर्या सम्बन्धित सिफारिशों को जानेंगें।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

1. विभिन्न आयोग व उनके समयकाल को चिन्हित कर सकेंगे।
2. विभिन्न आयोग की पाठयचर्या सम्बन्धित सुझावों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।
3. विभिन्न आयोग की पाठयचर्या सम्बन्धित सुझावों की संक्षिप्तीकरण कर सकेंगे।
4. विभिन्न आयोग की पाठयचर्या सम्बन्धित सुझावों की समालोचना कर सकेंगे।
5. विभिन्न आयोग की पाठयचर्या सम्बन्धित सुझावों की तुलना कर सकेंगे।

15.3 पाठयचर्या संरचना: एक संक्षिप्त परिचय

पाठयचर्या को सामान्यतः विषय रूपरेखा के रूप में ही अधिक जाना जाता है। परन्तु यह अधिकतर लोग नहीं जानते कि पाठयचर्या सिर्फ विषय वस्तु या उसकी रूप रेखा नहीं है। आप जब किसी कक्षा में प्रवेश लेते हैं तो पूरे सत्र में सिर्फ विषय को नहीं पढ़ते, बल्कि उसके साथ बहुत सारे कार्य भी करते हैं, जैसे- पाठ्य सहगामी क्रिया आदि। वहीं उस विषय को पढ़ाने के लिए आपके शिक्षक शिक्षण कार्य करते हैं और बाद में विषय पर आधारित मूल्यांकन भी होता है। मूल्यांकन में यह देखते है कि विषय पढ़के जिन लक्ष्यों को प्राप्त करना था, वह आपने प्राप्त किया या नहीं।

अर्थात, एक पाठयचर्या में विषय के साथ-साथ उसको पढ़ाने की विधि, उसको पढ़ाने का उद्देश्य, उसकी मूल्यांकन विधि एवं माध्यम भी महत्वपूर्ण होते हैं। इसलिए जब भी आप पाठयचर्या का उल्लेख करेंगे, तभी स्वतः ही उसके साथ यह सब कारक चले आते हैं। चित्र सं0 1 से आप को पाठयचर्या के विभिन्न अंगो का पता चल जाएगा।

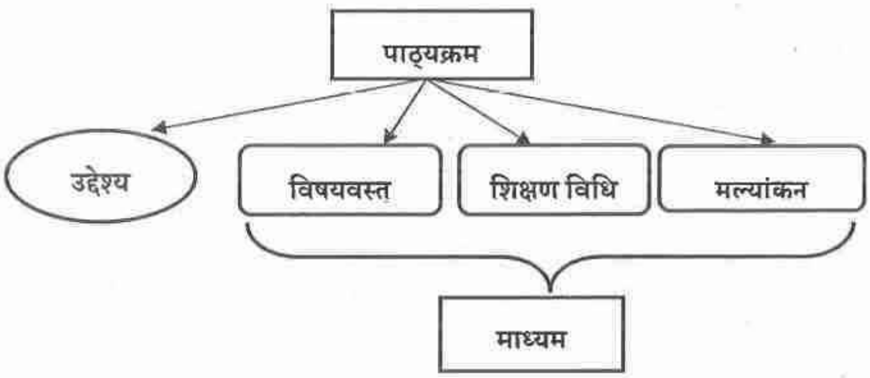

चित्र संख्या 1

पाठयचर्या के इन्ही अंगो को ध्यान में रखते हुए यह देखना जरूरी है कि विभिन्न आयोग एवं समितियों ने पाठयचर्या पर क्या क्या सुझाव दिये हैं। आप लोग पायेंगे की प्रत्येक आयोग या समितियों ने पाठयचर्या के सभी अंगो पर अपनी संस्तुतियाँ नहीं दी हैं। वरन् उनकी संस्तुतियां समयकाल पर आधारित थी। अर्थात स्वतंत्रता पूर्व समयकाल पर सुझाव विषय एवं मूल्यांकन केन्द्रीत थी। वहीं स्वंतत्रता उत्तर काल में सुझाव प्रायः पाठयचर्या के सभी अंगो पर दिया गया था। अगले कुछ अनुच्छेदों में आप लोग इन्ही आयोग एवं समितियों मे से कुछ महत्वपूर्ण आयोग एवं समितियों की संस्तुतियों को जानेंगे।

15.4 आजादीपूर्व आयोग /समितियों द्वारा पाठयचर्या पर सुझाव

आजादी पूर्व शिक्षा से सम्बन्धित आयोग एवं समितियाँ मुख्य रूप से शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के लिए बनाए जाते थे। इसलिए यह आयोग या समितियाँ विषय स्तर, माध्यम एवं विस्तार पर ज्यादा ध्यान देते थे। पाठयचर्या के मूलभूत अंगो पर इनकी संस्तुतियाँ प्रायः नहीं मिलती हैं। अगले कुछ अनुच्छेदों में आपलोग इस समयकाल के कुछ महत्वपूर्ण आयोग एवं समितियों के संस्तुतियों को जानेंगे। इस समयकाल के कुछ महत्वपूर्ण आयोग एवं समितियाँ निम्न हैं -

1. वुड का घोषणापत्र
2. भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन) 1882
3. लार्ड कर्जन की प्राथमिक शिक्षा नीति में पाठयचर्या (1904)
4. 1905 से 1920 तक पाठयचर्या सुधार
5. वर्धा योजना 1937
6. प्रथम आचार्य नरेन्द्रदेव समिति (उत्तर प्रदेश)1939
7. सार्जेण्ट शिक्षा योजना (1944)

1. वुड का घोषणापत्र

उद्देश्य- वुड के घोषणापत्र में शिक्षा। के उद्देश्यों को निम्न प्रकार क्रमबद्ध किया जा सकता है-

1. भारतीय जनता को आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से अंग्रेजी भाषा, साहित्य और विज्ञान आदी विषयों की शिक्षा प्रदान करना।
2. भारतीय जनता का भौतिक एवँ बौद्धिक विकास करना।
3. कम्पनि की आर्थिक प्रगति में सहायता करने के लिए समुचित परिस्थितियों का निर्माण करना।

4. सरकारी सेवाओं के लिए शिक्षित कर्मचारीयों को तैयार करना।

पाठयचर्या

वुड ने अपने सुझाव में कहा था की पाठयचर्या में बागंला, संस्कृत, अरबी, फारसी भाषा के साथ साथ अंग्रेजी भाषा व साहित्य का किया जाए। किंतु पाठयचर्या में पाश्चात्य साहित्य को ही प्रधानता देते हुए यह व्यवस्था की गई की छात्र उसके प्रति आकर्षित हों। थोड़ी बहुत धार्मिक शिक्षा की छुट ईसाई मिशनरी विद्यालयों को प्रदान की गई थी। बाइबिल का होने अनिवार्य कर दिया गया था।

शिक्षण विधि

धार्मिक शिक्षा के लिए उपदेश विधि की अनुमति दी गई थी। शेष विषयों के लिए मौखिक व लिखित विधियाँ एवँ विज्ञान आदी के लिए प्रयोगात्मक विधियों का समावेश किया गया था। उच्च शिक्षा के लिए व्याख्यान विधि उत्तम मानी गई थी।

हाईस्कुल तक की शिक्षा के लिए भारतीय प्रचलित भाषायें स्वीकृत थी। उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेजी को ही स्वीकार किया था। वुड के अनुसार भारतीय भाषाएँ इतनी सशक्त और समृद्ध नहीं थीं की उनमें विज्ञान एवँ पश्चिमी ज्ञान की शिक्षा दी जा सके।

2. भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन) 1882

लॉर्ड रीपन ने भारत में 3 फरबरी, 1882 को एक समिति की नियुक्ति की, जिसमें 20 सदस्य और एक अध्यक्ष था। इसमें भारतीयों और ईसाई मिशनरीयों का प्रतिनिधित्व था। इसके अध्यक्ष वॉयसराय की कार्यकारिणी के सदस्य विलियम हण्टर थे।

प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र मे आयोग के सुझाव निम्नवत है -

उद्देश्य

1. शिक्षा द्वारा बालकों में स्वाबलम्बन और आत्मनिर्भरता उत्पन्न करना।
2. शिक्षा को जनसामान्य तक पहुँचाना।
3. शिक्षा को सामान्य जीवन के लिए उपयोगी बनाना।

पाठयचर्या

आयोग के अनुसार प्राथमिक शिक्षा के पाठयचर्या में स्थानीय भाषा, सामान्य विज्ञान, गणित, कृषि, प्राथमिक चिकित्सा, बही-खाता, भौतिक विज्ञान आदि विषयों को अनिवार्य होना चाहिए। इसके अलावा कताई-बुनाई, सिलाई आदि विषयों को व्यावसायिक विषय के रूप में पाठयचर्या में जोड़ने की संस्तुति की गई थी।

प्राथमिक शिक्षा के माध्यम के रूप में परम्परागत प्रचलित स्थानीय भाषाओं को ज्यादा महत्व दिया गया था।

माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में आयोग का सुझाव-

पाठ्यचर्या निर्माण

उद्देश्य- आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये थे-

i. माध्यमिक शिक्षा जीवनोपयोगी होनी चाहिए।
ii. यह उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को तैयार करें।

पाठयचर्या

आयोग के माध्यमिक शिक्षा के पाठयचर्या को दो भागों में बाँटा था। यह इस प्रकार है-

i. 'अ' वर्ग पाठयचर्या - इसका लक्ष्य शिक्षार्थियों को विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने योगय बनाना था।
ii. 'ब' वर्ग पाठयचर्या -इसका लक्ष्य विद्यार्थियों को भावी जीवन के लिए तैयार करना व स्वावलम्बी बनाना था। इसमें विज्ञान, कृषि आदि विषयों को सम्मिलित किया गया था।

प्रचलित अंग्रेजी को ही इस स्तर पर शिक्षा का माध्यम माना गया था।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आयोग का सुझाव-

उद्देश्य- आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा के उद्देश्य निम्नवत् थे-

i. व्यक्ति की विशिष्ट योग्यताओं का विकास करना।
ii. व्यावसायिक विषयों में पारंगत बनाना।
iii. नैतिक एवं चारित्रिक विकास करना।

पाठयचर्या - उच्च शिक्षा के पाठयचर्या के विषय में आयोग ने कहा था कि-

i. छात्रों को अपनी रूचि एवं योग्यता के अनुसार विषय चयन की छूट होनी चाहिए।
ii. अधिक से अधिक विषयों को सम्मिलित कर पाठयचर्या को व्यापकरूप दिया जाना चाहिए।
iii. छात्रों को धर्म, मानवता और नैतिकता का ज्ञान कराया जाना चाहिए।

शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी का ही प्रयोग करने की संस्तुति आयोग ने की थी।

अभ्यास प्रश्न

1. भारतीय शिक्षा आयोग की स्थापना किसने की?
2. 1882 के आयोग ने माध्यमिक पाठयचर्या को कितने भागों में बाँटा ?
3. शिक्षा के माध्यम से कम्पनि की आर्थिक प्रगति कि बात किसने की थी ?
4. भारतीय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष वॉयसराय की कार्यकारिणी के सदस्य ________ थे।

लार्ड कर्जन की प्राथमिक शिक्षा नीति में पाठयचर्या (1904)

लार्ड कर्जन ने गुणात्मक विकास के तहत पाठयक्रम में सुधार की सिफारीश की थी। उनका विचार था कि प्राथमिक विद्यालयों का पाठयचर्या सरल न होकर वृहद बनाया जाये। शिक्षा आयोग ने पाठयचर्या को सरल बनाया था, जो उसे पसन्द नहीं था। उसने लिखने-पढ़ने और गणित लगाने के अतिरिक्त पाठयचर्या में कृषि को भी सम्मिलित किया। साथ ही साथ उसने बालोद्यान पद्धति और objective (वस्तुनिष्ठ) पद्धति को लागु करने की संस्तुति की।

कर्जन की शिक्षा-नीति सर्वांगीण विकास की प्रेरक थी। उसने माध्यमिक स्कूलों के पाठयचर्या में शारीरिक व्यायाम को स्थान दिया। वह जानते थे कि ग्रामीण एवं शहरी वातावरणों में अन्तर होता है, इसलिए पाठयचर्या निर्माण करते समय वातावरण, समय-स्थान, और आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाए। ग्रामीण क्षेत्र का पाठयचर्या शहर के पाठयचर्या से कुछ बातों में अवश्य भिन्न होना चाहिए।

कर्जन के यह विचार बहु प्रसंशनीय थे, परन्तु उन्हे लागू नहीं किया गया।

4. 1905 से 1920 तक पाठयचर्या सुधार

लॉर्ड कर्जन की शिक्षा नीति का प्राथमिक शिक्षा के विकास पर अच्छा प्रभाव पड़ा और 1905 से 1920 तक प्राथमिक शिक्षा में संख्यात्मक व गुणात्मक विकास हुए। इस दौरान प्रमुख शैक्षिक घतनाओं में गोखले बिल (1911), कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग (1917) एवं शिक्षा नीति (1915) मुख्य है। इन सभी का सुझाव पाठयचर्या के सन्दर्भ में इस प्रकार था-

1. लोअर प्राईमरी पाठयच्चर्या में चित्रकला, शारीरिक व्यायाम, प्रकृति अध्ययन एवं गांव के नक्शे को विषयों के रूप में प्रयोगात्मक ढंग से पढ़ाया जाये।
2. गाँव एवं शहरी पाठयचर्या में आवश्यकताओं के अनुसार अंतर होना चाहिए।
3. माध्यमिक शिक्षा में स्वास्थ्य शिक्षा व विज्ञान पढ़ाया जाये एवं अंग्रेजी को माध्यम बनाया जाए।
4. प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाए और गरीबों के लिए यह निःशुल्क हो।
5. उच्च शिक्षा एवं शोध कार्य के लिए अधिक सुविधाएँ प्रदान करना चाहिये।
6. स्नातक पाठयचर्या तीन वर्षीय होना चाहिए।
7. माध्यमिक पाठयचर्या विभिन्न प्रकार विभिन्नताओं से युक्त होना चाहिए तथा इसमें साहित्य, विज्ञान, गणित, इंजिनियरिंग, चिकित्सा, कृषि, वाणिज्य आदि की शिक्षा मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा में होना चाहिए।

इन सबके अलावा हर्टाग समिति (1919) के अनुसार मिडिल स्कूलों का पाठयचर्या बहुत ही संकुचित था, इसे उत्तीर्ण करने पर बालक जीविकोपार्जन में असमर्थ रहता था। यदि पाठयचर्या को

उपयोगी बना दिया जाता तो असफलता कम हो जाती। इसलिए समिति ने सुझाव दिया कि मिडिल स्कूलों के पाठयचर्या में-

1. औद्योगिक तथा
2. व्यापारिक विषयों को स्थान दिया जाए।

समिति ने हाईस्कूल के पाठयचर्या में विविध प्रकार के विषयों को रखने की सलाह दी ताकि छात्र अपनी रूचि के अनुकूल विषयों को छांट सकें। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक अच्छा वातावरण बनेगा और देहातों में पुननिर्माण और पुनरोत्थान की सम्भावना बढ़ सकेगी।

अभ्यास प्रश्न

5. बालोद्यान पद्धति लागु करने की संस्तुति किसने की ?
6. लॉर्ड कर्जन के अनुसार पाठयचर्या कितने प्रकार के होने चाहिये ?
7. 1917 शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि इस वर्ष ---------------- का गठन हुआ था।
   i. शिक्षा नीति
   ii. हर्टाग समिति
   iii. कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग
   iv. गोखले बिल
8. हर्टाग समिति के अनुसार पाठ्याक्रम में किन किन विषयों को स्थान दिया जाना चाहिये ?

वर्धा योजना (1937)

इस समिति का निर्माण 1937 में गाँधी जी के शैक्षिक विचारों को 'नई तालीम' की योजना बनाने में प्रयोग करने के लिये किया गया था। इसके अध्यक्ष तत्कालीन 'जामिया मिलिया' के प्राचार्य डॉ0 जाकिर हुसैन थे। पाठयचर्या के विभिन्न अंगों पर इस समिति के सुझाव इस प्रकार थे -

उद्देश्य:

i. भारत के लिए एक सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति का निर्माण करना जो भारत की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करें।
ii. बालक का सर्वांगीण विकास करना ताकि इनका शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक विकास सम्भव पर हो सके।
iii. बालकों में अच्छी नागरिकता के गुणों का विकास करना जिससे उनमें प्रेम, सद्भाव, सहनशीतला, धैर्य, परोपकार, सत्यनिष्ठा तथा सदाचार आदि लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति गहरी निष्ठा हो सके।

iv. बालकों में सर्वोदय की भावना का विकास करना।
v. छात्रों का भारतीय मूल्यों और आदर्शों के अनुसार नैतिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास करना।
vi. छात्रों को अनुशासित, स्वावलम्बी एवं परिश्रमी बनाना।
vii. छात्रों में भावनात्मक विकास के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा को महत्व देना ताकि छात्र आर्थिक रूप से आत्मनिभर बन सकें।

पाठयचर्या :

इस समिति के अनुसार पाठयचर्या 7 वर्ष का होना चाहिए। समिति ने सम्पूर्ण पाठयचर्या को दो भागो में विभाजित किया था, यथा-

1. बुनियादी शिल्प कार्य- इसके अन्तर्गत कृषि, काष्ठकला, कताई-बुनाई, चमड़े का कार्य, मत्स पालन, कुम्हार का कार्य, बागवानी, फल संरक्षण एवं स्थानीय हस्तकला आदी की शिक्षा दी जानी थी जिससे बालक भविष्य में आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त कर सके।।
2. शैक्षिक विषय- समिति के अनुसार छात्रों को निम्नलिखित विषयों का अध्ययन करना चाहिए: मातृभाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन, सामान्य विज्ञान, प्रकृति अध्ययन, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, शारीरिक स्वास्थ्य विज्ञान, खगोल विज्ञान, स्वास्थ्य और महान व्यक्तियों की जीवनियाँ , हिन्दी, गृह-विज्ञान, कला एवं शारीरिक शिक्षा।

शिक्षण विधियाँ :

समिति ने दो प्रकार के विधियों को विशेष महत्व दिया था, वह इस प्रकार थे-

i. क्रिया एवं अनुभव द्वारा सीखना - इस विधि में क्रिया प्रधान शिल्प कलाओं को प्रमुखता दी गई थी। इन सबके द्वारा छात्रों को मिलजुल कर सक्रिय रहने का पर्याप्त अवसर मिलने की सम्भावना रहती है।
ii. सह सम्बन्ध द्वारा सीखना- इस विधि के सहायता से किसी एक क्रिया में सीखा गया ज्ञान दूसरे कार्य में सहायक सिद्ध होता है। इसमें ज्ञान को उत्पादन से जोड़े जाने के कारण शिक्षण और उद्योगों में भी सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।

ऊपर वर्णित दोनों विधियों के अतिरिक्त सैद्धान्तिक विषयों का अध्ययन, निरीक्षण, वाचन, अभिव्यक्ति, लेखन, मौखिक वार्तालाप, आगमन-निगमन, विश्लेषण, अन्तर्दृष्टि और अनुकरण विधियों आदी के माध्यम से भी किये जाने का सुझाव दिया गया था।

प्रथम आचार्य नरेन्द्रदेव समिति (उत्तर प्रदेश)-1939:

1939 में आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के पुर्नगठन के लिए समिति नियुक्ति की गई। समिति की पाठयचर्या सम्बन्धित प्रमुख सिफारिशें इस प्रकार थी -

पाठ्यचर्या निर्माण

1. माध्यमिक शिक्षा का पाठयचर्या पूर्ण एवं स्वतंत्र हो।
2. माध्यमिक शिक्षा 6 वर्ष अवधी के लिए हो।
3. नये कॉलेजों के पहले दो वर्षों का पाठयचर्या प्राथमिक विद्यालयों के अन्तिम दो वर्षों जैसा हो। अंग्रेजी अनिवार्य रूप से पढ़ायी जाये।
4. माध्यमिक स्कूलों के पाठयचर्या में निम्नलिखित विषय रखे जायें-
   i. भाषा, साहित्य, सामाजिक विषय
   ii. प्राकृतिक विज्ञान व गणित
   iii. कला
   iv. वाणिज्य
   v. तकनीकि एवं व्यवसायिक शिक्षा
   vi. बालिकाओं के लिए गृह विज्ञान
5. शिक्षा का माध्यम हिन्दुस्तानी हों।
6. कॉलेजों में चरित्र-निर्माण, राष्ट्र-प्रेम, स्वालम्बन और समाज सेवा आदि के लिए अतिरिक्त कार्यक्रमों की व्यवस्था की जाए।

सार्जेण्ट शिक्षा योजना (1944)

यह रिपोर्ट युद्धोत्तर शिक्षा योजना (Post War education Scheme) के नाम से भी जाना जाता है। इस योजना ने सम्पूर्ण भारतीय शिक्षा की व्यवस्था को 12 अध्यायों में प्रस्तुत किया था। पाठयचर्या से सम्बन्धित कुछ विशेष सुझाव इस प्रकार थे-

1. 3 से 6 वर्ष तक के पूर्व प्राथमिक बेसिक स्कूलों के बच्चों के लिए सामाजिक अनुभव एवं सद्व्यवहार की शिक्षा होनी चाहिए।
2. हाईस्कूल दो प्रकार के होने चाहिए-
   i. साहित्यिक हाईस्कूल एवं
   ii. व्यावसायिक हाईस्कूल

साहित्यिक हाईस्कूल में मातृभाषा, अंग्रेजी, इतिहास, प्राच्य-भाषाएँ, आधुनिक भाषाएँ, भूगोल, गणित, विज्ञान, स्वास्थ्य-रक्षा, कृषि, संगीत, कला, अर्थशास्त्र और नागरिकशास्त्र आदि विषय पढ़ाये जाएँ। व्यावसायिक हाईस्कूलों में व्यवहारिक विज्ञान (applied science), काष्ठ कला, धातु कला, अभियांत्रीकी, चित्रकला आदि औद्योगिक विषय एवं बुक कीपिंग, शार्ट-हैण्ड, टाईपिंग, एकाउंटेंसी, व्यापार-पद्धति जैसे व्यापारिक विषय पढ़ाये जायें।

अभ्यास प्रश्न

9. नरेंद्र देव समिति के अनुसार माध्यमिक शिक्षा कितने अवधि कि होनी चाहिये ?
10. किस योजना के अनुसार दो प्रकार के हाईस्कूल होना चाहिये ?

11. 'नई तालिम' किनके विचारों पर आधारित थी ?
12. डॉ ज़ाकिर हुसेन किस संस्था के अध्यक्ष थे ?
13. 'सर्वोदय की भावना का विकास' किस समिति का उद्देश्य था ?
14. वर्धा शिक्षा योजना के अनुसार शिक्षण की प्रमुख विधि कौन सी थी ?

15.5 स्वतंत्रता के बाद के आयोग/समितियों द्वारा पाठयचर्या पर सुझाव

1. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948)
2. माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53)
3. भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66)
4. भारतीय शिक्षा नीतियों में पाठयचर्या

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948):

14 नवम्बर, 1948 को सीधे उच्च शिक्षा में सुधार लाने के लिए भारत सरकार ने केन्द्रिय शिक्षा सलाहकार परिषद (CABE) तथा अंर्तविश्वविद्यालय शिक्षा परिषद की सलाह पर एक विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की नियुक्ति की थी। इस आयोग के अध्यक्षता का भार प्रसिद्ध शिक्षाविद डॉ0 एस0 राधाकृष्णन को सौंपा गया था, इसलिए इसे राधाकृष्णन आयोग के नाम से भी जाना जाता हैं।

उद्देश्य: आयोग ने उच्च शिक्षा के उद्देश्यों को निम्नवत सूचीबद्ध किया-

1. छात्रों में श्रेष्ठ मानवीय सभ्यता का विकास करना।
2. शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वास्थ्य व सामान्य व्यक्तियों का विकास करना।
3. वैयक्तिक विभिन्नताओं के सिद्धांत के आधार पर छात्रों के नैसर्गिक गुणों का पूर्ण विकास करना।
4. छात्रों में राजनीतिक नेतृत्व क्षमता, प्रशासनिक योग्यता, प्रौद्योगिकी में सहभागिता एवं समाज के अन्य सामाजिक क्षेत्रों में सहयोग भाव आदी गुणों का विकास।
5. छात्रों में उत्कृष्ट नागरिकता का विकास।
6. छात्रों में नैतिक एवं-चारित्रिक विकास करना।
7. भारत की गौरवशाली विरासत को संरक्षित रखने की क्षमता उत्पन्न करना।
8. छात्रों में आध्यात्मिक भावनायें जागृत करना।
9. छात्रों को राष्ट्र के विकास के लिए अनुशासित व समर्पित रहने की प्रेरणा देना।

पाठयचर्या : आयोग ने प्रचलित पाठयचर्या के सन्दर्भ में निम्नांकित सुझाव दिये थे-

पाठ्यचर्या निर्माण

1. विश्वविद्यालय के पाठयचर्या को तीन भागों में विभाजित किया जाये, यथा-
    i. सामान्य शिक्षा जो प्रकृति, जीवन, न्याय और आध्यात्म से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान करें।
    ii. उदारवादी शिक्षा जो स्व-विवेक और स्थापित सामाजिक नियमों के अनुसार विभिन्न प्रकरणों पर स्वस्थ एवं रचनात्मक चिंतन करने की योग्यता प्रदान करें।
    iii. व्यावसायिक शिक्षा जो एक सफल सामाजिक, व्यावहारिक एवं आर्थिक जीवन दे सके।

2. स्नातक पाठयचर्या कला एवं विज्ञान वर्ग के लिए क्रमशः तीन वर्ष का होना चाहिए।
   कला वर्ग में दो विषय समूह के प्रत्येक से कम से कम एक विषय का चयन जरूरी था। यह समुह इस प्रकार थे-
    - समुह 1. शास्त्रीय या आधुनिक भारतीय भाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच या जर्मन भाषा, गणित, फाईन आर्टस, इतिहास, दर्शन।
    - समुह 2. अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, मानव शरीर रचना शास्त्र, मनोविज्ञान,अर्थशास्त्र, भूगोल।

   विज्ञान वर्ग के छात्रों को भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, गणित, वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान तथा भूगर्भ विज्ञान में से दो विषयों का चयन जरूरी था।

3. पी0एच0डी0 उपाधी के लिए शोधार्थी का चयन अखिल भारतीय स्तर पर किया जाना चाहिए।
4. स्नातक स्तर पर धार्मिक शिक्षा दी जानी चाहिए।
5. उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी एवं स्थानीय भाषा के प्रयोग करने का सुझाव आयोग ने दिया था। इस सम्बन्ध में आयोग ने कहा था की हिन्दी को अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को ग्रहण कर लेना चाहिए एवं सभी भारतीय भाषाओं के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों की एक समरूप सूची का निर्माण किया जाना चाहिए। परन्तु माध्यमिक कक्षाओं में अंग्रेजी का शिक्षण पूर्ववत चलते रहना चाहिए।

परीक्षा प्रणाली: तत्कालीन परीक्षा प्रणाली पर आयोग के सुझाव निम्नवत् थे-

1. परीक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए, जिससे अभिभावक अपने बच्चों की शैक्षिक प्रगति से नियमित रूप से अवगत होते रहें।
2. आंतरिक मूल्यांकन के महत्व को स्थापित करने के लिए बाह्य परीक्षाओं की संख्या में कमी की जानी चाहिये।

3. वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के लिए समुचित परीक्षाओं की सूची में वृद्धि की जानी चाहिये।
4. निबंधात्मक परीक्षाओं में समुचित संशोधन किया जाना चाहिए।
5. उच्च शिक्षा की कक्षाओं में प्रत्येक वर्ष के अंत में एक विश्वविद्यालय की परीक्षा होनी चाहिए।
6. परीक्षाओं में कृपांक की प्रथा समाप्त की जानी चाहिए।
7. केवल स्नातकोत्तर एवं वृत्तिक पाठ्यक्रमों में ही मौखिक परीक्षाएँ ली जानी चाहिए।
8. प्रायोगिक विषय की परीक्षा में लिखित, प्रयोगात्मक व मौखिक तीनों प्रकार की परीक्षाएँ ली जानी चाहिए।
9. सभी विश्वविद्यालयों के छात्रों के सफलता मानकों में यथा सम्भव समानता व समरूपता होनी चाहिये।

अभ्यास प्रश्न

15. विश्वविद्यालय आयोग के अनुसार पाठ्याक्रम में कितने भाग होने चाहिये ?
    i) 2 ii) 3 iii) 4 iv) 5
16. आयोग के अनुसार पी.एच.डी. स्तर पर चयन कैसे होना चाहिये ?
17. 1948 के आयोग के अनुसार शिक्षा का माध्यम क्या होना चाहिये ?
18. आयोग के अनुसार मौखिक परीक्षाएँ किस स्तर पर होनी चाहिये ?
19. 1948 आयोग के अनुसार परीक्षा में कृपांक की प्रथा होनी चाहिये। (हाँ/नहीं)

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53)

केन्द्रिय शिक्षा सलाहकार परिषद ने भारत सरकार के सामने माध्यमिक शिक्षा के लिए एक पूर्ण एवं सक्षम आयोग की नियुक्ति का प्रस्ताव रखा था। 1951 में रखे गये इस प्रस्ताव के आधार पर सरकार ने 15 सितम्बर, 1952 को मद्रास विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डॉ0 ए0एल0एस0 मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग की नियुक्ति की। अध्यक्ष के नाम पर यह मुदालियर कमीशन के नाम से भी जाना जाता है।

उद्देश्य: मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के जो उद्देश्य निर्धारित किये थे, वे इस प्रकार है-

i. छात्रों के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास जिससे वे सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से व्यवहार कुशल बन सकें।
ii. छात्रों में लोकतंत्रीय सिद्धान्तों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना ताकि छात्रों में समानता,सहयोग,धैर्य, सहनशीतला,धर्म निरपेक्षता, भाईचारा, प्रेम, न्याय प्रियता और समाजवादी चिंतन का विकास हो सके।

iii. छात्रों में व्यावसायिक कुशलता का विकास करना जिससे वे अपने जीवन को आर्थिक दृष्टि से सफल बना सकें।

iv. छात्रों में नेतृत्व शक्ति का विकास करना ताकि लोकतंत्र की नींव मजबूत हो सके।

v. छात्रों के नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास पर पर्याप्त जोर दिया जाये।

पाठयचर्या

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने सर्व प्रथम माध्यमिक पाठयचर्या की नवीन संकल्पना प्रस्तुत की थी। आयोग के अनुसार माध्यमिक पाठयचर्या जीवनोपयोगी होनी चाहिये एवं अपने आप में एक इकाई होना चाहिये। पाठयचर्या ऐसा होना चाहिये जहाँ प्रत्येक विषय दूसरे विषय से सह सम्बन्ध स्थापित कर सके और पाठयचर्या अवकाश का सदुपयोग कर सके।

आयोग ने विषयों की दृष्टि से पाठयचर्या को दो भागों में विभाजित किया था-

i. अनिवार्य विषय

ii. ऐच्छिक विषय

अनिवार्य विषयों में मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा एवं हिन्दी, प्रारम्भिक अंग्रेजी, उच्च अंग्रेजी, एक आधुनिक भारतीय भाषा, एक शास्त्रीय भाषा में से कोई एक भाषा चयन किया जा सकता था। इसके अलावा सामाजिक विज्ञान, गणित, सामान्य विज्ञान एवं एक शिल्प विषय पढ़ाये जाने का प्रस्ताव था। शिल्प विषयों में कताई-बुनाई, काष्ठकला, धातु कार्य, टंकण, सिलाई, कढ़ाई, बागवानी, माडलिंग आदि सम्मिलित थे।

ऐच्छिक विषयों में 7 विषय समुहों को प्रावधान था। वे समुह इस प्रकार थे-

वर्ग समूह 1 (मानवता शास्त्र): इसके अन्तर्गत एक शास्त्रिक भाषा जिसे अनिवार्य विषय के रूप में न लिया गया हो, गणित, इतिहास, भूगोल, साधारण अर्थशास्त्र तथा नागरीक शास्त्र, संगीत, सामान्य मनोविज्ञान व तर्कशास्त्र तथा गृह विज्ञान रखे गये थे।

वर्ग समूह 2 (विज्ञान): इसमें रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, जीव विज्ञान, शरीर विज्ञान व स्वास्थ्य विज्ञान, गणित तथा भूगोल आदि रखे गये थे।

वर्ग समूह 3 (तकनीकी): इसके अन्तर्गत व्यावहारिक गणित तथा ज्यामितीय ड्राइंग, यांत्रिक अभियांत्रिकी के तत्व, विद्युतीय अभियांत्रिकी के तत्व तथा व्यावहारिक विज्ञान आदि विषय रखे गये थे।

वर्ग समूह 4 (वाणिज्य): इसमें कामर्शियल प्रैक्टिस, वाणिज्य भूगोल अथवा अर्थशास्त्र व नागरिक शास्त्र के तत्व तथा टंकण एवं आशुलेखेन सम्मिलित किये गये थे।

वर्ग समूह 5 (कृषि): इस वर्ग में सामान्य कृषि, पशुपालन, बागवानी एवं उद्यान, कृषि रसायन एवं वनस्पित विज्ञान से सम्बद्ध विषय सम्मिलित किये गये थे।

वर्ग समूह 6 (ललित कलायें): ललित कलाओं में चित्रकला, ड्राइंग व डिजाइनिंग, कला इतिहास, संगीत, नृत्य तथा माडलिंग आदि कलायें सम्मिलित की गई थी।

वर्ग समूह 7 (गृह-विज्ञान): यह विषय समूह केवल बालिकाओं के लिये थे।

शिक्षण विधि: शिक्षण विधि पर आयोग के सुझाव निम्नवत् थे-

i. यह स्वानुभव पर आधारित होना चाहिये।
ii. विधियाँ प्रतिभाशाली, औसत एवं मन्दुबद्धि आदी सभी छात्रों के लिए समान रूप से उपयोगी
 होनी चाहिए।
iii. शिक्षण विधियाँ बालकों में स्व-प्रेरणा, स्व-क्रिया तथा स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत करनी चाहिए।
iv. इन विधियों के माध्यम से छात्रों में सामाजिकता, प्रेम, सहयोग और मिल कर काम करने की भावना उत्पन्न होनी चाहिये।

परीक्षा प्रणाली: माध्यमिक स्तर के परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए आयोग ने निम्नांकित सुझाव दिये थे-

1. वास्तविक मूल्यांकन केवल बाह्य परीक्षा द्वारा सम्भवपर न होने के कारण इसकी संख्या में कमी की जानी चाहिये।
2. माध्यमिक स्तर पर केवल एक अन्तिम बाह्य परीक्षा होनी चाहिये।
3. छात्रों की प्रगति अभिलेखों को अद्यतन बनाये रखा जाना चाहिये।
4. निबन्धात्मक प्रश्न विचार प्रधान बनाया जाना चाहिये।
5. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की संख्या बढ़ाकर परीक्षा की विश्वसनीयता को बढ़ाया जा सकता है।
6. छात्रों का मूल्यांकन उनके वर्ष भर के कार्य, व्यवहार, सत्रीय गतिविधियाँ तथा अन्य प्रकार की उपलब्धियों के आधार पर किया जाना चाहिये।
7. आन्तरिक परीक्षाओं के प्राप्तांको को भी महत्व दिया जाना चाहिये।
8. ग्रेडिंग प्रणाली अपनाया जाना चाहिये।
9. केवल एक विषय में अनुत्तीर्ण छात्रों के लिए पूरक परीक्षा का प्रावधान होना चाहिये।
10. छात्रों का संचयी अभिलेख नियमित रूप से बनाये जाने चाहिये।

अभ्यास प्रश्न

20. माध्यमिक शिक्षा आयोग को और किस नाम से जाना जाता है ?
21. लोकतंत्र की नीवं गजबुत करने के लिये क्या करना चाहिये ?
22. माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार प्रत्येक विषय में आपसी सहसम्बंध होना चाहिये। (हाँ /नहीं)
23. आयोग ने ऐच्छिक विषयों को कितने विषय समुहो में विभाजित किया ?
24. 'भाषा' वर्ग समुह आयोग के अनुसार एक ऐच्छिक विषय समुह है। (हाँ / नहीं)

भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66)

सन् 1964 में तत्कालीन शिक्षामंत्री भारत सरकार डॉ0 एम0सी0 छागला ने भारत की सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था पर नये सिरे से विचार करने के लिए भारतीय शिक्षा आयोग (1964) के रूप में एक नवीन आयोग की स्थापना की।

इसके व्यापक उद्देश्य, स्वरूप और महत्व के आधार पर इसे 'शिक्षा आयोग'-1964-66 तथा 'राष्ट्रीय शिक्षा आयोग- 1964-66' के नाम से भी जाना जाता है। अध्यक्ष डॉ. डी0एस0 कोठारी के नाम पर यह आयोग 'कोठारी कमीशन' के नाम से भी प्रसिद्ध हुआ है।

उद्देश्य:

आयोग ने शिक्षा को राष्ट्रीय महत्व का उपकरण माना है। इस आधार पर आयोग ने शिक्षा के लिए जो भी राष्ट्रीय लक्ष्य निर्धारित किये थे वे निम्नवत् हैं -

1. शिक्षा राष्ट्रीय उत्पादन में सहायक होनी चाहिये।
2. शिक्षा द्वारा समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रसार होना चाहिये।
3. शिक्षा को राष्ट्रीय एकता तथा धर्म-निरपेक्षता की स्थापना में सहायक होना चाहिये।
4. शिक्षा द्वारा समाज और राष्ट्र का आधुनिकीकरण किया जाना चाहिये।
5. शिक्षा में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र किया जाना चाहिये।
6. शिक्षा द्वारा नागरिकों के उत्तम चरित्र का निर्माण किया जाना चाहिये।
7. शिक्षा द्वारा सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना की जानी चाहिये।
8. शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र का वैज्ञानिक, तकनीकी, औद्योगिक और व्यावसायिक विकास किया जाना चाहिये।

पाठयचर्या :

आयोग ने प्राथमिक शिक्षा के पाठयचर्या में परिवर्तन करते हुये कहा था कि इसके अन्तर्गत बालकों को खेलकूद, कहानी, कविता, रचनात्मक कार्य, सामान्य व्यवहार, सफाई व स्वच्छता तथा खाने-पीने-बोलने का तरीका आदि सिखाया जाने चाहिए।

पाठ्यचर्या निर्माण

माध्यमिक शिक्षा के पाठयचर्या के सन्दर्भ में आयोग ने निम्न सुझाव दिये थे-

i. निम्न माध्यमिक शिक्षा के लिए- मातृभाषा, हिन्दी या अंग्रेजी, विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन, कार्य अनुभव, कला, सामाजिक कार्य, नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा को विषय के रूप में निर्धारित किये जाये।

ii. माध्यमिक शिक्षा के लिए मातृभाषा, हिन्दी या कोई अन्य प्रान्तिय भाषा, एक यूरोपीय या शास्त्रिय भाषा, सामान्य विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कार्य अनुभव, सामाजिक कार्य,कला, नैतिक तथा आध्यत्मिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा आदि विषय सम्मिलित किये जाये।

iii. उच्चतर माध्यमिक के लिये एक भारतीय भाषा, एक आधुनिक विदेशी भाषा तथा एक शास्त्रिय भाषा में से कोई दो भाषायें तथा एक तीसरी भाषा, एवं निम्न में से कोई दो विषय सम्मिलित करने का सुझाव था। वे विषय इस प्रकार है- भौतिकी, रसायन शास्त्र, गणित, कला, इतिहास, भूगोल, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, तर्कशास्त्र, जीव विज्ञान, गृह-विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा भूगर्भशास्त्र।

उच्च शिक्षा के लिए आयोग ने कहा था कि प्रथम स्नातक पाठयचर्या तीन वर्षीय होना चाहिये तथा स्नातक स्तर पर सामान्य, विशिष्ट एवं आनर्स पाठयचर्या होने चाहिये। पाठयचर्या लचीला होना चाहिये। पी0एच0डी0 उपाधी के लिये छात्र को 2 से 3 वर्ष तक का शोध कार्य करने का अवसर दिया जाना चाहिये। विश्वविद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन को स्तरीय रूप में किये जाने पर जोर दिया जाना चाहिये। पाठयचर्या में नवीन विषयों को सम्मिलित किया जाये।

आयोग के अनुसार शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिये। परन्तु अखिल भारतीय स्तर की शिक्षण संस्थाओं में अंग्रेजी माध्यम का ही प्रयोग किया जाना चाहिये। फिर भी विद्यालय स्तर से ही अंग्रेजी के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। आयोग ने विश्वविद्यालय स्तर पर किसी भी भाषा को अनिवार्य नहीं बनाये जाने का सुझाव दिया था। आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा में उर्दू भाषा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

शिक्षण विधि:

आयोग का यह सुझाव था की शिक्षकों को नवीन शिक्षण विधियों के प्रशिक्षण के लिए कार्यशालाओं, गोष्ठियों तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये। इसके अतिरिक्त पूर्व प्राथमिक स्तर पर बाल मनोविज्ञान पर आधारित खेल विधि तथा क्रियात्मक विधि का प्रयोग किया जाना चाहिये।

परीक्षा प्रणाली:

माध्यमिक स्तर में आयोग के अनुसार प्रादेशिक स्तर पर एक सार्वजनिक बाह्य परीक्षा होनी चाहिये जिसका प्रबन्ध प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद को करना चाहिये। इस स्तर पर लिखित एवं मौखिक दोनो प्रकार की परीक्षायें ली जानी चाहिये। अन्य सुझावों में आयोग ने कहा था कि -

- परीक्षा यथा सम्भव वस्तुनिष्ठ बनाया जाये।
- प्रयोगात्मक विषयों में प्रायोगिक परीक्षायें भी ली जानी चाहिए।
- परीक्षा परिणाम ग्रेड प्रणाली के आधार पर घोषित किये जाने चाहिये।
- प्रश्नपत्रों में निबन्धात्मक, दीर्घ-उत्तरीय, लघु-उत्तरीय तथा वस्तुनिष्ठ तीनों प्रकार के प्रश्न सन्तुलित रूप से दिये जाने चाहिये।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आयोग के अनुसार-

- बाह्य परीक्षाओं के साथ-साथ आन्तरिक परीक्षाओं एवं सतत् मूल्यांकन द्वारा छात्रों की क्षमताओं का पता लगाना चाहिये।
- यू0जी0सी0 को निरन्तर परीक्षा सुधार के प्रयास करते रहने चाहिये। इनके लिए केन्द्रीय परीक्षा सुधार इकाई का गठन किया जाना चाहिये।
- शिक्षकों को मूल्यांकन की नवीनतम विधियों से अवगत कराया जाना चाहिये।

भारतीय शिक्षा नीतियों में पाठयचर्या :

राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इस नीति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य इस प्रकार था-

i. मानवीय शक्ति (संशोधन) को आधुनिक प्रगतिशील तकनीक के अनुसार प्रशिक्षित करना।
ii. भारत की शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक युग के नये नये व्यवसायों की चुनौतियों के अनुरूप विकसित करना।

इस शिक्षा नीति का आठवां भाग विषय, शिक्षण विधि एवं परीक्षा प्रणाली से सम्बन्धित था। इसके अनुसार-

1. औपचारिक शिक्षा प्रणाली द्वारा देश की सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करनी चाहिए।
2. छात्रों को मूल्य शिक्षा दी जानी चाहिए।
3. शिक्षा में आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि आवश्यक सूचनाओं का ज्ञान, शिक्षण प्रशिक्षण, शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि किया जा सके।
4. कार्य अनुभव को सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए।
5. विषय के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूता उत्पन्न किया जाना चाहिये।
6. खेल को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिये।
7. परीक्षा प्रणाली में मूल्यांकन प्रक्रिया को वैध, तथा विश्वसनीय बनाया जाना चाहिए एवं इसके लिए-
    i. परीक्षा में आत्मनिष्ठता को समाप्त किया जाए।

ii. संयोग वाले प्रश्नों को हटाया जाए।

iii. रटने के स्थान पर समझने पर जोर दिया जाये।

iv. पूरे सत्र के दौरान मूल्यांकन प्रक्रिया चलते रहना चाहिए।

v. माध्यमिक स्तर से क्रमबद्ध रूप से सत्र प्रणाली लागू किया जाना चाहिये।

vi. मूल्यांकन में अंको के बजाए 'ग्रेड' प्रदान किया जाना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

25. भारतीय शिक्षा आयोग (1964) के अध्यक्ष कौन थे ?
26. भारतीय शिक्षा आयोग के अनुसार शिक्षा राष्ट्रीय उत्पादन में सहायक होनी चाहिये। (हाँ/नहीं)
27. आयोग ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कितने भाषाओं के शिक्षण के लिये सुझाव दिया था?
28. आयोग के अनुसार शिक्षा का माध्यम क्या होना चाहिये ?
29. आयोग द्वारा खेल-विधि का सुझाव किस स्तर के लिये दिया गया था ?
30. केंद्रीय परीक्षा सुधार इकाई किस स्तर पर गठित किया जाना चाहिये ?
31. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार मानविक शक्ति एक संसाधन है। (हाँ/नहीं)
32. आत्मनिष्ठता के द्वारा मूल्यांकन प्रक्रिया वैध एवँ विश्वसनीय होता है। (हाँ/नहीं)

15.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने जाना की वह कौन कौन से आयोग या समितियाँ थी जिन्होंने पाठयचर्या के सन्दर्भ में अपनी बहुमूल्य संस्तुतियां दी थीं। इनमें स्वतंत्रता पूर्व आयोग एवं समितियाँ शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर ज्यादा केन्द्रीत थी। इन्होने पाठयचर्या को मुख्यरूप से विषय तक समिति रखा एवं समय समय पर यह सुझाव दिया कि किस स्तर पर कौन सा विषय पढ़ाया जाना चाहिए। माध्यम के रूप में मुख्यतः अंग्रेजी को ही प्रोत्साहन दिया गया। परन्तु बाद में कुछ आयोग ने क्षेत्रीय भाषा के महत्व को यथोचित सम्मान प्रदान करते हुए उनको भी माध्यम के रूप में प्रयोग करने का सुझाव दिया। स्वतंत्रता पूर्व वर्धा शिक्षा आयोग इन सभी से कुछ अलग दिखाई पड़ता हैं। यह एक मात्र ऐसा प्रयास है जहाँ पर स्वाध्याय एवं स्वानुभव पर ज्यादा जोर दिया गया।

स्वतंत्रतोत्तर काल में आपने जाना कि सबसे पहले उच्च शिक्षा के लिए आयोग बनाया गया था। इसमें सरकार की यह कमी दिखती है कि सरकारी स्तर पर प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा कि अवहेलना की गई थी। बाद में इस गलती को सुधारते हुए माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन किया गया। उच्च शिक्षा आयोग एवं माध्यमिक शिक्षा आयोग शिक्षा से सम्बन्धित सब कमियों को दूर नहीं कर पाया था, इसलिए 1964 में भारतीय शिक्षा आयोग का गठन किया गया था। इस आयोग

ने शिक्षा के हर क्षेत्र में अपनी सुझाव दिए थे। बाद में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा सम्बन्धित सुझावों को यथा सम्भव कार्यान्वित करने की कोशिश की गई थी।

15.7 शब्दावली

1. **CABE:** यह एक ऐसी संस्था है जो विकास में अग्रणी भूमिका निभाती है तथा शैक्षिक नीतियों और कार्यक्रमों की मानीटरिंग करती है।
2. **नई तालिम:** नई का अर्थ है नया और तालिम एक उर्दू शब्द है जिसका अर्थ है शिक्षा। नई तालिम एक आध्यात्मिक सिद्धांत पर आधारित सम्प्रत्यय है जो यह कहता है कि ज्ञान एवँ कार्य एक दूसरे से भिन्न नहीं है।
3. **सहसम्बंध:** किन्ही दो या अधिक चरों (मात्राओं) के मध्य एक निश्चित समयकाल में अलग अलग प्रकार एवँ मात्रा में होने वाले सम्बंध।
4. **वस्तुनिष्ठ:** वह वस्तु या ज्ञान या सम्प्रत्यय जो स्थान, काल एवँ पात्र विशेष के बदलने पर भी नहीं बदलता

15.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. लॉर्ड रीपन
2. 2
3. वुड के घोषणा पत्र ने
4. विलियम हण्टर
5. लार्ड कर्जन ने
6. 2
7. कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग
8. औद्योगिक एवँ व्यापारिक विषय
9. 6 वर्ष
10. सार्जेण्ट शिक्षा योजना
11. गांधी जी के
12. जामिया मिलिया
13. ज़ाकिर हुसैन समिति / वर्धा शिक्षा योजना
14. क्रिया व अनुभव द्वारा शिक्षण एवँ सहसम्बंध द्वारा शिक्षण
15. 3
16. अखिल भारतीय स्तर पर परीक्षा के माध्यम से

17. हिंदी एवँ स्थानीय भाषा
18. स्नातकोत्तर एवँ वृत्तिक पाठयचर्या में
19. नहीं
20. मुदालियर कमीशन
21. नेतृत्व शक्ति का विकास
22. हाँ
23. 7
24. नहीं
25. डॉ. डी. एस. कोठारी
26. हाँ
27. 3
28. मातृभाषा
29. पूर्व प्राथमिक स्तर
30. उच्च शिक्षा स्तर पर
31. हाँ
32. नहीं

15.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. त्रिपाठी, शालिग्राम (2005), भारतीय शिक्षा का इतिहास, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.
2. शील, अवनींद्र (2005), भारतीय शिक्षा का विकास एवँ समस्यायें, साहित्य रत्नालय, कानपूर
3. चौबे, सरयूप्रसाद एवँ चौबे, अखिलेश (2008), भारतीय शिक्षा का इतिहास, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या, फैज़ाबाद.
4. Report of University Education Commission (1948), Manager of Publications, Allahabad

15.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. स्वतंत्रता पूर्व आयोगों या समितियों द्वारा पाठयचर्या सुधार पर टिप्पनी करें।
2. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग द्वारा दिये गये सुझाव वर्तमान में कितने प्रासंगिक है ?
3. भारतीय शिक्षा आयोग (1964 - 66) एवँ वर्धा योजना में समानता क्या क्या है ?
4. स्वतंत्रता उत्तर काल एवँ स्वतंत्रता पूर्व काल के आयोगों के सुझावों का तुलनात्मक विवेचन करें।